CHEEKH UTHA HIMALYA

सम्पूर्ण चमन जैसे साज सज। था गया बन दुल्हन संवरकर-

चमन के हर नागरिक में आज एक उल्लास था, खुशी थी । वतन के पूरे देश के किसी भी कोने में अाज जैसे कोई दुख ही नहीं था । आज चमन जैसे धरती का स्वर्ग बन गया था । बच्चेउत्साह में बच्चे-' था । चमन की हर सड़के, हर गली को खुद शीसे नाचते ए यहीं के नागरिकों ने सजाया था । जगह जगह-,छोटे बंल्वों की झालरेंबैंड। बजते पर स्थान स्थान ! दस ज़नवरी जैसे चमन का राष्टीय पर्व बन गया ।

बनता भी क्यों नही? आज़ करीब बीस साल बाद चमन के निवासियों ने आजादी की सांस ली थी ।

आज़ उनके देवता। था होना जो राजतिलक का मसीहा उनके--

अाजाद तो चमन पांच जनवरी को ही हो चुका था । उस वक्त सारे विश्व में हलचल मच गई थी, जब अमेरिका ने सार्वजनिक तौर पर यह घोषणा की कि अब चमन पर उनका कोई अधिकार नहीं रह गया है । चमन एक आजाद देश है और उसका राजा वतन है ।
इस घोषणा के साथ ही अमेरिका ने सबसे पहले चमन को आजाद देश के रूप में मान्यता दी ।
वतन ने अमेरिकी को चुनौती दी थी कि पांच जनवरी की दोपहर दो बजे तक अमेरिका चमन को आजाद देश के रूप में मान्यता देकर एकबाहर से चमन को अमेरिका एक- निकाल ले वरना अमेरिका का सारा गोल्ड नष्ट कर दिया जाएगा । अमेरिका के सारे मे गोल्ड को अपने कब्जे में करके वतन ने इस चौधरी राष्ट्र से समझौता किया था । यह सौदा कि अगर अमेरिका को सारा गोल्ड चाहिए तो चमन को आजाद कर दे । मजबूरन अमेरिका को अपना देश बचाने के लिये वतन का वह सौदा मजूर करना पड़ा है मंजूर ना करने का मतलब था, दुनिया कै नक्शे पर से अमेरिका का नामो निशान मिट जाना ।

असल में तो पांच जनवरी को ही चमन आजाद हो चुका था किन्तु विधिवत् वतन को आज चमन की सबसे बड़ीं गद्दी पर बैठाया जाना था । आज उसका राजतिलक होना था और दस जनवरी का दिन चमन के इतिहास में स्वतन्त्रता कर धारण रूप का दिवस-था ही सजा तो चमन पूरा । गया, सबसे बेहतरीन ढंग से सजा था'--राष्ट्रपति भवन ।।
खुद चमन के नागरिकों ने उसे सजाने में अपना खून। था दिया कर एक पसीना- पांच जनवरी की रात से ही लोग उसे सजाने में व्यस्त थे । चमन ऐसे सजा था मानों किसी धनवान की पुत्री बडे अरमानों से दुल्हन वनी हो ।।
लेकिन वतन । वतन उस सजे...संवरे राष्ट्रपति भवन में नहीं था । रात को ज़ब वह सोया था तो राष्ट्रपति भवन में ही सोया था ।
विजय, विकास, पिशाचनाथ, अलफांसे, धनुषटंकार और बागारोफ के साथ । जी हां, इन सबको वतन ने अभी चमन में ही रोक रखा था ।
माइक, जैकी और हैरी तीन जलपोतों में भरकर अपने देश का सोना छ। थे गए ले ही को जनवरी :
विजय इत्यादि भी उनके साथ ही लौटना चाहते थे कि वतन ने अनुरोध करके उन्हें रोक लिया। उसने कहा था..."चच्चा अपने बच्चे को चमन की गद्दी पर बैठाकर, माथे पर तिलक नहीं लगाओगे? विकास भाईकुछ । है किया नहीं तो बुरा मैंनै..., कोई जुर्म तो नहीं किया है, किसी आदमी को तो नहीं मारा है? मैंने जो किया, सिर्फ अपने इस छोटे । लिये के करने आजाद को देश से-मुझे तुम क्या !विकास मुजरिम समझते हो? जो कुछ मैंने किया, क्या वह तुम्हारी नजर' में गलत है ?"
" -नहीँ वतन, ठीक किया है । अगर हर छोटे देश में एक वतन हो जाए तो बड़ा राष्ट्र किसी छोटे देश को गुलाम न बना सके । तुम्हारी जगह मैं होता तोशायद- शायद तुम्हारी तरह अहिंसा से काम न ले पाताजात वन हिंसक-ा, न जाने कितने आदमियों का खून बहा देता ।

" तो...तो फिर भारत जाने की जिद क्यों?" वतन ने कहा ।
" इसलिए किं अपने वतन तो पहुचना ही है हमें ।"

" ओंर यह किसका वतन है?" चमन` बोल उठा...चमन भी तो भारत की ही हिस्सा है ।। मैं भी तो भारतीय हूं ।

"लेकिन ।"
" लेकिन वेकिन कुछ नहीं विकास ने कुछ _कहना चाहा तो उसकी बात बीच में ही काटकर वतन बोला कि विकास है सुना -

है सुना गलत क्या !तुम हो यार के यारों मैंने? नहीं, तो रूको यहींवरना...वरना जाओ बनाके राजा को यार अपने- तुम्हारी कसम..,मै राजा नहीं"। ...

मगर वतन की बात पूरी होने से पहले ही विकास ने उसे कलेजे से लगी लिया था ।
इस तरह जिद करके रोका वतन ने । के कैसा संयोग था ?" वतन के दुश्मन बनकर भारत से सोचकर यह । सब ये थे निकले- जब बैठेंगे नहीं से चेन तक वक्त उस कि तक वतन को जान से नहीं मार देगे । परन्तु हुआ बिल्कुल उल्ट । वतन के दोस्त बन गए वे ।

" वतन-'सिंगही का शिष्या ।।
मूल रूप से यह भारतीय था ।
मोण्टो बड़ा का पाण्डे मुल्कराम भारतीय । लड़का का ताऊ के (धनुषटंकार) लड़का देशपांडे व्यापार के सिलसिले में भारत से निकला तो वापस ही न अाया ।
किसी क्रो क्या मालूम था कि चमन में शिखा' की मुहब्बत ने उसे गिरफ्तार कर लिया है । चमन में ही देशपांडे का विवाह शिखा च से ही हुया । शिखा के पिता ने देशपांडे को अपनी फेक्टरी का मालिक बना था ।

हालात ऐसे बने कि न ही वह भारत'आ सका, न ही कोई सूचना भेज पाया ।

अमेरिकनों ने छोटे पर देश से-हमला करके उसे गुलाम बना लिया देशपांडे की फैक्टरी भी अमेरिक्नों ने छीन ली ।

उन्हीं देशपांडे और शिखा का लड़का था वतन ।।।।

एक बहन भी थी वतन की!छवि-

वतन बचपन से ही कहा करता था फि वह चमन का राजा बनेगा । एक फलवाली बूढी औरत से हमेशा उधार फल खाया करता था । जब आठ वर्षीय वतन से फल वाली, बूढी महिला ने कहा कि तुम राजा नहीं वन सकते, क्योंकि लकीर मैं हाथ तुम्हारे . नहीं ही है !
तब । ली वना लकीर वह उसने फाढ़कर ही हथेली अपनी से चाकू ----

बचपन से ही ऐसा महत्वाकांक्षी था वतन ।।।।

" उस वक्त यह सिर्फ आठ ही वर्ष का था, जब उसकी जिन्दगी में एक भयानक मोड़ अाया था । चमन के राजा मैंग्लीन का लड़का जिम जिम जबरदस्ती उसकी बहन से शादी करना चाहता था।

बसथा दिन वही ----, जिससे वतन की जिन्दगी में एक तूफान उठ खडा हुआ ।
घटना का प्रभाव था कि आठ वर्ष के वतन ने जिम का कत्ल कर दिया । फिर उसने देखे, अपने माता पर बहन और पिता -- देखी उसने जुल्म तेहो, अपनी मां और बहन की वे लाशें जिन पर किड़े रेंग रहे थे, जिनमें से उठती सड़ाध हमेशा के लिये उसके दिमाग
मैँ समा गई थी । फिर...एक बोरे में बन्द करके मैप्लीन ने उसके पिता को डूबने के लिए समुद्र में डाल दिया था ।

समुद्र में अपने पिता की लाश को तलाश करता वतन सिंगही से टकरा गया । सिंगही ने वतन की कहानी सुनी तो जाना कि एक दिन वतन दुनिया के लिए गर्व की चीज बनेगा । बस। उसे लिया वना शिष्य अपना ने सिंगही---

सिंगहीँ ने उसे इतना कुछ सिखाया, जितना यह स्वयं भी नहीं जानता था ।

विजय, विकास इत्यादि के विरूद्ध सिंगहीँ ने वतन के दिलो दिमाग मैं जहर भरा था ।

वड़े गर्व के साथ सिगहीँ नै विकास से कहा"----'बचकर रहना विकास मेरा शेर मैदान में आ रहा है ।"

और। अ ाया में मैदान वतन-

सिगहीँ ने वतन को वैज्ञानिक भी तो बना दिया था । उसी वैज्ञानिक दिमाग से वतन ने समुंद्र से नकली सोना बना लिया । ऐसा सोना कि बड़े से बड़ा घुरन्धर भी असली और नकली के फर्क को नहीं पकड़ सकता था ।

बहुत ही शान्तिपूवंक ढंग से एक गहरी साजिश कै द्वारा वतन ने अमेरिका का सारा गोल्ड अपने कब्जे में कर लिया और अमेरिका के बाजार मैं फैला दिया अपना नकली सोना ।

इसके बादपास के अमेरिका कि दी कर घोषणा ने वतन सामने के दुनिया सारीं---- जितनी भी गोल्ड है सब नकली है । इस तरह वतन ने अमेरिका की अर्थव्यवस्था-, भंग कर दी । अन्य देशों ने अमेरिका से व्यापार बन्द कर दिया ।

विश्व के बाजार में डालर की कीमत गिर गई ।

उधर वतन और विजय के बीच चैलेंज हो गया था कि एक महीने के अंदर वतन चमन का राजा बन जाएगा या नहीं । वतन का कहना या कि वह एक महीने के अन्दर चमन का राजा वन जाएगा

विजय ने कहा था कि इस अवधि के अन्दर वह उसे तो क्या, उसके बाप को भी चमन का राजा नहीं बनने देगा । फिर अमेरिका से माइक ने वतन के खिलाफ विजय से मदद मांगी ।

विजय तैयार हो गया ।

इधर...अलफांसे , पिशाच, बिकास और धनुषटंकार ने मिलकर वतन को घेरने की योजना बनाई ।

दुनिया के महान जासूस ,चारों तरफ से वतन को घेरने के लिये निकल पड़े । उधर सिंगही विशव वना जनायो की कराने युद्ध-हिंसात्मक उस की सिंगही । था रहा योजना के विषय में वतन को कोई जानकारी नहीं थी ।

हिंसा से वेहद घृणा थी वतन कोयोजना खतरनाक की सिंगही उसे जबकि तब तो तभी -- के बारे में पता लगा तो गुरु के ही खिलाफ़ हो गया वह । उसने सिंगही का अडडा नष्ट कर डाला । जो काम विजय, विकास इत्यादि जासूसों का था, वह वतन ने क्रिया ।

अन्त में अपनी जान बचाकर भागना पड़ा सिंगही को ।

विजय, विकास, अलफांसे, पिशाच के साथ माइक और हैरी को भी वतन ने कैद कर रखा था ।

फिर, वतन ने हैरी और माइक को माध्यम से अमेरिका से एक सौदा क्रिया । सौदा यह था कि या तो अमेरिका चमन को " सारा का अमेरिका वह अन्यथा दे कर अ ाजाद सोना नष्ट कर देगा । जैकी को मालूम था कि सिंगही के रूप में दुनिया के ऊपर मंडराते हुए एक भयानक खतरे को वतन ने किस तरह समाप्त किया है ।

जबकी यह यह भी ...जानता था कि अगर ¸ उसके देश ने वतन की बात न मानी तो दुनिया के नक्शे पर अमेरिका नाम की कोई जगह नहीं होगी ।

फिर। था किया भी एहसान बड़ा वहुत एक पर दुनिया ने वतन-

अमेरिका को वतन के समक्ष झुकना ही पडा । वतन के कब्जे से अमेरिका ने अपना सारा सोना लेकर चमन को आजाद कर दिया ।।।
सबसे पहले अमेरिका ले ही चमन को एक आजाद देश के रूप में मान्यता दी ।
और----- और आज उसी वतन का राजतिलक होने जा रहा था ।
नौ जनवरी की रात को विजय , विकास इत्यादि के साथ ही वतन राष्ट्रपति भवन में सोया था ।
मगर दस तारीख की सुबह जब वे सोकर उठे तो न राष्ट्रपति भवन में वतन था और न ही अपोलो ।

अपोलो वतन का वफादार बकरा ।

" अबे धूरता को बिस्तर खाली के वतन "! हुआ वागारोफ चहका का चटनी गया चला कहां ये "---?"

और----- और आज उसी वतन का राजतिलक होने जा रहा था ।
नौ जनवरी की रात को विजय , विकास इत्यादि के साथ ही वतन राष्ट्रपति भवन में सोया था ।

मगर दस तारीख की सुबह जब वे सोकर उठे तो न राष्ट्रपति भवन में वतन था और न ही अपोलो ।
अपोलो वतन का वफादार बकरा ।

" अबे धूरता को बिस्तर खाली के वतन "! हुआ वागारोफ चहका "---ये कहां चला गया चटनी का ?"
चकरांए सभी थे ।
विजय ने कहा"----'मुझें लगता है चचा, कि शकरकन्दी खाने चला गया। .-----"
"चुप वे चटनी के विजय "!'की' बात पूरी होने से पहले ही बागरोफ गुर्रायारख बन्द चोंच""---, वरना चिड्री का पंजा बना दूंगा "!
इससे पहले कि विजय कुछ कहे, बिकास बोला"। है नहीं भी अपोलो"-----

"अबे उस बकरे का क्या अचार डालेगा छिनाल के पूत-गुर्राया वागारोफ -- ";-"सोचना चाहिए, उस चटनी के बारे में ।"
"'देखो चचा"---कहा ने विकास "'मां को गाली"...
"अबे चुप हरामी के पिल्ले ।"

..."चचाने अलफांसे "! कहा ही मौका तो का समझने कुछ कि हो करते बात के विराम-कोमा विना से तेजी इतनी तुम "---"। मिलता नहीं
" देख वे 'अन्तर्राष्टीय लिफाफे ।तेरे "---बागारोफ दौड़ा ही चढ़ तो पर उस " टिकट पर मोहर लगा दी तो किसी पोस्ट बॉक्स में पड़ा सड़ता ही रहेगा ।"

और पिचास सोच रहा था कि कैसे विचित्र आदमियों में फंस गया वह वक्त पड़ने पर ये सब एक से एक खतरनाक नजर अाते हैं लेकिनवक्त इस कोई इन्हें अगर... देखे तोहैं लगते बेवकूफ कैसे तो-? वतन के गायब होने पर वे 'चर्चा तो का रहे थे किंतु पिचाशनाथ को उनकी किसी भी बात में कोई गम्भीरता नजर नहीं आई । वे यूं ही बातें करते रहे मगर...

धनुषटंकार' ने उनकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं ती थी ।

वह तो चुपचाप कमरे'से निकल गया था ।
करीब पन्द्रह मिनट बाद जब वह वापस अाया तब भी सब उसी तरह उलझे हुए थे । न जाने किस बात पर उस समय बागारोफ बिकास को गालियां बक रहा था कि एक लिखा हुआ कागज धनुषटकार ने उंसे पकड़ा दिया ।

" अवे ये क्या मुर्गी चोर। पढा से जोर और लिया ले कागज ने बागरोफ येहु कहते "!

--"वतन भैया पूरे भवन में नहीं हैं चचा, किसी ने उनको जाते नहीं देखा "!

सभी सतर्क हो गए ।

बागारोफ चिल्लाया"। को बाप के बकरे उस करो तलाश-----मारो चिडी़ हो बैठे क्यों यहां तो अबे"---

इस तरहवतन साथ के सरगर्मी- की तलाश जारी हो गई ।

आश्चर्यजनक रुप से वतन गायब हो गया है । यह खबर पहले राष्ट्रपति भवन में फैल गई, उसके बाद पेट्रोल की अाग की तरह पूरे चमन में फैल गई । जिसने सुना, वही अवाक् ।

दिल धक् से रह गए ।

अभी एक ही पल पूर्व जिस चमन के नागरिक खुशी से झूम रहे थे, वे मुरझा लग ग्रहण जैसे को गुलिस्तां हुए खिले । गए से-
। गया

स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढेवेहाल परेशान सभी---जावान ., आतंकित!से-घबराए से-

सारे चमन में किसी सूई की तरह वतन की खोज की जाने लगी ।

चमन के बच्चेउन कि गई हो यही सिर्फ जैसे इच्छा बड़ी सबसे बच्चे-का देवता एक पल के लिए उनके सामने अा जाए ।

एक जीप में बैठे विकास, विजय, अलफांसे, पिशाचनाथ, बागारोफ तौर धनुषटंकार भी वतन को तलाश कर रहे थे ।

बागारोफ़ पर तो अजीब बौखलाहट सवार थी । कभी वह वतन को गाली देता तो कभी अपने साथियों को वे जल्दी उसे तलाश क्यों नहीं करते ।

तब जबकि अलफांसे ने कहा---"वतन का इस तरह आज की रात गायब होना रहस्यमय है ।"

-"कहीं ऐसा तो नहीं लूमढ़ भाई कि इन साले अमेरिकनों ने उसे गायब कर दिया हो। की व्यक्त सम्भावना ने विजय "

"गुरू!" गुर्रा उठा था विकासकसम की चरणों तुम्हारे तो हुआ ऐसा "----, सारे अमेरिका को जलाकर राख कर दूंगा । "
। सब उठे कांप देखकर रूप रौद्र का विकास

पिशाचनाथ ने कहा..."यह काम सिंगहीँ का भी तो हो सकता ।"

" नहीं । "। सकता कर नहीं ऐसा लिए के वतन दिन के आज यह तो से रूप विशेष "------क्रिया प्रतिरोध ने अलफांसै "

'"क्या बात का रहे हो लूमढ़ भाईसही तो सोचो "----कहा ने विजय "!, साला अपना नकली चचा भी कभी किसी का हुआ है क्या, जो अब होगा? माना कि वतन शागिर्द है उसका, लेकिनहुआ खाया ही से वतन वह तो खुन्दक ज्यादा सबसे वक्त इस-होगा?"

"अरे उल्लू की दुम फाख्ताओं ! सालों, लगता है, तुम्हारे दिमाग का दिवाला आउट हो गया है ।दहाड़ा बागारोफ " था---
"'अवै अपने मैला भरे दिमागों से मैला हटाओ और यह सोचौ कि क्या वतन खुद गायब नहीं हो सकता?"

-"लगतो है, मैला तुम्हारे दिमाग में भरा है चचा ।--कहा ने विजय "'"आज़ के दिन का उसे इन्तजार था । बोला फिर "
...आज वह खुद अपनी इच्छा से नहीं गायब होगा?"

"साले लकड़बग्घे तू इण्डियन है नरहेगी लटकी ही है "उधर हमेशा बुद्धि तेरी- ।बताया तो ही तुमने अबे"---दहाड़ा बागारोफ "
बुढ़िया एक वतन में बचपन कि था से उधार फल खाया करता था अौर उसने वादा किया था कि जिस दिन वह चमन का राजा बनेगा, उस दिन उस बुढिया का सारा उधार चुका देगा । क्या यह मुमकिन , नहीं कि आज के दिन का सबसे पहला अहम् काम उसने उधार चुकाना ही चुना हो?"

"'हो सकता है चचासे धनुषटंकार विकास ही साथ के कहने " । जमी बात तुम्हारी ! बोला..."मोण्टो जीप फलदबाली बुढ़िया की झोंपड़ी की तरफ ले चलो ।"

जीप चलाते धनुकांकार ने जीप का रुख मोड़ दिया ।

" लेकिन चचा ।जाता से मर्जी अपनी वह अगर"---था रहा कह विजय ", तो कहकर भी तो जा सकता था?"

" अवे चमारी के---डांटा ने बागारोफ "!'"आजकल की नई पौध को नहीं जानता क्या तू? बुजुर्गों को कुछ बताकर काम करने में तो अपनी तौहीन समझते हैं ये । अब इसी ईट के भट्ठे को लो न ।था तरफ की विकास संकेत उसका "..."क्या ये बताकर कोई काम करता है?"

उनके बीच इसी तरह की ऊटपटांग बाते होती रही । पिशाच इस तरह चुप बैठा था, जैसे उसके मुंह में जुबान ही न ही । इसी तरह उन सबकी बातों से बेखबर धनुषटंकार आंधी तूफान की तरह जीप को भगाए ले जा रहा था ।

जिन सड़कों पर कुछ देर पहले तक चमन के नागरिक खुशी से नाच रहे थे, इस वक्त उन पर एक उदासी सी छाई हुई थी । एक अजीब! मुर्दानिगी सी-

सड़कों पर जितने भी लोग नजर अाए सभी की आँखे जैसे कुछ खोज रही थी । किसे खोज सकती हैं वतन सिर्फ----------- !! को

तब। रुकी जाकर सामने के झोंपडी की बुढ़िया उस ठीक जीप ज़वकि--

बुढिया बाहर दरवाजे पर ही खड़ी थी । एक साफपहने धोती सी-, मानो अपने बेटे के राजा बनने की खुशी में वह भी झूम रही थी । जीप के रुकते ही बूढा जिस्म जीप की तरफ लपका ।

बागारोफ सहित सबने श्रद्धापूर्वक पांव छुए उसके बेटा मेरा मिला"-पूछा ने बुढ़िया !?"
"क्या वतन यहां नहीं अाया दादी मां?" अलफांसे ने पूछाआया नहीं मिलने आपसे क्या"-----?"

" कहां अाया मुआ, मेरा तो उधार भी नहीं चुकाया पडी रो कहकर "। उसने- फ़लवाली बुढिया उम्मीद इसी से दिन कितने"- अाएगा दिन वह कब कि थी रही जी पर जब यह राजा बनेगा । सबको तो यह खुशी होगी कि वतन आज राजा बना है मगर मुझे उसके राजा बनने की खुशी थोड़े ही थी । मुझे क्या मतलब कि बो मुआ राजा बने या मरे । मैं तो बस यह चाहती हूँ कि एक बार सामने आकर पैसे दे दे मेरे । "

वतन के प्रति बुढ़िया का प्रेम देखकर आंखे छलछला गई । सबकी ।

विकास ने कहादिये दे ही रात मुझे उसने तो पैसे लिए के देने तुम्हें "--- थे दादी मां ।। पैसे अपने लो-" कहते हुए विकास ने जेब में हाथ डाला ।

"चललूं क्यों पैसे तुझसे----मुए..चल...गी में? मैं तो उसी राजा के बच्चे से लूंगी ।"

आंसू भरी आंखों के साथ मुस्करा उठा विकास, बोलानहीं पैसे तुझे कि मां दादी कहती नहीं क्यों सीधे---, वतन चाहिए । "

"मैं पागल हूं क्या?" कहती कहती फफक पड़ी वुढ़ियाकरूंगी प्यार से मुए उस ज्यादा से पैसों अपने जो"---?"

कहकर उनमें से किसी की भी बात सुने विना बुढ़िया रोती हुई झोंपड़ी की तरफ भाग गई । अवाक् रह गए सब ।।।

आंखों में आंसू उमड अाए थे । खुद को संभालकर विजय ने कहा..."अब क्या करें दिलजले?"

विकास की विचारबोला देखकर तरफ की विजय से आंखों भरी-अासू । टूटी श्रंखला- ----" क्या वतन को मुजरिम समझकर हमने वहुत बडी भूल नहीं की थी? आपने देखाहैं करते प्यार कितना उसे लोग के मुल्क ------? क्या इतने सारे लोग कभी किसी मुजरिम को भी इतना प्यार कर सकते है?" कभी नहीं गुरु। नहीं कभी-

सचमुच, अपने दिल पर हाथ रखकर कहता हूं मैंवदे वतन----ता है"। देबता का सचमुच...

" अबे चिडीमार, सवाल यह नहीं कि यह देबता है या राक्षस ।दहाड़ा बागारोफ "'----"सबाल यह है कि वह गया कहा ?"

"अगर वह अपनी इच्छा से गया है चचा, तो सिर्फ एक जगह और ऐसी है, जहां वह जा सकता है ।। कहा ने विकास "

"कहां ?"
"अपने " में घर- बिकास ने कहाकी बहन और मां अपनी उसने जहाँ में घर उस"--- सड़ी हुई लाशें देखी थी । अगर वह बहां भी नहीं है चचा, तो समझो, वह गायब नहीं हुआ है । उसे किसी ने गायब किया है और तुम्हारी कसम उसे गायब करने वाले की बोटी"। उसे दूंगा सुखा फाढ़कर । डालूंगा नोंच बोटी-

कुछ देर बाद, जीप मैं बैठे हुए, वे सब वतन के मकान की तरफ उडे चले जा रहे थे ।
बेहद तीव्र वेग से चलाने के वावजूद धनुषटंकार तीस मिनट में वतन के मकान पर पहुच सका । सबने देखासा जर्जर थक-, पुरानाजंगली में लॉन । मकान फूटा-टुटा- घास उग अाई थी ।

लम्बी लम्बी कटीली झाड्रियों ने रास्ता घेर रखा था ।
मकान का दरवाजा बन्द होने का छ
प्रशन ही नहीं था क्योंकि टूटे हुए दोनों किवाड़ दरवाजे के पास ही झाडियों में पड़े थे । झाड़ियों को पार करते हुए वे है पहले कमरे में पहुंच गए
देखा। था बन्द दरवाजा का कमरे दूसरे-

सभी ठिठक गए । दूसरे कमरे के अन्दर से किसी के रोने की आवाज अा रही थी ।
फूट। कोई वहां था रहा रो तड़पकर-तड़प फूटकर-

फिर, वतन की आवाज ने सबके रोंगटे खड़े कर दिए, सुबकता हुआ वह कह रहा थातू है रही नहीं क्यों देख मां"-? देख तेरा वतन आज चमन का राजा बन गया है तेरे लाल के राजा बनने पर तेरे देश की जनता कितनी खुश है ।। तूं कहां चली गई मां ।। तेरी लाश कहां गई? छवि वहन तू भी मां के साथ ही चली गई, पगली, तेरे भाई के शादी तुझसे कुत्ता वह भला रहते- था सकता कर, मैं तेरा"...

ज्यादा सुना नहीं गया विकास से, तो दरवाजा खटखटा दिया उसने ।

अन्दाज एकदम बन्द हो गई ।

सुबकने की आवाज भी बन्द ।

दर्दयुक्त स्वर में पूछा गयाहै कौन"----?"

"वतन, मैं हूं विकास । " । खोलो दरवाजा"-----कहा उसने "

फिर, कुछ देर सन्नाटा। खुला दरवाजा से झटके एक । आवाज की कदमों अाती तरफ़ की दरबाजे फिर----

आखों के सामने था विकास के बराबर लम्बा वतन । दूध जैसे सफेद लिबास में वाकई देवता सा लता था वह । आंखों को ढके हुए वही सुनहरे फ्रेम का काला चश्मा, कुछ देर तक तो सारे के सारे देखते ही रह गए उसे । कपोल पर एक भी तो आंसु नहीं था ।

फिर, इस अजीव से सन्नाटे का तनाव बागारोफ ने समाप्त कियाके चिड्री ""---- पंजे, यहां है तू ? वहां चमन के हर कुएं में तुझे खोजने के लिए जाल डलवा दिए । सबकी जान निकाल दी तूने"। उठा मुर्झा गुलिस्तां हुआ खिला-

" चचा आओ"-----नहीं ही सुनी बात कोई उसकी ने वतन "! मेरे साथ ।बागारोफ " की दोनों कलाइयां पकड़कर वह उसे

अन्दर ले गया, कमरे के गन्दे फर्श की और संकेत करके बोला..."यहाँ चचा, अपनी मां और बहन की लाशों को यहां छोड़ गया था मैं । अब वे गायब हैं ।"

बागारोफ का दिल फूटउठा मचल लिए के रोने फूटकर-, पर स्वयं को संभालकर बौला लाशें वे होंगी से कहां यहाँ अब"---स बारह्ाल हो गए उस बात को, अब तक यहां लाशें कहां होतीं ?"

..."क्यों चचा ?" वतन ने पागलों की तरह कहा..."कहां गई होंगी वे लाशें ?"
...'"अबे भड़वे, अमेरिकनों ने दफना दी होंगी ।। बागारोफ पाया नहीं छुपा को आवाज की रोने से में शब्दों अपने "

-"नहीं चचा, यह नहीं हो सकता ।"---बा गया हो पागल में वास्तव जैसे वतन " कुत्ते इन लाशों को उठाना तो दूर, इस स्थान में घुस भी नहीं सकते थे । जानते हो चचा...मेरी मां और वहन की लाशों में इतने लम्बे लम्बे कीड़े पड़े थे ।। ऐसी सड़ाघ उठ रही थी चचा कि मुझसे भी रहा नहीं गया यहां । फिरवे फिर... कुत्ते उस सड़ांघ में यहां क्यों अाते ? क्यों उन लाशों पर से कीडे हटाते ? "

बागारोफ ने संभाला खुद को बोसाअबे "---- हरामजादे । उन्होंने न भी हटाया हो तो क्या इतने दिनों तक कोई लाश पड़ी रह सकती है ?"

" क्योंचचा क्यों..., जब उन्हें कोई उठाएगा नहीं तो वे चली कहाँ जाएंगी ?"

"अबे उल्लू की दुम फाख्ता, इतने दिनों तक तो ताश वैसे भी नहीं टिकती ।कीड़े कुछ"------बताया ने बागारोफ " खा गए होंगे, कुछ सढ़कर सूख गई होंगी । गिद्धों की नजर पड़ गई होगी तो गोश्त को वे नोच कर खा गए होंगे । बचे कुतों को खुचे-"। होगा नोंचा ने

" ओह "...तो होगा झझोड़ा को गोश्त के मां मेरो ने कुत्तों जब । होगा हुआ तो यहीं हां -- चचा हां !

" चुप !" बुरी तरह चीखकर रो पड़ा बागारोफरुलाकर आखिर ! हरामजादे जा हो चुप- ही छोड़ा न तूने जख्म पर दिल ! मैं रोकता कत कहां ! गया चला ही किए? चुप हो जामा वरना ---र"। दूंगा बना उड़नतश्तरी मारकर-

फिर देखने बातों ने देखा। वह था रहा रो फूटकर----फूट तरह की बच्चों । को बागारोफ हुए रोते---

कुछ पल, अवाक्रहा देखता उसे वतन सा-, बोला..."रो रहे हो चचा ! इस मे रोने है बात क्या की-?"

" कुछ नहीं चमगादड़ की दूमकहन "! नहीं कुछ--े के साथ ही बागरोफ ने वतन को अपने से लिपटा लिया । लिपटाकर रोने लगा वह । बागारोफ ही नहीं, सब रो रहे थे । धनुषटंकार और अपोलो की आंखो से भी आंसू टपक रहे थे ।

आंसू नहीं चमक रहे थे तो वतन के ।

बागरोफ के गले से लिपटे वतन की नज़र विकास पर पड़ी तो बोलाविक"--ास, मेरे यार जाकर से जिसमें देखेगा सुरंग वो ! था किया कत्ल का जिम मैंने? आ तुझे दिखाता हूं मैं ।निकला से बांहों की बागरोफ वह ही साथ के कहने ", बिकास का हाथ पकडकर बाथरूम के दरवाजे तक पहुंचा और उस छोटीहुआ दिखाता को सुंरग सी- बोलाक -- सुंरग वो है ये देख "---ितनी छोटी है सुरग मैंने न था पागल मैं ! बड़ी नहीं बनाई । बडी बनाता तो सव वच जातेसे तोड़ने दरवाजा के मैग्लीन --- पहले ही सब निकल जाते मगर----,मैंने कितनी छोटी सुरंग बनाई ।। मैंने ही तो अपने मा , बहन और पिता को मारा है । सोच मेरे यारतो होती बड़ी सुरंग---- निकल.

"वतन से सीने अपने उसे ने विकास "! लिपटा लिया है क्यों घबराता तू "---? तेरी मा, बहन और पिता का हत्यारा तो मौजूद है

...... मैग्लीन ---
" हां ।"। मारूगा तडपाकर तडपा उसे । विकास छोडूंगा न जिन्दा मैं उसे...मेरे है में कब्जे वह "--- गुर्राया वतन "

"उसकी यही सजा है वतनमैं " --- कहा ने विकास "। है सजा यही उसकी- तेरे साथ हूं। जैसा तु कहेगा ही वेसे उसे---
"। मारेंगे
" बिकास ।पूछा ने वतन "..."जानवर अगर मेरी मां और बहन की लाशों का गोश्त खा गए होंगे तो हड्डियां तो बचीं ही होगी
?"

" छोड़ वतन, इस बात को छोड़ मेरे दोस्त । । कहा ने विकास "
लेकिन वतन नहीं माना । वह तो जैसे पागल हो गया था, बोलासाथ मेरे "-----, माँ , बहन की हड्डियां दूढने में मेरी मदद कर ।"
विकास ने, विकास के साथ विजय, अलफांसे इत्यादि सभी ने उसे रोकने, उसे पकड़ने की बहुत कोशिश की, मगर सबकी गिरफ्त से खुद को निक्लता हुआ लह मकान से बाहर निकला । लॉन की लम्बी, कटीली, झाडियों से युक्त जंगली घास में कुछ तलाश करने लगा ।
ठीक पागल। वह था रहा लग सा-

मकान के दरवाजे पर खड़े सभी उसे देख रहे थे । सोच रहे थेवक्त इस क्या- पागल वही क्या-वतन यह बाला आने रनज सा-जिस है वतनने समुद्र के पानी से सोना वना लिया ? जिसने विना हत्या किए अमेरिका जैसे राष्ट्र को झुका दिया ?

यकीन नहीं होता था कि यही वतन है वह ।

एकाएक चीख पड़ा वतन...'विकास, मेरी मां या बहन में से किसी की एक हडडी मिल गई ।"

सभी ने देखा, वतन के हाथ में सचमुच एक हडडी दबी हुई थी । बोलाइन्हीं"--- झाडियों में सारी हड्डियां होंगी । उन सभी को ठूंठ लुंगा ।:पुन वह और " झाडियों की खाक़ छानने लगा ।

जिस प्रचंड आग की तरह सारे चमन में यह खबर फैली थी , कि वतन गायब हो गया है, उससे भी कहीं ज्यादा तेजी के साथ यह खबर फैली कि वतन मिल गया है ।
बह अपने उस मकान में है , जिसमें उसकी मां और वहन की लाशें सड़। थी गई हो समाप्त सड़कर-

सारा चमन जैसे उस मकान पर ही उमड पड़ा ।

जिसने सुना, वही दौड़ पड़ा ।
कुछ ही देर बाद वतन के मकान से बाहर खड़ा अपार जन। था रहा कर जयकार जय की वतन समुदाय-
इस वक्त वतन अन्दर थाविजय---, विकास, अलफांसे, पिचासनाथ और बागारोफ के घेरे में । भावुकता के भंवर में डूबे वतन को सामान्य स्थिति तक लाने में काफी मेहनत का पड़ी ।

झाडियों में से वतन ने बहुत सारी हड्डियां ढूंढ ली थी ।। निदृसन्देह वे हडिडयां उसकी मां और बहन की थी ।

उन हडिडयों को विकास ने अपने कब्जे में कर लिया था ।
विजय, अलफांसे इत्यादि ने भावुकता के भंवर मे फंसे वतन को चमन के नागरिकों के सामने ले जाना उचित नहीं समझा था ।

वतन को नियंत्रित करने में उन्हें इतनी देर लगी कि चमन के निवासियों ने आज वतन के स्वागत करने के लिए जितने प्रबंध राष्ट्रपति भवन पर किए थेसब--- उसके मकान पर पहुंच गए ।।
वतन के घर के बाहर बैण्ड बजने लगे ।।
।लोग खुशी से नाच रहे थे ।

वतन बाहर आया तो उसकी जय। उठा गूंज़ आकाश सारा से जयकार-

चारों तरफ हर्षोल्लास, खुशियों में झूमता चमन ।। खुशियों का शोर एकाएक उस वक्त बन्द हो गया, जव हाथ उठाकर वतन ने सबको शांत किया ।

वतन के इस संकेत पर ऐसा सन्नाटा छा गया कि सुई भी गिरे तो आवाज हो ।

"मेरे प्यारे देशवासियों उठी गूंज आवाज की वतन "!..."मेरी माताओं बहनो, भाइयो और मेरे प्यारे वतन के नन्हें मुन्ने बच्चों ।। बज करीब बीस साल बाद हम आजादी की सांस रहे हैं । संकल्प करो कि आजाद ही रहेंगे, कभी दुनिया की किसी भी ताकत के अागे सिर नहीं झुकाएँगे । आज खुशी का मौका हैेखुशियां भरकर जी- मनाएं । ये दूटामकान फूटा-, जिसमें मेरा जन्म हुआ , अाप सब इस स्थान को जानते हैं । इस मकान में मां और बहन की लाशें सड़ा गयी हो समाप्त सढ़कर- इसी मकान में मैंने संकल्प लिया था कि अपने देशवासियों पर होने वाले जुल्म का सीना चीर दूंगा । इस छोटे संभालकर खुद बागडोर की देश से- स्वर्ग इसे बनाऊंगा । मेरा सौभाग्य है किं अाज अाप सब मिलकर इस देश की बागडोर मेरे हाथ में दे रहे हैं । जिस तरह आज़ तक चमन के हर नागरिक का दर्द मेरा दर्द रहाहूं करता वादा मैं--- हमेशा रहेगा । मेरी इच्छा है कि अाप सब स्वयं मुझे इस मकान से ऱाष्ट्रपति भवन तक पहुचाएं ।"

इस तरह बहुत थोड़े शब्दों में वतन ने अपनी अभिलाषा प्रकट की ।।

फिर खुशियों से भरा एक जलूस वतन के मकान से चला ।।। खुशियों में झूमते लोग अपना अस्तित्व भूलकर नाच रहे थे ।

चमन के हर बाजार, हर सड़क से यह जुलूस गुजरता चला गया ।

विकास इत्यादि जुलूस में सबसे पीछे वतन के साथ थे । चमन के नागरिकों ने सजा एक लिए के बैठने उसके संवारकर- विक्टोरिया तैयार की थी, किन्तु वतन उसमें नहीं बैठा, वह पैदल ही चल रहा था ।

वतन पर असंख्य'पुष्पों की वर्षा हो रही थी ।

"विकास अपनी आखों से सब कुछ देख रहा था...चमन् के बच्चे, स्त्री, पुरुष, बूढ़े , जवान वतन ,इस तरह पूज रहे थे मानो वह उनका राजा नहीं भगवान हो ।
बिकास ने देखा था, कोई बूढी महिला वेहद श्रद्धा के साथ उसके पास अाती वतन झुक्क कर उसके चरण छू लेता ।

---"अरे है कंहा मरी मां मेरी"-है कहता वतन तो चाहती हटना महिला बौखलाकर " ......अरे ....? तुम तो हो ?"

गदगद होकर महिला उसे अपने सीने से लिपटा लेती । विकास ने देखी थी। आंखें छलाती-छल की महिलाओं--

कोई युवती श्रद्धा के साथ उसे माला पहनाना चाहतीं तो बीच में ही हाथ रोककर कहता वतन..."भाई को माला नहीं पहनाई जाती बहन हो छवि की छवि मेरी तो तुम ! ।।।। जब तू इसे अपने पति के गले में डालेगी तो तुझे सहारा 'दूगा मैं ।"

आखें भरकर चरणों में झुकती तो बीच में ही रोकर बोलती पगली, भाई के पैर छुकर क्या मुझे पाप लगाएगी ?"

कोई बच्चा अाता तो वतन गोद में उठाकर उसे चूम लेता।।
"बिकास देख रहा था और साथ ही साथ सोच भी रहा था...क्या वतन के अतिरिक्त दुनिया के किसी अन्य आदमी को कभी इतने जनसमु-दाय का इतना अधिक प्यार मिला है ? सम्भव है, मिला हो, किन्तु ऐसी श्रद्धा तो लोग भगवान के अलावा किसी को नहीं देते ।

और।। था समझा मुजरिम को वतन तो ने लोगों उन और...

न जाने क्यों विकास स्वय को वतन के सामने बहुत बौना सा महसूस कर रहा था । बिकास वतन को मिलने वाली उस असीमित श्रद्धा को देखता रहा, उसके साथ चलता रहा । सारे चम्न की सड़कों से होता हुआ जुलूस शाम के चार बजे राष्ट्रपति भवन पर

पहुचां ।।। राष्ट्रपति भवन से अमेरिका का झण्डा उतारकर चमन का झण्डा । गया फहराया-

अनेक प्रोग्रामों के बाद यह वक्त अ ाया जब वतन का राजतिलक होने वाला था । वतन ने कहा..."मेरी इच्छा है कि मेरे माथे पर सबसे पहला तिलक फलवाली दादी मां करें ।"

नागरिकों की तरफ से वतन की इच्छा का हर्षध्वनि से स्वागत किया गया ।

वतन ने पुनकहा :..."मैं दादी माँ को लेकर अ ा रहा हूं।ही साथ के कहने ", भीड़ के बीच से निकलता हुआ वतन राष्ट्रपति भवन से बाहर निकल गया ।

अपोलो घण्टियां बजाता उसके साथ था । अन्य की तो बात ही दूर, विकास इत्यादि में से भी किसीने उसके साथ चलने का उपक्रम नहीं किया ।

खुद ही कार ड्राइव करता हुआ वतन बूढिया की झोंपडी पर पहूंचा ।

अन्दर से आव्ज अ ाई है कौन "----?"

"यह मैं हूँ दादी मांबेटा तुम्हारा-, वतन ।"

"आ गया तू कलमुंहे ।आई आवाज से अंदर "..."राजा बनते ही भूल गया मुझे।"

दरवाजा खुला, सामने थी अ ात्यधिक बूढी महिला ।

बेहद श्रद्धा के साथ वतन ने उसके पांव छू लिए, बोला "। मां दादी करना माफ "---

"माफ हटी हटी पीछे तरह इस कहकर " ! जैसै वह वतन से बेहद नाराज़ हो'-"राजा बनते ही उन फलें को भूल गया, जो मुझसे उधार खाए थे ? मैं यहां बैठी हूं कि मेरा उधार चुकाने आएगा और तू रे था गया चला कहां..तू...?"
" कहीं भी तो नहीं मां । अपने"---कहा में स्वर गम्भीर ने वतन "घर में ही तो ग़या था । सोच रहा था कि आखिरी बार मैंने अपनी मां और बहन की लाशों को वहीं छोडा था"। जाएं मिल शयद-

"पागल ।। लिया लिपटा से गले अपने कों वतन उसने कहकर "

" मैं भूला नहीं हूं दादी मां कहा ने वतन "!`--"तुमसे उधार लेकर नौ सौ आठ सेर फल खाए हैं मैंने । आज तुम्हारा आज... मां दादी । चुकाऊंगा उधार सारा, हिसाब में तो गड़बड़ नहीं है ? तुम्हें भी याद होगा ।" " बेटे चाहे याद रखें कि उनकी मां ने उन्हें कब क्या दिया है लेकिन मां याद नहीं रखती । इसलिए नहीं कि उसे याद नहीं रहता बल्कि इसलिए कि वह याद रखना नहीं चाहती । बेटे तो कपूत होते हैं न, लेकिन मां कुमाता नहीं ।"

" फिर भी दादी मां...हिसाब तो है ।"

" तो ला फिर, देता ,क्यों नहीं मेरे पैसे?" बूढिया ने उसे डाटा क्या देगा भर पेट से बातों ही यूं "-?"

" दूंगा क्यों नहीं दादी मां कहा ने वतन "!..."तुम्हें साथ ले चलने के लिए ही तो अ ाया हूं।"

"कहा ?"

"राष्ट्रपति भवन में ।"वहां रहे कर इन्तजार तो ही तुम्हारा सब "-----बोता वतन "

"`वहां मेरा क्या काम ?" बुढिया ने सुनकर कहा..."मेरे पैसे देने हैं, पैसे दे और जा यहां से ।"

"क्यों मां, क्या इस लकीर को भूल गयी तुम ?" अपने सीधे हाथ में चाकू द्वारा वनी लकीर के सूखे ज़ख्म को दिखाता हुआ वतन बौलातो से चाकू ही तुम्हारे"--- यह लकीर बनाई थी । तुमने कहा था न कि जिसके हाथ में यहा लकीर नहीं होती, वह राजा नहीं बनता । अगर तुम उस दिन मुझे यह बात न बतातीं दादी मां, तो मुझे क्या पता लगता ? मैं भला अपने हाथ में लकीर क्यों बनाता । यह लकीर न बनाता तो सच दाद्गी मां, मैं राजा तो की थोड़े ही ना बन सकताथा।"
" पगला ।लिया लिपटा से जोर और उसने को वतन "..."मैंने तो तुमसे झूठ बोला था ।"

"'मैने तो सच ही समझा था मां यह में हाथ अपने मैं"----बोला वतन "!लकीर न बनाता तो कभी राजा नहीं बनता । मेरा विश्वास है मा कि इस लकीर की वजह से ही राजा बना हूं मैं । क्या तुम मुझे अपनी आंखों से राजगद्दी पर बैठा हुआ न देखोगी ?"
"अच्छा चल, मैं चलती हुंज्यादा--, बात मत वना ।।रहत इस "...फलवाली बुढ़िया को अपने साथ कार में बैठाकर वतनने कार दौड़ा दी।।

तब की ब्रेकों जबकि-- चरमराहट करती हुई कार एक झटके के साथ रुकी सबसे पहले खुली हुई खिड़की से बाहर कूदा अपोलो । घंटियों की आबाज से वातावरण झनझन्नाया ।

अगले हीं पलद ।।सहारा गई रह होकर विलीन टनटनाहट की घंटियों में आवाजों की शहनाई और बैंड-ेकर वतन ने बुढिया को कार से बाह्र निकला । जोरदार स्वागत किया गया ।

बुढिया पर फूलों वर्षा हो रही थी । वे राष्ट्रपति भवन में प्रविष्ट हो गए ।

"दोनो तरफ व्यवस्थित ढंग से चमन के नागरिक खड़े थे । दरवाजे के ठीक सामनेदूर --- सिंहासन रखा हुआ था । वतन और फलवाली बूढी मां की जय जयकार से सारा चमन गूंज उठा ।

बैण्ड बन्द हो गए । शहनाइयां खामोश हो गई ।।
'वतन' बुढिया को सिंहासन के करीब ले गया । बोला बैठाकर पर सिंहासन को मां अपनी राजा का देश इस ! मां दादी बेठो"-, राज करेगा ।"

चौंक पडी बुढिया, बोलीबे है कहता क्या ये"---टा ? यह गदी तो तेरी है ।"

" नहीं दादी मां ।कहा ने वतन "'---"गद्दी मां की है बेटा--- तो मां की सेवा करेगा ।"

" नहीं वतनबस तो मुझे "--- बुढिया पडी़ रो मारे के खुशी "! बेटे मेरे नहीँ--- सिर्फ मेरेे पैसे दे दे ।।

" पैसे तो दूगा ही मा ।। पहल "---बोला वतन "े बैठो तो सही यहां ।।"
खुशी से रोती हुई बुढिया को राजगद्दी पर बैठना ही पड़ा ।

फिरथी रोली में थाली । लाया थाली एक बिकास-, साथ ही चावल और एक हीरेजड़ित- सोने का मुकुट । वतन ने रोली में अंगूठा भिगोया, बोला"----, गद्दी पर तुम बैठा करोगी मां ।। दुनिया चाहे यह जाने कि चमन का राजा वतन है, लेकिन हकीकत यही रहेगी कि यह गद्दी तुम्हारी है । तुम वतन की माँ हो, इस देश के राजा ,. की मां...इस देश की मां । कहते " । उसने दी लगा रोली पर माथे के बुढिया हुए
झर झर करके बुढिया की आंखों से खुशी के आसू बहते रहे । वतन ने माथे पर रोली पर चावल चिपका दिए ।

फिर ताज हाथ मैं लेकर कहने लगामां दादी समझना मत यह "----, कि यह मुकुट मैं तुम्हें मुफ्त में, खैरात में या कोई एहसान करने के लिए दे रहा तू । यह तो उन नो सौ आठ सेर फलों की कीमत है जो तुमने मुझे उधार खिलाए हैं ।" इतनी खुशी मिले तो इन्सान पर सहन नहीं होती । खुशी चरम सीमा का प्रतीक होता है फूट। पडी रो बुढिया । रोना फूटकर-
वतन ने उसके सिर पर ताज रख दिया ।

फ़लबाली बुढिया की जय जयकार से वातावरण गूंज ऊठा ।।

बुढिया की आखों से आसूं झलक रहे थे ।

रोते रोते अचानक वह बोली "-'वतन, मेरे बच्चे देख !, मुझ पर यह खुशी सहन नहीं हो रही है । अब देख देख मैं..... का स्वर्ग लिए मेरे तूं कि हू रही दरबाजा खोल रहा है, अरे तू तो बुला रहा है मुझे रही आ मैं...वेटे अाई...... हूं ।"

" दादी मां! मां दादी..." कन्धों से पकडकर वतन उसे झंझोडता हुआ बोलाहो क्या"---गया तुम्हें होश में आओ ।"

और, वास्तव में फ़लबाली बुढिया अपनी सुधबुधु खो बैठी थी । उसकी आंखें अन्तरिक्ष में जम गई । वहीँ अन्तरिक्ष में निहारती, खोईरही कह सी- थीबेटे"---, तूने मेरे लिए स्वर्ग का दरवाजा खोल दिया"। हूं जाती हां----

"मां…मांब को बुढिया "!...ूरी तरह झंझोड़कर चीखता हुआ रो पडा वतन तुम हो रही कह क्या... आओ में होश"----?"

बुढिया हल्के से चौंकी, वतन के चेहरे को देखा, बोली"। वतन हूं रही जा मैं "-----

" कहा मां ?" वतन तड़प उठा कहां "---?"

"वहीँ, स्वर्ग में..." वतन का चेहरा देखती हुई वह बोली"----तु रोना नहींमुझे... हाँ जाना है..."

" नहींमा., नहीं ।----वतन पड़ा रो "'"जिससे भी प्यार होगा, क्या वह मर जाएगा ? मां नहीं दूंगा नहीं मरने तुम्हें मैं ! "।

"'पागल "--कहा ने बुढिया "!'अरे मेरी तो उम्र ही मरने की है । वह तो उधार लेने के लिए जिन्दा थी मैं । उधार ले लियाहै कसम तुझे चलूं। मैं अब ---- मेरीन आंसू भी एक पर लाश मेरी ----हैं कसम् मेरी --- रखना याद । वतन ----- बहेतरह उसी ठीक काम सारा का राजतिलक तेरे देख । का प्रजा तेरी न तेरा ही न- होना चाहिए , जिस तरह होता है ।"
"ऐसा मत कहो दादी मां, सा मत कहो ।तढ "ृपकर रो पड़ा वतनहूं बुरा इतना मैं क्या"--- मां, कि जिससे भी मैं प्यार करूं, उसे ही खा जाऊं ? अपनी मा से प्यार किया था, वहन से प्यार किया था, पिता से प्यार किया था; उन सबको तो बचपन मे ही खा गया मैं । जब उन सबके बाद तुम्हीं से तो प्यार किया है मैंने, तोतो... क्या तुम्हें भी खा जाऊंगा मैं ?"

…"क्या वेवकुफ है रे तू जो मरती हुई मां की नहीं सुनतारहा जा हांके अपनी- है ।---कहा ने बुढिया सी खोई तरह उसी " प्यार भी से पापी तू...सुन...सुन" करेगा तो स्वर्ग में जाएगाअपने मिनट दो अरे....हूं रही आ-भाई हां...हां... बेटे से तो बात कर लूं। वतन। हैं रहे बुला मुझे देवता के स्वर्ग...देख... वेटे, ज्यादा वक्त नहीं है मेरे पासंसुन से ध्यान...…-अगर एक भी आसू बहा, तेरे राजतिलक के किसी भी काम में , मेरे जाने से कोई फर्क अाया तो सच कहती हूं आत्मा मेरी- --- "रहेगी। भटकती हमेशा

और उस बुढिया। थे शब्द आखिरी ये निकले से मुंह के-

सिंहासन की पुश्त से सिर जा टकराया उसका । वह ठंडी हो गई।। निश्चल-

अवाक। गया रह देखता उसे से में चश्मे काले अपने वतन सा-

दरबार में सन्नाटा छा गया। सन्नाटा का मौत----

"कोई रोएगा नहींक चमन पूरे ने गर्जना इस की वतन "ो हिला डाला…'किसी भी आंख से कोई आंसु नहीं निकलेगा । आज वतन तुम्हारा राजा वना है । एक बार फिर आज वतन को की मरी है । जश्न मनाओ"। बजाओ शहनाइयाँ-

जवाबसन्नाटा में .…वही मौत का ।
"सुना नहीं था तुमने ?" दर्द से भरी वतन की गुर्राहट कहा क्या अभी ने मां मेरी"--था"। बजाओ बैण्ड "---

औरकी शानाइयों और वेण्ड जैसे कुछ सब- आवाज में दबकर रह गया ।

सिंगही

वड़ा अजीब जश्न मनाया जा रहा था ।

फ़लवाली बूढ़ी मां की लाश को सीधी करके सिंहासन पर रख दिया गया था ।

उसी सिंहासन के बराबर में एक छोटे सिंहासन पर बैठ गया था वतन ।

देखने वाले हर पल उसके होंठों पर मुस्कान देख रहे थे । आखें तो उसकी कोई देख ही नहीं सकता था । हमेशा की तरह उसृकी आंखें काले चश्में के नीचे छुई थी ।

बैण्ड और शहनाइयां बज रहीं थी, चमन के नागरिक खूशी से नाच रहे थे--वतन का आदेश जो था । परन्तु वतन के आजाद होने का जश्न मनाते हर आदमी की आंखों में आंसू थे ।

मजाल थी किसी का एक भी आंसू आखों की सीमा को तोड़कर गालों तक अ ाता ।

फिर---वह वक्त अ ाया---जब राजतिलक, होने वाला था ।

सभी आवाजें थम गई तो वतन ने कहा-"मेरी इच्छा थी कि माथे पर सबसे पहला तिलक दादी मां लगाएं किन्तु... "

"अभी तो हम जिन्दे हैं बेटे ।" सबके साथ वतन भी चौंक पड़ा क्योंकि राजमहल में गूंजने बाली आवाज सिंगहीं के अलावा किसी की नहीं थी ।

हर निगाह दरवाजे की तरफ उठ गई ।

सिंगहीं चला अ ा रहा था । जो सिंगही को जानते थे, वे तो उसके भयावने चेहरे को देखते ही सहम गए । परन्तु इस दरबार में ज्यादातर लोग ऐसे थे जिन्होंने सिंगही का सिर्फ नाम सुना था, आज ही पहली वार देख रहे थे ।

देखने वालों के जिस्मों में झुरझुरी-सी दौढ़ गई ।

लोगों ने देखा...किसी मुर्दे जैसा चेहरा, चेहरे की हर हडडी उभरी हुई । गड्ढों में धंसी छोटी-छोटी किन्तु बेहद चमकीली आखें । दोनों तरफ से होंठों पर झुकी मुंछें । दाढ़ी के ठोढ़ी पर कम बाल थे किन्तु वेहद लम्बे । सिर पर गिनती के ही बाल थे ।

... चेहरे की सम्पूर्ण खाल इस तरह झुलसी हुई थी मानो कि निचोढ़ने के लिए उमेठ हुआ कपडा ।

पतले-बेहद पतले होंठों पर मुस्कान थी ।

"'गुरु अ ाप !" सिंगही को देखते ही श्रद्धापूर्वक वतन सिंहासन छोड़कर खड़ा हो गया ।।

-"अभी हम मरे नहीं हैं वतन बेटे ।" सिंगहीं की भयानक , आवाज राजमहल में सरसरा उठी ---" यह दूसरी बात थी कि राजा बनते ही तुम गुरू को भूल गए । "

" तुम उस वक्त तक एक पट्टा लिखवाकर आए हो चचा, जव तक साली ये दुनिया चलेगी ।" इससे पूर्व कि वतन कुछ जवाब दे, विज़य बोल पड़ा---"तुम साले नम्बर एक के बेशर्म 'भला मर कैसे सकते हो ?"

विजय को देखकर हल्के से मुस्कराया सिंगही, बोला---"बेटे तुम सबको मारने के बाद ही मरेंगे हम ।"

"मरने वाले हम भी नहीं हैं चचा ।"

इससे पहले कि सिंगही पुन: विजय के जवाब में कुछ कहता, वतन ने कहा...गुरु आओ, यह सिंहासन खाली , आपके लिए ।" हल्के से मुस्कराया सिंगही कहने लगाहै नहीं नामर तरह की मां दादी बूढी इस मुझें बैठकर पर सिंहासन उस"---- ।। चमन का यह सिंहासन राजा के रूप में सिर्फ तुम्हें स्वीकार करता है कोई अन्य राजा बनना चाहेगा तो अंजाम तुम्हारी दादी मां जैसा होगा । हमें तो पता लगा था के अ ाज हमारा वतन चमन का राजा वनने जा रहा है, सोचातुम्हें शायद--- हमारे आशीर्वाद की जरूरत हो ।"

इस बीच सिंहासन की सीढियां तय करके वतन सिंगही के करीब अ ा गया था ।

पूर्ण श्रद्धा के साथ झुककर उसने सिंगहीं के चरण स्पर्श कर लिए । सिंगही ने प्यार से उसक सिर पर हाथ फेरा । उठाकर कलेजे से लगाया, बोलारहो खुश"- वतन हुई पूरी इच्छा संजोई से बचपन तुम्हारी आज कि हो मुबारक से तरफ मेरी ! ।"
'"आपके आशीर्वाद से ही यह संभव हो सका है, गुरु । मुझसे नहीं तो नाराज अ◌ाप गुरु""----कहा ने वतन "?"

"'क्यो ? किसलिए नाराज होना चाहिये मुझे ?"
"वो".....गया हो असफल ही में बीच अभियान आपका । दिया कर नष्ट अडडा अ◌ापका मैंने"----वतन हिचका..

" पगला !" सिंगही कह उठा…"इसमें नाराज़ होने जैसी क्या बात है ? मैं तो पहले ही जानता था कि तुम्हें हिंसा पसन्द नहीं, और अगर तुम्हें मेरे अभियान के बारे में भनक भी लगी तो तुम मेरा विरोध करोगे । इसीलिए तो वह सब कुछ तुमसे छूपाकर किया था । मगर, तुम वहां पहुच गए । जो हुअ◌ा वह मेरे लिए कोई नई बात नहीं । हांकि है खूशी अपार मुझे की बात इस- तुमने काम यह बार इस किया! ने शागिर्द मेरे ... शिष्य मेरे "-----"

" गुरू ।" वतन ने विनती----की सी-'' यह हिंसा छोड क्यों नहीं देते "....

…"'वतन ।ह शागिर्द भी अ◌ाज तुम "---कहा ने सिगहीं काटकर ही में बीच बात उसकी "◌ो न मेरे ?"
" कैसी बात करते हैं गुरू " । रहूगां हमेशा !

"हमारी एक वात मानोगे ?"

" अ◌ाप कहकर तो देखिए ।"---कहा ने वतन "'हां, किसी निर्दोष की हत्या का अ◌ादेश न देना ।"

"जाकर चुपचाप सिंहासन पर बैठ जाओ। सिंगही ने कहा…"इधरसमय में बातों की उधर- जाया मत करों सं आज तुम्हारा राजतिलक होना है । हमें तो बुलाया नहीं तुमने, लेकिन हम खुद ही चले अ◌ाए । सोचा…शिष्य नालायक हो जाए तो गुरु को उसका अनुकरण करना नहीं चाहिए ।" वतन कुछ नहीं बोला । चुपचाप गर्दन झुकाकर मुड़ा । आहिस्ता हुआ लताच अ◌ाहिस्ता- पहुंचा नजदीक के सिंहासन वह, फिर उस पर बैठ गया । इधर विजय सिंगही से कह रहा थाचचा"---, हो तुम पूरे बेशर्म ।"

" मेरी नहीं वतन की बात करो विजय बेटे "!
सिंगही ने कहाबोलो"---, गलत तो नहीं कहा था हमने? है ना मेरा बतन बच्चा का शेर----?"

"अवे जाओ चचा, तुम गधे के बच्चे भी नहीं "!

इधर विजय की बात पर सिंगही ने जैसे कोई ध्यान ही नहीं दिया । वह तो विकास को देख रहा था, बोला…"क्यों विजय बेटे सबसे का दुनिया यह तुम्हारा आज ! खतरनाक लड़का क्यों चुप है ?"

"'ये सोचकर दादाजान' कि मुकद्दर भी ऊपर वाले ने क्या चीज बनाईं है विकास "! ने कहाचन जैसे वतन"----◌्द्रमा पर यह ग्रहण लगाया था कि उसके गुरु अ◌ाप हैं । सो लग गया उस पर गुरु, शुक्र मनाओ कि वतन आपकी इज्जत करता है ।"

-"'हा। सिंगही पड़ा हस से जोर बहुत अचानक "! हा...हा...

ऐसी भयानक हंसी जैसे अचानक कब्र में दबा कोई मुर्दा खनखनाकर हंस पड़ा हो । चमन के नागरिकों के जिस्मों में आंतक की लहर दौड़ गई । रीढ की हडिडयां कांप उठी, फिर सिंगही की सर्द अवाजहै बच्चा का शेर वतन मेरा कि तुम गए मान "---
।"

"प्यारे सिंगही ।"। सके का न सहमत से ईरादों नापाक अपने भी को चेले अपने तुम है दुख"----बोला अलफांसे एकाएक "
"मुझे किसी को अपने 'इरादों' से सहमत करने की जरूरत नहीं है मिस्टर अलफांसे !" सिगहीँ ने कहा इरादे अपने"-------
दिन एक । हूं काफी ही अकेला मैं का मैं अकेला ही इस सारी दुनिया का, जिसमें तुम भी होगेदिखाऊँगा बनकर सम्राट- ।"

" कम से कम उस वक्त तक तो ऐसा हो नहीं सकता, जब तक कि अलफांसे जिन्दा है ।"

"'खैर ।कहा हुए देखते तरफ की वतन ने सिंगही ", जो उसके अादेश के मुताबिक सिंहासन पर जाकर बैठ गया था इस"---बल्कि नहीं करने बहस कोई से किसी हम वक्त अपने वतन` का राजतिलक करने आए है ।"

कहने के साथ ही सिंगही सिंहासन की तरफ बढ गया । सिंहासन के समीप ही एक स्टूल पर रोली और चावल की थाली रखी थी । करीब पहुंच कर सिंगही ने रोली में अंगुल डुबोया । वतन की तरफ देखकर वह मुस्कराया--- पहली बार---हां, देखने बालों के लिए शायद यह पहला ही मोका था जब सिगहीँ के होंठों पर ऐसी प्यारी मुस्कान उभरी थी । आंखों में चमक, खतरनाक नहीं, खुशी की चमक !

उसने टीका वतन के गोरे माथे पर लगाया, साथ ही बोला-"मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है बेटे । दुनिया कहती है, मैं भी मानता हू कि सिंगही ने किसी का सगा होकर नहीं रहा । मोका मिलते ही सबसे पहले मैं अपने साथियों को मारता हू। बेशक तुमसे मिलने से पहले सिंगही के पास सिर्फ दिमाग था, दिल नहीं, लेंकिन...लेकिन... तुम मिले तो मैंने जाना कि मेरे सीने में कहीं-न-कहीं दिल भी है । तुमसे मिलने से पहले सोचता था कि लोगों को एक दूसरे से प्यार क्यों हो जाता है ? तुमसे मिला तो जाना-प्यार मुझे भी हो गया है । मेने अपने ईलावा किसी के बारे में कभी यह नहीं सोचा कि वह ऊंचा 'उठे-कुछ बने, किंतु न जाने क्यों, दिल चाहता है कि तुम ऊंचे बनो ! मेरा आशीर्वाद तुम्हरे साथ है । इस छोटे से मुल्क की यह राजगद्दी तुम्हें मुबारक हो ।"

फिर...उसने रोली पर चावल भी चिपका दिए।

एक बार पुन: श्रद्धापूर्वक वतन ने झुककर' सिंगही के पैर छुए ।

चरणों से उठाकर सिंगही ने उसे सीने से चिपका लिया ।।

" मेरा बच्चा होकर काम तो तुमने दुश्मनों वाला किया था वतन, गुस्सा , भी अाया था । सोचा था तुम्हें उस गुनाह की सजा दूं जो तुमने किया। मगर न 'जाने क्यों माफ कर दिया तुम्हें ।"

वतन को सिंहासन पर बैठाकर सिंगही नीचे उतर आया । फिर राजतिलक का दौर चला ।

अलफासे ने किया, विजय ने क्रिया, तो बोला---"याद है बेटे एक महीने के बाद ही राजा बने हो ।"

वतन धीमे से मुस्कराकर रह गया ।
पिचासनाथ के बाद विकास ने किया ।

अपोलो औंर धनुषटंकार के बाद, बागारोफ ने तिलक लगाते हुए कहा..."साले गुलाब की दुम, तुम शायद पहले मुजरिम हो, जो एक ऐसे आजाद देश का राजा बने हो जिसे धीरे-धीरे करके दुनिया के सभी राष्ट्र मान्यता दे रहे हैं ।"

"सब अाप, जैसे बुजुर्गो का आशिर्बाद है चचा !" वतन ने कहा था ।"

तिलक करने के खाद बागारोफ अभी सिंहासन से नीचे उतरा ही था ।

-"उपस्थित्त सज्जनों को प्रणाम !" दरबार में एक ऐसी आबाज गूंजी जैसे आचानक फुल साऊंड पर चलता हुअा रेडियों खराब हो गया हो !

अन्य सब तो चोंकें लेकिन जानकारों के मुंह से निकला--------टुम्बकटू..टुम्बकटू..!

महाबली टुम्बकटू

।

मगर-दरबार में कहीँ नजर नहीं अा रहा था वह । सब इधर उधर देख रहे थे ।।।

अन्य सब तो चोंकें लेकिन जानकारों के मुंह से निकला--------

टुम्बकटू!..टुम्बकटू.......

महाबली टुम्बकटू ।।।।

मगर।।। थे रहे देख उधर इधर सब । वह था रहा अ ा नहीं नजर कहीँ में दरबार-

पुनगूंजी आवाज वही :... " शुतरमुरग की औलादों की तरह इधर उधर क्या देख रहे हो सज्जनों , मैं यहां हूं । "

इस बार आवाज ने सबका ध्यान सिंहासन की तरफ खींच लिया । लोंगों ने देखा ---- सिंहासन के नीचे से किसी सांप की तरह बल खाकर रेंगता हुआ टुम्बकटू बाहर अ ा रहा था । वह कब बाहर आगया, यह कोई न देख सका । सबने देखा कि दरबार के बीचों बीच खडा यह उस गन्ने की तरह लहरा रहा था जो एक लम्बेके खेत चौड़े- बीच अकेला खड़ा किसी तेज तूफान का मुकाबला कर रहा हो ।

...'"अबे कार्टून मियां पड़े टपक से कहां तुम-?" विजय ने कहा ।

" टपका नहीं प्यारे इकझकिए, बल्कि इस सिंहासन के नीचे अटका पड़ा था ।" टुम्बकटू की घरघराती आवाज मियां बुजुर्ग "---- निकलना कि है वज़न इतना में चाहकर भी मैं निकल सका । सिंहासन से नीचे उतरे तो वजन कुछ क़म हुअ ामैं--- बाहर आ गया ।"

"'क्या बकता है वे चमार चोट्टी के ?" बागारोफ़ दहाड़ासाले अवे"----, हमें क्या हाथी का बाप समझ रखा है ?"

" हाथी का नहीं बुजुर्ग मियां, हथनी का ।"

ओंर। पर उस पड़ा झपट बागारोफ-

किन्तु टुम्बकटू छलावा !!!!

उसके जिस्म को छू लेना ही एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने के वरावर था ।। वह भला बागारोफ के हाथ कब अ ाने बाला था ? नतीजा यह कि टुम्बकटू अ ागे और बागारोफ पीछे जितने जाने न उसने को बागारोफ ! चक्कर लगवा दिए ।

तब जबकि चमन के नागरिकों ने टुम्बकटू की आवाज सुनी थी, तो कांप उठे थे ।

मगर जब उसे देखा तो मुस्करा उठे नहीं क्यों भी मुस्कराते !?

दुनिया का सबसे बडा कार्टून जो उनके सामने था। था रहा झूल कोट एक पर जिस्म ! आदमी मोटा जितना गन्ने किसी---

ऐसे जैसे किसी हैंगर पर झूल रहा हो । दुनिया का एक भी रंग ऐसा नहीं था जिसे उस में न देखा जा सके । चमन के साधारण नागरिकों के लिए यह एक नमूना ही था ।

दुम्बकटू चन्द्रमानव है आदमी ताजा-मोटा सबसे का चन्द्रमा यह कि है कहता !, वेहद खतरनाक विवाद यह जब कि इतना ! का सर्विस सीक्रेट अन्तर्राष्टीय कि उठा चीफ कौन बने तो फैसला यह हुआ था कि जो टुम्बकटू की जांध से फिल्म निकाल लेगा वहीँ चीफ बनेगा ।

***** सीक्रे्ेट सर्विस का चीफ कौन चुना गया । उसे चुनने की क्या प्रक्रिया हईं ? और भी कई सबालों के जबाब के लिए पड़े-
सबसे बड़ा जासूस और चीते का दुश्मन' । ******

हां ऐसा ही खतरनाक था वह गन्ने जैसा व्यक्ति !

किन्तु इस वक्त तो चमन के साधारण नागरिकों को हंसारखा कर पोट-लोट हंसाकर- था उसने । हंसते भी क्यों नहीं, समय ही ऐसा था । कुछ ही देर बाद बागारोफ की सांस फूल गई ।

एक जगह खड़ा होकर वह किसी हब्शी की तरह सांस लेने लगा ।।

उसके ठीक सामने गन्ने की तरह लहराता टुम्बकटू बड़े अदब से झुका हुआ कह रहा थाहै अर्ज आदाब"----, बुजुर्ग मियां सच कहता हूं आज अगर तुम मुझें पकड़ नहीं सकैं तो बच्चों की चाची का हवाई जहाज बना दूगा ।"

एक कदम भी भागना अब बागारोफ को जैसे असम्भव नजर जा रहा था ।

अपनी जगह पर खडा हुआ वह टुम्बकटू को उल्टी सीधी गालियां बकता रहा । उनकी झड़प से दरबार में मौजूद हर आदमी जैसे यह भूल गया कि वतन के पास ही वतन से ऊचे सिंहासन पर एक लाश बैठी है। लाश की मां बूढ़ी फलबाली-काफी देर बाद अलफांसे ने कहा तुम हो अाए करने क्या यहाँ टुम्बकटु मिस्टर"---?"

"अबे बाह अन्तर्राष्टीय कहा लहराकर ने टुम्बकटू "!..."साले हमारीतुम्हारी- बिरादरी का एक भाई राजा बना है, ओर तुम कहते हो कि हम यहा क्यों अाए हैं ? अवे शुश होने अाये कि हमारे बिरादरी भाई अब ऐसे राजा बनने लगे हैं जिन्हें दुनिया के

राष्ट्र मान्यता दें ।"

"मिस्टर कार्टून ।।"। है नहीं मुजरिम वतन"---अलफांसे उठा गुर्रा "

"अजी कैसे नहीं है ?"

"मुझे भी शायद बच्चा समझ रखा है ?" कहने के साथ ही अलफासे संतुलित कदमों से उसकी तरफ बढ़ गया..."हम दोनों मुजरिम हैं अगर वतन को बिरादरी भाई कहा तो तुम्हारे इस ज सेजै गोन्ने .िस्म को धुटने पर रखकर तोड़ दूंगा ।"

" ठहरो चचा ।।बोलता कुछ टुम्बकटू कि पहले इससे ", सिंहासन पर बैठे वतन ने कहा..."कार्टून चचा ने गलत नहीं कहा है । मुजरिम तो हूं ही मैं सच !, खुद को मुजरिम मानता के लेकिन साथ ही यह दुआ भी करता हूं कि जहां भी जुल्म हो भगवान वहा मुझ जैसा एक मुजरिम जरूर पैदा कर दे ।"

अत्तफांसे ठिठका, वतन की तरफ पलटकर बोला हो नहीं मुजरिम तुम ! वतन हो रहे कर बातें कैंसी"-?"

"आपके मानने और कहने से हकीकत नहीं बदल जाएगी चचा कहा ने वतन "!..."आवश्यक है कि महान सिंगही का चेला मुजरिम ही हो । बेशक अपने वतन को मैंने मुजरिमाना ढंग से ही आजाद क्रिया है । दुनिया की नजरों मैं मुजरिम हूं और सचमुजरिम-- ही रहना चाहता हूं ।। हा, तो मिस्टर टुम्बकटू क्या चाहते आप, किस ,इरादे से यहा अाए हैं ?"

"एक ऐसे बिरादरीर का मुल्क आजाद एक जब जो देने मुबारकबाद को भाई-ाजा है ।" सिंहासन की तरफ़ बढते हुए टुम्बकटू ने कहामें राजतिलक तुम्हारे भी हम "-- भाग लेने अाए हैं ।"

सिंहासन की सीढ़ियों पर चढ़कर वह वतन के करीब पहुंचा । लहराकर उसने अपना अंगूठा थाली में रखी रोली की तरफ बढाया ही था कि... अचानक, सब चौंक पड़े ।।

प्रिंसेज जैकसन

ज्यादातर की तो चीखे निकल गयी । देखने वालों ने देखा--- एक लाल किरण टुम्बकटू के गन्ने जैसे जिस्म के चारों तरफ लिपट गई । टुम्बकटू के मुह से कोई आवाज भी नहीं निकल सकी कि उसका जिस्म हवा में उड़ता चला गया ।

" तुमसे पहले वतन का राजतिलक मैं करूगी मिस्टर कार्टून ।" हर व्यक्ति को ऐसा लगा जैसे उसके कानों में शहद' उंडेला जा रहा हो ।

" हाय मेरी स्वप्नसुन्दरी ।" टुम्बकटू का दिल यह नारा लगाने के लिए मचल उठा । परन्तु क्या करता ? मजबूर था बेचारा । किरण में कैद वह दरबार की गुम्दनुमा छत के करीब हवा में लटक रहा था । इस वक्त कुछ बोलना या अपने जिस्म के किसी अंग को हिलाना उसके बश में नहीं था ।

"हाए मम्मी, कहां हो तुम नारा विजय ने लगाया---" दर्शनअभिलाशियों को दर्शन तो दो ।"

" जरूर ।।" इस खनखनाती आवाज के साथ ही एक तेज़ झनाका हुआ । "

प्रिंसेज जैकसन की विशेषता न जानने वाले लोग दहल उठे । दरबार के एक कोने में अाग का शोला लपलपाया । चक्कर खाकर अाग का शोला हवा में गायब, दरबार में हर इन्सान की निगाह उधर ही जमी हुई थी । फिर देखने बालों ने देखा, तो देखते ही रह गए ।। विश्व की सर्वाधिक सुन्दऱी उनके सामने थी...प्रिंसेज जैकसन ! सोन्दर्यं को भी सजा वाली सुन्दरता । दूध जैसा गोरा रंग, ऐसा कंठ कि शराब का एक घूंट भरे तो गले के बाहर से ही अंदर की शराब चमके ! गोरे मस्तक पर झिलमिलाती एक काली बिंदिया । मस्तक पर मुकुट ।

लोग उसे ही रह गए---अपलक !

पलक मारना ही जैसे मूल गए थे ।

प्यारी-प्यारी चमकीली आखें सिंगही पर जमी, गुलाबी अधरों मैं कम्पन हुआ..."महामहिम को मेरा प्रणाम ।"

सिंगही ने गर्दन अकड़ाकर सिर झुकाया ।

अलफांसे की तरफ देखती हुई जैकसन बोली---" क्या मिस्टर अलफासे को मेरे आगमन की खुशी नहीं हुई ?"

\'"अंक्रल को खुशी क्यों नहीं होगी आण्टी ?"' अलफांसे से पहले विकास बोल पड़ा---" तुम आण्टी हो मेरी और ये अंकल, अब अाप खुद ही समझ सकती हैं कि आपका और इनका क्या रिश्ता है । इस रिश्ते में अगर किसी को किसी का इन्तजार भी हो तो सबके सामने नहीं कहा जाता ।"बड़े ही आकर्षक ढ़ंग से मुस्कराई जैकसन, बोली अंकल तुम्हारे हैं तैयार तो हम "----" । करो तैयार इन्हें । साथ के

" मुबारक हो लूमड़ भाई ।"। हो रहे जा वनने बाप हमारे तुम से भाई कि यानी "--- लगाया नारा ने विजय "

अलफांसे मुस्करा कर रह गया ।।

" अपने हाथों से टीका वतन के मस्तक पर टीका लगाओ प्रिंसेज जैकसन ।है बना राजा आज बच्चा मेरा "--- कहा ने सिंगही " "।

" जरूर महामहिम , इसीलिए तो यहां आने का कष्ट किया है ।"

कहने के साथ ही प्रिंसेज जैकसन सिंहासन की तरफ बड़ी ।

कुछ लोग प्रिंसेज जैकसन के सौंदर्य को आश्चर्य के साथ देख रहे थे ।

कुछ लोग हवा में लटके हुए टुम्बकटू को देखकर हंस रहे थे ।

वतन के करीब पहुंच कर प्रिंसेज जैकसन ने उसके मस्तक पर तिलक किया ।।

वतन ने झुक कर चरण स्पर्श किये ।

विजय ने कहा " । उतारो तो को कार्टुन । मम्मी"-

" जरूर ।एक और हाक ने जैकसन प्रिंसेज " झटके के साथ लाल किरण मुकुट मे समा गई ।

टुम्बकटू कलाबाजियां खाता हुआ फर्श पर पहुंचा ।

उसने भी मस्तक पर तिलक किया ।

इसके बाद ।। किया टिका को बतन ने नागरिक हर के चमन --

राजतिलक के कार्यक्रम के बाद सिंगही, प्रिंसेज जैकसन , टुम्बकटू जिस तरह आये थे , उसी तरह चले गये ।।

यह कार्यक्रम रात के दो बजे समाप्त हुआ ।।

तीन बजे शुरू हुई बूढ़ी मां की शवयात्रा ।।

फिर सुबह के छः बजे थे जब दादी मां के जिस्म का दाह संस्कार किया गया ।।

तब वतन ने धोषणा की राष्ट्र हमारा बजे चार शाम आज "---, राष्ट्र के दुश्मन को सजा देगा जिसने हमें बीस साल गुलाम बना के रखा । हम सब पर तरह तरह के जुल्म किये । मेरी अपील है आप सब राष्ट्रपति भवन पर शाम को एकत्रित हों । वह दुश्मन कौन है आप सब समझ गये होंगें उन उससे बजे चार शाम । मैग्लीन - जुल्मों का हिसाब लेंगें जो उसने हम पर किये ।

और इस वक्त दौपहर का एक बजा था ! राष्ट्रपति भवन के एक विशेष कक्ष में वतन, विकास, विजय, अलंफासे, पिशाचनाथ, बागारोफ, धनुषटकार और अपोलो मौजूद थे ।

विकास से मुखातिब होकर वतन ने पूछा था..."क्या तुम बता सकते हो कि मैग्लीन को क्या सजा देनी चाहिए ।"

"प्यारे बटनथा पड़ा बोल विजय ही पहले से देने जवाब कुछ के विकास "! ..."इससे तरीका मत पूछो । ये तरीका तो बताएगा मार्के का, लेकिन पसन्द नहीं अाएगा ।"

"'क्यों भला ?" गम्भील स्वर में वतन ने पूछा..."तरीका अगर अच्छा होंगा तो मुझे पसन्द क्यों नहीं अाएगा ?"

"वटन वारे "!अपनी ही टुन्न में विजय ने कहा"-----' मामला यह है कि तुम दोनों हो बिल्कुल न्यारे, नहीं समझे न - खैर, हम समझाते हैं । बात यह है कि ये साला दिलजला पूरा हिंसावादी है । दुश्मन को चीरमें खाल उसकी फाढ़कर- मिर्च भरने के अलावा यह कुछ नहीं जानता और एक तुम होइ बिलकुल-सके विपरीत यानी अहिंसावादी, हिसा से बेहद नफरत करने वाले, फिर भला इसका तरीका तुम्हरे दिमाग में कैसे फिट होगा ?"

-"चचा ।" वतन ने बिल्कुल शान्त और गम्भीर स्वर में जवाब दियातो इतना "---- इाप समझ ही गए हैं कि उन अहिंसा के पुजारियों में से नहीं हूं कि जिनके गाल पर अगर कोई एक थप्पड मारे तो दूसरा और तीसरा। दें का अागे चौथा... अहिंसा को सिर्फ इतना मृहत्व देता हूं कि एक गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा अागे कर दूगा लेकिन अगर तीसरी बार कोई वार करे तो महान सिंगहीँ के चरणों की कसम हाथ तोड़ डालूंगा उसके । आज के जुग में बह अहिंसा, जिस पर महात्मा गांधी चले थे, बुजदिली है । सीधा सा सिद्धान्त है कि जब तक अहिंसा से काम चले,चलाओ, लेकिन जब अहिंसा बुजदिली का रूप धारण करने लगे तो ईट का जवाब पत्थर से दो ।"

"कहने का मतलब यह हुआ वतन प्यारे कि तुम आधे अहिंसावादी हो ।वे विजय " कहा"---'मगर प्यारे, बात कुछ जमी नहीं-या जाओ बन ही गान्धी तो या--- सुभाष लाभ वंया से बनने फिफ्टी-फिफ्टी ये । ही भगतसिंह---?'"'

"चचा "----स्वर गम्भीर :पुन का वतन "!' साफ शब्दों में मेरे सिद्धान्त को तुम यूं समझ सकते हो कि पहले घी को सीधी उंगली से निकालने की कोशिश करो । न निकले तो"। लो कर टेढ़ी को उंगली फौरन-

"कहने का मतलब यह कि मैग्लीन को तुम हिंसात्मक सजा भी देने के लिए तैयार हो?"

" मैग्लीन को सजा देने की एक तरकीब है मेरे पास ।। कहा ने विकास "

" क्या ?"

जबाव में विकास ने उस सोफे के नीचे' से, जिस पर वह बैठा था, एक मुगदर निकाला । यह देखकर सब दंग रह गए कि यह मुगदर हडि्डयों का वना हुआ था, "यह मुगदर तुम्हारी मां और वहन की हडि्डयों का वना है, वतन की दिन सारे आज ! मेहनत के वाद मैं इसे वना पाया हूं । तुम्हारी माँ और वहन की हडि्डयों के टुकडों को मैंने फेबीकॉल से जोड़ा है । मेरे दिमाग ने कहा है कि मैग्लीन एकमात्र सजा यह मुगदर ।"

हडि्डयों के उस मुगदर को देखगया। पड़ बल एक पर मस्तक के वतन कर-

एक क्षण वह ठिठका और बिकास को देखता रहा, फिर भर्राया स्वर...'बिकास तुमने मेरे दिल की बात कहीं है ।"

" अबे , मुगदर तो सजा है लेकिन इसका उपयोग कैसे होगा ?"

जवाब में विकास सबको बताने लगा कि इस मुगदर के जरिये मैग्लीन को किस किस्म की सजा दी जाएगी । सभी ने सुना और सहमत हो गये ।

ठीक चार बजेउसे ! मैग्लीन अ ाया कैद में घेरे के अलफासे और विजय-विकास- मैदान में लाया गया । वतन से हाथ जोडकर उसने माफी मागीं तो वतन ने जवाब दिया था' --"मुजरिम तो तुम चमन के नागरिकों के हो । माफ करने का अधिकार मुझे कहां ? "

चीख। चाही माफी से नागरिकों के चमन ने मैग्लीन चीखकर-

किन्तु हर आंख में मैग्लीन के लिए नफरत थी । उसे किसी ने माफ नहीं किया । मैदान के ठीक बीच में उसे ले जाकर हाथियों के साथ बांध दिया गया । लम्बी रस्सी के बीच का कुछ भाग उसके बदन पर लिपटा हुआ था । एक सिरा मे ैग्लीन के दाईं तरफ खडे ह्थी में जिस्म में 'बंधा था तो दूसरा बाई तरफ खडे हाथी के जिस्म में ।।

पहले वतन ने जनता को खामोश होने का संकेत दिया ।

खामोशी के बीच उसकी आवाज गूंज उठी..."मेरे प्यारे देशवासियों जो मुजरिम यह ! इस वक्त हाथियों के बीच बंधा खड़ा है, मुझ अकेले या चमन के क्रिसी एक नागरिक का मुजरिम नहीं, बल्कि हम सबका मुजरिम है । हमारे देश को गुलाम बनाकर इसने हम सब पर जुल्म किये हैं । अतबराबर के देने सजा इसे सभी हम : हकदार हैं । इसे सजा देने के लिए मेरे दोस्त विकास ने यह हथियार बनाया है ।"

वतन हडियों के उस मुगदर को हवा में उठाकर सबको दिखाता हुआ बोलामेरी"---- मां और वहन की अन्तिम निशानी यानी उनकी हडियों से वना है । इस कुत्ते की इससे ज्यादा बढकर क्या सजा हो सकती है कि यह मुगदर चमन के हर निवासियों के हाथ में जाए और सभी एक हरामजादे इस मुगदर एक-'के जिस्म पर मारे ।"

"नहीँ ।। मैग्लीन पडा रो चीख़कर "

चारों तरफ से हंसी का एक फव्वारा छूट गया । वतन कह रहा थाको नागरिक हर"--- इस जुल्मी पर इस का सिर्फ एक बार करने का हक प्राप्त है । यह आपकी ताकत पर निर्भर है कि एक बार अ ाप कितना शक्तिशाली कर सकते हैं । सबसे पहला वार मैं स्वयं करूगा ।"

और...वतन मैग्लीन के नजदीक पहुचा ।

"वतन व पर मस्तक के वतन "। बेटे दो कर माफ ...बेटे दो कर माफ मुझे !ल पड गया, गुर्राया़ वे अगर पिता मेरे"- है किए तूने जो करते गुनाह, तो इस मुगदर की कसम, उसे भी भयानक सजा देता मैं ।। सी-की बिजली ही साथ के कहने " से गति वतन का' हाथ चला और उसकी मां और बहन की हडिडयों से वनी मुगदर भड़ाक से मैग्लीन के चेहरे पर टकरायी ।

मैग्लीन उस जिन्दे पक्षी की तरह चीख पड़ा जो पर कटते ही अाग में जा गिरा हो ।

उसके चेहरे के विभिन्न भागों से खून के फव्वारे छूट पड़े ।। वतन ने मैग्लीन के चीखते हुए खून से लथपथ चेहरे को देखा , फिर घृना से थूक दिया उस पर बोला तुझे मारेगा मुगदर एक सिर्फ आदमी एक "---, गिन सके तो गिनना । मुगदरों की गिनती से तुझे पता लगेगा कि तूने कितने आदमियों पर जुल्म किए हैं ।।"

कहने के बाद मुगदर वहीं जमीन पर रख दिया ।।

भीड़ से एक आदमी आता , मुगदर उठाता और अपनी पूरी शक्ति से मैग्लीन पर बार करता ।

बच्चे भी आये, महिलाऐं भी आयीं ।।

एक ऐसी मां आई जिसके बेटे को मैग्लीन ने मारा था ।। मुगदर की एक चोट अपने बेटे के हत्यारे पर करके जैसे मां की आत्मा को शान्ति ना मिली हो। जोश में चीखती हुई वह पागलों की तरह मैग्लीन के जिस्म पर मुगदर बरसाती ही चली गई ।

आगे बढ़कर विकास उसे रोक ना लेता तो शायद वह अकेली ही मैग्लीन को मार डालती ।।

एक विधवा आई तो उसने जैसे प्रण कर लिया अपने सुहाग के हत्यारे को वह मार ही दम लेगी । विकास ने उसे भी रोका ।

इस तरह मैग्लीन चीखता रहा , लेकिन किसी के दिल में उसके लिए रहम नहीं था ।। पिटता पिटता लहू लहान हो गया ।

कहां तक सहता मैग्लीन ? मार खाता खाता बेहोश होता तो पिशाचनाथ उसे लखलखा सुंघा कर होश में ले आता ।।।

पुनः वही क्रम !

अभी तो एक हजार नागरिक भी अपना अधिकार पूरा नहीं कर पाये थे कि मैग्लीन मर गया ।।

उसके मरने के बाद भी चमन के नागरिकों को उस पर रहम ना अाया । बहुत से लोगों के दिलों में तो प्रतिशोध की एेसी

आग भड़क रही थी कि मुगदर के वार मैग्लीन की लाश पर भी वार करने से बाज ना आए ।।

फिर वतन के कहने पर सब लोग रूके ।।

सब ने वतन से मांग की थी मैग्लीन की लाश को यहां से उठाया ना जाये बल्कि यही सड़ने दिया जाये ।

हालांकि वतन चाहता नहीं था किन्तु यह मांग उसे माननी ही पड़ी ।

अौर फिर शाम को चमन के एयरपोर्ट से दो विशेष विमान उड़ान भर लिये । एक रूस के लिये तो दूसरा भारत के लिये ।।

आजादी के सिर्फ छः माह पश्चात ----

चमन ने पूरे विश्व को चौंका दिया ।

विश्व में प्रकाशित वतन के स्टेटमेंट ने एक बार तो बुरी तरह सारी दुनियां को चौंका दिया ।

अमेरिका रूस , ब्रिटेन , चीन और भारत जैसे महान राष्ट्रों को तो जैसे यकीन ही नहीं आता ।

इतने अल्प समय नें। प्रगति जबरदस्त इतनी-

निश्चय ही संसार को अस्वाभाविकथी लगी सी- ।

यूं तो समूचा विश्व देख रहा था कि आजादी मिलते ही वतन के नेतृत्व में चमन ने तीव्र वेग से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होना शुरू कर दिया था । इस छोटे से राष्ट्र ने बड़ी तेजी से प्रगति की थी ।

मगर ये स्टेटमेंट-हलचल एक में श्ववि पूरे ने स्टेटमेंट के वतन--सी मचा दी थी ।

विश्व के लगभग सभी प्रमुख समाचारपत्रों का मुख्य शीर्षक था ।

विश्व के लगभग सभी प्रमुख समाचारपत्रों का मुख्य शीर्षक था ।

" विज्ञान की दुनिया में एक नया चमत्कार "!

चमन के राजा मिस्टर वतन ने एक ऐसे अजीबो गरीब यंत्र का आविष्कार किया है जिससे ब्रह्मांड में बिखरी आवाजों को समेटा जा सके ।"

वतन का स्टेटमेंट यों था ।

'कहते हैं कि इन्सान मर जाता है लेकिन इन्सान की आत्मा कभी नहीं मरती । आत्मा अज़र अमर है । आज का युग वैज्ञानिक युग कहलाता है ।

कहते हैं कि दुनिया ने किसी भी युग, में उतनी तरवकी नहीं ली जितनी कि इस युग में की है किन्तु मैं इस विचार सहमत से-नहीं, बल्कि मेरी धारणा तो यह है कि आधुनिक वैज्ञानिक युग में मौजूद विज्ञान का हर प्राचीन विज्ञान की नकल है, और अभी उस विज्ञान से हम वहुत पीछे हैं । हमने परमाणु और न्यूट्रॉन बम तो वना लिए किन्तु क्या वैसा ऐसा हथियार वना सके जैसे भारत के महान ग्रंथ 'महाभारत' में बभ्रुवाहन के पास था ? कदाचित कुछ लोगों को पता न होगा कि की हथियार किस . हूं कर बात?

बभ्रुवाहन महाभारत काल का एक योद्धा था । वह अपने घर से कोरबों की तरफ से युद्ध करने निकला था ।

श्रीकृष्ण जानते थे कि अगर वह युद्धस्थल में पहुंच गया तो निश्चय ही पाण्डवों की पराजय होगी ।

तभी तो रास्ते में श्रीकृष्ण ने उसे रोककर पूछा...तुम कहाँ जाते हो ?"

...\'"महाभारत के युद्ध में हिस्सा लेने ।'" बभ्रुवाहन ने जवाब दिया ।

किसकी तरफ से युद्ध करोगे ?' ' .

..."हारने बालों की तरफ से "!

नीतिमुस्कराया जादूगर का बासुरी निपुण-, बोलाभला मे युद्ध उस "--- तुम्हारी क्या बिसात है ? वहा कर्ण, दुर्योधन, अर्जुन और भीष्म पितामह जैसे जोद्धा है । उन योद्धाओं के समक्ष भला तुम क्या कर सकोगे? "

'जो भी हो ।' उसने कहा...'मेरी मां ने मुझे इस आज्ञा के साथ भेजा है के मैं हारने वालों की तरफ से युद्ध करू ।

माखनचोर तो सारी वास्तविकता जानते थे । दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिज्ञ ने उसे अपने शब्दजाल में फंसाया हो बेवकूफ वड़े-युद्ध तुन और कहा ने मां । तुम के लिए निकल पडे । हम तो देख हैं है कि तुम्हारे तरकश में तीर भी सिर्फ तीन ही हैं । युद्ध क्षेत्र मे पहुचने कुछ ही देर बाद तुम्हारे ये तीनों तीर खत्म हो जाएंगे, फिर क्या करोगे ?

गर्व से मुस्कराया बभ्रुवाहन, बोला...'मेरे पास तीन तीर है महाराज मुझे ! मालूम है कि मुझे दूसरा तीर प्रयोग करने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी । मैं एक ही तीर से सारे दुश्मनों का संहार कर दूंगा ।'

चतुर कृष्ण ने आश्चर्य प्रकट किया..."कैसी बेवकूफी की बात कर रहे हो ? भला यह कैसा तीर है जो संबक्रो एकसाथ मार देगा ?'

'मेरे तीर में ऐसी ही विशेषता है महाराज !' उसने कहा सुनकर यह और --- चौंकेंगे के सबको मारने के बाद भी मेरा तीर नष्ट नहींसुरक्षित बल्कि होगा- वापस मेरे तरकश में आ जाएगा ।'

-"शायद कोई बेवकूफ ही तुम्हारी इस बात पर यकीन कर सकता है ।'

मुस्कराकर बभ्रुवाहन ने कहा-'युद्ध क्षेत्र में आप स्वयं देख लीजिएगा ।'

तुमने बात कुछ ऐसी कही है कि हम उस पर यकीन नहीं कर सकते ।' कन्हैया ने कहा..."और न ही युद्ध होने तक प्रतीक्षा कर सकते हैं ।`

" गर्व में फंसे बभ्रुवाहन ने कहा-'तौ फिर आपको मेरी बात की सच्चाई का यकीन कैसे हो ?'

मननिपुण-नीति । मनमोहन मुस्कराए मन-हीँ- ने समीप के ही एक इमली के पेड़ की ओर संकेत करके कहा 'इस पेड़ को देखो, अगर तुम्हारे धनुष से छोड़ा गया एक ही तीर इस वृक्ष के सारे पतों को बेंधकर तरकश में वापस आ जाए तो मुझे तुम्हारी बात का यकीन हो जाएगा ।'

अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए आतुर बभ्रुवाहन ने सहर्ष माखनचोर की यह वात मान ती । उसने तीर छोड़ा ।

कृष्ण तो जानते ही है कि क्या होना है । उधर बभ्रुवाहन का तीर दरख्त के एकएक पते को बेंधने लगा और इधर माखनचोर ने उस दरख्त का एक पत्ता बभ्रुवाहन की दृष्टि बचाकर अपने पैर के नीचे दवा लिया ।।

अपनी इस नीति पर सांवरा मुस्करा रहा था ।

परन्तुतो लपका पर पैर के श्रीकृष्ण जब तीर वेंधकर को पतों सभी में अन्त- जल्दी से श्रीकृष्ण ने पैर हटा लिया, एक क्षण के लिये भी विलम्ब हो जाता तो तीर महाराज कृष्ण के पैर को जख्मी तो कर ही देता । उस अन्तिम पते को भी बेंधने के बाद तीर सीधा तरकश में पहुच गया । उसके बाद क्या हुआ ? श्रीकृष्ण ने वध्रुवाहन को युद्ध में भाग लेने से कैसे रोका ?

यह तो महाभारत का कथानक है, और उसे यहाँ कहने की मैं कोई जरुरत महसूस नहीँ करता ।

मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि आज के बैज्ञानियों ने क्या कोई रिवॉल्वर ऐसी बना ली है, एक ही गोली से सारे दुश्मनों को माररकर वापस पुनअपनी : पूर्णशक्ति' जितनी क्षमता कें साथ रिवॉल्वर में अ ा जाए ?

क्या है आघनिक युग में ऐसा हथियार ? नहीं ।

तो फिर हम कैसे कह सकते है कि आज का बिज्ञान सबसे ऊंचा है ? उपयुक्त किस्म के अनेक उदाहरण देकर मैं यह सिद्ध कर सकता हू प्राचीन युग विज्ञान के मामले में आधुनिक युग से पीछे नहीं बल्कि कुछ आगे ही था ।

वह सभ्यता समाप्त हो गई । उस युग में क्या था, क्या नहीं--' हम पूर्णतया नहीं जानते है ।

हां , भारत के चार महान ग्रन्थ हैंचार---- वेद'-उन चारों ही वेदों में अलगहै ज्ञान गहरा का क्षेत्रों चार-अलग-, सब जानते हैं क्रि ऋग्वेद में विज्ञान से सम्बन्धित ज्ञान थे । उस महान भारतीय ग्रन्थ के एकमें दोहे एक- एक का भारत । था फार्मुला एक-पूरा । है गया लिखा से खून इतिहास पिछला अनगिनत लड़ाइयों से भरा पडा है । उन्हीं लड़ाइर्यो के चक्रवात में भारत की न जाने जितनी विशेष चीजें गुम होकर रह गई । चारों वेद भी गुम हो गए ।

कुछ पता न लग सका कि कौन कौन। लगी हाथ किसके प्रतिलिपियां की वेदों उन में लडाई सी-

सम्भावना यह प्रकट करते हैं कि कोई भी उन वेदों की मूल प्रतिलिपि न'कब्जा सका । वे महान ग्रन्थ पृष्ठों में बदल गए । कोई पृष्ठ किसी के हाथ लगा और कोई पृष्ठ किसी के । अतथा ज्ञान जो में ग्रन्धों महान उन :, वह पूर्णतया किसी को भी प्राप्त न हो सका । उस लूटखसोट से संस्कृति का जो ज़र्रालगा हाथ जिसके ज़र्रा--, वह ले उड़ा ।

ऋग्वेद का भी यही हाल हुआ ।

उसके भी विभिन्न पुर्जे लोगों के हाथ लगे ।

और आजवाले करने चमत्कृत भी जितने में युग आधुनिक कि है बिश्वास मेरा- आविष्कार है, उसमें ज्यादातर का आइडिया उसी ऋग्वेद में से लिया गया है । मेरे विचार से कहीं किसी ने कोई नई बात नहीं निकाली है, आधुनिक युग का समूचा विज्ञान ऋग्वेद की देन है ।

मेरा यह आविष्कार' जो मैंने क्रिया हैयह- भी ऋग्वेद की देन है ।

अब सुनिये कि मैंने यह आविष्कार कैसे किया ?

मुझे अपने माताभी से मां दादी बूढी फलवाली । था प्यार बहुत से बहन और पिता- असीम प्यार करता था । न जाने क्यों मेरा दिल चाहता था कि मैं अपने मातासुनूं :पुन आवाज की पिता-

बचपन में मेरी बहन से जो बातें हुंई थीं...उन्हें सुनू ?

लेकिन कैसे कि था यह सवाल...?

कैसे मैं उनकी बातें सुन सकता हूं ?

आवश्यकता आविष्कार की जननी है ।

मुझे याद अायाकी आत्मा आवाज । मरती नहीं कभी आवाज कि है लिखा में ऋग्वेद-- तरह अजर अमर है । हम जो कुछ बोलते हैं, आज तक जितने भी इन्सानों ने जो कुछ बोला है, वह से जानकारी इस लिखी में ग्वेदऋ । है सुरक्षित में ब्रह्मंड " भी कहीं
ज्यादा मेरा अपना विचार था कि ब्रह्मांड में न सिर्फ यह सुरक्षित है जो इन्तान ने बोलता है बल्कि इससे भी ज्यादा यह भी सुरक्षित है जो कभी किसी ने सिर्फ सोचा है, बोला नहीं है । ऋग्वेद ईंसी जानकारी और माताआबाज की पिता- सुनने की आवश्यकता ने मुझे यह प्रेरणा दी कि क्यों न मैं किसी यन्त्र का आविष्कार करूं जिससे ब्रह्माण्ड में बिखरी अपने मातापिता-, बहन और फलबाली दादी मां की आबाज समेट सकू। मैं किसी ऐसे यन्त्र का आविष्कार करने में व्यस्त हो गया ।

इस यन्त्र को बनाने का विचार मेरे दिमाग में चमन की सत्ता संभालने के दो महीने बाद अाया था, अतमैं में महीने चार :ने अपनी लगन, परिश्रम और प्रतिभा से वह यन्त्र बनाने में सफलत अर्जित कर ली है ।

आज़ अपने!हू सुनता स्पष्ट आवाजें हुई खोई मैं से माध्यम के यन्त्र इस वनाए-

बस, जब इस यन्त्र में एक और विशेषता यह भी भरनी है यह ब्रह्माण्ड से आवाजों के अलावा उन विचारों को भी समेट ले जो अभी मेरे मातासोचे ने पिता- थे । उम्मीद है, सारी दुनिया क्रो मेरा यह आविष्कार पसन्द आया होगा ।

हर समाचार। था समाचार का अाशय इसी में पत्र-

अलग। थी दी खबर यह में-शेली अलग-लगअ अपनी ने अखबारों अलग-

इस खबर ने'सारी दुनिया में जैसे एक हलचल सी मचा दी ।

चीन, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, भारत, पाकिस्तान इत्यादि दुनिया के सभी राष्ट्र चोंक पड़े ।

खुद को बहुत धुरन्धर वैज्ञानिक समझने वालों की तो खोपड़ी ही झन्ना गई। सोचने लगे...यह महान आविष्कार हमारे पास क्यों नहीं है । जिस दिन यह समाचार अखबार में प्रकाशित हुआ था, उस दिन विकास को झंझोड़कर धनुषटंकार ने ज़गाया था ।

धनुषटकार के जगाने पर विकास चौंका ।

यह पहला ही मौका था कि जब धनुषटंकार ने उसे सोते से जगाया था । अभी उसने आंखें खोली ही थी, कि उसकी नजर अपनी आंखों के सामने पडे हुए एक अखबार पर पडी, नीद से भरी मिचमिचाती आंखों से उसने वे शब्द पढे जोउसे में अखवार-सबसे ज्यादा मोटे चमके थे । लिखा था...

------चमन के राजा वतन का आबाजों पर कब्जा ।

चौंक कर उठ बैठा विकास !

'जल्दीगया पढ़ खबर सारी यह जल्दी-, पड़ने के बाद उसने' धनुषटंकार की तरफ देखा । बेड के समीप ही एक 'कुर्सी पर बैठा धनुषटंकार बड़े आराम से सिगरेट के सुट्टे लगा रहा था ।

विकास को अपनी ओर देखकर वह मुस्कुराया, मुस्कराने के प्रयास में बन्दर के मुंह की अजीब। गई बन आकृति सी-

खुशी की एक किलकारी के साथ विकास को उसने आंख भी मारी और हाथ बढा दिया । विकास ने गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया । वह उसकी खुशी का अनुमान लगा सकता था कि अखबार में अपने भाई वतन की इस सफलता के विषय में पढकर मोण्टी को कितनी खुशी हुई होगी ।।

...तभी तो हाथ मिलाते हुए विकास ने उससे कहा मोण्टो हो बधाइं"---?"

और खुशी में उछलकर धनुषटंकार विकास की गर्दन पर लटक गया और उसके चेहरे पर बेशुमार चुम्बन लेने लगा ।

विकास सोचने लगानहीं जाहिर भी खुशी अपनी से जुबान । मोण्टो है मजबूर कैसा- कर सकता। न जाने कब तक वह विकास का चेहरा चूमता रहा, अगर उसी वक्त फोन की घण्टी न बज गई होती, वह विकास से अलग हुआ , विकास ने रिसीवर उठाया और बोला यस "---,मैं विकास बोल ' रहा हूं ।"

" रोका किसने है। आई आवाज से तरफ दूसरी "। रहो बोलते---

" कौन, गुरु ?" बिकास ने कहा- "हैं पढ़ा अखवार का आज आपने गुरु"-

"पढा नहीं प्यारे, बल्कि यूं कहो कि चाट लिया है ।कह ने विजय "ा हो रहे पूछ तुम लिये जिस "---, वह खबर भी हमने पढ ली है ।"

-'"तो फिर बधाई हो गुरु दुनिया वतन कि पडेगा मानना वाकई"--"कहा ने विकास "! का सबसे बहा वैज्ञानिक है । उसका पहला आविष्कार यानी समुद्र के पानी से असली गोल्ड जैसा ही नकली गोल्ड बनाना तो तारीफ के लायक था ही, लेकिन यह,यह ब्रह्माण्ड में बिखरी आवाज कोगुरु में वास्तव-समेटना ., वतन इस युग में सबसे महान वैज्ञानिक है ।"

"और इस दूनिया का सबसे बड़ा मूर्ख भी वही, प्यारे दिलजले?" विजय कहा ।

-"क्या मतलब नं गुरु ?" विकास चौंका ।

..."कई बार कहा प्यारे दिलजले कि जब तक मूंग की दाल में भीमसेनी काजल डालकर खाना शुरु नहीं करोगे तब तक हमारी बातों का मतलब तुम्हारी समझ में ना अायेगा । फिर भी अगर मतलब समझना चाहो तो हमारे दौलतखाने पर अा जाओ । " इतना कहने के साथ ही दूसरी तरफ से विजय ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया ।

"क्या बात है गुरू, आप कुछ सुस्त से क्यों हैं ?" विकास के रिसीवर क्रेडिल पर रखते ही धनुषटंकार ने लिखा हुआ एक कागज का टुकडा उसकी आंखों के सामने का दिया ।

........."गुरु का कहना है मोण्टो प्यारे कि इस दुनिया में वतन से ज्यादा बढकर मुर्ख कोई नहीं ।। कहा ने विकास "

धनुषटंकार चीखकर इशारे से पूछा हुई बात क्या ऐसी"-?"

"बात का तो मुझे भी नहीं पता ।ही समझते तुम तो यह लेकिन"---कहा ने विकास " हो कि की बात कभी गलत नहीं होती । हम कई वार गलत सलत पर उनसे लढ़ पड़ते हैं । को वतन जब है निकलती सही ही उनकी हमेशा थिंकिंग मगर--उन्होंने दुनिया का सबसे बड़े मुर्ख की संज्ञा _ दी है तो इसमें कोई शक नहीं कहीं ना कहीं कोई गड़बड़ जरूर है । "

-"तो क्या स्वामी के पास चलें ?" धनुषटंकार ने लिखकर पूछा ।

" बिल्कुल ।कहा ने विकास "..."बस पन्द्रह मिनट में मैं निबट लूं और फोरन चलते हैं ।"

कहने के साथ ही विकास ने सीधी जम्प बैड से बाथरूम में लगा दी ।

करीब तीस मिनट बाद वे दोंनों विजय के बेडरूम में, बेड के समीप पड़े सोफों पर बैठे विजय का मुंह देख रहे थे वे और वेड पर समाधिऔर था मिला में पोज़ इसी उन्हें विजय । विजय था बैठा लगाए-सी- वे दोनों विज़य के चरणस्पर्श करने के बाद सोफों पर बैठ गये थे ।

" पुर्ण सिंह । चीखा विकास पहले से कहने कुछ के विजय "!

" आया सरकार ।कमरे में इन्तजार के बात इस जैसे गया हो प्रविष्ट तरह इस " के बाहरं ही खडा था कि कब उसे आवाज लगे और कब बह अन्दर जाए । "

" गुरु की समाधि तोड़ने के लिए जरा एक बाल्टी पानी लाओ ।"

" नलों में पानी नहीं है बच्चा ।की सन्त किसी लगाए समाधी तरह उसी बिजय " तरह बोला..."ज़ब से हमारे देश ने दूसरी आजादी पाई है तब से पानी गायब है । बिजली गायब है, ये मत समझना कि सब कुछ गायब है। कुछ वहुत भी है---गुन्डागर्दी है, महंगाई ने भी पैंतरा बदल लिया है । अब जरा सौंने को बेचकर महंगाई को उल्टा करके पंखे पर लटकाने की तैयारी है ।"

. ..."मैं अभी नहाकर अाया हूं...नल आ रहे है ।ने विकास " कहार्णसिंहपू"-, तुम पानी लेकर आओ ।"

" अजी पानी साले को क्या अाते है लगती देर जाते-।जितनी"---कहा ने विजय " देर में तुम अपनी क्रोठी से यहाँ तक अाये हो, उतनी देर में तो पानी हमारे नलों से गायब होकर गांवों की ट्यूबवेल में पहुंच चुका होगा ।

"मैंने रात पानी भरकर रख लिया था । ठण्डा भी होगा ।पीते ही मजा आएगा ।ह हुक्म "-- कहा ने सिंह पुर्ण "ो तो लाऊं ?"

'"अबे चल नमकहराम ।" विजय ने आंखें खोल एकदम पूर्णसिंह को डांटासाले-, हमारा ही नमक खाता है और उसी नमक में किरकिल मिलाता है । कल्लो भटियारी की कसम, जिस तरह देश से कांग्रेस का पत्ता साफ हो गया उसी तरह अपनी कोठी से हम तेरा सफाया कर देगे त इस "रहबाते खाबड़-ऊबड़ विजय तक देर काफी- करता रहा ।

इस हद तक कि आज तो विकास भी परेशान हो गया उससे

आज सुबंहन से सुबह- जाने उसे क्या दौरा पंडा था कि हर बात' को राजनीति में घसीट लेता ।

बडी मुश्किल से बह बिज़य को लाइन पर लाने में सफल हुआ ।

जब से यह आया था, न जाने जितनी बार वया प्रश्न कर चुका था कि फोन पर वतन क्रो उन्होंने मुर्ख क्यों कहा था ?

उस वक्त विकास को राहत मिली जब विजय ने कहा ...'"मूर्ख नहीं प्यारे, दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख कहा था ।"

" लेकिंन क्यों ?"

इसलिये कि उसने अखबारों के द्वारा अपने इस आविष्कार का ढिंढोरा पीटा ।"

"क्या मतलब है ?"

" लगाता है, मूंग की दाल खाकर नहीं अाए हो ?" विजय ने कहा ।"

" मेरा कहने का मतलब यह है गुरू कि अखबारों को उस आविष्कार के बारे में बताकर उसने क्या मूर्खता की ?" विकास ने पूछा..."जब भी कोई देश बड़ा काम करता है, बह अपनी सफलता को दुनिया के सामने रखता है । अमेरिका ने जब बम बनाया-या रूस । गई दी अखबार भी खबर न्युट्रान । दिया में अखबार ---- अमेरिका का भी यान अन्तरिक्ष की तरफ रवाना होता है तो महीनों पहले उसृका प्रचार क्रिया जाता है । इससे विश्व के अन्य राष्ट्रों की नजर में उस देश का सम्मान बढता हैं ।"

"ंमातूम है, ऐसी ही एक मुर्खता भारतीय वैज्ञानिक डाँक्टर भावा ने भी एक बार की थी । था कहा उसने"-कहा ने विजय " जाल का किरणों कुछ ऊपर के भारत वह कि बिछा देगा कि अणुबम भारत का कुछ नहीं सकेगा ।"

-"क्या कहना चाहते हैं आप ?-"

" इस घोषणा के बाद मालूम हैं डॉक्टर भावा का क्या अन्जाम हुआ था ?" विजय ने पूछा ।

"उनका विमान क्रेश हो गया था और वे मारे गए थे ।। कहा ने विकास "

"डॉक्टर भावा का विमान क्रेश हुआ नहीं था प्यारे दिलजले, बल्कि क्रेश किया गया था ।प"-----बताया ने विजय "हाडी पर विमान टकराकर चूर चूर हुआ था, मालूम है, बाद में परीक्षण में पाया गया कि उस पहाडी में कृत्रिम रूप से चुम्बकीय शक्ति पैदा की गई थी । यह तो आज तक पता नहीं लग सका कि यह हरकत किस देश की थी, मगर हां यह सारी दुनिया को पता था ।।

कि डॉक्टर 'भावा' का विमान उस पहाड़ी के उपर से गुजरेगा । बस दुश्मन ने उस पहाडी में चुबकीय शक्ति पैदा की और जिस उद्देश्य ' उन्होंने यह काम क्रिया था, बह पूरा हो गया यानी उस पहाडी की चुम्बकीय शक्ति ने विमान को अपनी और खींचा और पहाडी से टकराकर विमान टुकडे"। गया हो टुकडे-

"मगर यह कहानी को हैं चाहते क्या कहना अाप दोहराकर-?"

"यही कि विश्व की कोई शकित किसी दूसरे ढंग से इस कहानी को दोहरा सकती है ।"

सुर्ख हो गया विकास का चेहरा, गुर्रा उठा उस नापाक शक्ति को जलाकर खाक न कर दूंगा मैं ।"

"जब वह पहले ही वतन को समाप्त कर देगी तो तुम्हारे खाक करने से क्या लाभ होगा ?" विजय ने कहा से दिमाग तुम"--- हो अाते में जोश के व्यर्थ लेकर न काम प्यारे दिलजले । मैं कहता हूं कि वतन के मरने के बाद अगर तम सारी दुनिया क्रो भी जलाकर खाक कर दो तो क्या वतन लौट अाएगा ? क्या उसका बह आविष्कार लौट अाएगा जो उसने किया है ?"

विकास ने उपने दिमाग को नियंत्रण में किया, बोला गुरू करें क्या तो "--?"

" क्या कर सकते हैं हम ?"' विजय ने कहा..."जब वतन ने ही ढिढोरा पीटने की मूर्खता की है । अवे, ठीक है तुमने .
है किया आबिष्कार, लेक्रिने इसमें ढोल गले में लटकाकर शोर मचाने की क्या बात है ? याद रखो'-दुनिया की महाशक्तियां कभी यह नहीं चाहतीं कि कोई अन्य देश उसके बराबर में अाए । वे भारत को ही बढता हुआ नहीं देख सकती और चमन, चमन तो अमेरिका के वाशिंगटन और रूस के मास्को से भी छोटा है । "

-"’वह तो मैं सब समझ गया गुरू, लेकिन अव सवाल तो यह है कि हमें क्या करना चाहिए ?"

" फिलहाल इस मामले में हम कोई खास हथेली तो लगा नहीं सकते । विजय ने कहा..."लेकिन हां, फिर भी जो हम कर सकते थे, हह हमने किया है । रूस, अमेरिका, चीन, और पाकिस्तान में स्थित अपने एजेन्टों को हमने सचेत कर दिया है । उनके सुपर्द यह काम दिया गया है कि वे अपनीके दिन तीन और रखें नज़र पर गतिविधियों की दुश्मन पर जगह अपनी- अन्दर रिपोर्ट भेजें । हर देश के छोटेलेकर से संगठन गुप्तचर व छोटे-से- सीक्रंट सर्विसों तक नजर रखी जा हैं । हर देश में स्थित अपने प्रत्येक एजेण्ट को यह अादेश भेज दिये हैं कि विशेष रूप से उन्हें यह ध्यान रखना है कि किस देश में वतन के इस स्टेटमेंट पर क्या प्रतिक्रिया होती है ।"

" अोह कहा ने विकास "!..."इसका मतलव फिलहाल हमें अपने एजेण्ट की रिपोर्ट का इन्तजार करना है ?"

" फिलहाल इस के अलावा हमारे पास अन्य कोइ चारा नहीं ।"

"मैं सोच रहा हूं गुरू, क्यों न मैं आज ही चमन के लिए रवाना हो जाऊं ?" विकास ने कहा ।

" वहां जाकर क्या अण्डे दोगे तुम ?"

-'वतन की सुरक्षा के लिए तो मैं पहुंच ही जाऊंगा ।---कहा ने विकास "'"इससे ज्यादा फिलहाल वतन की क्या मदद हो सकती है?"

"इस मूर्खतापूर्ण _विचार को संभालकर अपनी जेब में रख लो, प्यारे दिलजले "! विजय ने यहा जा कहा नहीं कुछ "---- क्या की एजेण्ट किस से देश किस कि सकता रिपोर्ट आ जाए । यह, फैसला हमें रिपोर्ट मिलने के बाद ही करना होगा कि हमें क्या करना ।"

-"लेकिन रिपोर्ट अाने से पहले ही चमन जाने में क्या हर्ज 'है गुरु ?" विकास ने पूछा ।

"वहीँ हर्ज है दिलजले, जो थमसप"' में चाय डालकर पीने में है ।विजय " बोला खां मियां"----, यह तो तुम भी देख ही चुके को कि वतन वह रसगुल्ला नहीं है, जिसे एकदम दे से कौन जाने न कि ये बात दूसरी । जाएगा कर हजम कोई हीं-श से क्या रिपोर्ट आ जाए । यह फैसला तो सूचनाओ के आधार पर ही होगा कि हमें किया करना है । फिलहाल तो यह भी पता नहीं कि इस केस के संबन्ध में हमें चीन, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, चमन या दुनिया के किसी अन्य मुल्क में जाना पड़े । हां हमें- लिए के यात्रा की देश भी किसीतैयार रहना चाहिए । माना कि तुम चमन चले गए और हमारे क्रिसी एजे्नट ने किसी अन्य देश क्री ऐसी रिपोर्ट भेजी कि हमें वहां जाना पड़े तो क्या लाभ होगा ?"

-"गुरु ।" विकास ने कहा..."ज़ब मुझे खतरा स्पष्ट चमक रहा है तो सच, आराम से यहां बैठकर इतजार' नहीं होगी मुझसे ।"

-"एक अच्छे जासूस के लिए धैर्य भी वहुत आवश्यक चीज है प्यारे ।कहा ने विजय "..."फिलहाल धैर्य की जरूरत है । ये ठीक है कि खतरा स्पष्ट चमक रहा है, लेकिन जब तक यह स्पष्ट न हो जाए कि इस खतरे से बचा किस दिशा से जा सकता है, उससे पहले खतरे में कूद पड़ना उसी तरह है, जिस तरह बीच समुद्र में फंसे क्रिनारे की जानकारी से अनभिज्ञ किसी आदमी का किसी दिशा में तैरना ।"

-"'क्या मतलब गुरू ?"

"माना कि तुम बीच समुद्र में फंस गए हो भी विजय ने समझाया..."तुम्हें मालूम नहीं है क्रि, जहां तुम हो वहा से किनारा किस दिशा में कितनी दूर है । अब तुम्हारा पहला फर्ज यह होगा और कि किनारे की जानकारी प्राप्त करों या यह कहो क्रि यूही विना किसी जानकारी के तैर लोगे ?" विजय ने कहा ।

-"माना कि बुद्धिमानी किनारे की जानकारी लेने में ही हैने विकास " कहा दिशा किसी तो न- जानकारी की किनारे जब लेकिन-में तो बढ़ना ही होगा ।"

"लेकिन अगर तुम्हें यह पता लग जाए कि दो दिन वाद , किनारे के विषय में जानकारी मिल जाएगी तो ?"

. ..."तो हमें जानकारी मिलने तक इन्तजार करना चाहिए ।" विकास ने कहालेकिन"- खाली बैठकर इन्तजार करना भी .
है काम का महाबोरियत, अत्त कुछ न-कछ :करते रहना चाहिये ।"

"अगर किसी दिशा में तैरैनै का काम करोगे तो प्यारे, यह बेवकूफी भी हो सकती है कि अाप किनारे से दूर ही होते चले जाएं ।रहा जा कहे रुके विना विजय " था..."हां, इंतजार का गुड़ खाने में समय ही गुजारने की बात है तो अखण्ड कीर्त्तन किया जा सकता है । बस, इसके 'अलावा कोई चारा नहीं है ।"

-'"हे गुरू । " विकास बोला...'क्यो न हम झकझकी और दिलजली का मुकाबला करके इन्तजार का यह समय गुजार दें ।"

"'अबे, बात को कहने का ढंग है । गाएंगे भजन हम क्या में कीर्तन और----कहा ने विजय "?"

-"तोफिर गुरू हो जाओ शुरू ।"

और...बिना भूमिका के वास्तव मैं विजय शुरू हो गया ।

. उसने वेहद लम्बी झकझकी सुनाई । इतनी लम्बी कई बार विकास को ऐसा लगा कि अब समाप्त होने वाली है लेकिन विजय की झकझकी किसी लम्बे तार की तरह खिंचती ही चली गई ।

समाप्त होने पर विकास ने कहान झकझकी इस आपकी"--े
तो बोरियत को दूर करने के स्थान पर और बढ़ा दिया गुरु "!

"'ऐसी बात है तो दूसरी सुनो ।कि था. रहा जा ही होने शुरू विजय "" रूको गुरू , ठहरो ।उठाकर हाथ " विकास ने कहा- दिलजली नम्बर अब । ली कह झकझकी एक आपने कि यह बात की कायदे" का है । पहले मैं अपनी दिलजली सुना लूं उसके बाद जाप झकझकी सुनाएं ।"

"यह भी ठीक है ।। कहा ने विजय "

फिर...विकास ने दिलजली छेढ़ दी । वह भी क्या विजय से कम था ? उसने विजय से कुछ लम्बी ही सुनाई, जबाब में विजय

की झकझक्री उस दुगनी लम्बी और फिर उससे भी दुगनी लम्बी विकास की दिलजली ।

इस तरहहो मुकाबला यह जैसे ! जाता हट पीछे भी कोई से में दोनों कि थी मजाल- गया हो कि एक दुसरे को कौन ज्यादा बोर कर सकता है । उनमें से क्रोइं बोर हुआ या न हुआ हो लेकिन हां ,उनके मुकाबले में बेचारा धनुषटंकार पिस रहा था । कुछ देर
तक तो वह सोफे पर बैठा शराब और सिगार पीता रहा, वतन के विषय में सोचता रहा ।

फिर इस कदर _बोर हुआ वह कि अन्त में सोफे पर ही सो गया ।

गुरु चेले का मुकाबला चलता रहा, ठीक इस तरह जैसे शतरंज के धस्कीआपस अड गए हों ।

दूसरे दिन तव जबकि विकास लम्बी तानकर सो ही रहा था कि उसके सिरहाने मसहरी पर रखे फोन की घण्टी घंनघना उठी ।

रिसीवर उठाकर उसने कान से लगाया और नीद के स्वर में बोला"। स्वीक्रिग ग्रैट दी विजय अाफ..चेला...हैलो "---

" यस प्यारे"। विकास आँफ गुरू यानी है रहे बोल हम ये...

" ओह, गुरु हाँ !, कया बात है ?"

"अवे, अभी तक सो रहे हो मियां ? कल के अधूरे रह गए मुकाबले को पूरा करने नहीं आओगे क्या ?"

...'"गुरु, लगता है, हमारा मुकाबला जिन्दगीहोगा नहीं पूरा तो रहा चलती भी भर- ।र्तनकी अखण्ड "--था रहा कह विकास " तो जाए निकाला समय सोचकर अगर जगह की ज्यादा उचित होगा । क्यों न अाज हम यह शर्त लगाएं कि कौन ज्यादा देर सोए ?"

"तुम सोते ही रहोगे प्यारे,और मैं चीन पहुंच जाऊंगा ।"

हल्के चौंका, बोला----'' कहना चाहते हो गुरु ?"

"'यही कि अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, रूस और पाकिस्तान से रिपोर्ट अा गई है ।" । बताया ने विजय "

विकास एकदम सीधा' 'होकर बिस्तर' पर बैठं गया और बोला है रिपोर्ट क्या"----?"

" जानना चाहते हो तो अपने प्यारे काले लड़के के पास आजाओ ।"। में भवन गुप्त"--कहा ने विजय "

बिकास अभी कुछ कहना ही चाहता था कि वह रुक गया । दूसरी तरफ से बिजय ने उपयुक्त अल्फाज बोलकर सम्बन्ध विच्छेद- सांय-सांय लह तो पल एक । था दिया कर करते रिसीवर को घूरता रहा, फिर उसे क्रेडिल पर रखकर बिस्तर से उतारा ।

तभी हाथ में चाय लिए कमरे में प्रविष्ट हुई रैना ।

"अरे मम्मी ।कहा ने विकास ही देखते को रैना "..."आप खुद चाय लाई क्या था नहीं नौकर !?"

" चाय लाने के बहाने कमभरे-शिकायत ने रैना "। ली देख तो सूरत तेरी कम-से- स्वर में कहा है गया हो आवारा बहुत"--- निकल कहाँ जाने न सुबह-ही-सुबह । तू जाता है, और फिर रात को उस समय अाता है जब सब सो जाते हैं । मालूम है वो क्या कह रहे थे ?"

'"क्या "?" विकास ने रैना के हाथ में है कप प्लेट लेते हुए पूछा ।

" यह कि उन्हें तो एक ही घर में रहने के बावजूद भी तू कईनहीं तक दिन कई- मिलता ।कहा ने रैना "'..." कुछ तो यह पुलिस की नौकरी ही ऐसी है कि वे कब घर में रहते और कब बाहर ? फिर, एक तू है कि सारा दिन घर से बाहर रहता है ।"

"'क्या बात करती हो मम्मी । हां । इसे इत्तफाक ही कहा जा श्री सकता है कि जब डैडी घर में अाते है तो मैं नहीं होता और जब मैं घर में होता हूँ तो डैडी नहीं आ पाते ।। भरा घूंट लम्बा एक का चाय ने बिकास बाद के कहने "

"'ऐसी बात नहीं विकास ।कहा ने रैना "..."वे नौकरी करते हैं, फिर भी तुम से ज्यादा देर घर में रहते हैं । तू एक और.'
_ है कि कुछ न करते हुए भी जाने सारे दिन कहां रहता है ?
अरे बिकास, जाना है क्या ?"

विकास चौंका बौखलाया---, कहने लगा"। मम्मी तो नहीं-क्यों"---

" बहका रहा है मुझे ?" रैना ने कहा है रहा पी से ढंग जिस चाय तू कि हूं रही नहीं देख-----?"

"नहीँ' मम्मी ऐसी तो कोई बात नहीं है ।।। बोला हुआ सभालता को खुद विकास "

"अच्छा, यह बता, काला लड़का कौन है ?"

औरउछल तरह बूरी इतनी विकास पर सवाल इस के रैना- पडा जैसे एकाएक किसी बिच्छू ने उसे डंक मारा हो परन्तु चौंकने का एक भी भाव उसने अपने चहरेे पर नहीं आने दिया । उसने संभलकर सवाल किया..."काला लड़का लडका काला कौन-?"

"औंर है क्या भवन गुप्त ये...?"

विकास के सिर पर जैसे बम गिरा । कप प्लेट जैसे उसके हाथ से छूटते छूटते बचे,बोला भवन गुप्त"---?"

दूसरे फोन पर तुम्हारी बातें सुन ली हैं जो तेरे और विजयं भैया के बीच हो रही थीं ।"

रैना के इस वाक्य ने विकास के दिमाग में चकराते इस प्रश्न का ज़वाब 'तो दे दिया क्रि रैना 'काले लड़के' और 'गुप्त पवन के-जानती कैसे में बारे है मगरमम्मी । ओह"-----बोला वह । था नहीं खतरनाक कम ही लेना जान इतना का रैना- ! अाप उस फोन की बात कर रही हैं । वह तो विजय अकल का फोन था न । तुम्हें तो मालूम ही है कुछ । हैं करते मजाक वे----भूत क्या जाने न उन्हें से दिन सवार हुआ है कि अपनी कोठी भवन गुप्त को- कहने लगे और उनका एक दोस्त हैउसे- काला लडका कहते है ।"

"'काले लड़के को तुझसे क्या काम हैं .?" रैना ने कहा..."यानी उससे मिलने के लिए विजय भैया ने तुम्हें क्यों बुलाया है । "

"ओह, हाँ, विजय गुरू का वह दोस्त अमेरिका से अाया हुआ है । आजकल वह मुझे जूडो और कराटे सिखाया करता है ।"

" मुझसे कुछ छुपा रहे हो बिकास !" उसे घूरती हुई रैना ने कहा ।

विकास यह महसूस कर रहा था कि वह बुरी तरह फंस गया है । फिर भी, बात क्रो सभालने की कोशिश करता हुआ वह बोला..."मैँ आपसे क्या और क्यो छिपाऊगा मम्मी ?"

" तो बता कि रूस, ब्रिटेन, अमेरिका, चीन आदि से क्या के रिपोर्ट अाने वाली है ?"

एक बार पुन"-बोला । उठा झनझना तरह बुरी दिमाग का विकास :'वो मम्मी, इन सब देशों से अकल लोग और कुछ ने. । लिए के सिखाने दांब मुझे ! न हैं बुलाए

अंकल का कहना वे दुनिया का कौई भी दांवं ऐसा नहीं छोडेंगे जो मुझे ना आता ।"

"क्या तुझे दांव सिखाने की जरूरंत है है ?" रैना ने पूछा ।

"'क्यों नहीं मम्मी, अभी मैंने सीखा ही क्या है ?"

" कुछ सीखा ही नहीं है तूने ।तुझे मना के जल्लाद लोग "-----कहा ने रैना" जानने लगे हैं । देश तेरे जासूस के विदेश-दु कटटरश्मन बन गए हैं । यहाँ तक सुना है कि तू पूरी पूरी फौजों के के वश में 'नहीं अाता और कहता ये है कि तूने अभी सीखा ही क्या ?"

"ओह मम्मी?" प्यार से कहता हुआ वह रैना से लिपट गया..."बड़ी पगली हो तुम भी । इतने बड़े दुश्मनों से निबटने के लिए अंकल मुझे दुनिया का हर दांव सिखा रहे हैं वह हैं रहें गलत क्या-?"

" लेकिन वेटे, तुझे इतने की लेने दुश्मनी से मुजरिमों और जासूस खतरनाक- जरूरत ही क्या है है"' रैना ने कहा तुझे "---इतने कि है पड़ी जरूरत क्या खतरनाक लोगों से उलझे ?विदेशों के मामलों को हमारे देश की सरकार जाने, देश की फौजें और जासूस जाने ।"

"`मम्मी जेम्स कि हो जानती तुम तो ये "-----बोला विकास लिपटा से रैना "! बाण्ड, माइक,फुचिंग और ग्रीफित से तो मेरी दुश्मनी है तुम्हारे देश गुलशनगढ़ में ही गई थी । उस 'अभियान में तुम भी थी मालुम कुछ सब तुम्हें -- ही है ।"

(गुलशनगढ़ के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए पढे, क्रांति सीरीजक्रांति दूसरी पहली"-पुस्तकें दो की .` तथा 'क्रांति का देवता । (

""वह दुश्मनी वहीं की वहीं खत्म हो जानी चाहिए थी ।कहा ने रैना "..." और फूंचिंग और ग्रीफित को तो तूने मार ही डाला ।"

" मैं तो खत्म ही समझता हूं मम्मी, लेकिन जब वे अपने को खत्म नहीं समझते तो मैं क्या करू ?" विकास ने कहा---पूरा इसलिए डाला मार मैंने क्रो फूचिंग" चीन मेरा दुश्मन है । ग्रीफित को मार डाला इसलिए जेम्स बाण्ड और पूरा ब्रिटेन मेरा दुश्मन है । माइक मुझे अपना दुश्मन इसलिए समझता है । क्योंकि गुलशनमढ में वह मुझसे हार चुका है । अब तुम ही बताझो मम्मी, जब वे मुझे अपना दुश्मन समझते हैं तो कभी मुझ पर हमला कर सकते हैं । क्या ये ठीक नहीं होगा कि उनसे सुरक्षा के मैं सारे दांव सीख लूं ?"

" न जाने क्यों रैना की आंखें छलछला उठी । क्रिसी भावना के वशीभूत रैना ने उसे बांहों में कस लिया । रोती हुई वह बोली..."विकास कैसा पागल है रे तू । मुझे तो डर लगता है, केसे"। है लिया वना दूश्मन अपना तूने को लोगों खतरनाक केसे-बडी मिन्नतें करने के बाद भगवान ने मेरी गोद भरी है । मेरी गोद में सिर्फ एक तू हेमेरे लाल । तुझे कुछ हो गया तोरैना पड़ी रो फूटकर फूट और ....तो... ।

कौन समझाए ? कौन समझाए ममता में पागल हुई इस मां क्रो कि जिसे उसने गले से लगा रखा है, उसके नाम मात्र से दुश्मनों के कलेजे थर्रा उठते हैं । रूह कांप जाती है । अमेरिका और चीन में मौत के नाम से मशहूर है उसका यह लाल !

विकाससही तो देखों-जल्लाद वह----, मौत को थर्रा देने वाला दरिंदा कैसे मासूम और अबोध बच्चे की तरह अपनी मां के कलेजे के से लिपट गया रहा कह ! है--'"अरे हो क्यों डरती तुम ! मम्मी हो क्यों रोती...? विजय गुरु और अलफांसे अंकल जो मेरे साथ है ।"

-"'न जाने क्यों ये कुत्ते... मेरे मासूम लाल को अपना दुश्मन समझने लगे हैं । चली ही कहती रैेना फसीं भंवर के भावावेश " और जासूस हत्यारे वे कहों"-गई कहां मेरा अबोघं लाल ।"

कौन समझाए उस मां को कि उसका अबोध लाल दरिंदा है, दुर्दान्त,बेरहम और वक्त पढ़ने पर राक्षस है । कौन समझाए उसे जिन्हें वह खतरनाक समझ रही है, वे विकास की परछाईं से भी कांपते हे । कौन समझाए.......

बड़ी कठिनाई से विकास रैना को संभाल सका । के ओंभावना को मां अपनी . . भंवर से निकाल सका । बड़ी कठिनाई से वह रैना से इजाजत ले सका कि वह विजय की कोठी पर चला जाए ।

तैयार होने के बाद जब यह कार लेकर सडक पर अाया तो वह पूरे आधे घण्टे लेट था ।

उधरया निकला बाहर से कोठी विकास-, इधर रैना ने रिसीवर उठाकर विजय की कोठी के नम्बर रिंग किए । कुछ देर तक दूसरी तरफ से बजने वाली घण्टी की आवाज जाती रही । काफी देर के बाद दूसरी तरफ़ से फोन उठाया गया ।

आवाज अाई"-----' कौन साहब बोल रहे हैं ?"

"' कौन पूर्णसिंह ?'-' विजय के नौकर की आवाज पहचानकर रैना ने कहा "। रैना हूं रही बोल मैं यह--

" ओह, बीबीजी "। हूं ही पूर्णसिंह मैं हां "------कहा ने पुर्णसिंह "!

"विजय भैया को फोन दो ।"

" वे तो यहां हैं नहीं, बीबीजी "!

पुर्णसिह के इस वाक्य ने रैना के मस्तिष्क में एक भयानक विस्फोट क्रिया । एक बार तो उसे चक्कर सा ही अा गया । खुद को संभालकर वह बोली...'कहां गए हैं कब गए?”

" वे तो अाज सुबह "! बीबीजी गए चल ही सवेरे-पूर्णसिंह ने वतायाही किए नाश्ता बिना वे और अाया फोन का किसीं "- "। गए चले

रैना के मस्तिष्क में जैसे रहपूछा उसने । लगे होने विस्फोट रहकर-..."बिजय भैया से मिलने आज कोई आदमी अाया था ?"

--"नहीँ तो बीबीजी है क्या बात लेकिन !? आज अाप कुछ परेशानहो सी-?"

"नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं है ।को खुद " संभालकर रैना ने कहासुना हां"-, कुछ देर बाद विकास वहीं पहुंचेगा । उसके पहुंचते ही तुम फोन कर देना ।" उसकी बात का पूर्णसिंह ' ने क्या जवाब दिया यह सुने बिना ही रैना ने रिसीवर फेडिंल पर पटक दिया ।

धम्म से सोफे पर गिर पड़ी ।।

वह बेहद परेशान हो उठी थी ।।

रह...रहकर उसके दिमाग में विचार उठ रहे थे कि विकास ने उससे झूठ क्यों बोला ?

"काला लड़का' "गुप्त भवन' ये सब क्या है ?

विदेशों से क्या रिपोर्ट अाने वाली है, और इससे विकास का क्या सम्बन्ध है ?

काफी देर तक इन्हीं ख्यालों में खोईरही करती इन्तजार का बजने घण्टी की फोन वह ., किन्तु वह नहीं बजी ।

कुछ देर बाद तब, जबकि उसे यकीन हो गया विकास अगर विजय की कोठी पर गया होगा तो पहुंच गया होगा, उसने पुन : तरफ दूसरी और किए डायल नम्बर के कोठी की विजय से बोलने वाले पूर्णसिंह से विकास के बारे में पूछा तो नकारात्मक जवाब दिया ।

फिर...लगातार दो घन्टे तक विजय की कोठी पर दो बार फोन करने के बावजूद भी रैना को यह सुनने को न मिला कि ,विकास वहाँ पहुच गया है ।

"ये मामला तो बड़ा गलत हुआ प्यारे दिलजले । के भवन गुप्त "'साउण्डप्रूफ कमरे में बैठा विजय बिकास की सारी बात सुनने के बाद कह रहा था..."खैर, फिर भी तुमने अच्छा किया कि गुप्त भवन मेरी कोठी को बना दिया काला लड़का अ ाया से अमेरिका" एक मेरा का कराटे और जूडो दोस्त अगर !रैना बहन को पता लग जाए कि काला लडका उसका भाई ही है तो गजब हो जाए ।"

'
"सर कहा ने अजय बैठे पर कुर्सी की चीफ के सर्विस सीक्रेट "!..."मेरा ख्याल है कि अ ागे से इस बात का प्रबन्ध किया जाना चाहिए कि जिस तरह आज रैना बहन ने फोन पर सब कछ सुन लिया, अ ागे से, कोई न सुन सके, वरना सीक्रेट सर्विस का राजयकीन पर बातों की विकास क्रो बहन रैना अगर वैसे । रहेगा नहीं राज-र- नहीं आया होगा तो मामला बढ़ सकता है ।"

" सीक्रेट सर्विस का राज तो हमें राज ही रखना हे प्यारे ।" विजय ने कहा..."चाहे जैसे भी हो ।"

"'लेकिन रैना बहन जान गई तो ।"

"'अंकल ।मम्मी "-- उठा गुर्रा-विकास काटकर ही में बीच बात की ब्वाय ब्लैक " पर तो क्या, सीक्रेट सर्विस का कोई भी राज कभी किसी पर नहीं खुलेगा और अगर खुल भी गया तो किसी दूसरे को बताने के लिए वह जिन्दा नहीं रहेगा । अपने हाथ से मैं मैं मम्मी को गोली मार दूंगा ।"

"विकास ।।। पड़ी निकल सी-चीख तो से मुंह के ब्वाय ब्लैक "

और विजयतमतमा चेहरा का विकास । गया रह ही देखता को चेहरे के विकास तो वह- रहा था । उसने विजय की तरफ देखा, गम्भीर स्वर में बोलागुरु क्यों"--, क्या गलत कहा मैंने ? सीक्रंट सर्विस का हर सदस्य बनते से पहले हर सदस्य यही कसम तो खाता है ।"

" विकास । लफ्ज ही एक सिर्फ से मुंह । लिया लिपटा से कलेजे अपने उसने को विकास । गए छलछला नेत्र के विजय "
"। बेटे मेरे"-निकला

मगर जल्दी ही विजय ने खुद को संभाल लिया था । एक मिनट , के लिए उसके दिमाग में यह बिचार अ ाया कि वह भावुक हो गया है, और अगले पल उसने अपने सिर को झटका देकेर खुद को सामान्य किया और बोला से विदेशों तुम छोड़ो। "----- अ ाए एजेण्टों की रिपोर्ट सुनो ।"

"हाँ ।बोला गया अ ा में स्थिति सामान्य-विकास "..."जल्दी बताइए क्या हुआ ?" "सबसे पहले चीन की रिपोर्ट सुनो तुम । "

"-कहा ने विजय'चीन में हमारी एक लेडी जासूस है । वेसे उससे तुम पहले भी मिल चुके हो । उस समय जब तुम तलवारों के सिलसिले में चीन गये थे ।"

" कौन क्रिस्टीना ?" विकास ने पूछा ।

" हांथा सौंपा ही को क्रिस्टीना हमने काम यह"---कहा ने विजय " । उसने रिपोर्ट भेजी है कि वतन का स्टेटमेंट पड़ते ही चीन में हलचल मच गई और फौरन ही सीक्रेट सर्विस के सभी सदस्यों 'की एक आपातकालीन मीटिंग बुलाई गई । उसके फैसले के मुताबिक चीन के तीन जासूसों, जो चीन के अच्छे जासूस माने जाते हैं , के नेतृत्व में छकी जासूसों : एक टुकडी चमन के लिए रवाना होगी । उन तीन जासूसों के नाम है...सांगपोक,
हवानची
और एक लेडी जासूस है
सिंगसी ।
तुम्हारी जानकारी के लिए यह बता दूं कि सांगपोक फूचिंग का लड़का है और इसी से तुम अनुमान लगा सकते हो कि वह किस कदर तुम्हारे खून का प्यासा होगा । यूं समझो कि अब अगर दुनिया में रहने का उसका कोई मकसद है तो वह है सिर्फ तुम से अपने पिता की मौत का बदला लेना । उसने कसम खाई कि वह फूचिंग़ की कब्र को तुम्हारे खून से धोएगा ।"

"ओह "!' विकास के मुंह से निकला ।

" जहां तक मैं समझता हूं प्यारे दिलजले, चीनियों को यह अनुमान हो गया है कि वतन कि हिमायत में तुम जरूर आओगे । इसीलिए उन्होंने तुम्हारे सारे दुश्मनों को एकत्रित कर लिया है "!

"क्यों ?" इनमें से और किसको मुझसे व्यक्तिगत दुश्मनी है ?"

"हवानची को जानते हो, कौन है ?"'

"कोंन है ?"

"हुचांग का साला ।यविज " ने बताया। हैं उठाए लिए के लेने बदला का मौत की जीजा अपने तुमसे हथियार भी उसने-

उसने बडी़ अजीव कसम खाई है । उसका कहना है कि अपनी जिन्दगी का अाखिरी कत्ल वह तुम्हारा करेगा ।"

हल्के से सकराया विकास, बोला'-"उसने तो बहुत गलत कसम खाई गुरू । मेरा कत्ल करने के बाद तो उसे और कत्ल करने होंगे, जैसे आपका, क्राइमर अकल का वरना आप दोंनो उस वेचारे को कत्ल कर दोगे ।"

" सवाल ये नहीं प्यारे कि कौन किसको कत्ल करेगा ।कहा ने विजय "..."सवाल यह है कि इन दोनों का परिचय मैंने तुम्हें इसलिए दिया है ताकि तुम मामले की भयानकता को समझ सको। हर कदम संभालकर उठाना है ।"

" वह तालीम तो आप मुझे दे ही चुके हैं ।"

" मेरा मतलब ये है कि इस मामले में विशेष सावधानी की आवश्यकता है ।। कहा ने विजय "

"विशेष सावधानी तो मैं हर मामले में रखता हूं।हुए मुस्कराते ने विकास " कहा बस"----, यूं कहो कि आपकी भूमिका से यह बात मेरी समझ में अ ा गई है कि इस बार टकराव में मजा खूब जाएगा ।"

"सोचने का अपनादिलजले प्यारे है तरीका अलग अपना-?" विजय ने कहाजहाँ"----- तक सवाल विजय दी ग्रेट के सोचने का है, वह हमेशा ही अ ाम के अचार की तरह खटटा किन्तु स्वादिष्ट होता है । इससे पहले कि तुम मेरी बात का मतलब पुछो, मैं तुम्हें पहले ही बताए देता हूं । वतन का स्टेटमेंट अखबार में छपते ही हमने कह दिया था कि यह स्टेटमेंट रंग जाएगा लही---- सा-सीधा हमारा अब । हुआ सवाल है कि चीन सरकार यह समझ गई हैं कि वतन की हिमायत में तुम जरूर जाओगे और मौत के दरवाजे खोलने के लिए ही सांगपोक और हवानची को मैदान में लाया गया है । तुम कहते हो कि इनके रहते केस में मजा अ ाएगा और मैं कहता हूं कि दुश्मन को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए ।"

"लेकिन अ ाप बारव "हैं हैं चाहते डराना मुझे क्या लेकर नाम के दोनों उन बार-ि कास ने पुछा ।

" मालूम है कि तुम किसी से डरने वाली चीज नहीं बल्कि दुनिया को डराने वाली चीज हो ।"

"'तो फिर गुरु क्यों धमकी की हवानची और सांगपोक मुझे बार-बार यह ने विकास "!?"

"'एक बात याद रखना प्यारे दिलजले, यानी कि गुड़ के डले ।ने विजय " कहा---"जब डूबता है तो तैराक डूबता है जो तैरना नहीं जानता, वह ज्यादा गहराई में ही नहीं जाता, तो डूबेगा ही केसे ? बिल्कुल नहीं डूवेगा है वार नाम उनकर बार- डरा तुम्हें कि नहीं बिल्कुल भावना यह मेरी पीछे के लेने दू वल्कि सचेत करना चाहता हूं कि इस में बहुत संभलकर अ ागे बढने की जरूरत है ।।

" ऐसा ही करूंगा ।"

"जानते हो, चीन से रिपोर्ट भेजने वाली क्रिस्टीना ने क्या लिखा है ?"

"क्या ?"

" उसने लिखा है के इस अभियान पर विकास को न भेजा जाये । उसका कहना है कि सांगपोक और हवानची प्रतिशोध की अ ाग में जलती उस नागिन की तरह हैं जिसके नाग की किसी नाग ने हत्या कर दी हो । उन दोनों की आंखों में विकास की तसवीर है, और जानते होवह । है देखा तुम्हें उसने कि ने क्रिस्टीना है लिखा भी ये- जानती है कि तुम मासूम हो । उसने कहा हैइन को विकास प्यारे और मासूम--- दरिन्दों के सामने न जाने दिया जाए है"

" फिर ?" विकास ने गम्भीर स्वर में पूछा'-"क्या आप मुझे इस केस में नहीं जाने देगे?"

हल्के से मुस्कराया विजय, बोला यहां तो होती बात वाली भेजने न तुम्हें "--- बुलाते ही नहीं प्यारे दिलजले हम ही वैसे ! से रोकने के किसी कि हैं जानते रुकोगे नहीं तुम । लेकिन हा, सारा काम एक योजनाबद्ध तरीके से हो, इसलिए तुम्हें यहा बुलाया है ।"

"तो हुक्म कीजिए।"

" अभी तो चीन की ही रिपोर्ट सुनी हे"। सुनो तो की देशों अन्य -- तो की देशों अन्य-

"जरूर ।"

"अमेरिका में मौजूद हमारे जासूस नागपाल ने रिपोर्ट भेजी हैअमेरिकन सीक्रेट सर्विस ने यह काम हेरी को सौपा' है कि वह चमन में वतन के बनाए यन्त्र और उसके फार्मूले को गायब करें । हैरी सीक्रेट सर्विस के चीफ की तरफ से यह खास हिदायत दी गई है कि इस सारे अभियान में कोई यह न जान सके कि वह हैरी हैं । सच पूछा जाए तो अमेरिकन सरकार वतन से बहुत डरने लगी है और यह नहीं चाहती कि वतन को पता लगे कि अमेरिका पुन"। है रहा उठा कदम कोई खिलाफ उसके :

" ब्रिटेन से क्या रिपोर्ट है गुरू ?" विकास ने पूछा ?

""यह कि इसी काम के लिए वहां से जेम्स बाण्ड को भेजा जा रहा हैं। पाकिस्तान से दो जासूसअ तुगलक-ली और नुसरत खान ।

रूस से बागारोफ को यह काम सौपा गया है । इन सभी को अलग अलग इनके देशों ने यह काम सौंपा है कि ये चमन से यन्त्र और फार्मूला गायब करें ।"

" क्या इम सव 'देशों के जासूस को यह जानकारी है कि उसकी तरह ही दूसरे देशों ने अपने जासूसो को यह काम सौंपा है ?"

" नहीं ।"

" तो अव हुक्म बोलिये गुरू ।। पूछा ने विकास "

"सुनो, धनुषटकार को साथ लेकर तुम्हें चमन के लिए रवाना हो जाना है । चीन हम "----किया शुरु कहना ने विजय " जाएंगे,
प्यारे विक्रमादित्य को रूस भेजा जाएगा।
अशरफ को अमेरिका,
परवेज पाकिस्तान और
आशा को ब्रिटेन ।"

"यानी आपने तो पूरी सीक्रेट सर्विस को ही हरकत में ला दिया ।"

" काम उसी ढंग से करना चाहिए प्यारे, जिस ढंग की जरूरत हो ।ने विजय " कहाहैं चले मोहरे से देशों अलग-अलग---, कह नहीं सकते के इनमें से कामयाब कौन हो ? सबसे महत्त्वपूर्ण काम , तुम्हारे हवाले किया गया । हर देश का जासूस चमन में पहुंचेगा।

अतहै में चमन केन्द्र का व्यूह इस :, और केंन्द्र पर हमने तुम्हें नियुक्त किया है । जहाँ तक हमारा अनुमान है, अगर सारे जासूस एक ही समय पर चमन में पहुंचे तो चमन में बेशक दुनिया के महान जासूसों का जबरदस्त टकराव होगा । हमारी राय यह है कि उस टकराव में तुम शरीक नहीं होगे ।"'

" तो फिर वहाँ क्या तमाशा देखूंगा ?"

-"'बेशक ।"

"'क्या मतलब हैंचौंका। विकास "

" वैसे तो हम जानते हैं प्यारे दिलजले कि काम अपने ढंग से करोगे और हमारे समझाने से कुछ नहीं होगा । ने ", कहा- समझाए-गई हो खराब आदत भी फिर लेकिन" बिना रहेंगे नहीं । सुनो, तुम वहा पहुंचोगे, लेकिन वतन के अलावा कोई यह नहीं जान सकेंगा कि विकास वहां पहुच गया है तुम्हारा काम् वतन, उसके आविष्कार और फार्मूले की हिफाजत करना होगा । जिस वक्त हैरी, बागारोफ, जेम्स बाण्ड, तुगलक अली , नुसरत खान, सांगपोक, हवानची और सिंगसीं वहां पहुंच जाएंगे तो एकएक लक्ष्य । जाएगा लग पता से रूप निश्चित में बारे के दूसरे- ही है । अतएक सकेंगे। कर नहीं काम वे मिलकर : दूसरे का विरोध करेंगें टकराव होगा । सम्भव है कि उस टकराव में इनमें से एकाध का कल्याण हो जाए । इनके बीच नहीं कुदोगे । आपसी लड़ाई में जीतने के बाद जो भी वतन तक पहुंचने की कोशिश करे, उसे संभालना तुम्हारा काम होगा ।"

लेकिन अ ाप सब लोग चीन, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और पाकिस्तान में क्या करेंगे ?"

" अखण्ड कीर्तन । ने विजय लाकरझुझ "कहाअवे"---, पहले पूरी बात सुन लिया करो, तब चोंच खोला करो । ये माना कि तुम अभिमन्यु बनकर उस व्यूह में घुसे होगे, लेकिन प्यारे, मालूम है न कि अभिमन्यु व्यूह में फंस कर ही रह गया था । बही डर हमें भी है, माना कि तुम कामयाब न हो सहे और इनमें से कोई यन्त्र और फार्मूला प्राप्त करने में कामयाब हो गया तो क्या केरोगे ?"

"मेरे ख्याल से ऐसा होगा ही नहीं गुरु ।"

" तुम्हारे ख्याल रेत की दीवारों से ज्यादा मज़बूत नहीं होते प्यारे ।" विजय ने कहा..."और हमारे ख्याल अक्सर पत्थर की लकीर कहलाते हैं । अपने ख्यालों को जेब में रखो और हमारी बात को कान में आंवले का अचार डालकर सुनो । तुम्हें एक विशेष ट्रांसमीटर दिया जाएगा। उसकी मदद से जब चाहो----- विक्रमादित्य, झानझरोखे-, गोगियापाशा से सम्बन्ध्र स्थापित कर सकते हो । माना कि दुश्मनों में से कोई अपने अभियान में कामयाब हो गया तो तुम यह सूचना उसके देश में मौजूद हममें से किसी 'को भी दे दोगे । मानो कि जेम्स बाण्ड कामयाब हो जाता है तो तुम फौरन यह सूचना मिस रोगियापाशा को दे दोगे, क्यों ?...-वयोंकि ब्रिटेन में वही होगी । अतचीफ अपने को बाण्ड जेम्स फिर : तक न पहुंचने देने का काम उसका होगा है"

"मतलब यह कि अगर चीनी जासूस कामयाब हो तो उसकी सुचना मैं आपको दे दूं ?" बिकास ने कहा ।

" वो मारा साले पापढ़ वाले कोबात हमारी न समझे अब--...गधे की लात ।ने विजय-" कहा तो जाए हो कामयाब हेरी"--क्रो झानझरोखे, तुगलक और नुसरत कामयाब हों, तो परवेज को कहने का तात्पर्य ये कि जिस देश का कामयाब हो, उसी देश में मौजूद भारतीय सीक्रेंट सर्विस के एजेण्ट को सूचना दे दी जाएगी"!

"यह तो मैं समझ गया गुरू कहा ने विकास "!’--"लेकिन माना कि चचा बागारोफ कामयाब हो जाते हैं, तो सीधी...सी बात है कि मैं रूस में मौजूदअंकल विक्रम - को सूचित कर दूं, वे हरकत में अ ा जायेगे । यह ठीक हैमें देशों अन्य मगर- मौजूद साथी जैसे चीन में आपका क्या काम रह जायेगा ?"

"पीर्किंग की ठण्डी सडकों पर टहलकर वापस आ जाएंगे ।"

मेरे ख्याल से तो बेकार में इतना लम्बा लफड़ा फैला रहे हो गुरु ।। कहा ने विकास "

" जिस दिन से तुम्हारी तुच्छ बुद्धि में हमारी महान बातें फिट होने लगेंगी प्यारे दिलजले, उस दिन से लोग तुम्हे विकास नहीं, विजय कहेंगे ।कहता विजय " ही चला गया..."तुम एक ही बार में यह योजना सुन लो जो हमने बनाई है, उसे शान्तिपुर्वक सुनने के बाद शायद तुम्हें किसी तरह का कोई सवाल करने की जरूरत न पडे । सुनो होंगे रवाना को देशों उन लोग सब हम-स्टेटमेंट के वतन जो से हरकत में अ ाए है । हमारी सबसे पहली कोशिश यह होगी कि हम उस देश के जासूस को चमन तक न

पहुंचने दे, जहा तुम हों । माना कि मैं चीन जाता हूं । मेरा प्रयास यह होगा
कि सागपोक एण्ड पार्टी को मैं चमन में न पहुंचने दूं लेकिन अगर वो मेरे चीन पहुंचने से पहले ही चीन से निकेल लें अथवा अपनी कोशिश के बावजूद भी मैं उन्हें न रोक पाऊं तो चमन में उनका टकराव 'तुमसे होगा । हालांकि तुम भी उन्हें उनके अभियान में कामयाब नहीं होने दोगे लेकिन अगर मान भी लिया जाए कि कामयाब हो जाते हैं तो चीन में हम फिर होंगे ! नहीं कोई यह अभी क्योंकि कह सकता कि कौन कामयाब होगा ? जो भी सफल होगा उसी के देश में मौजूद भारतीय सीक्रेटस सर्विस का एजेण्ट हरकत में अा जाएगा । बाकी लोग चुपचाप भारत लौट जाएंगे ।"

"चक्रव्यूह तो आपने बनाया गुरू ।"

" अजी हमारे क्या कहने ।"। हैं डालते बना क्या-क्या जाने न तो हम "----बोला तानकर सीना विजय "

विकास और ब्लेक बंवाय सिर्फ मुस्कराकर रह गए ।

फिर कुछ देर की बातों और ब्लेक व्वाय द्वारा दिया गया कुछ ऐसा सामान जो इस अभियान में उसके काम आने वाला था लेकर-दुनिया । गया निकल से भवन गुप्त वह के महान जासूसों से टकराब के ख्वाब देखता विकास घर पहुंचा । "

पहुंचते ही रैना ने उसे आड़े हाथों लिया । बिकास जब इधरवनाने बहाने के उधर- लगा तो रैना ने कहा कि है मालूम मुझे---जाएग पास के वतन तू बअा ।"

खोपड़ी बुरी तरह झन्ना उठी उसकी, बोला..."क्या मतलब ?"

"मतलब ये ।। दिया रख कागज एक पर हाथ उसके ने रैना ही साथ के कहने "

धड़कते दिल से यह सोचता हुआ विकास कागज की तह खोलने लगा कि यह कागज किसका अौर इसमें क्या लिखा है ।

और उसने खोला,-पढा---

"प्यारे गुरुदेव, चरण सपर्श "!

आप तों विजयं गुरु के केहने में चलते हो ना ? न जाने वतन की मदद के लिए चमन में कव आओगे, शायद उस वक्त जव मेरे भाई का अन्जाम खत्म हो चुका होगा जो डॉक्टर भावारहा जा चमन ही आज़ मैं । सकता बैठ नहीं चुप मैं...मगर । हुआ का-हूं अापके चरणों की कसम, वतन की तरफ कोई आंखें भी उठाए तो मैं उसकी आखें न निकाल लूं तो मेरा नाम मोणटो नहीं ।

मैं जा रहा हूंतो समझो जरूरत मगर--- अपने बच्चे की मदद के लिए चमन जा जाना । ज़रूरी न समझो तो आपकी इच्छा । "
अपका धनुषंटकार ।
विकास ने पढ़ा । एक पल के लिए तोउसका। गया रह चकराकर दिमाग-
उसने देखा...कागज में सबसे ऊपर तारीख पड़ी थी । पिछले दिन की तारीख । सचमुच कल शाम से ही धनुषटंकार उसे नहीं चमका था ।
मगर उसे तो ख्वाबों में भी उम्मीद नहीं थी कि धनुषटंक्रार अकेला ही चमन पहुच जाएगा ।

घण्टियों की आवाज सुनते ही धनुषटंकार उछलकर खड़ा हो गया था । वह जान गया था कि उसका भाई आ रहा है वतन ! उसने जाल्दी से पब्बे का ढक्कन, बन्द करके जेब में डाला, और जैसे ही उसने कक्ष के दरवाजे की तरफ देखा सफेद जैसा दूध -- रहा हो प्रविष्ट में कमरे बकरा था । धनुषटंकार उसकी तरफ झपटा, अपोलो धनुषटंकार की तरफ । बड़े अजीब ढंग से एक दूसरे के गालों को प्यार क्रिया उन्होंने । अभी वे प्यार कर ही रहे थे कि दरवाजे पर नजर आयाकपडे सफेद जैसे दूध । वतन-, आखों पर चढ़ा सुनहरे फ्रेम और गाढे। चश्मा शानदार का शीशों काले-

इस बार वतन के हाथ में एक नई चीज थी...एक छड़ी का रग भी दूध जैसा सफेद था । उसे देखते ही धनुषटंकार अपालो से अलग हुआ ।

उसकी तरफ देखता वतन मुस्करा रहा था ।।

धनुकांकार ने एकदन जम्प लगासीने उसके डालकर में गले के वतन बांहें और दी- पर लग गया, न सिर्फ झूल गया, बल्कि पागलों की, तरह वह वतन गाल चूम रहा था । वतन ने भी प्यार से उसे लिपटा लिया ।

"अकेले ही आए हो क्या ?" वतन ने सबसे पहला सबाल यही किया था ।

धनुषटंकार ने इशारे से 'हां' कहा । .

यह थी वतन और धनुषटकार की वह पहली मुलाकात जब भारत से चमन पहुचने पर लह वतन से मिला ।

राष्ट्रपति भवन के मुलाजिमों ने उसे यह कहकर कक्ष में बैठा दिया था, कि वे अभी महाराज को सूचना देते हैं ।

और। थे पहुंचे वतन और अपोलो में कक्ष बाद देरे ही कुछ-----

फिरमें हॉल अतिधि । गई की खातिर जबरदस्त की धनुषटंकार में भवन-राष्ट्रपति- तब, वे नाश्ता कर रहे थे । वतन की छडी उसकी कुर्सी से सटी रखी थी । नाश्ते के 'बीच ही वतन ने उससे पूछा था..."मोण्टो कोई या अाए चले घूमने ही यूं .! खास बात ?"

जवाब में धनुषटंकार ने उसे अपनी डायरी का एक लिखा हुआ पृष्ठ पकडा दिया । उस कागज में धनुषटंकार ने लिखा था आपने आविष्कार के विषय में अख़बारों में स्टेटमेंट देकर अच्छा नहीं क्रिया । दुनिया क्री महाशक्तियां, माने जाने वाले राष्ट्र, उस आविष्कार को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे । इस आविष्कार के कारण ही आपकी मदद आपकी । है में खतरे भी जान (वतन) यहां मैं ही लिए के आया हुं । "

पढ़कर बडे आकर्षक ठंग से मुस्कराया वतन, बोला हो पगले ही वहुत तुम"--, मोण्टो ।"

"क्यों ?" धनुषटंकार ने इशारे से पूछा ।

" इसलिए कि तुम व्यर्थ ही चिन्तित हो उठे ।कहा ने वतन "..."जिस देश का शासन मैं चला रहा हूं , वह छोटा जरुर है, लेकिन इस देश का शासक दुनिया की महाशक्तियों के हथकण्डों
से पूर्णतया परिचित है । मैं जानता हूं कि मेरे स्टेटमेंट से दुनियां में खेलती मच गई है । यहीं चाहता भी था मैं ।"

"क्यो ?" धनुषटंकार ने पुन। पूछा से इशारे :

"इसलिए कि सारी दुनिया को यह बता सकू कि दुनिया में सिर्फ अमेरिका और रूस ऐसे देश नहीं हैं जिनके बिज्ञान की दुनिया पर एकाधिकार है । मैंने साबित कर दिया कि उनके मुकाबले चमन जैसा छोटा राष्ट्र भी कुछ कर सकता है । क्या दुनिया की महाशक्तियां चमन के इस आविष्कार से चिंतित न ही उठी है?" "'दुनिया की ये महाशक्तियां सिर्फ चित्तित होकर ही नहीं रह जाती हैं । ने धनुषटंकार "डायरी के पेज पर लिखकर वतन को दिया तब- रहे ही जलती से ईर्ष्या । हैं लगती जलने बल्कि"-- वे भी शायद हमारा कुछ न बिगाड़ सकें, लेकिन इनकी आदत है कि ये किसीउस तरह भी : शक्ति को समाप्त कर डालती है, जो उनके करीब जाना चाहती हैं । डाँक्टर भावा का नाम तो सुना ही होगा भैया, उन्होंने भी तुम्हारी ही तरह यह धोषणा कर दी थी कि उन्होंने एक ऐसा आविष्कार कर लिया है जिससे वे समूचे है भारत पर किरणों का एक ऐसा जाल बिठा देगे कि दुनिया का कोई भी अणुको भारत बम/ लेशमात्र भी क्षति न्न पहुचा सकेगा उनका अन्जाम तो तुम"...

" अच्छी तरह जानता हूं ।डॉक्टर मैं लेकिन"-कहा ने वतन मुस्कराकर से हल्के " भावा नहीं हू मोण्टो इन-भावा डॉक्टर ! ठीक और थे नहीं जानते को दरिन्दो उनके विपरीत मैं इन हरामजादों की नसहूं वाकिफ से नस- । मैं अच्छी तरह जानता हू कि कौनमें पल से-, क्रिस हद तक घिनोनी चाल चल सकते हैं । तो ऐसा नहीं है मोण्टो, कि मैंने अखबारों को बिना कुछ सोचे समझे स्टेटमेंट दे दिया है । अखबारों को मैंने जो कुछ दिया है, बहुत अच्छी तरह सोच। है दिया समझकर- मुझे मालुम था कि मेरे इस स्टेटमेंट से दुनिया में हलचल मचेगी । महाशक्तियों को चमन के रूप में मंडराती अपने उपर मौत नजर आएगी । अपनी ताकत के मद में चूर जो राष्ट्र अन्धे हुए जा रहे हैं, उन्हें एक ठोकर लगेगी । वे पलटकर चमन की शक्ति का कारण यानी वह यन्त्र छीन लेना चाहेंगे जो मैंने बनाया है । उनका प्रयास तो यही होगा कि वे चमन की शक्ति के ,स्रोत यानी वतन को ही खत्म कर दें ।"

धनुषटंकार ने पुन" .....स्टेटमेंट यह हुए जानते कुछ सब इतना "----लिखा :

वतन ने पढा, धीरे...से मुस्कराया, बोता हां "-----, क्योंकि मैं उन्हें बता देना चाहता था कि हर भारतीय डॉक्टर भावा नहीं है । मैं तो चाहता ही यह हूं कि वे अपनी कोशिशें करें । तुम लोगों को यहाँ से गये छन हैं हुए महीने : मोण्टो :छ हां ! हैं हुए महीने, मेरे चमन को आजाद हुए । इन छमें महीनों : मैंने यही एकमात्र काम किया ' है । जो तुमने अखबारों में पढ़ा है, इसके अतिरिक्त भी बहुतकिसी इनकी को महाशक्तियों इन कि ऐसे । हैं किए काम से- भी गलत हरकत का मुंह जवाब तोड़- "सकू। दे

"जैसे ?"' धनुषटंकार ने लिखा ।

वतन ने पढा, पढकर जबाव दियायहीं । है नहीं वक्त का बताने तो अभी"----- रहोगे तो सब कुछ अपनी आंखों से देख लोगे । अाओ चलें समय का दरबार फिलहाल ! हो रहा है । बाकी बाते दरबार के बाद करेंगे ।अपनी वतन ही साथ के कहने " छड़ी संभालकर उठ खड़ा हुआ ।

तभी धनुषटंकार ने एक हाथ उठाकर उसे एक मिनट रुकने का इशारा किया । "

" बोलो । हो चाहते पुछना क्या "-मुस्कुराया वतन "?"

धनुषटंकार जल्दीदेर ही कुछ को वतन था। रहा लिख कुछ में डायरी जल्दी- इन्तजार करना पड़ा कि धनुषटकरर को जो लिखना था, यह लिखकर उसके हाथ में डायरी पकड़ा दी । वतन ने उसे अपने होंठों पर मुस्कान लिए पड़ना शुरू किया, पर पूरा पड़तेबल एकमात्र पर मस्तक । गई हो गायब मुस्कान होंठों उसके पड़ते- उभर आया । उसने उस इबारत को पढा, लिखा था-- हम जब बार पिछली सब यहां से गए थे तो किसी ने भी तुम्हारे हाथ में कभी कोई छड्री नहीं देखी थी भैया, लेकिन इस बार देख रहा हूं अाप इस छडी को एक मिनट के लिए भी खुद से जुदा नहीं कर रहे हैं । जिस तरह बेदाग सफेद कपडे और ये काला चश्मा आपकी प्रिय है उसी तरह इस बार यह छडी भी लग रही है । क्या मैं इस लायक हूं कि इस छडी के बारे में कुछ जान सकू ?"

धनुषटकार ने देखाऔर बल पडा़ पर मस्तक के वतन बाद के पढ़ने दोबारा को इबारत- ज्यादा गहरा हो गया । उसने धनुषटंकार की तरफ देखा, फिर उसके होंठों से एक अत्यन्त ही गम्भीर स्वर निकलाबारे के छड़ी"---- में जाऩना चाहते होदेखो-------- "।

कहने के साथ ही उसने छडी को ऊपर उठाकर एक हाथ से उसका उपरी हैंडिल पकडा ।

फिरदिया। झटका तेज एक-----

ठीक इस तरह, जैसे क्रिसी म्यान में से तलवार निकले । छड़ी के अन्दर से मुगदर निकल आया हडिडयों का बना मुगदर । वह मुगदर अभी तक खुन से सराबोर था । हडिडयों के बने मुगदर पर लगा खून सूखकर काला पढ़ चुका था । धनुषटंकार अभी

अवाकथा रहा ही देख को सा-

कि वतन की आवाज ने उसकी तद्रा भग की ।

वह कह रहा थाकी बहन और माँ मेरी यह मौण्टो पहचाना इसे"----' हुहिड़यों का बना वही मुगदर है जिसे विकास ने बनाया था । जिसके वार सहताकमीना सहता- मैग्लीन मर गया । ये इस पर लगा खून देख रहे हो न...ये मेग्लीन का खून है ये मुगदर कभी नहीं धुलेगा मोण्टों, कभी नहीँ हडिडयो .इन की बहन आर मा अपनी ! को कभी साफ नहीं करूंगा मैं, मैंने कसम खाई है कि हर जुल्मों के खून का कुछपर हडिडयों इस अंश कुछ-न्-, जरूर लगेगा । इसे हमेशा अपने साथ रखूंगा मैं -- हमेशा ।"

धनुषटंकार के जिस्म का रीयां रोयां खडा हो गया ।

आगे कुछ पूछने के लिए उसे जैसे कोई प्रश्न ही न मिला ।।

वतन ने खुद को संभाला-, मुगदर को छड़ीबे और रखा में म्यान रूपी-ला"। चलें में दरबार आओ"---

धनुषटंकार ने ऐक नजर छड़ी को देखा, फिर चुपचाप वतन क पीछे े चल दिया । अपोलो वतन से आगे अपने गले में पड़ी घण्टियां बजाता चला जा रहा था । धण्टियों की वह आवाज वतन के आगमन का प्रतीक था ।

दरबार में प्रविष्ट होते ही धनुषटंकार की खोपड़ी सनसना कर रह ग ई ।

दरबार में अन्य जोथीं बातें विशेष-, वे तो थी हो, किंतु वह जिसने चीज - धनुषटंकार क्रो चकरा दिया था वह---------- वुढिया वह फलवाली---थी, जिसे वतन दादी मां कहा करता था । वह दरबार के सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान थी ।

मस्तक पर वही ताज जो वतन ने उसे पहनाया था ।

धनुषटंकार के दिमाग में विचारधी गई मर तो बुढ़िया पह-उभरा-, उसकी तो जलती चिता भी सबने देखी है फिर फिर ..... दादी बूढी फ़लवाली हैं है चक्कर क्या मां इस सिंहासन् पर कैसे धनुषटंकार का दिमाग। बुरी तरह चकरा रहा था ।

उस पर रहा न गया तो झपटकर वह वतन के कधो पर चढ़ गया । फिर सांकेतिक भाषा में उसने वतन से उस बुढिया कें बारे में पूछा । तबइरादा उसका वतन जबकि- समझा हंस पड़ा था । दरबार के कोने कोने में उसकी खिलखिलाहट गूंज उठी ।।

धनुषटंकार आश्चर्य के साथ उसे देखने लगा । पहली बार उसने वतन को इस तरह खुलकर हंसते देखा था । न सिर्फ उसने ही बल्कि दरबार में मौजूद हर इन्सानने- वतन को जिन्दगी में पहली बार इस कदर हंसते देखा था ।

सारा दरबार उसकी हंसी की आवाज से गूंज रहा था । कुछ देर बाद अपनी हंसी को काबू में करके वतन बोला..."विकास जैसे जासूस का शिष्य होकर तुम धोखा खा गए मोण्टो । अब तो मानना पडेगा कि चमन के संग तराश दुनिया में बेमिसाल है ।"

धनुषट'कार ने इशारे से पूछा मतलब क्या"-?"

..."जरा दादी मां को करीब से जाकर देखो । मतलब तुम्हें खुद पता लग जाएगा ।" वतन कह रहा था..."ये दादी मां नहीं, उनका स्टैच्यू है । चमन के ही एक संगतराश ने इसे तैयार किया है । जब वह सगतराश इसे लेकर दरबार में पहुंचा तो हम सहित दरबार में मौजूद हर इन्सान की मनोदशा बैसी ही थी जैसी कि इस वक्त तुम्हारी है । सचमुच दूर से देखकर कोई भी नहीं कह सकता कि सचमुच की दादी मां नहीं बल्कि स्टैच्यू हैं । जैसा कि तुम जानते हो मोण्टो, चमन पर असती हुकूमत इन्हीं की है, मैं इनका प्रतिनिधि हूं ।उस वतन हुआ कहता सव यह " सिंहासन के बराबर ही मौजूद अपने सिंहासन पर बैठ रहा था ।

वतन का सिंहासन फलवाली बूढ़ी मा से कुछ नीचा था । सिंहासन पर बैठने का संकेत था । धनुषटंकार उस दूसरे सिंहासन पर बैठ गया ।

बैठने के बाद पहली बार उसने दरबार को ध्यान से देखा ।

अभी तक दरबार में अाने के बाद उसने देखा ही क्या था? दादी मां के स्टैव्यू के अलावा वह कुछ भी तो नहीं देख सका था, अब...दरबार की स्थिति को भरपूर नजर से देखा ।

बेहद खूवसूरती से सजा दरबार ।

बेशकीमती झालरें । हॉल की छत से लटके फानूस रंग कई में कतार तरफ दाईं ! की बर्दी पहने सशस्त्र सेनिक सावधानी की मुद्रा में खड़े थे । उन कतारों के अागे एक कतार कुर्सियों की भी पड़ी थी ।

उन पर बैठे उच्च सेनिक अधिकारी ।

बाई तरफकतारे की सेनिकों जल और में वर्दी सफेद-,

कतारों के अागे कुर्सियोॅ पर दोनों सेनाओं के अधिकारी । सिंहासन
के ठीक नीचे कपडों में बैठे कुछ व्यक्ति । उनके बैठने का स्थान और तरीका ही बता रहा था कि इस दरबार में उन्हें सम्मानित स्थान _प्राप्त है ।

सिंहासन के ठीक सामने कुछ कुर्सियां पड़ी थी ।

उन पर चमन के साधारण नागरिकों को बड़े सम्मान के साथ बैठाया गया था ।

"अब दरबार की कार्यवाही प्रारम्भ की जाए ।"

इन शब्दों के साथ वतन अपने सिंहासन से खड़ा हो गया । साथ ही दरबार में बैठा हर व्यक्ति खडा हो गया । वतन अपने करीबी यानी दादी मां के सिंहासन के करीब पहुंचा और बडी श्रद्धा से हाथ जोडकर नतमस्तक होता हुआ बोलातुम्हारा"- बच्चा, तुम्हें साक्षी मानकर, तुम्हारे दरबार की कार्यवाही शुरु करता है ।"

सभी दादी मा के समक्ष नतमस्तक हो गए ।

फिर दादी मां' की स्तुति की गई...ऐसे, जैसे वह कोई देबी रही हो ।

स्तुति के बाद...

सभी ने अपनी। की शुरु देनी को वतन रिपोर्ट अपनी-

सिंहासन के ठीक नीचे सादे वस्त्रों में जो लोग बैठे हुए थे, धनुषटंकार ने जब उनकी रिपोर्ट सुनी तो उसने जाना ये चमन के गुप्तचर विभागों से सम्बन्धित हैं ।

दरबार की सम्पूर्ण कार्यवाही को धनुषटकार भी चुपचाप सुनता रहा ।

हा, इस सारी कार्यवाही के बीच उसने यह जान लिया कि वतन ने चमन का शासन बेहद निपुणता के साथ चला रखा है सेनिक अधिकारियों और जासूसों की रिपोर्ट लेने के बाद उसने चमन के नागरिकों की शिकायतें सुनकर उनका समाधान क्रिया ।।

सबसे अन्त में दरबार में कुछ पेटियां खोली गई ।

परन्तु वे सब खाली ही निकली ।

अंतिम पेटी की सील तोड़कर यह देखने पर कि वह भी खाली है, पेटियाँ खोलने बाला मुलाजिम बोला पेटियों सारी ये "----"। महाराज हैं खाली भी आज एक पल चुप रहकर वतन ने कहा"----' विभिन्न स्थानों पर ये पेटियों इसलिए रखी जाती है कि चमनके किसी भी निवासी क्रो हमसे यानी चमन के वर्तमान शासन से किसी तरह की शिकायत हो अथवा किसी भी विषय से सम्बन्धित कोई ऐसी शिकायत हो जिसे कोई अपने नाम के साथ किसी वज़ह से हम तक न पहुचाता हौ, यह शिकायत इसमें लिखकर डाली जा सकतती हैं । अावश्यक नहीं कि शिकायतकर्ता अपना नाम भी लिखे ।

" इसमें किसी भी शिकायती पत्र का न पाया जाना इस बात का द्योतक है महाराज,कि चमन के किसी नागरिक को ऐसी कोई शिकायत नहीं है जिसको अाप तक पहुंचाने के लिए किसी को अपना नाम छुपाने की जरूरत पड़े ।"

अगर ऐसा है तो शायद हम दुनिया के सबसे खुशनसीब शासक हैं ।पत्र-शिकायत कि नहीं आवश्यक लेकिन"---कहा ने वतन " के न होने का यही कारण हो है सकता हो भी कारण और एक इसका !, और वह यह कि इन पेटियों का अभी चमन में व्यापक प्रचार न हुआ हो । "

--"ऐसी बात नहीं है महाराज । बताया ने मुलाजिम "। है जानता नागरिक हर का चमन में बारे के पेटियों इन !

--"फिर भी ।" वतन ने कहा रहे ताघुट कोई से शासन हमारे कि चाहते नहीं हम । जाए बढ़ाया प्रचार का पेटियों इन"----"।

" जो आज्ञा !" यह कह कर मुलाजिम नतमस्तक हो गया ।

इस तरह दरबार बरखास्त हुआ।

दोपहर के भोजन के बाद वतन ने धनुषटंकार को अराम की सलाह दी, उसने यह भी कहा बह उस दरबार की कार्यवाही के बाद उसे अपनी विशेष प्रयोगशाला दिखायेगा । वह प्रयोगशाला जिसमें दरबार की कार्यवाही के वाद वह ज्यादातर वक्त गुजारा करता है, जिसमें उसने ब्रह्मांड से आवाज कैच करने वाला यन्त्र बनाया है ।

धनुषटंकार ने तो जिद की थी कि वह आज ही उस प्रयोगशाला में घूमना और उस यन्त्र को देखना चाहता है । किंतु न जाने क्यों वतन धनुषटंकार की यह ,जिद टाल गया ।।

धनुषटंकार आराम से राष्ट्रपति भवन के उस कमरे में सो गया जिसमें उसके रहने का प्रबन्ध किया गया था । उसका अपना ख्याल था कि वतन और अपोलो प्रयोगशाला में चले गए हैं । वह शाम को पांच बजे उठाराष्ट्रपति कि देखा उसने ही उठते- भवन का एक मुलाजिम उसकी सेवा हेतु हाथ बांधे खड़ा हैं । उसने एक कागज पर लिखकर उसे दिया"। हैं कहां भैया "---

" प्रयोगशाला में ।। दिया उत्तर सा-संक्षिप्त ने मुलाजिम बाद के पढने कागज "

…..."प्रयोगशाला कहां है ।पूछा लिखकर ने धनुषटंकार "…"मुझे भी वहीं ले चलो ।"

…"क्षमा कीजिए ।"-----जवाब का मुलाजिम " इस वक्त महाराज अपने प्रयोगशाला में व्यस्त होंगे । किसी को भी वहाँ जाने की इज्जत नहीं हैं ।"

अभी धनुषर्टकार अपनी डायरी पर कुछ और लिखने के लिए उंगलियों में दबे पेन को सीधा कर ही रहा था कि एकाएक राष्ट्रपति भवन में धण्टियों की मधुर आवाज गूंज उठी ।

मुलाजिम ने एकदम कहा"। गए अा महाराज़-

उसका वाक्य पूरा होते ही कमरे में प्रविष्ट हुअा। अपोलो--

उसके बाद दूध जैसे बेदाग सफेद कपडों में कैद वतन । आंखो पर सुनहरे फ्रेम का काला चश्मा, हाथ में छडी…वह छड़ी, जिसके अन्दर उसकी मां और बहन की हडिड़यों का बना मुगदर था । कमरे में वतन की आवाज गूंजी…"मैं जा गया हूं मोण्टों ।"

इसके बाद रात के बारह बजे तक धनुषटंकार की जबरदस्त खातिर चलती रही ।

अगले दिन तब जबकि दरबार में पेटियां खुल रही थीजब चौका दरबार सारा वक्त उस- आखिरी पेटी खुली । पैटी में से फर्श पर गिरे शिकायतपत्-र पर प्रत्येक की दृष्टि स्थिररह होकर सी- गई । ज्यादातर दरबारिर्यो के चेहरों पर आश्चर्य के भाव उभर अाए । "

धनुषटंकार, अपोलो और वतन की निगाह भी उसी पर थी ।

चमन के विभिन्न स्थानों पर ये पेटियों रखने का कार्यक्रम' पिछले चार महीनों से चल रहा था । प्रतिदिन दरबार में इन पेटियों

को खोला जाता था, कभी कुछ नहीं निकला । इन पेटियों के खुलते ... समय दरबारी बड़े इत्मीनान के साथ खडे रहते थे, 'क्योंकि सभी जानते थे कि उनमें से कुछ निकलने वाला नहीं है । चार महीने में यह पहला कागज था जो पेटी के माध्यम से दरबार में अाया था ।

तभी तो प्रत्येक की दृष्टि उसी कागज पर केद्रित थी ।

अजीब। थे लगे धड़कने दिल साथ मैं धढ़कनों सी-

ज्यादातर लोग एक दूसरे की शक्ल देख रहे थे, जैसे पूछ रहे हों कि क्या वह जानते कि कागज में क्या लिखा होंगा ?

मगर हर आंख में यह सवाल था, जवाब कहीं नहीं ।

..."हम कहते थे न कि इन पेटियों का व्यापक प्रचार नहीं क्रिया गया । सामने परिणाम का प्रचार के कल"-----कहा ने वतन "
"। है

--"'नहीं महाराज है"---बोला बंढ़कर आगे थोडा मुलाजिम वाला खोलने पेटियां " मैं दावे के साथ कह सकता हू कि आपके शासन में चमन के क्रिसी भी नागरिक क्रो कोई शिकायत नहीं है । यह कागज यूं ही किसी ने मजाक में डाल दिया हो"। ...

...-""शमशेरसिंह ।क्रो आदमी हर मौजूद में दरबार ने गुर्राहट इस की वतन " कंपकंपा दिया हमें चटुकारिता कि हो जानते "-
कि हो कह कैसे तुम । नहीं पसन्द सारे चमनकिसी मैं-
क्रो हमसे कोई शिकायत नहीं हैं ।"

" ज जी जी मैं जानता हूं ।। गया बौखला मुलाजिम नामक शमशेरसिह "

"तुम जैसे चादुकार अगर हमारे चारों तरफ रहें तो चमन के नागरिक घुटअेर रहे होते परेशान वे जाए मर ही धुटकर- तुम जैसे चाटकारों से घिरे हम इसी भ्रम में रहे कि हमारे शासन में किसी कौं कोई शिकायत नहीं है, कैसे जानते हो तुम ?"

सहमकर शमशेर सिंह ने गर्दन झुका ली ।

'"अगर तुम जानते होते तो यह कागज इस पेटी में से न निकलता ।गम्भीर का वतन " स्वर तो बात की मजाक रही "-----

एक का चमन कि चाहिए रखना नध्या यह तुम्हें बच्चा भी इतना बदतमीज नहीं जो अपने राजा से इस तरह का मजाक करे । पेटी से निकला यह पत्र ज्वलन्त प्रमाण है क्रि क्रिसी को हमसे, हमारे शासन करने के ढंग से कोई शिकायत है तुम्हारी यह पहली गलती है, इसलिए क्षमा करते हैं, मगर इस शर्त पर की भविष्य में तुम हमसे ऐसी चाटुकारिताभ-री बात फिर कभी न कहोगे ।"

शमशेरसिंह चुप ।

" अपोलो !" वतन के मुह से निकला ।

जैसे इसी शब्द का प्रतीक्षक था बकरा, वह अपने सिहांसन से उछला । एक मिनट में वह पत्र लाकर उसने वतन को दिया, इधर अपोलो वापस अपने सिंहासन पर जाकर बैठा और उधर पत्र की तह खोलता हुआ वतन कह रहा था..."यह पत्र हम भरे दरबार में जोरहै लिखा यह जिसने ताकि पढेगे जोर-, उसकी शिकायत आप लोग भी जान जाएं ।"

सबकी सांसें रूक गई जैसे !

सभी लोग जानना चाहते थे कि वतन के खिलाफ आज चमन के किसी नागरिक की क्या शिकायत हो गई है ।वतन ने पड़ना शुरू क्रिया-

-----वतन बेटे?

वतन ने पत्र में लिखा ये सम्बोधन पढ़ा तो दरबारियों के रोंगटे खडे हो गए ।

परन्तु बिना अटके वतन आगे पढ रहा था...

" तुम्हारे शासन में कोई कमी न होते हुए भी एक सबसे बड़ी कमी यह है कि तुम्हारा गुप्तचर विभाग वहुत कमजोर है । तुम जानते होगे जिस देश का यह बिभाग कमजोर हो उस देश का भविष्य किसी भी समय अन्धक्रार में गर्तं में डूब सकता है । तुम शायद यह चाहोगे कि मैं इस कथन को प्रमाणित करू । तुमने अपने गुप्तचर विभाग को यह काम भी सौंप रखा है कि कोई भी अजनबी चमन में दाखिल होते ही
उनके नोटिस में अा जाए? मगरतुम्हारा और गया आ में चमन मैं । हुआ नहीं यह-- कोई भी जासूस यह न जान सका कि कोई अजनबी चमन में आ पहुंचा , चमन में ही नहीं बल्कि इस वक्त जबकि यह पत्र दरबार में पढ़ा जा रहा है कर सुन यह-शायद सभी को हैरत होगी कि मैं इसी दरबार में मौजूद हूं तुम्हारे जासूस अगर मुझे अब भी पकड़ लें तो मैं यह शिकायत वापस ले लूंगा ।

तुम्हारा न। नहीं नाम अभी-ना-न-

इस पत्र की समाप्ति तक सारे हॉल में सनसनी। गई दौढ़ सी-

अजीब घबराए। थे रहे देख से दृष्टि भरी-संदेह क्रो दूसरे-एक सब । लगे अाने नजर चेहरे से-

और सिं ---हासन के करीब बैठे गुप्तचर ?

उनके चेहरे तो हल्दी की भांति पीले पड़ गए ।

वतन की दृष्टि अभी तक पत्र पर जमी हुई थी एकाएक उसने पत्र पर से नजरें हटाई । गौर से एक पत्र । देखा को देरबारी एक-दरबार । रखा में जेब अपनी उसने में सन्नाटा छा गया पर मौत कि जैसे ऐसा-शोक मनाया जा रहा हो ।

फिर सबने देखा। मुस्कान सी-अजीब एक वाली उभरने पर होंठों के वतन-

वह सिंहासनं से उठ खडा हुअा ।

धीरेऐसा में दरबार सारे । लगा उतरने नीचे वह से कदमों से सन्तुलित धिरे- सन्नाटा छा गया था कि सूई भी गिरे तो बम जैसे विस्फोट की अावाज हो । हर दृष्टि इस वक्त वतन पर केन्द्रित थी ।

लह सिंहासन से नीचे अाया ।

सैनिको की कतारों क्रो देखता वह आगे बढने लगा ।

एकाएक शमशेरसिह के करीब जाकर यह उसके पैरों में झुक गया । पैर छू लिए उसने ।

" अरे अरे , महाराजउस ...तो चाहा बौखलाना ने. शमशेर "...क पैर पकडकर वतन ने कहा पहचान आपको बच्चा आपका"-जैसे शब्द ये के वतन "! चचा अलफांसे है गया विस्फोट वन गए । सभी उछल पडे ।

धनुषटंकार तो अपने छोटे। बचा गिरते-गिरते से सिंहासन से-

शमशेरसिह ने झुककर वतन के कान पकड़े और उसे ऊपर उठाता हुआ बोला"। का कहीं पगला"-

अलफांसे का स्वर सुनकर तो धनुषटंकार उछल ही पड़ा ।

उधर...अलफांसे वतन को अपने गले से लगाए खडा था ओर इधर कूदकर धनुषटंकार उसके करीब पहुंचा वडी श्रद्धा के साथ उसने अलफांसे के चरण स्पर्श किए तो अलफांसे का ध्यान उसकी तरफ आकर्षित हुआ ।

वतन उससे अलग हुआ तो धनुषटंकार उसके गले में झूल गया ।

पागलों की तरह वह अलफांसे के चेहरे पर से शमशेर का मेकअप उतारने की कोशिश करने लगा तो..

हंसता हुआ अलफासे कहने लगाहटाता ही खूद मैं...बान्दर शैतान जा रूक अबे"--- हू । ने सेअलफा ही साथ के शब्दों इन " चेहरे अपने पर से शमशेर के चेहरे की झिल्ली उतार दी ।

अलफांसे का चेहरा देखते ही सबके मुह से सिसकारियां सी निकल पड़ी । उसके गले में बांहें डाले छाती पर लटका धनुषटकार पागलों की तरह अलफांसे के चेहरे को चूमे चला जा रहा था, उधर। किए स्पर्श चरर्ण उसके-जाकर करीब भी ने अपोलो-

धनुषटंकार को छोड़कर उसने अपोलो को गोद में उठा लिया । कुछ समय, इसी तरह की मौजमस्ती में गुज़र गया ।

फिरअपने :पुन । गया डलवाया सिंहासन विशेष एक लिए के अलफांसे में दरवार- सिंहासन पर जाकर जव वतन ने गुप्तचरों के अभी तक पीले पडे 'चेहरों को देखा तो ' -"चचा स अलफांसे उसने" "!े कहा थामेरे जो तुमने में पत्र-शिकायत इस - गुप्तचर विभाग के बारे में जो लिखा है, उसे मैं सहीं नहीं मानता ।"

"क्यों ?" अलफांसे ने कहागया पहुंच तक दरबार इस बल्कि में चमन सिर्फ न मैं "----, और इन्हें भनक तक न लग सकी, क्या ये "....

" चचा, ये कमी इसलिए नहीं रही क्योंकि दरबार तक पहुचने बाले अ ाप हैं ।वतन " ने कहा'-"आप माने के दुनिया जो... न हैं नचाते पर उंगलियों को जासूसों हुए जाने कब से इण्टरपोल के लिए सिरदर्द बने हैं । अमेरिका के माफिया संगठन ने जिसके सामने घुटने टेक दिए , जिसने हर देश में जुर्म किए, लेकिन कोई भी सरकार आपको अपनी इच्छा के विरुद्ध कभी किसी जेल में न रख सकी...तोफिर...तो... आपके सामने इन छोटे गुप्तचरों की क्या बिसात है ? ये बेचारे क्या पकड़ पाते आपको ?"

" हम तो ये चाहते हैं वतन कि दुनिया के सर्वश्रेष्ट जासूसों से ज्यादा समझदार और खतरनाक चमन के जासूस हों ।ने अलफासे " कि हैं चाहते यह हम--कहा जिस को कभी कोई न पकड़ सका उसे चमन के जासूस पकड़ें ।"

"यह तो आपका प्यार है मेरे प्रति जो अ ाप ऐसा सोचते हैं चचा कहा ने वतन "!'---'"आपका अ ाशीर्वाद रहा तो कुछ दिनों बाद चमन का गुप्तचर संगठन ऐसा ही होगा, फिलहाल दरखस्त है मेरी कि अ ाप अपने बच्चों को माफ कर दें । वतन " । था तरफ की जासूसों संकेत का

"'माफ क्रिया ।कहा ने अलफांसे "..."लेकिन ये नहीं बताओगे क्रि तुमने मुझे एकदम कैसे पहचान लिया ?"

अब कहीं जाकर जासूसों के चेहरे सामान्य हुए ।

वे वतन की तरफ़ देखे रहे थे, यह जानने के लिए कि वह अलफांसे के प्रश्न का क्या जवाब देता है ।

धीमे से मुस्कराने के पश्चात् वतन ने कहा..."यहा आने के बाद आपने शेमशेर का मेकअप तो कर लिया चचा, लेकिन चूक आपसे यह हो गई कि शिकायतअपनी आपने पत्र- राइटिंग में लिख दिया जिसे श्रोड़ादे से ध्यान सा-खने पर ही हैं पहचान गया था ।"

"ओह "-----निकला से मुंह के अलफांसे "!, खैर मेरीं राइटिंग पहचानने के बाद यह तुम जान गए कि यह पत्र लिखने वाला मैं हूं लेकिन सवाल यह उठता है कि तुमने यह वैसे पहचान लिया कि मैं शमशेरसिह के मेकअप में हू ?।"

..."क्योकि आपके चेहरे पर अन्य दरबारियों की तरह घबराहट के चिन्ह नहीं थे ।"

वतन जब यह कहा अलफांसे ने उसे पुत्तः अपनी बांहों में भींच लिया ।

"तो इसका मतलब यह है चचा, कि अ ाप भी इसी वज़ह से यंहा अ ाए है जिस वजह से मोण्टो भारत से अ ाया ?" अलफासे की सारी बाते सुनने के बाद वतन ने कहा था..."यानी आपकों भी यहीं खतरा हुअ ा कि मेरे स्टेटमेंट से महाशक्तियां मुझे घेरने की कोशिश करेंगी ?"

" और नहीं तो क्या ?" अलफांसे ने कहा ।

इस वक्त वे दोपहर का भोजन कर रहे थे और साथभी भी बातें में आपस साथ-ही- करते जा रहे थे । यह भोजन कक्ष राष्ट्रपति भवन की तीसरी मंजिल पर था । कुछ देर तक वे यूं ही बातें करते रहे फिर जबकि वे भोजन कर चुकं तो धनुषटकार ने डायरी पर लिखा --

" वो कल का वादा याद है, भैया ?"

वतन ने पहा, पढकर मुस्कराकर बोला..." क्या तुम्हारी बात मैं कभी भूल सकता हूं मोण्टो ?"

धनुषटंकार कुछ और लिख पाता उससे पहले अलफासे ने पूछा पुछोगे भी हमें या जाओगे किए बात ही भाई दोनों"--?"

" कोई विशेष बात नहीं चचा ।कि था क्रिया वादा से मोण्टो लल"-कहा ने वतन " इसे अपनी प्रयोगशाला दिखाऊंगा । उसी के लिए लिखकर पुछा है कि कहीं मैं भूल तो नहीं गया हुं ?”

"क्या ?" हल्के से चौककर है ली वना प्रयोगशाला कोई अपनी तुमने क्या तो"-?"

"नहीं तो फिर आपके ख्याल से मैंने यह आविष्कार कहां किया होगा ?"

" तो तुम्हारी प्रयोगशाला तो हम भी देखेंगे भई ।"

"आप आज आराम कीजिए चचाक-----ल देख लीजिएगा ।कहा। ने वतन "

"जिस तरह हिटलर की जिन्दगी में असंभव का कोई शब्द नहीं था उसी तरह हमारी डिक्शनरी में कहीं तुम्हें आराम नहीं मिलेगा ।ने अलफांसे हुए मुस्कराते " कहा..."आराम तो हराम है मेरे लिए । इच्छा तो हमारी है वतन, कि तुम्हारी प्रयोगशाला आज ही देखे, परन्तु कोई बात नहीं वतन । जैसी तुम्हारी इच्छा'-वैसे भी इस वक्त हम चमन में हैं, जर्रें जर्रे पर तुम्हारा हुक्म चलता-"। है विसात क्या हमारी भला फिर-है

"ओह चचाहो हुआ दुख बेहद उसे जैसे बोला तरह इस वतन "!..."कैसी बातें करते हैं आप? कहीं भी सही लेकिन मेरा हुक्म आपसे बढ़कर नहीं । मैंने तो इसलिए कह दिया था कि अ ाप थक गये होंगे । आपकी इच्छा यह है कि अ ाज ही मेरी प्रयोगशाला देखें, तो अ ाइए ।करता पैदा ध्वनि की टक- टक -टक से छड़ी । उठा वतन कहकर " हुआ वह एक खिड़की के नजदीक पहुंचा ।

खिड़की खोली ।

बस, खिड़की से चमन की वस्ती का एक हिस्सा चमक रहा था । दूरहुए बने तक दूर- मकान, दूर किसी फैक्टरी की एक

चिमनी भी चमक रही थी, मगर...यह सब कुछ एक सीमा तक ही चमक रहा था । सामने एक दीवार अड़ रही थी...बेहद ऊंची दीवार ।जैसे " किसी किले की रही हो ।परन्तु किले किसी दीवार वह-----की थी नहीं इसलिए कि वह नई बनी हुई थी । मगर हां...दीबार भी कहां थी वह । वह तो एक इमारत ऊंची वहुत----, किलेनुमा राष्ट्रपति इमारत ऊंची सबसे में चमन पूरे ! भवन की थी किन्तु वह साफ देख रहे थे, वह इमारत राष्ट्रपति भवन से भी बहुत ऊंची थी । उसी की और संकेत करते हुए वतन ने कह को इमारत किलेनुमा उस"-- देख रहे है न अाप ? दरअसल वही मेरी प्रयोगशाला है जब तक चमन में वह नहीं बनी थी तब चमन की सबसे ऊंची इमारत थी, वह राष्ट्रपति भवन लेकिन अब वह है और थोडी राष्ट्रपति इस बल्कि नहीं बहुत- । उसकी है ऊंचाई दूगनी कठी से भवन जहाँ उस इमारत का निर्माण' किया गया है, मैग्लीन के शासनकाल में वहा एक वहुत विशाल मैदान था । अपनी प्रयोग्शाला के लिए मैंने उसी जगह को उपयुक्त पाया और आज अाप देख रहे हैं मेरी खडी़ वहाँ- "। प्रयोगशाला

" लेकिन इसकी यह दीवार इतनी चिकनी और सपाट क्यों है ?" अलफांसे ने पूछा..."कहीं कोई खिडकी, पाइप नजर नहीं अा रही । इतनी ऊंचाई तक जाने बाली इतनी चिकनी और सपाट दीवार बड़ीं अजीब"। है लगती सी-

" न सिर्फ यहीं दीदार चचा, बल्कि प्रेयोगशाला की चारों ही दीवारें इसी तरह चिकनी' और सपाट हैं । ने वतन " कहा..."कदाचित अाप समझ सकते हैं कि ये दीवारें प्रयोगशाला की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं ।"

अलफांसे इस तरह मुस्कराया जैसे कोई बुजुर्ग' बच्चों की किसी बचकानी बात पर मुस्करा दे । बोला हो समझते तुम क्या"---- और चिकनी इतनी को दीवारों इन कि सपाट बनवाकर तुमने सुरक्षा का कोई अच्छा प्रबन्ध क्रिया है ?" .

" सोचा तो यही है, चचा " !

अलफासे कुछ बोला नहीं । हा, होंठों पर मुस्कान वही थी ।

वतन बोला तो समझा अर्थ का मुस्कान उस ने-..."यह मत समझियेगा चचा, कि प्रयोगशाला की सुरक्षा का मैंने यहीँ एकमात्र प्रबन्ध क्रिया है । इसे यूं समझो कि सुरक्षा के जितने भी प्रचन्ध मेरे दिमाग में आए, वे सभी मैंने इस प्रयोगशाला क्री सुरक्षा के लिए प्रयोग क्रिए हैं । मेरा दावा है, बल्कि यू समझिए कि आपके लिए भी चेलेंज है कि अगर आप स्वयं इस प्रेयोगशाला के अन्दर जाकर , अन्दर एक सूई भी उठाकर सुरक्षित बाहर अा जाएँ तो महान सिंगहीं के स्थान पर आपको गुरु मान लुंगा ।"
"ओंह हसा से धीमें अलफांसे "!..."इतना गर्व है अपने प्रबग्ध पर ?"

'"गर्व नहीं, विश्वास कहिए चचा । वतन ने कहा..."मैं गर्व नहीं करता क्योंकि सुना है...गर्व रावण का भी नहीं रहा ।"

" खैर के सुरक्षा "-----बोला अलफांसे "! वे क्या इन्तजाम किया तुमने ?"

-"बांकी इन्तजाम तो अाप प्रयोगशाला के करीब ही जाकर देख सकेंगे । हां, एक इन्तजांम अाप यहां से अवश्य देख सकते हैं, सो मैं आपको दिखाता कहने के बाद वतन ने अपोलो से नजरें मिलाकर कहा...अपेलो ।"

अपोलो जैसे जानता था कि उसे वया करना है ।

वह खिड़की। गया निकल बाहर से कमरे वह मैं-जप्प ही एक । मुडा से पास के- करीब द्रो मिनट बाद जब यह वापस आया तो वह अपने दो पिछले पैरों पर चल रहा था । अपने अगले दो हाथों में उसने एक विशेष किस्म की दूरबीन क्रो संभाल रखा था ।

दूरबीन उसने वतन को दे दी ।

: अलफांसे की तरफ दूरबीन बढाता हुआ वतन बोलाये "----- लीजिए----, इसे से लगाकर प्रयोगशाला की तरफ देखिए ।"

अलफांसे-देखा तो क्रिया ही वैसा ने-
प्रेयोगशाला की पूरी छत को अजीब। था रखा कर कवर से जाल के किरणों सी- किरणों से जाल की एक छतरीथी गई बन सी-
जिसके नीचे प्रयोगशाला की छत थी अलफांसे ने देखा-हुई दहकती बारीक और लाल-
किरणों का एक विशाल जाल । क्रिरणे क्रिसी पतले तार जितनी

मोटी थी । वे तार ऐक दूसरे में बुने हुए प्रतीत हो रहे थे । ठीक आटा छानने की छलनी का बडा रूप । कुछ देर तक अलफांसे उसे देखता रहा फिर दूरबीन आंख से सटाये ही बोला है क्या यह"----?"

अलफांसे का यह कहना था कि धनुषटंकार ने उसके हाथ से दूरबीन 'ले ली ।

उधर धनुषटंकार दूरबीन आंख से सटाये प्रयोगशाला की छत क्रो कवर किए दहकती किरणों के उस बारीक जाल को देख रहा था, उधर अलफांसे नंगी आंखों से उस जाल को देखने की असफल कोशिश का रहा था ।"

" इस तरह कोशिश करने से कोई लाभ नहीं है, चचा बिना के मदद की दूरबीन विशेष इस"-----कहा ने वतन "!, कुछ नहीं दिखेगा ।"

प्रयोगशाला की इमारत पर से नजरें हटाकर अलफांसें ने वतन पर नजरे गडा दीं, बोला..." उनकी विशेषता नहीं बताओगे ?"

" सुनिए ।डॉक्टर वैज्ञानिक भारतीय"-----वतन मुस्कराया से ढंग रहस्यमय " भावा का नाम तो सुना ही है सारी दुनिया जानती है कि उन्होंने किसी ऐसी किरणों का जिक्र किया था जिनकू मौजूदगी में अणुबम की विशेषता एक गेंद से बड़कर न हो । "

"'क्या कहना चाहते हो ?"

" मेरी प्रयोगशाला की छत को कवर किए जो किरणे आपने देखीं, वह डॉक्टर भावा का ही आविष्कार है ।"

"क्या मतलब?" अलफांसे बूरी तरह चौंका ।

"मतलब यह चचा कि जिन किरणों का आविष्कार भावा करने वाले थे, उन्हें तो दुश्मनों ने यह अविष्कार पुर्ण करने से पूर्व ही मोत की गहरी नीद सुला दिया ।" गम्भीर स्वर में वतन कह रहा था मैंने आविष्कार अधूरा वह उनका मगर""-"। है लिया कर पूर्ण

" कैसे ?"'

"वेवज एम' द्वारा ।"

"वेवज एम । है क्या एम वेवज"-दोहराया ने अलफांसे "?"'

" यह मेरे उसी यन्त्र का नाम है, जिसके बारे में विश्व के अखबारों में छपा है ।करने कैच आवाजें से ब्रह्माण्ड वताया ने वतन " नाम का यन्त्र अपने वाले मैंने 'वेबज एम' रखा है ।

इसी 'वेवज एम' द्वारा मैंने ब्रह्माड मेंक्रो आबाज की भावा डॉक्टर बिखरी- कैच क्रिया और उसी के आधार पर भावा के उस अधूरे कार्य को पूर्ण क्रिया । जिस आविष्कार क्रो करने से पहले डॉक्टर भावा दुश्मनों के षड्‌यन्त्र का शिकार हो गए, उसको मैंने उन्हीं की आवाज से पूर्ण कर लिया ।"

" क्या डॉक्टर भावा इन किरणों का फार्मूला तेयार का चुके थे ?"

-"बेशक । मुझे में ब्रह्माड ""----बताया ने वतन "उनकी आवाजें मिली हैं तो बेशक वे फार्मूला तैयार का चुके ।"

"जरा स्पष्ट करके बताओ "!

"आपक्रो याद होगा कि डाक्टर भावा के साथ उस विमान में जिसके क्रेश होने पर वे मारे गए, उनका एक सहयोगी भी था जो उन्हीं के साथ मारा गया । ब्रह्मांड में से मुझे डॉक्टर भावा और उनके उस सहयोगी की आवाजें मिली हैं, आवाजें उस वक्त की हैं जब वे दोनों इन किरणों के बारे में बांते कर रहे थे । मेरे 'वेबज़ एम' ने सबसे पहले डॉक्टर भावा की वह आवाज पकड़ी है चुका बैठ में दिमाग मेरे फार्मूला का किरणों"--- ।"

" क्या अाप मुझे बतायेंगे ?" यह आवाज उनकें सहयोगी की थी ।"

" क्यो नहीं "! 'वेवज़ एम' द्वारा ब्रह्मांड से कैच की गईडाँक्टर भावा की आवाज...' "दुनिया मैँ मात्र तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जिस पर हम आंखें बन्द करके विश्वास कर सकते हैं । गौर से सुनोकी अणुबम कि हैं सकते बता तुम्हें हम- शक्ति को हीन करने वाली किरणे किस तरह बनाई जा सकती हैं । ध्यान से सुनना और जहाँ कहीं भी तुम्हें कोई कमी नजर अाए, फौरन रोक देना ।"

"इस तरह "!.... वतन ने कहाडॉक्टर बिखरी में ब्रह्माण्ड"-
भावा और उनके सहयोगी के बीच हुई समस्त बातें मैंने 'बेवज एम' द्वारा इकट्ठी कर ली । उन आवाजों में डॉक्टर भावा ने अपने सहयोगी को किरणों का फार्मूला बताया था । बीचबस । था करता प्रश्न के तरह तरह सहयोगी उनका में बीच-, मुझे फार्मूला मिल गया और फिर मुझ जैसे व्यक्ति को फार्मूले के आधार पर किरणों का आविष्कार फेरने में भला क्या दिक्कत पेश आ सकती थी ? प्रयोगशाला के ऊपर उन किरणों का जाल आपने देखा ही है ।"

"क्या सचमुच ये वही किरणे हैं ?" अलफासे ने पूछा ।

"निसन्देह ।" वतन का जबाब थाउनके और भावा डॉक्टर मैं चलकर में प्रयोगशाला"- सहयोगी ही आवाज आपको सुना सकता हूं । 'वेवज एम' द्वारा मैंने ब्रह्मांड से उन्हें कैच करके टेपरिकॉर्डर में भर लिया है । प्रयोगशाला के ऊपर आपने वहीं किरणे देखी हैं जिनकी छतरी के नीचे समूचे भारत क्रो अणुबम के भय से मुक्त रखना डॉक्टर भावा का ख्वाब था ।"

कई क्षण तक सोचता ही रह गया अलफांसे, फिर बोला हो महान तुम "--- वतन ! बेशक तुम आधुनिक दुनिया के सबसे बड़े वैज्ञानिक हो । जो तुमने किय् है, उसे आखों से देखने के बावजूद यकीन नहीं अाता कि तुम इतना सब कुछ कर सकते हो ।"

'मैंने क्या किया है, चचा ?" वतन ने कहासिर्फ तो मैंने"- 'वेवज एम' का आविंष्कार क्रिया है वाकी ये किरणे तो डॉक्टर भावा का आविष्कार हैं । महान तो वे थे जिन्होंने इन अजीबोगरीब किरणों का... आविष्कार कर लिया था । मैंने क्या क्रिया---- जो किया यहीं सिर्फ डॉक्टर भावा अपने सहयोगी को बताते रहे ।"

' 'दुनिया में इतने बड़ेने अलफांसे "। हैं पड़े वैज्ञानिक बड़े- कहा..."उन्होंने क्यों नहीं डाँक्टर भावा के इस अधूरे आविष्कार को

पूर्ण कर लिया ?"

" उनके पास 'बेवज एम' कहां'था ?"' '

" 'वेवज एम' का आविष्कार ही तो तुम्हारी महानता है ।कहा ने अलफांसे "..."आज तक कोई सोच भी नहीं सका कि ब्रह्माण्ड से आवाजें कैच करने का कोई यन्त्र भी बनाया जा सकता है । तुमने यह यन्त्र बना लिया । उस यन्त्र की मदद से ब्रह्मांड में डाँक्टर भावा"। ...

..."ओह! चचा-" उसे बीच में ही रोक दिया वतन नें। लगे करने तारीफ मेरी तो आप"- बात तो सिर्फ यह थी कि मैं आपको वे प्रबन्ध बता रहा था' जो प्रयोगशाला की सुरक्षा के लिए मैंने किए है । अ ाप तो एक ही प्रवन्ध देखकर उसी में खो गए ।"

अ ोर। अलफांसे था गया रह खोकर में किरणों उन्हीं वह जैसे में वास्तव-

उसने उपने सिर को झटका देकर, मस्तिष्क को विचार मुक्त किया और फिर ब्रोलाखैर -- हां "-, और क्या प्रबन्थ किए हैं ।

"आइए मेरे साथ । "वतन ने उनसे कहा और कक्ष से बाहर की तरफ कदम बढ़ा दिए ।

धनुधटंकार भी अपनी जाल से दूरबीन हटाकर उनके के साथ। दिया चल साथ-

वे चारों राष्टपति भवन के बाहर निकले, द्वार पर ही वतन की चमचमाती हुई सफेद कार खड़ी थी । दूध कपडे सफेद जैसे . ड्राइवर पहने ने उसका अभिवादनक्रिया- और स्वागतार्थ कार के दरचाजे खोले ।

कुछ ही देर बाद कार अपने गन्तव्य की तरफ रवाना हो गई ।

"लेक्रिन तुमने अखबारों में इन किरणों के बारे में तो कोई स्टेटमेंट नहीं दिया था वतन ?" अलफांसे वे कहा !

" तभी तो कहता हूँ कि मेरे स्टेटमेंट से जैसा आपने और विजय चचा ने सोचा, उतना मुर्ख नहीं हूं मैं ।वतन ने वताया"। चाहिए बताना जितना बताया ही उतना मैंने को बालों अखबार-

वास्तव में अलफांसे उस प्रयोगशाला की सुरक्षा, से प्रभावित हुआ ।।

परन्तुथा करना उसे जो----, यह सुरक्षा उसे टाल नहीं सकती थी । वतन द्वारा प्रयोगशाला की सुरक्षा के प्ररयेक प्रबन्ध को ध्यान से देखता और दिमाग में बैठाता हुआ अलफासे उसके साथ चला ।

समुचे इन्तजाम को देखकर उसकी आंखों में जो चमक उमरी वतन, धनुषटंकार अथवा अपोलो में से कोई नहीं देख सका था । उनंके साथ चलता हुआ यह इमारत क्री तरफ बढने लगा । अभी वे इमारत से पचास गज दूर ही थे कि बीच में एक खाई अा गई ।

वतन के साथ। गए ठिठक पर क्रिनारे के खाई उस सभी साथ-

अलफांसे ने देखा। थी गई चली साथ-साथ के दीवार की इमारत खाई यह---

...'"जरा इस खाई में झांकिए चचा ।।। कहा ने वतन "

अलफांसे ने झांका तो उस आदमी कर दिल भी धक् से रह गया ।

खाई अत्यन्त ही गहरी थी । उसके अनुमान से पच्चीस गज नीचे पानी का ऊपरी तल नजर अा रहा था । उस तल से नीचे खाई और कितनी गहरी है, यह अलफांसे अनुमान न लगा सका । अभी वह झाक ही रहा था कि पानी में उसे जोरदार हलचल महसूस हुई ।

..."इमारत की दीवार के सहारेने वतन "। है गंई बनाई खाई यह तरफ चारों सहारे-- बताया ही देख" इसकी आप तो"----- में ध्यान को चेतक मैंने चौडाई यह । हैं रहे रखकर बनाई है ।।

"चेतक कौन ?" अलफांसे ने पूछा ।

"कमाल है च"-कहा ने वतन हुए मुस्कराते "!ैतक को नहीं जांनत्ते आप ।।चेतक वही महाराणा महायोद्धा के इतिहास भारतीय-में ध्यान को उसी । घोडा का प्रताप रखकर मैंने इस खाई की चौड़ाई 50 गज रखी है ।"

" घोड़े का इस खाई से क्या मतलब ?"

" कभी कभी तो अाप ऐसी बात करते हैं चचा, जैसे कुछ जानते ही न हों वतन "! बोला में जमाने इस हालांकि"-'चेतक' जैसा कोई घोडा है नहीं और होगा भी तो चेतक भी इतनी चौडी़ खाई को एक ही जम्प में कभी पार नहीं कर सकेगा ।"

-"ओह बोला तरह इस अलफांसे "!, जेसे अब वह वतन के कहने का मतलब समझा हो, बोला..."लेकिन क्रिसी घोड़े को जम्प लगाकर क्या इसमें मरना है ? मान तो कि कोई घोड़ा इस खाई को एक ही जम्प में पार कर भी जाता है तो जाएगा कहां ? इमारत की दीवार से टकरा जाएगा । नतीजा यह होगा कि वह खाई में जा गिरेगा ।"

-"अब मैं आपको यह भी बता दूंकि यह खाई कितनी गहरी है ।ने वतन " कहा..."क्योंकि अाप इसकी गहराई को सिर्फ वहीं तक देख सकते हैं जहाँ तक पानी भरा हुआ है पानी कितने भाग में भरा है"। सकते जान नहीं अाप यह-

" तो बता दो । कहा ने अलफांसे "!

खाई की गहराई का आइडिया मैंने कुम्भकरण की खोपड़ी से लिया था ।। बताया ने नवत "

'"कुम्भकरण की खोपडी़ ।।अलफ "ांसे चौंका ।

-"नर्डी समझे ना ? वतन पुनउस यह । आपको हूं समझाता-बोला हुआ मुस्काराता : समय की बात जब महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था । उसमें पाण्डवों की विजय और कौरवों की पराजय हो गई थी । अपनी इस विजय पर पाण्डवों को गर्व हो गया था । उन्होंने महाभारत जीता था इसलिए वे यह समझने लगे कि दुनिया में न उनसे बढकर कोई योद्धा हुआ है और न है ।

--उसी गर्व में चूर एक बार हंसते हुए भीम ने श्रीकृष्ण से कहा...'भगवान हम बहुत ही परेशान हैं ।' किसी नदी तालाब, नहर में इतना पानी ही नहीं है जिसमें हम आराम से नहा सकें । हर जगह नहाने की कोशिश की, किंतु घुटनों से ऊपर पानी ही नहीं जाता । मतलब यह कि बाकी शरीर पर पानी लोटो से डालना पड़ता है ।। आराम से नहाने की कोई जगह ही नहीं है ।"

" हंसी में कहे गए इन शब्दों में छुपे गरूर को श्रीकृष्ण ने नोट कर लिया । अब नीति क्रो कन्हेैया निपुण-उनका गरूर तोड़ना आवश्यक भी लगा । अपने सांवरे होंठो पर आकर्षक मुस्कान बिखेरते हुए बोले...चलो़ो,'आज हम तुम्हें नहलाते हैं ।।

इस तरह, वे पांचों पाण्डवों को लेकर चल दिये ।।

"एक बड़ेश्रीकृष जाकर किनारे के तालाब से-्ण ने उन्हें खड़ा कर दिया और भीम से बोले...'इसमें तुम जितना चाहो, नहा सकते हो ।'

न सिर्फ भीम बल्कि पांचों ही पाण्डव मुस्करा उठे थे ।

----- सोचकर कि श्रीकृष्ण एक छोटे। हैं रहे कह लिए के नहाने उनसे में तालाब से-

"भीम ने कहा-'क्यों मजाक करते हो भगवान ?"

"मजाक नहीं करते ।' चतुर कृष्ण ने कहा..."अगर आराम से नहाना चाहते हो तो इस तालाब नहाओ ।"

"पांचों पाण्डवों में एकमात्र युधिष्ठिर ही ऐसे थे जो श्रीकृष्ण की बात की गहराई को पकड़ संके है । उन्होंने भीम क्रो उस तालाब में नहाने की आज्ञा दी । भाई की आज्ञा पाकर भीम उस तालाब में ही चले गए ।"

"बहुत नीचे जाने पर भी जब उन्हें तालाब का तल न मिला तो घबराए और हाथपांव- चलाकर तैरने लगे । तालाब के ऊपर अाए तो नहाना भूलकर बाहर अाए । किनारे पर खडे सांवरे के होंठों पर मन्द मुस्कान थी ।

"आश्चर्य के साथ तालाब की अोर देखते हुए भीम ने पूछा...यह कैसा तालाब है भगवान ?

"यह तालाब नहीं है भीम , यह कुम्भकरण नाम के एक योद्धा का सिर है ।' कृष्ण ने बताया-'किसी जमाने में यह रावण का भाई हुआ करता था । श्रीराम ने इसका संहार किया तो उसका धढ़ युद्ध क्षेत्र-में और सिर यहां अाकर गिरा । मगर उसके सिर में न कितनी बरसातों का पानी भर गया है । बस। यह है तालाब ही ऐसा...'

पांचों पाण्डव आश्चर्य के साथ श्रीकृष्ण का मुखड़ा देखने लगे ।

" कन्हेया ने कहा-'जिसके सिर में बरसात के भरे पानी में तुम डूब गए, जरा अनुमान करो कि वह कुम्भकरण क्या होगा ? किस किस्म का योद्धा होगा ? और ऐसे को भी श्रीराम ने मार डाला, अतः तुम अपनी कौन सी शक्ति पर गरूर करते हो ।'

" पांचों पाण्डवों की अक्ल टिकाने आ गई । बस !"
किस्सा सुनाने के बाद वतन ने कहा'......."कुम्भकरण की खोपडी को दिमाग में रखकर मैंने इस खाई की गहराई बनवाई है ।"

"भारतीय इतिहास और ग्रन्थौ की तुम्हें अच्छी जानकारी है ।था रहा कह अलफांसे हुआ मुस्कराता " -----..."'अखबार में छपे स्टेटमेंट में भी तुमने महाभारत में प्रयुक्त होने वाले हथियारों का जिंक्र बडे अच्छे ढंग से किया था और अब 'चेतक' तथा 'कुम्भकरण की खोपडी' का उदाहरण भी बड़े अच्छे ढंग से दिया है । शायद उन ग्रन्थों के उदाहरण देना तुम्हारी आदत भी है ।"

मोहक ढंग से मुस्कराया वतन, कहने लगा..."बैज्ञानिक हूं न और यह भी जानता हूं कि भारत के प्राचीन ग्रन्थ विज्ञान से भरे पड़े हैं । उन ग्रन्थों को अगर ध्यान से पढा जाए तो आज़ भी वे इस दुनिया को बहुत कुछ दे सकते हैं ।"

" खैर, छोड़ो ग्रन्थों को , तुम अपनी प्रयोगशाला की सुरक्षा के बारे में कुछ और बता रहे थे ।।"

..."हांकहा ने वतन "..."तो इस खाई की गहराई के बारे तो आप जान ही चुकें हो । यह खाई न सिर्फ इसलिए खतरनाक है इसलिए भी है कि इसमें भरे पानी के अन्दर वह हर खतरनाक किस्म के जानवर मौजूद है, जो समुंद्र में पाए जाते हैं ।। एक बार जो इस खाई में गया समझो, मैत के मुह में गया ।"

अलफांसे को याद अाई। खलबली लह की पानी-----

एक वार पुनखाई नेउस :- में झांककर देखा तो उसके जिस्म में झुरझुरी सी' दौढ़ गई । पानी के उपर तैरते एक भयानक मगरमच्छ को उसने साफ देखा था । न जाने क्यों अलफांसे जैसा' व्यक्ति भी थरथरा गया ।।

-"क्या किसी भी आदमी को प्रयोगशाला के अन्दर जाने से रोकने के लिए इतने प्रबन्ध कुछ कम हैं ?" वतन ने पूछा ।

-"नहीँ-निकला से होंठों के अलफासे ही बरबस ""काफी हैं ।"

..."तो आइए मेरे साथ ।कहा ने वतन "..."जरां ध्यान से देख लीजिए कि प्रयोगशाला की इस दीवार में कहीं कोई रास्ता तो नहीं है ?"

ध्यान से देखते हुए अलफांसे ने कहा नहीं रहा तो चमक "---है ।"

इस बीच वतन उन्हें लिए इमारत के ठीक बीच में पहुंच गया ।

अलफासे ने देखा'-वतन ने एक अजीब से ढंग से अंपने दोनों हाथ उपर उठाए । इधर उसके हाथ ऊपर उठे, उधर खाई के पार ठीक उनके सामने प्रयोगशाला की दीवार में हल्कीऔर हुई गढ़गड़ाहट एक सी- दीवार में न सिर्फ एक खिड़की के बराबर रास्ता खुल गया बल्कि उस रास्ते में से सरसराकर एक स्टील की चादर खाईं के इस किनारे की तरफ़ बढने लगी ।

यह चादर सिर्फ एक गज चौडी थी ।

सरसराहट पैदा करती हुई यह स्टील क्री चादर खाई के इस किनारे तक पहुची और किनारे की जमीन से सटकर रुक गई । जब खाई पर स्टील की उस चादर के रूप में एक गज चौडा और पचास गज लम्बा एक पुल बन गया । यह पुल प्रयोगशाला की दीवार में एक खिड़की नुमा दरवाजे तक गया था और वह दरवाजा खुला हुआ था ।

" आओ चचा कहा ने वतन "!..."यह है प्रयोगशाला के अन्दर जाने का एकमात्र रास्ता ।कह "ने के साथ ही उसने स्टील की उस चादर पर पैर रखा और लम्बे लम्बे कदमों के साथ उस पुल क्रो तय करने लगा ।।।

यह बात और थी कि घण्टियां बजाता अपोलो अब भी उसके आगे था ।

धनुषटंकार अलफांसे के कन्धों पर चढ़ गया, और मुस्कराता हुआ अलफासे वतन के पीछे बढ़ रहा था । अपनी छडी को टक् टक् के साथ वतन बड़े शाही ढंग से उस अजीबो गरीब पुल को तय कर रहा था ।

कुछ ही देर बाद वे सब उस खिड़की में से होते हुए प्रयोगशाला के अन्दर पहुंच गए । अन्दर खिड़की के समीप ही दाहिनी तरफ़ एक सैनिक खड़ा था । उसने वतन को श्रद्धापूर्वक अभिवादन क्रिया ।

उसके करीब ठिठककर वतन ने अलफांसे से कहासंकेत यह मेरा ने आदमी इस "----- देखकर, जो खाईं के उस पार से लिया था...यह रास्ता खोला था । अब मान लिजिए कि मेरे पीछेकरता चेष्टा की आने की में प्रयोगशाला आदमी कोई हुआ भागता पीछे- है तो ....?"

समीप की दीवार में ही लगा बटन वतन ले दबा दिया । गड्गड़ाहट की आवाज के साथ खाई के पार वाला सिरा अपनी जगह से हटा और स्टील की चादर खाई की तरफ झुकती चली गई । इस हद तक झुकी कि वह पुल पूरी तरह खाई में लटक गया ।

"अंजाम की कल्पना अपना अ ाप स्वयं कर सकते हैं । दूसरा ने वतन हुए कहते "बटन दबा दिया । स्टील की चादर सिमटकर अन्दर अ ाने लगी ।

कुछ ही देर बाद वह चादर भी अन्दर आ गई और खिड़की नुमा रास्ता भी वन्द हो गया ।

अब पहली बार अलफांसे ने उधर से ध्यान हटाकर यह देखा कि वह कहां आ गया है । इस वक्त लह एक बहुत की हॉल में था और उसकी छत ठीक उतनी ही ऊचाई पर थी जितनी ऊंची प्रयोगशाला की दीवारें थी ।

जगह। था रखा कर प्रकाशमान को हॉल पूरे ने रॉडों रोशन जगह-

हॉल में सादगी के नाम पर कोई इक्का दुक्का ही नजर अ ाता था ।

एक कोने में बड़ेमुस्तेद सैनिक चार अ ागे के जनरेटरों उन । थे रखे जनरेटर चार बडे- ी के साथ बैठे थे ।

वतन ने बतायाखोला रास्ता लिए मेरे जो अभी वह तो होगी बात की खतरे भी कोई- करता है, खतरे का साइरन बजा देगा ।। और खतरे का साइरन बजते ही वे चारों सेनिक जनरेटर अ ॉन कर देंगे । परिणाम यह होगा कि प्रयोगशाला की चारों दीवारों में करेंट बहने लगेगा । वैसे सारी रात तो वे जनरेटर ऑंन रहते ही हैं । "

उन्हें बताता हुआ वतन हॉल में एक तरफ बढ़ रहा था ।

"लेकिंन इस प्रयोगशाला के अन्दर आदमी गिने। कहा ने अलफांसे "हैं हैं रहे अ ा नजर ही चुने-

"ज्यादा आदमियों का यहाँ करना भी क्या है ?" वतन ने बतायासिर"- ्फ जरूरत के ही जादमी अन्दर हैं । एक बात अ ौर भी है जिसे सुनकर शायद आपकी आश्चर्य होगा । वह यह कि प्रयोगशाला अंन्दर का एक भी आदमी प्रयोगशाला से बाहर नहीं जा सकता ।"

" क्या मतलब ?" वाकई अलफांसे चौंका ।

`"हा चचा "----बताया ने वतन "!, चमन में मात्र मैं और अपोलो ही ऐसे जीव हैं जो हर रोज प्रयोगशाला के अन्दर और बाहर की दुनिया देखते हैं । वरना ज्यादा यह है कि जो लोग प्रयोगशाला के अन्दर हैं, वे कभी प्रयोगशाला से बाहर नहीं गए । जो लोग प्रशेगशाला से बाहर हैं...वे नहीं जानते कि प्रयोगशाला अन्दर से कैसा है कैसा ? चमन के कानून के मुताबिक प्रयोगशाला के अन्दर वाले किसी आदमी का बाहर जाना किसी बाहरी आदमी का अन्दर बना जुर्म है, और इस जुर्म को करने बाले की सजा यह है कि उसे खाई में डाल दिया जाएगा । किन्तु शुक्र है कि अाज तक किसी को ऐसी हिंसात्मक सजा देने की जरुरत नहीं पड़ी ।"

" तुम्हारे कहने का मतलब यह हैकि तुम्हारे और अपोलो के अलावा आज तक प्रयोगशाला के अन्दर का कोई आदमी बाहर नहीं निकला है ओर बाहर से कोई अन्दर नहीं अाया है ?"

"वेशक, मेरे कहने का यहीं मतलब है ।"। है रहा हो पालन से कठोरता यहाँ का कानून इस"----कहा ने वतन "

"यह बात तो कुछ असम्भवहै लगती सी-, वतन ।इस लोग "------कहा ने अलफांसे " प्रयोगशाला के अन्दर हैं, उनका मन अपने बीबीवच्चों-, मातापिता-_अथबा भाई"। होगा करता लिए के मिलने से वहन-

अचान्क वतन के मस्तक पर बल उभर अाया ।

अलफासे ने उसे महसूस क्रिया । मगर कुछ बोला नहीं ।

वतन गम्भीर स्वर में कह रहा थाकरता जुदा से बाप-मां क्रो बेटे किसी न "---- हूं न किसी भाई को बहन से । जो लोग प्रगोगशाला के अन्दर हैं, उनका सब कुछ अनेदर ही है । यूं कहो कि उनके परिवारों की एक छोटी बस्ती है यहां ।"

"लेकिन फिर भी बाहर निकलने के लिए इनकी इच्छा होती ही होगी ?"

..."अपने छोटे" । हैं दबाते से खुशी को इच्छा अपनी लोग ये लिए के हिफाजत की चमन से-

एक बार तो निरुत्तर"----बोला फिर अलफांसे गया हो सा-' फिर भी यह प्रयोगशाला तो इनके लिए एक कैद जैसी हो गई ।"

"यूं तो हर आदमी के लिए यह दुनिया एक बड़ीं कैद है ।। दिया जवाब ने वतन "

न जाने क्यों अलफांसे को ऐसा लगा कि वह एक व्यर्थ के विषय पर बहस करने लगे हैं, यह विचार दिमाग में अाते ही उसने बात का रुख बदल दियातुमने है किए इन्तजाम क्या और तो"---- अपनी प्रयोगशाला की सुरक्षा हेतु ?"

"पहले मुझे जरा यह बताइए कि क्रिसी भी जगह पहुंचने के लिए कितने किस्म के रास्ते हो सकते हैं ?"

"तीन किस्म के ।"

"कौन से कौन-?"

-"हवा, भूमि और जमीन के नीचे से ।"

--"करैक्ट !" वतन ने कहा..."हवा के रास्ते से तो कोई अा नहीं सकता क्योंकि अाप देख चुके हैं कि पूरी प्रयोगशाला के ऊपर अणुनाशक किरणों का जाल बिछा हुआ है । थल के रास्ते से आगे का एक मात्र रास्ता देख ही चुके हैं, उस रास्ते से कोई अा सकता है या नहीं, इस बात का अन्दाजा अाप खुद लगा सकते है । रही जमीन के अन्दर की ब्रात, तो वह भी मुनासिब नहीं क्योंकि मैं आपको बता चुका हूं कि प्रयोगशाला के बाहर दीवार के सहारेखाई जो तरफ चारों सहारे- है वह कुम्भकरण की` खोपडी के बराबर गहरी है और कोई भी आदमी अगर बाहर से सुरंग खोदने की कोशिश करेगा तो खाई में खुलेगी और खाई निश्चित रूप से साक्षात् मौत का मुह हेै ।"

" निस्सन्देह यह प्रयोगशाला दुनिया की पहली और अपने ढंग की प्रयोगशाला है ।-ही-मन लेकिन कहा यही उसने तो में प्रकट " था रहा कह मन...'तुम्हारे इस किले की सुरक्षाओं
को तोड़कर मैं अपना काम करने से बाज नहीं अाऊंगा ।।।

प्रयोगशाला के विभिन्न स्थानों पर से गुजरता हुआ वतन उन्हें अन्त में एक लम्बे। आया ले में हॉल से-

वह हॉल लम्बा ज्यादा और चौड़ा कम था । पूरा हॉल प्रयोगपड़ा भरा से शीटों- था । ठीक बीच में एक घूमने वाले कुर्सी पड़ीं

थी और उस कुर्सी के चारों तरफ एक गोले की आकृति में छ। थी फिट स्कीनें :

हाल में उनके अतिरिक्त इस वक्त अन्य कोई नहीं था ।

अलफांसे प्रयोगशाला की भौंगोलिक स्थिति और वह सब कुछ अच्छी तरह दिमाग में बैठा चुका था जो वतन उन्हें बताता जा रहा था । हर पल उसका दिमाग यहीँ सोचने में व्यस्त था कि वतन द्वारा फैलाए गए सुरक्षा के इस जाल को कैसे तोड़ा जा सकता है ?

उसके मनोबलों से एकदम अनभिज्ञ वतन कह रहा था..."यह वह कक्ष है जहा मैं प्रयोग किया करता हूं ।"

अलफासे ने जैसे कुछ सुना ही नहीं ।

" चचा ।" एकाएक वतन सीधा उसी से बोला..."क्या सोचने लगे ? "

अलफांसे की बिचारहुई भंग तन्द्रा-, चौकता सा वह बोला..."सोच रहा हूं वतन कि वैसे तो तुम सिंगहीँ के शिष्य हो, लेकिन उसने तुम्हें खुद से भी दो कदमआगे- ही निकाल दिया । अपनी जिन्दगी में न जाने कितनी बार सिगहीँ ने सिंगलैण्ड बसाया है ।

अपनी तरफ से उसने सुरक्षा के बड़ेकिए इन्तजाम बड़े-, लेकिन सच जिस तरह की सुरक्षा तुमने इस प्रेयोगशाला के लिए नियुक्त की है, वैसी सुरक्षा सिगहीँ कभी नहीं कर सका । निसंदेह तुम उसके शागिर्द हो, लेकिन"!.......

"नचच...न...न...ा ।से गुरु लिए मेरे"----उसे दिया रोक ही में बीच ने वतन ". बढ़कर कोई शब्द न कहना । कुछ भी सही , मेरे लिए तो देवता हैं वह । "

"नवतन ".। चचा...न...न... ने बीच में ही रोक दिया उसे। कहना न शब्द कोई बढ़कर से गुरु लिए मेरे"---- कुछ भी सही , मेरे लिए तो देवता हैं वह । "

वतन कहता चला गयाप्रतिभावान ज्यादा सबसे के दुनिया वह हैं नजर मेरी"--- व्यक्ति हैं लेकिन बस, उनके सोंचने का तरीका थोड़ा। है गया हो गलत सा- सोचने के इस तरीके ने ही उनकी सारी प्रतिभा को दबा दिया है । अगर वे हिंसात्मक रूप से सारी दुनिया को झुकाने और उसका समाप्त करने का ख्याल दिमाग से निकाल दें तो दावा है कि अपने दिमाग और शक्ति से वे धरती को स्वर्ग वना दें ।"

कुछ देर तक उनके बीच बातों का बिषय सिगहीँ रहा ।

फिर------

-"देखिए "!

वतन ने उन स्क्रीनों के बटन अ◌ॉन करने शुरू कर दिए ।

टी०वी० स्क्रीनो चित्र पर चित्र उभरने लगे ।

प्रत्येक स्क्रीन पर अलग अलग स्थान का चित्र उभर रहा था । किसी पर राष्ट्रपति भवन के, किसी पर चमन की एक साधारण वस्ती का, क्रिसी पर चमन की एक अमीर बस्ती का, किसी पर प्रयोगशाला के बाहरी मैदान का । इसी तरह विभिन्न स्थानों के चित्र ।

" इसी कुर्सी पर बैठकर मैं अपने सारे देश पर नजर रख सकता हूं ।ने वतन" बतायामैं यसम जितने"---, यहाँ रहता हूं यह सभी स्क्रीनें आंन रहती हैं ताकि मैं इस प्रेयोगशालासे बाहर की यानी चमन की स्थिति से नावाकिफ न रहूं ।"

कुछ देर स्कीनों को देखता रहा अलफासें और मन। रहा करता प्रशसां की वतन मन-ही-

"आओ चचा । अव मैं आपको वह यन्त्र दिखाता हूं जिसकी घोषणा आपको यहाँ खींच लाई है ।-प्रयोग एक वतन हुआ कहता " आवश्यकता की लिखने । गया वढ़ तरफ की डैस्क नहीं कि धनुषटंकार, अपोलो और अलफांसे उसके साथ थे ।

डैस्क की दराज़ में से वतन ने एक रेडियों के आकार की छोटीनिकाली मशीनरी सी- और उसे प्रयोग वह हुआ रखता पर सीट- नाम जिसका यन्त्र वह है यह"---लाबो वह मैंने ' बेवज एम ' रखा है ।”

" ये ।"! छोटी इतनी "----निकला से मुंह के अलफांसे "

"क्या यह जरूरी है यन्त्र बहुत बड़ा ही होना चाहिए था ।वतन हुए मुस्कराते " ने कहा काम यह वड़ा जितना में असल---

है करता, उतना दुर्लभ इसे बनाना नहीं है । बस"। नहीं हीं सोचा कुछ ने किसी कभी में बारे इसं है यह बात असल-धनुषटकार अलफांसे वतन की शक्ल देख रहे थे ।

मैं आपको वैज्ञानिक भाषा में तो नहीं किंन्तु साधारण भाषा में बताता हूं कि 'वेवज एम' अन्तरिक्ष में बिखरीं आवाजों को किस तरह कैच करता है । आप देख रहे हैं कि यह बिल्कुल रेडियो की शक्ल का है । असल बात यह है कि रेडियो की मशीनऱी के सिद्धांत पर ही मैंने इसे बनाया है । आपके पास एक रेडियों है, उसका स्विच आंन कीजिए और जिस स्टेशन का प्रोग्राम आप लगाना चाहते हैं, उसे आराम से घर बैठकर सुन लीजिए । रेडियो पर किसी भी स्टेंशन से प्रसारित होने बाला कार्यक्रम ही लेना आजकल एक अ ाम बात हो गई है और यहीं कारण है आज ज्यादातर लोग यह सोचने की कोशिश नहीं करते कि ये आवाजें आ क्यों रही हैं ? इस प्रश्न में दिमाग खपाने का काम आज शायद ही कोई करता हो मगर, मैंने किया और 'वेवज एम' का आविष्कार करने में इसी वजह से कामयाब भी रहा ।"

तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि तुम्हारे 'वेवज एम' की माशिनरी रेडियो जैसी ही है ?"

" रेडियो जैसी नहीं बल्कि उससे मिलतीकहो जुलती- ।अगर "--- कहा ने वतन " इसकी मशीनरी रेडियो जैसी होती तो मेरी क्या जरूरत थी ? रेडियो के आविष्कारक ने ही 'वेवज एम' भी वना दिया होता ।"

" तो फिर समझाओ कि रेडियों और इसकी मशीनरी में क्या फर्क है ?"

'"वह फर्क तो मैं आपको बाद में समझाऊंगा, पहले जरा अ ाप इसका कमाल देखिये ।" कहने के साथ ही वतन ने 'वेवज एम' की बाहरी बॉडी में लगे उनके स्विचों में से एक बटन दवा दिया ।

परिणामस्वरूप सेट पर अजीब सी सांय। लगी गूंजने आवाज़ की साय-

एक नन्हा सा बल्ब यन्त्र के अंदर जल रहा था ।।

एक बटन। लगा घुमाने तरफ दाहिनी धीरे-धीरे वतन को-

सेट पर सांयको बटन । लगी आने आवाजें सी-अस्पष्ट हल्सी-हल्की बीच के सांय- घुमाते वक्त वतन ने अपना कान ' बेवज एम' से उस आदमी की तरह सटा रखा था जैसे कोई व्यक्ति अपने थर्डक्लास ट्रांजिस्टर से कोई बहुत ही दूर का स्टेशन पकड़ना चाहता हो ।। ज्यों ज्यों वह बटन को घुमा रहा था, त्यों त्यों आवाजे तेज होती जा रही थीं ।

परन्तु अभी आवाजें अस्पष्ट थी ।

यह तो साफ था कि सेट पर आवाजें गूंज रही है । कौनक्या और है किसकी आवाज सी- कह रही है, यह बिल्कुल भी समझ में नहीं अा रहा था । मगरको आवाजों उन वतन- इस तरह ध्यान से सुन रहा था जैसे वह किसी आवाज को पकड़ने की चेष्टा कर रहा हो ।

इसी चेष्टा में वह बटन को घुमाता चला गया ।

अस्पष्ट आवाजे तेज होती चली गई ।

आवाजें इस कदर तेज हुई कि सारे कक्ष में जबरदस्त छोर मचने लगा ।

इस कदर शोर जैसे वहुत से पागल एक साथ चिल्ला रहे हों । आवाजें तो थी लेकिन स्पष्ट कोई नहीं ।

उधर, वे सब 'बेवज़ एम' पर उभरने बाले शोर में खोए थे । इधर धनुषर्टकार ने अपनी डायरी पर कुछ लिखा, लिखकर वतन को पकड़ा दिया । ' बेवज एम' पर से ध्यान हटाकर वतन ने वह कागज लिया और पढा, लिखा थाभैया "---, आपका 'वेवज एम' कहीं भारतीय लोकसभा से तो नहीं जा मिला है ? वहां उस वक्त ऐसी ही आवाजों का राज होता है जब पक्ष और प्रतिपक्ष के नेता आपस में एकदूसरे को गालियां देते हैं । बस, ऐसा लगता है, जैसे कुछ पागल चीख रहे हो, कौन किसको क्या कहता है, कुछ समझ में नहीं अाता ।पढ़ा ने वतन ", पढ़कर हल्ले। दिया मुस्करा से-

धनुषटंकार का लिखा यह कागज पढ़, मुस्कराये विना नहीं रह सका था, बोला"---- ये मत समझो मोण्टो, कि मैं भारतीय प्रतिनिधि ही पागलों की तरह चीखते हैं वल्कि प्रत्येक लोकतांत्रिक देश के नेता इसी तरह पागल हुआ करते हैं ।"

इसी बीच वतन 'वेवज एम' वाँल्यूम बटन को विपरीत दिशा में घुमा चुका था ।

आवाजों का शोर कछ कम हो गया था ।

"हो सकता है किं किसी भी देश की लोकसभा में ऐसा होता हो ।ने वतन " कहा..."लेकिन न तो यह किसी लोकसभा से ही सम्बन्धित हुआ है और न ही विधानसभा से । 'वेवज एम' पर अभीसुना छोर का आवाजों अस्पष्ट जो आपने अभी-, यह प्रत्येक पल ब्रह्मांड में होता रहता हैं ।"

" सुनिये ।और नाम उसका हैं चाहते सुनना आप आवाज जिसकी "--- कहा ने वतन " जन्म तिथी आपको जरूर मालुम होनी

चाहिए । उसके नाम के अक्षरों के जोड़ में जन्म तिथी के अक्षरों को जोड़ दो , जो भी संख्या आये वह बटन दबा दो ।"

कहने के बाद वतन ने ' वेवज एम ' की बॉडी पर लगे दस बटन दिखाये उन बटनों पर जीरो से लेकर नौ तक गिनतियां लिखी थी ।

" ये क्या बात हुई ?" अलफांसे ने कहा है संभव " ---कि कई आदमियों के नाम जन्म तिथी का जोड़ एक की बैठे । तब तो उन सभी की आवाज सुनाई देगी ?"

हल्के से मुस्कराया , वतन ने कहा है सकता हो हां ", लेकिन होता नहीं ।"

अलफांसे अभी कुछ कहना चाहता था कि वतन ने कहा मैं अब "--- आपको अपने प्रयोग द्वारा अपनी दादी मां की आवाज सुनाता हूं ।फल उसने बाद के कहने " वाली दादी मां के नांम के अंक बनाये , उनमें जन्म तिथी के अंक जोड़े और उपर्युक्त कार्य विधि के अनुसार ' वेवज एम ' को सैट करके बोला --" वेवज एम ' मैने सन् १६५० के नवम्बर माह , रात के समय पर फिक्स कर दिया है ।

अपनी बात पूरी करके उसने अन्तिम बटन दबा दिया ।

और बूढ़ी बाली फल में रात तूफानी उस --- मां और आठ बर्षीय न्नहें से वतन के बीच होने वाला वार्तालाप गूंजने लगा ।

काफी कुछ सुनने के बाद एकाएक अलफांसे ने कहाली बना चीज ही कमाल एक तुमने से दिमाग अपने वतन गए मान""---- है ।। मगर मुझे लगता है कि भावुकता के भंवर में फंसे तुम हर समय सिर्फ अपनी ही आवाज करके केच से ब्रह्माड :'वेवज़ एम' पर सुनते रहे हो । भावुकता के उस भंवर में डूबकर तुम शायद यह भी भूल गए हो कि असल में तुम्हारा ये 'वेवज एम' कितना उपयोगी साबित हो सकता है ।"

"'आप कहना क्या चाहते हैं ?"

" व्रह्मांड में एक से बढकर एक महापुरुष की आवाज़ है । अलफांसे ने कहामेरा"- ख्याल है कि जरुर तुम उन सब आवाजों को समेटो तो दुनिया को बहुत् कुछ दे सकते हो । महापुरुषों के वे स्पप्न जो अधूरे रह गए, पूरे कर सकते हो ।"

" डॉक्टर भावा की आवाज पर 'अणुनाशक' किरणो का आविष्कार
किया तो है मैंने ।। बताया ने वतन "

" और ".....

""आजकल मैं भारतीय महापुरुष रवीन्द्रनाथ टैगोर की आवाज़ ब्रह्मांड से समेटने में व्यस्त हूं । की टैगौर"---वताया ने वतन " आवाजें सी-बहुत'वेवज एम' से पकड़कर मैं टेप भी कर चुका हूँ। रविन्द्रनाथ टैगोर की आवाज इस दुनिया को वहुत कुछ दे सकती है ।"

" अगर ऐसा हे तो बेशक तुम अपनेअलफांसे "। हो रहे कर सदुपयोग का आविष्कार- ने कहा मेरी राय यहीँ लिए तुम्हारे"---महापुरुषों सभी के दुनियां तुम कि की"। लो कर टेप आवाज-

कुछ देर तक इसी विषय पर बातें होती रहीं ।

वतन उन्हे टेगोर, लिंकन श्रीकृष्ण, राम, रावण, भगत सिंह, जवाहरलाल इत्यादि न जाने किन आवाज की महापुरुषों किन-एम वेवज"' पर सुनाता रहा ।

किन्तु अलफांसे का ध्यान उन आवाजों की अोर नहीं था ।

वह तो कुछ और सोच रहा था! साजिश खतरनाक कोई कदाचित्--

बातें हो रही थी कि एकाएक अलफांसे ने कहा..."वतन् लैट्रीन जाना है मुझे । प्रयोगशाला के अन्दर कोई प्रबन्ध है क्या ?"

"'कुछ ही देर पहले आपसे कहा था कि जो लोग प्रयोगशाला के अंदर रहते हैं उनका सब कुछ यहीं है । ने वतन "'कहां-क्वार्टर्स के अधिकारीयें को चचा अपोलो" के करीब बनी 'लेट्रीन में ले जाओ ।"

अलफांसे के साथ अपोलो गया । "

आधे घण्टे बाद वे लौटकर आए । "

कुछ और बातचीत करने के बाद वे चारों प्रयोगशाला से बाहर आए।

प्रयोगशाला का वह एकमात्र रास्ता पुन । गया हो बंद :शाम के वक्त अलफांसे एक धण्टे के लिए राष्ट्रपति भवन से गायब हुआ ।

जिसके लौटने पर वेतन ने पूछा..."कहां चले गए थे चचा ?"

" बस यूं ही। दिया जबाव हुए मुस्कराते "। था गया चला करने सैर की चमन----

उस रात आठ बजे वै सोने के लिए अपने अपने बिस्तरों पर जा लेटे।

चारों के विस्तर एक ही कमरे में
लगे थे और अभी उनमेंसे किसी को नीद भी नहीं आई थी कि ....

धांय ।

रात के सन्नाटे में गूंजने बाली इस आबाज ने उन सब को लगभग उछाल दिया ।

वे सव उछलकर एकदम अपने। गए बैठ पर बिस्तरों अपने-

कमरे में नाइट बल्ब का मद्धिम प्रकाश बिखरा हुआ था । उसी प्रकाश में मूर्ख की तरह वे एकदूसरे को देख रहे थे ।

अभी उनमें से कोई कुछ बोल भी नहीं पाया था कि...

धांय ।

इस दूसरे फायर ने तो उन सबको जैसे बिस्तरों से उछालकर नीचे खड़ा का दिया ।

अलफांसे तेजी से बला वतन है रहा हो क्या ये "---?"

धांय !

पुन। विस्फोट :

" कह नहीं सकता चचा, मैं खुद चकित ".......

धायं ।

चौथे फायर ने तो जैसे उन सबके रोंगटे खड़े कर दिये ।

अलफांसे ने तेजी से कहा---"मुझे लगता है वतन कि किसी देश के जासूस "......

अभी उसका यह वाक्य भी पूरा ना हुआ था कि कक्ष में पिंक।।। लगी गूंजने ध्वनि की पिक .

किसी चिते की तरह वतन एक दीवार की तरफ झपटा। उसने कोई गुप्त बटन दबाया। एक छोटे से भाग ने हटकर दीवार में खिड़की पैदा कर दी । खिड़की में एक शक्तिशाली ट्रासमीटर रखा था । पिकआव की पिक्....ाज उसी में से निकल रही थी ।

बेहद फुर्ती का प्रदर्शन करते "। है हियर वतन.....लोहे..हेलो..-बोला हुआ करता ओन हेडफोन हुए-

"महाराज़ ।हू रहा बोल मैं"-----स्वर सा-घबराया से तरफ दूसरी "...मनजीत ।"

" हां मनजीत , क्या बात है ।'' वतन ने तेजी से पूछाये"-----...... धमाके कैसे थे ?"

"म! महाराज...म..." दूसरी तरफ से बोलने वाले मनजीत का लहजा कांप रहा था लगी पर शीर्षों के प्रयोगशाला"---हुए फायर चार । हैं गई टूट सर्चलाइटें और एक एक करके चारों

ही फूट गई ।"

"क्या ?'' इस तरह उछल पड़ा वतन जैसे अचानक किसी बिच्छू ने उसे डंक मार दिया हो!

--"ज"। हां जी...

"कैसे ?" वतन के मुंह से दहाड़ निकल पड़ी ।

"'कुछ पता नहीं चल रहा है महाराज ।से तरफ दूसरी ने व्यक्ति नामक मनजीत " रिपोर्ट दी.....""सारे मैदान में अन्धेरा छा गया है हम पता लगाने के चक्कर में हैं कि ये सर्चलाइटैं किसने फोडी हैं सर शक्तिशाली किसी कायर ही चारों ! गन से हुऐ हैं । वैसी ही जैसी हमारे पास हैं । महाराज, जितने अन्तराल चारों फायर हुए हैं उससे जाहिर होता है कि यह किसी एक आदमीं का काम नहीं । कम"। है सकते फोड़ को सर्चलाईटों चार जल्दी इतनी साथ एक आदमी दो कम-से-

" लेकिन मैं पुछता हूं कि वे आदमी उस मेदान में पहुंचे कैसे ?" वतन ने उतेजनात्मक स्वर में पूछा ।

" वो। गया बौखला मनजीत "!...महाराज...वो...

" मैं वहीं पहुंच रहा हूं ।-----गया हो सन्तुलित लहजा का वतन एकाएक ""जब तक हम वहाँ पहुंचें तब तक होना यह चाहिए कि जितने आदमियों ने यह गढ़बढ़ की है, वे सब पकड़ लिए जाये । "

" महा"...

दूसरी तरफ से कदाचित् मनजीत कुछ कहना ही चाहता था कि वतन ने सम्बन्ध की अलफांसे से तेजी वह । दिया कर बिच्छेद-। पलटा तरफ

अलफांसे दंग रह गया । उसने तो यह कल्पना की थी कि इस वत्त वतन बुरी तरह क्रोधित एवं उत्तेजित होगा, मगर उसकी उसकी आशा के ठीक विपरीत वतन के चेहरे पर तेज थापर अधरों गुलाबी- मुस्कान ।

बेहद सन्तुलित स्वर में उसने वताया"। चचा हैं दी फोड़ लाईटें सर्च चारों की प्रयोगशाला ने किसी---

मनअ देखकर धैर्य और संयम का वतन मन-ही-लफासे चकित् था, बोला..."'इसका मतलब किसी महाशक्ति का जासूस यहां पहुंच गया है ?"

"'ऐसा ही लगता है ।स्वर शांत वहीँ का वतन "..."मगर मुझे यह यह उम्मीद नहीं थी यहां पहुंचते ही इतना बड़ा काम कर देंगें ।"

" अब तुम्हारा क्या इरादा हैं ?"

"मैं वहां जा रहा हूं जरा ।"

" मैं से क्या मतलब ?" चौंककर अलफांसे ने पूछा जाओगे अकेले वहां क्या"----?"

"हां"----बोता वतन "' आप लोंगों का वहा जाना कोई जरूरी नहीँ है आखिर क्या दिवकत है ?"

परन्तु, इधर अपोलो वतन के साथ चलने के लिये दर पर तैयार खड़ा था और उधर धनुषटंकार अपनी दोनों बगलों में लटके होलस्टरों में रखे रिवॉल्वरों को चैक कर रहा था । एक नजर उन दोनों की तरफ देखता हुआ अलफांसे बोला..."अकेला जाने कौन देगा तुम्हे ? हम यहां क्यों अाए हैं ? इसलियेकि- हमें पहले ही सम्भावना 'थी कि दुश्मन के जासूस जरूर यहां कुछ गड़बड़ करेंगे ।"

वतन मुस्कराया, बोला"---' क्यों अपनी नीद खराब करते हो, चचा ? आराम से सोइये । मुझे पता है कि वहाँ आपकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी ।"

"तुम तो इस तरह मुस्कुरा रहे हो वतन, जैसे कुछ हुआ ही न हो । "

" हुआ ही क्या है ?" सन्तुलित लहजे के साथ वतन के होंठों पर पुनहैं तोड़ी तो ही सर्चलाइटे सिर्फ "-----मुस्कान वहीं : उन्होंने ।"

-"क्या मतलब ?”

" मतलब यह चचा, कि वे जितना ज्यादाथे सकते कर ज्यादा-से-, कर चुके हैं ।" वतन ने कहा नहीं कुछ वे ज्यादा इससे "-- वे कि हैं जानते भी अाप । सकेंगे कर किस काम के लिये यहां अाये हैं । उन्हें 'वेवज एम' का फार्मूला चाहिये है वह प्रयोगशाला के अन्दर है और अन्दर वे किसी भी तरकीब से पहुंच नहीं सकते । "

सर्च लाईटे फोड़कर वे मुझ पर, मेरे सैनिकों और चमन पर अपना आतंक जमाना चाहतें हैं सो उन्होंने कोशिश की है ।

मझे मालूम है कि इससे आगे वे कुछ नहीं कर सकते, इसलिए मैं र्निश्चित्त हू ।"

"बेवकूर्फ हो तुम । गुरू तुम्हारा हमेशा गलती जो"---कहा एकदम ने अंलफांसे " करता था, वहीं तुम भी कर जानते । हो रहे-है क्या गल्ती वह हो? अपनी फैलाई हुई सुरक्षाअों पर आवश्यकता से अधिक विश्वास । इतना अधिक बिश्वास ही सिंगही को हमेशा नाकाम करता है । तुम अभी इन जासूसो को जानते नहीं हो, ये विना रास्ता बनाए पहाड़ के गर्भ में से निकल सकते हैं ।"

...""कहना क्या चाहते हैं आप ?"

" यही कि यह वक्त बातों में जाया करने का नहीं, कुछ करने का है ।अलफांसे " ने तेजी से कहा इन अगर पहले से वक्त"--- गया पाया न काबू पर जासूसों, तो निश्चित रूप से ये कोई
बड़ा बखेड़ा कर देगें "!

"क्या आपके ख्याल से कोई मेरी प्रयोगशाला के अन्दर जा सकता है ?"

" ये ठीक है वतन, के 'तुम्हारी रक्षा बेहद कड़ी है ।ने अलफांसे " कहा्प् ऐसा"----रतीत होता है बाहर कोई चाहे जो करता रहे मगर प्रयोगशाला के अदर नहीं पहुंच सकेगा, परन्तु यादे रखो, आवश्यकता से अधिक विश्वास भ्रम पैदा करता है । उन जासूसों के लिए अन्दर पहुंचना कठीन अवश्य है, लेकिन असम्भव नहीं । चलो जल्दी । तरफ की दरवाजे अलफांसे हुआ कहता " लपका ।

"चाहता तो मैं यही था चचा, कि अाप आराम करते ।लपकता पीछे-उसके " वतन बोला तो है इच्छा आपकी जब किन्तु-मैं सकता नहीं रोक आपको, चलकर देखना ही चाहते हो तो चलो ।"

इस तरहवतन और अलफांसे पीछे उसके । अपोलो आगे सबसे-, वतन के कधों पर बैठा था...थनुषटंकार ।

न सिर्फ राष्ट्रपति भवन में बल्कि सारे चमन में जाग हो गई थी । रात के सन्नाटे में गूंजने वाले किसी गन के उन चार फायरों ने चमन के ज्यादातर नागरिकों को जगा दिया था । जो उन फायरों से नहीं जगे थे, उन्हे उन फायरों की आवाज से जागने बालों ने जगा दिया था ।।।।

सारे चमन में एक कोलाहल सा मच गया था । वे चारों राष्ट्रपति भवन से बाहर जाए ।

मुख्यद्वार पर ही ड्राइवर सहित वतन की सफेद कार खड़ी थी । वे कार में बैठे और कार हवा की तरह चमन की साफ और चिकनी सड़क पर दोड़ पड़ी थी ।

रात का समय होने के कारण सड़के शांत और वीरान पड़ी थी ।

शीघ्र ही वह मैदान के करीब पहुंच गई ।

दूर से ही उन्होंने देखाटॉर्चो रोशन कुछ । था व्याप्त अंधेरा में मैंदान- के झाग इधर की मैदान । थे रहे आ नजर घूमते उधर-आ भी आवाजें की लोगों से तरफ रही थी । मैदान के द्वार पर ही गाडी को रोक लिया गया ।

अपोलो ने गर्दन को झटका दिया तो अंधेरे, में घण्टियां टनटना उठी ।

"महाराज आ गएस्वर अनेक निकलकर से में अंधेरे के मैदान "। गए आ महाराज- उनके कानों से टकराए ।

एक साथ कईं टॉर्चों की रोशनी झनाक से कार पर जा पड़ी ।

कार प्रकाश से नहा उठी ।

कार की हैडलाइटें सीधी मैदान पर पड़ रही थी । और मैदान का सिर्फ वही भाग प्राकाशमग्न हो रहा था

कई सैनिक भी कार की हैडलाइट की रोशनी में आगए थे । सभी सेनिक यह जान चुके थे कि वतन आगए हैं।

अपोलो खिडकी के रास्ते से कार के बाहर कूद चुका था । एक झटके के साथ वतन कार का दरवाजा खोलकर बाहर आया और फिर, अंधेरे में वतन की आवाज गूंजी मनजीत ।"

"मैॉ आ रहा हूं महाराज ।" मैदान के अंधेरे भाग में सें मनजीत की आवाज़ गुंजी ।

वतन सहित प्रत्येक की दृष्टि उधर जम गई ।

एक व्यक्ति था रहा अा चला दौड़ा तरफ की उन्हीं लिये टॉर्च रोशन में हाथ- । धनुषटंकार को न जाने क्या सूझा कि अपनी जेब से टॉर्च निकालकर उसने रोशनी के सीधे झाग उस व्यक्ति पर डाले तो देखा मनजीत दौड़ा चला आ रहा था ।

वतन की उपस्थिति से सर्वत्र सन्नाटा। गया हो व्याप्त सा-

मनजीत करीब पहुचा । अभी वह अभिवादन करके निबटा ही था किं---

" मिले वे लोग ?" गम्भीर स्वर में वतन ने प्रश्न किया ।

" जजी---ज--- नहीं महाराज ।। गया बौखला मनजीत "

सबका ख्याल था कि मनजीत पर अब वह बरस पडेगा, किंतु नहींस्वर शांत बेहद जव गए रह दंग सब वक्त उस-----, में वतन ने कहा..."तो यंहा खडे क्या कर रहे हो मेरे बहादुर साथियों, मैदान के इसी अंधेरे में वे यहीं पे होंगे । उन्हें तलाश करो ।"

मनजीत सहित सैनिक तेजी साथ चारों और तलाश करने लगे ।

" और सुनो ।नहीं मारना को किसी से उनमें"- स्वर सन्तुलित वहीँ का वतन " है, जिन्दा ही गिरफ्तार करना है ।"

इधर तो वतन सैनिकों से यह सब कुछ कह रहा था, उधर अलफांसे एक सैनिक से छीनी टॉर्च का प्रकाश प्रयोगशाला की बेहद ऊंची और किसी शीशे की तरह चिकनी दीवार पर मार रहा था । उसकी टॉर्च का गोल प्रकाश दायरा प्रयोगशाला दीवार पर नृत्य कर रहा था ।

इधर वतन का आदेश पाते ही सभी सैनिक मैदान में इधर"। गए छिटक उधर-

हालांकि काफी टॉर्चें रोशन थी किन्तु फिर भी...मैदान में एक... अजीब। था व्याप्त अंधेरा सा-

अलफांसे के करीब जाकर वतन ने कहा चचा हो रहे कर तलाश क्या पर द्रीवार"----?”

'"यह कि इस दीवार पर कोई चढ़ तो नहीं रहा है ।"

जबाव में धीमेवतन पड़ा हंस से-, बोला"---' आप भी अजीब आदमी हैं चचा इस ! दीवार की जड़ों में खुदी खाई को शायद आप भूल गए ? इस दीवार की चिकनाहट भी भूल गए शायद इसमें करेंट दौड़"। ...

"हमें सब याद है वतन, हम कुछ नहीं भूला करते ।दीबार से रोशनी की टॉर्च " के जर्रें जर्रें को चेक करता हुआ अलफांसे बोला-----'' भूल तुमसे हो रही है । अपनी सुरक्षा पर जरूरत से ज्यादा यकीन 'गुमान' होता है और मेरी राय तो यही होगी कि तुम गुमान न करो । यह बात अच्छी तरह से समझ लो कि विश्व के जासूसों से तुम्हारा टकराव है, उन्हें अगर यह जिद हो जाये कि पत्थर बोलना चाहिये तो हकीकत यह है कि पत्थर को बोलना ही पड़ेगा । मुझे अपना काम करने दो तुम्-- "। करो अपना_

" मैं तो नहीं समझता चचा, कि कोई अादमी इस दीवार पर कैसे चढ़ सकता है ?"

"न तो तो तुम समझ सकोगे वतन, और न ही मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं' अलफांसे ने कहाहां"----, इतना तुम समझ लो कि जल्दी ही यहाँ कोई वड़ा घपला होने बाला है ।" "कैसा घपला है"

"जैसा कि मनजीत का विचार है कि इन चार सर्चलाइटों को तोड़ने में कमदो कम-से- आदमियों का हाथ है । ने अलफांसे " । है ठीक अनुमान यह उसका बेशक"---कहा निस्सन्देह कोई भी अकेला आदमी इतने कम अन्तराल में चारों सर्चलाइटों पर फायर नहीं कर सकता क्योंकि तुम्हारी यह प्रयोगशाला इतनी बड़ीं है कि कोई भी अकेला आदमी एक ही स्थान पर खड़ा होकर चारों को नहीं तोड़ सकता । मेरे ख्याल से तो इन चार सर्चलाइटों को तोड़ने वाले चार ही आदमी होने चाहीए । किन्तु कमकम से- दो तो हैं ही ताकि एक आदमी इमारत की एक साइड पर खडा होकर दो सर्चलाइटों को कवर कर सके । खैर, मतलब इस बात से नहीं कि उनकी सख्या कितनी रही होगी । सोचना यह है कि सर्चलाइटों को तोड़कर वे एकदम खामोश क्यों हो गये हैं । इस खामोशी के पीछे कोई बहुत बड़ा रहस्य है ।"

" कुंछ भी रहस्य नहीं है, चचाकहा ने वतन "। पूछो सेमुझ--..."असल बात यह है कि जितना वे कर सकते थे, उन्होंने कर दिया । उनका मुख्य काम प्रयोगशाला में दाखिल होना है और यह वे सोच नहीं पा रहे हैं कि प्रयोगशाला में वे दाखिल केसे हों ?"

" हर आदमी के सोचने का अपना एक अलग तरीका होता है । वतन बेटे ।ने अलफांसे " कहा..."फिलहाल की घटनाओं से सोचने का जो तरीका मेरे सामने आया है, उससे मैं इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि तुमने अपने गुरु से उसकी कमियां भी सीख ली हैं । दुश्मन का सर्चलाइट फोड़कर चुपचाप बैठ जाना, खामोशी साध इस बात का प्रमाण है कि दुश्मन वेहद चालाक है । वह मूर्ख नहीं कि सर्चलाइट तोड़कर यह प्रदर्शित करे कि वह वह यहां आ चुका है सर्चलाइर्टे तोड़ने का उसका मकसद अंधेरा में मेदान-- मैं और करना दावे से कह सकता हूं कि वह किसीका अंधेरे इस से ढंग किसी-न- लाभ अवश्य उठा रहा है ।"

...'"आपके ख्याल से वह क्या लाभ उठा सकता है ?"

"यही पता होता तो अभी तक वह पकढ़ में आ चुका होता ।"

" आपके ख्याल से वह क्या इस अंधेरे का लाऊ उठाकर प्रयोगशाला के अन्दरा जा सकता है ?"

" कोशिश तो उसकी यही होगी ।"

" और मैं जानता हूं कि इस कोशिश मैं वह नाकाम हो जायेगा ।। कहा साथ के दृढता बेहद ने वतन "

"'वतन ।ने अलफांसे " कहाजेसा है रहा झलक आत्मविश्वास ही वैसा में बातों की वक्त इस तुम्हारी"- कि बचपन में उस वक्त होता था जब यह कहा करते थे केबनूंगा राजा का चमंन मैं- ।' मगर याद रखो बेंटे ! जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास गरूर का रूप धारण कर लेता है, और तुम जानते हो कि गुरूर रावण का भी नहीं रहा ।"

'"मेरा आत्मविश्वास उस वक्त तक नहीं टूटेगा, चचा, जव तक तुम मुझे कोई ऐसी तरकीब न बता दो जिससे कोई आदमी अन्दर पहुच सके । मेरे "---कहा ने वतन "कहने का मतलब यह है कि मैं यहां खड़ा हूं । एक मिनट के लिये यह सोचिये कि आपको प्रयोगशाला के अन्दर जाना है, मैदान में अंधेरा है, इस अंधेरे का
लाभ उठाकर अाप, जाइये अंदर जायेगे कैसे कि दीजिये बता मुझे-या--या---?"

"मेरे द्विमाग में तो फिलहाल ऐसी कोई तरकीब है नहीं ।"

...-"बस, यहीं तो कारण है मेरे आत्मविश्वास का ।आप"-कहाृ से झट ने वतन " अन्तर्राष्टीय मुजरिम हैं, -- बड़े बड़े किलों की सुरक्षा भंग करके आपने अपने काम किये है । मैं जानता हूँ कि दुनिया का अगर कोई भी जासूस किसी काम को कर सकता है तो अाप उससे पहले उसे कर सकते हैं के ही अाप तक अभी जब ! दिमाग में प्रयोगशाला के अन्दर पहुचने की तरकीब नहीं अाई तो यह बात पक्की है कि अन्य किसी के दिमाग में भी नहीं आ सकती । औरआत्मविश्वास मेरे----, निश्चिन्तता का सबसे बड़ा की कारण यहीं है ।"

"तुम्हरि सोचने के सारे आसार ही गलत हैं वतन "!

वतन मुस्कराया, बोला चचा है नही वाक्य ऐसा कोई यह "----, जिसे मैं पहली बार सुन रहा हूं। मेरे सोचने का तरीका मेरे गुरू महान सिपाही को भी कभी पसन्द नहीं अाया । वे हमेशा यही वाक्य बोलते रहे जो अभी"। है कहा आपने अभी-

" सही कहते थे वे ।"

"`लेकिन मजबूरी यह है`चचा, कि जब तक कोई मुझे अपने तर्क से सन्तुष्ट न कर दे, तब तक मैं अपनी धारणाएं वहीं बदला करता ।दृदता वही में लहजे कं वतन " थी जो आज से बारह साल पहले उसकी विशेषता थीहैं जानते आप--------------- कि बचपन में सब मुझसे कहा करते थे कि मैं राजा नहींसकता वन-, लेकिन मेरे इस प्रश्न का जवाब कोई नहीं देता था कि क्यों नहीं बन सकता इस मुझे अभी ही न-- सवाल का जवाब मिला और न ही इस बात को मैं कभी अपने दिलो से दिमाग-- निकाल सका ।"

"खैरहोकर खड़े से आराम यहां तुम... मुस्कराते रहो, मैं अपना काम करता हूँ ।भी कोई उसका अलंफासे बाद के कहने "
जवाब सुने बिना मैदान के अंधेरे में गुम होगया । हा, वतन को, उसके हाथ रोशन टॉर्च अवश्य चमक रहीँ थी ।

बहुतका करने प्रकाश मैं मेदान से टॉर्चों दबी में हाथ अपने सैनिक से- प्रयास करते हुए दुश्मनों को इस तरह तलाशं कर रहे थे, जैसे कोई सूई तलाश कर रहे हों । कुछ देर पश्चात् वतन के लिये यह अनुमान लगाना कठिन हो गया कि हाथ में रोशन टॉर्च लिये इतने व्यक्तियों में से अलफांसे कौनउसने । है सा- अपने अास अपोलौ-----हाँ । था गायब भी धनुषटंकार--देखा पास-करीब उसके जरूर खड़ा था ।

और अलफांसे ?

और अलफांसे?

वह जानटॉर्चे रोशन में हाथों जिनके था गया मिल-धुल में सैनिकों नउ बूझकर- थी । उनमें मिलकर कुछ देर बाद उसने टॉर्च बुझा दी और स्वयं अंधेरें छुपता हुआ एक तरफ को बढा ।

शीघ्र ही बह खाई के किनारे पहुचां ।।

खाई के किनारे पर पेट के बल लेट गया वह और फिर किनारेसाथ के तेजी किनारे- रेंगने लगा । ऐसा लगता था, जैसे खाई के किनारे पर कुछ तलाश करने की कोशिश का रहा हो ।

एकाएक उसकी इच्छित वस्तु उसके हाथ की उंगलियों में फंस गई ।

और कुछ नहीं वह एक पतली किन्तु मज़बूत रेशम की डोरी थी ।।।

और कुछ नही वह एक पतली किन्तु मजबूत रेशम की डोरी थी ।

उसका ज्यादातर भाग खाई में लटका हुआ था और जो ऊपर था, उसे टटोलकर उसने वह भाग दूंढ लिया, जहां रेशम की यह डोरी मैदान के बीच जमीन में गड़ी एक छोटी। थी बंधी में कील सी-

कच्चे मैदान से कील उखाड़ने में किसी विशेष ताकत की आवश्यकता नहीं थी । कील उखाड़ने के बाद उसने जो कुछ किया, जिस फूर्ती के साथ किया, वह देखने लायक थी । इधर कील सहित रेशम की डोरी को खाई की तरफ उछाला और उधर उसका जिस्म

हवा में लहरा उठा ।

कोई दस फीट ऊंचा उछलकर वह खाई के किनारे से बीस गज दूर जा गिरा ।

इधर यह मैदान की ज़मीन से टकराया और उधर छपाक ।।।

खाई में से एक अावाज ।

" कौन है ?" एकसाथ कई स्वर और पलक झपकते ही विभिन्न दिशाओं से अनेक टॉर्चों के प्रकाशसंयुक्त पर स्थान उस ने दायरों-पल ही एक जहाँ दिया कर प्रकाश पूर्व अलफांसे था । विमिन दिशाओ से भागकर कई सैनिक लपके ।

अलफासे भी टॉर्च रोशन करके उन्हीं झपटने वालों में से एक था ।

"कोई खाई में कूदा है ।। डाला पर पानी भरे में खाई प्रकाश का टॉर्च साथ के कहने ने किसी "

" खाई में कूदकर क्या करना किसी को ?” एक अन्य ने कहा ।

किन्तु खाई के पानी पर अनेक टॉर्चों का प्रकाशं नृत्य करने लगा ।

......"इससें कोई कूदा जरूर है ।देखो वह-कहा ने किसी ", पानी में बुलबुले उठ रहे हैं ।"

" मगर वह होगा कौनका चौकने के किसी एकदम कहते-कहते "! अरे ----- स्वर देखो वह । है कोई वाकई तो ये "----- को आदमी किंसी ने मगरमच्छमुंह में दबा रखा है।। यह देखो, उसे निगलता जा रहा है ।।।

"अरे "। वर्दी उसकी देखो -----है साथी कोई ही हमारा तो ये"-अवाज अन्य एक "!

मैदान की उस दिशा में मौजूद ज्यादातर सैनिक उसी जगह एकत्रित हो गए अलफांसे चुपचाप अपनी टॉर्च बुझाकर उनके बीच से खिसक लिया ।

खिसकता भी क्यों नहीँ? वह जानता
था की अगली हरकत करने के लिए उसे इससे उचित अवसर न मिलेगा ।

इधर वतन भी उसी जगह पहुच गया था, पहुचते ही बोला" साथियों है बात क्या---

"महाराज"। है कूदा कोई में खाई इस"--कहा साथ के सम्मान ने सैनिक एक ".....

" हमारा कोई साथी ।----कहा ने दूसरे "“उसकं जिस्म पर वर्दी थी ।"

तीसरी अवाज" । गया खा मगर उसे"----

"हमारां कोई भी साथी इस खाई में कूदने की वेवकुफी नही करेगा ।संयत का वतन " स्वर वर्दी की साथी हमारे वह तो या"--धोखे तो नहीं और था दुश्मन कोई में में हमारा ही कोई साथी इसमें गिर गया है ।"

अभी वतन की बात पूरी हुई नही थी कि...छपाक पुनः हटकर दूर थोडी से स्थान उस ! किसी के पानी में गिरने की आवाज । झट से कई टॉर्चों की रोशनी अबाज पर जा ठहरी । एक पल के लिए उन्होंने अपनी ही जैसी वर्दी पहने एक जाने को देखा और अगले ही पल वह खाई में भरे पानी की गहराई में डूब गया ।

अब वतन चौंका ।

उसके किसी दूसरे सेनिक का खाई में गिर जाना महज इत्तफाक नहीं हो सकता । वतन के दिमाग में यहीं तेजी से विचार
कौंधा...'क्या उसके सिपाहियों के लिबास में कोई दुश्मन हैं अगर हैम पर होंठों के वतन सोचकर । तो-तो-ुस्कान दौड़ गई ।

व्यर्थ ही दुश्मन मौत के कुएं में कूद रहे हैं ।

उसे पूर्ण विश्वास था कि खाई में मौजूद खतरनाक जानवर उसे छोड़ेंगें नहीं ।।

किंन्तु होंगे से मकसद किस कूदे में खाई इस दुश्मन----? प्रयोगशाला के अन्दर पहुंचने के लालच से उसके विवेक ने जबाव दिया ।

" नहीं कुदेंगे क्यों इसमें वे भला !?" 'वतन ने सोचा...यह रास्ता प्रगोगशाला के अन्दर नहीं, मौत के मुंह में जाता है ।'

"लेकिन.लेकिन.....दुश्मनों को इस खाईं के भेद का क्या पता ?"

अभी वह अपने दिमाग में इन विरोधी विचारों का तर्क रहा ही कर वितर्क-था कि पुनः। छपाक-

वैसी ही तीसरी आवाज़ ।

अन्य सब तो पहले ही चिन्तित थे, लेकिन अब वतन भी बिना चिन्तित हुए न रह सका । उसके सैनिक 'जान खाई तो बूझकर-साथ के सैनिकों इतने और सकते नहीं कूद में खाई में गिरने का संयोग हो नहीं सकता । तो है रहा क्या हो यह फिर-----?

उसके सैनिकों के कपड़े पहनकर दुश्मन खाई में कूद रहे हैं ? "

हांन पता क्रो दुश्मनों कि जबकि तव भी बह । है सकती हो बात एक यही शायद---- हो कि यह खाई मौत का मुह है । अभी वह सोच ही रहा था कि चौथी बार किसी के खाई में कूदने की आवाज । अब तो वतन से रहा नहीं गया ।

अंधेरे का कलेजा चीरकर उसकी आवाज मैदान में गूंज उठी"। करो से शोर-जोर तलाश की दुश्मनों साथियो"-

अजीब वातावरण था ।

इतने सैनिकों के वावजूद उन्हें मिल नहीं रहे थे । वतन के अ◌ादेशनुसार पुनः सभी सैनिकों ने तलाश जारी कर दी वतन मैदान के अंधेरे में खड़ा कुछ सोच ही रहा था कि हाथ में रोशन टॉर्च दबाए एक साये को इसने अपनी तरफ बढते देखा ।

"'कहो वतन बेटे 1" अलफांसे की आवाज अब क्या"-'भी तुम्हारा ख्याल है कि दुश्मन यहा सक्रिय नहीं है ।"

-"यह मैंने कब कहा चचा ?" वतन ने कहा-"ज़ब सर्चलाइटें फूटी हैं तो निश्चित रूप से का बात इस । ही है सक्रिय दुश्मन-करता भी अब और हूँ रहा करता विरोध हूं कि मेरी सुरक्षाओं क्रो तोडकर दुश्मन प्रयोगशाला के अन्दर नहीं पहुंच सकता ।"

"जानते हो कि सैनिकों द्वारा इतनी देर की मिले नहीं क्यों दुश्मन भी बावजूद के खोज-?"

" इसलिए कि वे भी हमारे ही सैनिक बने हुए थे ।"

" थे नहीं वतन, बेटे, हैं, कहो ।"। है हुऐ छुपे दुश्मन भी अब में सेनिकों इन कि है दावा मेरा "--- कहा ने अलफासे "

" छुपकर करेंगे क्या वतन का अजीब"। वे सकेंगे नहीं जा तो अन्दर के प्रेयोगशाला"-- उभरा स्वर सा-

"खाई में कूदने वाले चार सैनिकों के बारे में तुम्हारा किया ख्याल ?"

" इन सैनिकों के रूप में वे दुश्मन थे ।-बतायाा ने वतन ""ओर प्रयोगशाला के अॉदर जाने के लिए है खाई में कूदे ।"

"क्यों, क्या दिमाग खराब था उनका ?" अलफांसे ने कहा..."जो जानमुंह के मौत बूझकर- में छलांग लगाएंगे ?"

"उन बेचारों को मालूम क्या होगा कि वे कहां छलांग लगा रहे हैं ?"वतन ने कहा..."उन्हें इस खाई की विशेषता का क्या पता ? वे तो इसी आशा से कूदे होंगेकि खाई में से प्रयोगशाला के अन्दर जाने का उन्हें कोई मार्गमिल जाएगा ।"

"सचमुच तुम्हारे सोचने का तरीका हर वार गलत होता है ।"

-"क्यो ? अब क्या कहना चाहते है ?"

..."यह कि इस वक्त यहाँ जो दुश्मन सक्रिय हैं । उनेक काम करने के तरीके से ही प्रतीत होता है वे बेहद चालाक हैं । चारों सर्चलाइटें फोड़ने के बाद इतनी देर तक बिना क्रिसी हरकत के धैर्यपूर्वक रहना, फिर चार आदमियों का खाई में कुदना यह सब कुछ जाहिर करता है वतन, कि दुश्मन जो भी हैं, वे चालाक है ओर जो कुछ कर रहे हैं, एक लम्बी योजना के आधार पर कर रहे है । ऐसे दुश्मनों के लिए यह सोचना कि वे खाई की वास्तविकता से ही परिचित न होंगे, एक मूर्खतापूर्ण विचार के अतिरिक्त कुछ न ।"

" यह तो उनकी अौर बड़ी मूर्खता होगी कि खाई की वास्तविकता जानते हुए भी वे इसमें कूद पड़े है"

..."सन्भव है कि खाई में भरे पानी और जीवों से सुरक्षा का प्रबन्ध करके कूदे हों ?"

"ये हकीकत नहीं चचा, सिर्फ आपका ख्याल है ।कहा ने वतन "..."पानी में ही वे जल की घबराने । गए बन भोजन का जीवों- है नहीं ही बात तो, क्योंकि पहली बात तो उन्हें जलभी जीवित वे तरह किसी अगर कि यह बात दूसरी ! छोडेंगे नहीं जीव- बच गए तो खाईं में से प्रयोगशाला के अन्दर जाने का कोई रास्ता नहीं है । वे मरकर भी प्रयोगशाला में नहीं पहुच सकेंगें ।।

बूरी 'तरह चौंका वतन ।

न सिर्फ बल्कि अलफासे और सारे सैनिक भी चोंक पडे ।

उनको चौकाने वाली एक विस्फोट की आबाज थी ।।

भयानक विस्फोट !

और वतन --- के चौंकने का असली कारण यह था कि यह धमाका प्रयोगशाला के अन्दर हुअा था ।

..."'वतन' !" इससे पहले कोई कुछ समझे अलफांसे तेजी से चीख पड़ाक प्रयोगशाला दुशमन-करो कुछ ही जल्दी"-----े अन्दर पहुंच चुके हैं ।"

अब वतन का आत्मविश्वास डोल गया ।

डोलने की बात भी थी । अभी तक वह निश्चित था तो सिर्फ सिर्फ इसलिए कि प्रयोगशाला के बाहर दुश्मन चाहे जो करते रहें किसी तरह वे उदर नहीं पहुँच सकेंगे । और जब वे अन्दर नहीं पहुंचेंगे तब तक उनका कोई सों मकसद पूरा नहीं होगा ।।

परन्तु होने वाले विस्फोट ने वतन की निश्चिंतता भंग कर दी ।।

" लेकिन चचा । गये कैसे पहुंच अंदर दुश्मन् ----कहा ने वतन भी फिर "?"

"यह वक्त इस तरहकी ऊटपटांग बातें सोचने का नहीं है, वतन बेटे । अलफांसे " का तेज स्वर "----अंदर होने वाला धमाका इस बातका प्रमाण है कि दुशमन अन्दर पहुंच चुके हैं ।। हमें यह सोचनेकैसे वे कि है करना नहीं जाया वक्त में- पहुंचे , वरना हम यहाँ ही रहेंगे और दुश्मन जिस तरह अंन्दर तक पहुंच गए हैं, उसी तरह अपना काम के बाहर भी आ जाएंगे ।"

धनुषट'कार ' उसके कधों पर चढ़ा सांकेतिक भाषा में उससे कुछ करने के लिये कह रहा था ।

वतन का दिमाग ठसकरे। क्या कि था रहा पा नहीं सोच यह ।। था गया रह होकर सा-

तभी अचानक...धड़ाम। ...धुग्म... धुम्म ...

प्रयोगशाला के अन्दर एक अन्य कर्णभेदी विस्फोट ।

और इस विस्फोट ने वतन के सम्पूर्ण चेहरे पर तनाव उत्पन्न का दिया ।

उसने तेजी से जेब में हाथ ड़ाला और द्रान्समीटर निकालकर उसे अॉन कर तेजी से बौला--'डैलो हुआ क्या ।। डैनी...हैलो... ? प्रयोगशाला के अन्दर यह धमाकों की आवाज़ कैसी है ?"

"महाराज पर ट्रांसमीटर से तरफ दूसरी "! उभरा डैनी का, बारीक स्वर, "कुछ समझ में नहीं अा रहा है, सर "!`

" उन धमार्को का परिणाम"!...

"प्रयोगशाला के अन्दर अधिकांश भाग में अंधेरा छा गया है सर ।आवाज की डैनी " उभरी चार उन ने एक से इनमें"----
को जनरेटरों ध्वस्त कर दिया है जिनसे प्रयोगशाला की चारों दीवारों पर करेंट रहता था । दूसरे विस्फोट ने उन दो जनरेटरों को नष्ट का दिया है । जिसके कारण प्रयोगशाला के अधिकांश भाग में प्रकाश रहता था ।"

" कोई सदेग्ध आदमी नजर आ अ ाया ?"

'"हम तलाश कर रहे है । महाराज, लेकिन ये अंधेरा "।। .....

"वतन "! उसके बराबर में ही खड़ा अलफांसे तेजी से बोलाआदेश को डैनी "---- दो कि दु१मन को तलाश करने के स्थान पर वह अपनी ज्यादातर शक्ति 'वेवज एम' और उसके फार्मूले की हिफाजत में लगाए ।"

ट्रांसमीटर के माइक पर हाथ रखकर वतन ने कहा..."डैनी क्या, किसी को भी नहीं मालूम है कि 'वेवज एम' और फार्मूला कहां रखें हैं "!

"तुम्हें तो मालूम है ?" झुंझलाएने अलफांसे में स्वर से- पूछा ।

"'हां। ...मुझे सिर्फ..."

उसकी पूरी बात सुने विना ही अलफांसे ने तेजी से कहा'----"'तुम , डैनी को यह मत बताओ कि उसे ऐसा आदेश क्यों दे रहे हो ? तुम्हें पता है कि दुश्मन किस मकसद से यहाँ आया है, जिस जगह फार्मूला हो, उस जगह के अ ासकडी की पास-निगरानी का हुक्म डैनी को दो । "

"'डैनी-कहा में स्वर तेज ने वतन हटाकर हाथ से माइक ".."अपने ज्यादातर सैनिकों का जाल मेरे प्रयोगकक्ष के अ ासपास बिछा दो । सबकों हुक्म दे दो कि प्रयोगकक्ष के अ ास"। दें का शूट फोरन उसे तो आये आदमी संदिग्ध भी कोई पास- कहने के साथ ही उसने ट्रांसमीटर ऑफ़ का दिया ।

अब वतन के लहजे में उत्तेजना और चेहरे पर ऐसा तनाव था जैसा किसी भी जोशीले नौजवान के चेहरे पर देखा जा सकता है जिसका घर उसकी आंखों के सामने धूधू- करके जल रहा हो । जोर से चीखा वह"! मनजीत"---

"'हुक्म कीजिए महाराज ।। कहा ने मनजीत खड़े ही करीब "

एकाएक वतन पूर्णतया सक्रिय हो उठा था । उसने कहाभी कोईं-रहे याद । हैं रहे जा अन्दर के प्रयोगशाला हम"----- संदिग्ध आदमी इस मैदान से बारह न निकल सके । जो हुक्म मैंने डैनी को दिया है, वह अपने लिए भी समझो । जवाब के मनजीत " तेजी वह बिना किए प्रतीक्षा की के साथ दीवार के मध्य की तरफ बढ़ गया । ठीक उस स्थान पर पहुंचा जहाँ से उसने आज दिन में दरवाजा खुलने का संकेत दिया । उसी जगह खड़े होकर उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिए । उसी के संकेत पर, मनजीन ने अपनी टॉर्च का प्रकाश उसके जिस्म पर डाला ।

कदाचित् इसलिए कि दरवाजा खोलने वाला सैनिक वतन को देख सके । वही हुआसटील । बनी खिड़की में रदीवा की प्रयोगशाला-को खाई हुई फिसलती चादर की पार करने लगी । कुछ ही देर बाद वतनं और अलफांसे कदमकी स्टील मिलाए कदम-से- उस चादर पर से होते हुए खिड़की की तरफ जा रहे थे ।"

अपोलो सबसे आगे था और धनुषटंकार वतन के कधें पर ।

खाई को पार प्रयोगशाला में दाखिल होते ही वतन ने सैनिक से कहादस्वाजा"- बन्द कर दो और याद रहे, हमेशा की तरह मेरे अलावा किसी के लिए भी न खुले ।" बिना किसी जबाव की प्रतीक्षा वतन अ ागे बढ़ गया । प्रयोगशाला के अन्दर भी मैदान जैसा ही अंधेरा व्याप्त था ।

वतन के कधें पर बैठा धनुषटंकार अपने हाथ में दबी रोशन टॉर्च से उसका मार्गदर्शन कर रहा था ।

वतन और अलफांसे जैसे चल नहीं रहे थे, दौड़ रहे थे । वतन के साथ ही दौडता अलफांसे व्यंग्य कसने से बाज़ न आया, बोलाधोखा विश्वास-----आत्म ज्यादा"- देता है ना-?"

-"चचास्वर सर्द एक से मुंह के वतन दौडते तरह उसी "!.....-"उस दुश्मन की सूरत जरूर देखूंगा जो मेरे इतने इन्तजामों के बाद यहां तक पहुच गया । सचमुच कमाल के दिमाग का मालिश होगा वह ।"

अंधेरे में डूबे अलफांसे के होंठों पर षड्यन्त्रकारी मुस्कान दौड़ गई । बोला पर ताकत अपनी तुम कभी आगे कि है उम्मीद"---- जो कि करोगे न गुमान नाइत धोखा दे ।। ने वतन दिया नहीं जवाब "

चुपचाप बढ़ता ही गया वह ।

अभी वह प्रयोगकि था ही पहुचा समीप के कक्ष-...धड़ाम !

ठीक कक्ष के अन्दर एक विस्फोट ।

वतन सहित सभी के रोंगटे खड़े हो गए ।

वतन जोर से चिल्लाया"। डैनी"-

"मैं यहां हूं महाराज ।खड़े यहां"- -स्वर कथित का डैनी से तरफ की कक्ष " क्या कर रहे हो तुम ।" पहली बार अलफांसे ने देखा कि वतन अपने किसी आदमी को डॉट रहा हैं..."ये अन्दर से विस्फोट की आबाज कैसी?"

"'ज.ज.....जी ।। गया बौखला डैनी "

" कोई दुश्मन पहले मैदान में फिर प्रयोगशाला में और अब कक्ष तक पहुच गया और इतने सैनिकों में से कोई उसकी परछाई तक नहीं देख सका । क्या कर रहे हो तुम यहां ?"

"सर "। नहीं कोई में कक्ष !

"'बको मत-पड़ा चीख वतन "। ..."कक्ष में कोई नहीं गया तो यह धमाका क्या जादू से हुअा है ? तुम सब लापरवाह हो गए हो कोई आदमी सबकी आंखों में धुल झोंककर अन्दर पहुच गया और तुम मिट्टी के माधो की तरह पहरे पर खड़े हो ।"

"'इन कामों के लिए यह वक्त नहीं है वतन ।"चलो े अन्दर से जल्दी""---कहा ने अलफांसे "

"'याद रहे, कक्ष से बाहर उस वक्त तक कोई न निकल सके जब तक मैं न निकलूँ । की कक्ष से तेजी वह ही साथ के कहने " । गया बढ़ तरफ

कक्ष में दाखिल हुए तो वहा पूर्णतया अंधेरा था ।

पलटकर वतन ने कक्ष का दरवाजा, अन्दरसे वन्द कर लिया । साथ ही बोला-"अपोलो इमरजेन्सी लाइट जलाओ ।"

धनुषटंकार और अलफांसे की टॉर्चों का प्रकाश कक्ष में मौजूद प्रयोगपर सीटों- नृत्य का रहा था । कक्ष के अन्दर बारूद की दुर्गन्ध और धुआं भरा हुआ था । एक कोने में अाग के 'दहकते कुछ छोले पड़े थे ।

उस पर नजर पड़ते ही अलफांसे ने अपनी टॉर्च का प्रकाश उधर घुमा दिया ।

"अरे -निकला से मुंह के अलफासे "!'बिस्फोट के द्वारा इमरजेन्सी लाइट को भी नष्ट कर दिया गया है ।"

वतन, धनुषटकार और अपोलो ने भी देखा ।

" तुम जो भी कोई हो, जान चुके होंगे कि हम यहा पहुच चुके हैं ।"

वतन जोर से चीखातय भी यह अब और "--- समझो कि तुमने अगर कोई गलत हरकत की तो किसी भा किमत पर जिन्दे इस कक्ष से बाहर नहीं निकल सकोगे ।"

जवाब में का अ‌ाबाज नहीं । सन्नाटा --

"तुम जहां कहीं छुपे हो, ज्यादा देर तक छुपे नहीॉं रहोगे ।सन्नाटे बार इस " को अलफांसे की आबाज ने तोड़ा‌ृ रहना जिन्दा"-बिना तो हो चाहते किसी प्रकार की हरकत किए शराफत से बाहर आ जाओं, वरना इस कक्ष से तुम्हारी लाश ही निकलेगी ।"

जवाब! पात तीन के ढाक-

मानो कक्ष में कोई हो ही नहीं । रहरहे दे चेतावनियां वतन और अलफांसे रह---- थे परन्तु कोई दृश्मन नहीं अ‌ाया । हां इतनी देर में कक्ष में छाया धूआं रोशनदानोके मार्ग से बाहर निकल गया ।

अन्त में। लगे करने तलाश की दुश्मन अनजाने में कक्ष सारे मिलकर चारों---

उस वक्त उन सभी के चेहरों पर आश्चर्य ठुमके लगा रहा था जव उन्होंने कक्ष का चपा चपा छान मारा उसे आदमी तो क्या, प्राणी के नाम पर एक चींटी तक मिली ।

वे उस इमरजेंसी लाइट के नजदीक पहुचे, जिसे किसी ने बम विस्फोट से नष्ट कर दिया था । टार्च की रोशनी में कुछ देर वे इमरजंसी लाइट के फर्श पर बिखेरे टुकड़ों को देखते रहे , फिर अलफांसे की टॉर्च का प्रकाश कक्ष की दीबार पर नृत्य करने लगा । "

फिर, वह एकदम चौकने के से अन्दाज में बोलाटॉर्च और हैं क्या यह अरे---- का प्रकाश दीवार के हिस्से पर केन्द्रित था । उस जगह से दीवार टूट गई थी । उधर ही ईट और मलवा पड़ा था । एक मोखला कक्ष की दीवार क आरे पार हो गया था ।

"यह मोखला वम के विस्फोट से बना है ।"। वह गया निकल बाहर से में इसी है तगता"-कहा ने अलफांसे "

उसका इतना कहना था कि धनुषटंकार ने मोखले से बाहर जम्प लगा दी ।

अपोलो क्या कम था ?

वह भी बाहर निकल गया । वतन ने जैसे ही उधर वढ़ना चाहा, अलफांसे"! वतन ठहरो" ----कहा ने ---

ठिठक कर वतन ने अलफांसे की ओर देखा है है चालाक उतना दुश्मन कि न गए मान - जितना मैं कह रहा था ? वह इस कक्ष तक पहुंचा और फार्मुला निकालकर चलता बना ।"

वतन जोर से चीखा "---और अब यह भी तय समझो कि तुमने अगर कोई गलत हरकत की तो किसी भा किमत पर जिन्दे इस कक्ष से बाहर नहीं निकल सकोगे ।"

जवाब में का अाबाज नहीं । सन्नाटा --

"तुम जहां कहीं छुपे हो, ज्यादा देर तक छुपे नहीॉ रहोगे ।सन्नाटे बार इस " को अलफांसे की आबाज ने तोड़ाृ"-जिन्दा रहना चाहते हो तो बिना किसी प्रकार की हरकत किए शराफत से बाहर आ जाओं, वरना इस कक्ष से तुम्हारी लाश ही निकलेगी ।"

जवाब! पात तीन के ढाक-

मानो कक्ष में कोई हो ही नहीं । रहरहे दे चेतावनियां वतन और अलफांसे रह---- थे परन्तु कोई दृश्मन नहीं अाया । हां इतनी देर में कक्ष में छाया धूआं रोशनदानोके मार्ग से बाहर निकल गया ।

अन्त में। लगे करने तलाश की दुश्मन अनजाने में कक्ष सारे मिलकर चारों---

उस वक्त उन सभी के चेहरों पर आश्चर्य ठुमके लगा रहा था जव उन्होंने कक्ष का चपा चपा छान मारा उसे आदमी तो क्या, प्राणी के नाम पर एक चींटी तक मिली ।

वे उस इमरजेंसी लाइट के नजदीक पहुचे, जिसे किसी ने बम विस्फोट से नष्ट कर दिया था । टार्च की रोशनी में कुछ देर वे इमरजंसी लाइट के फर्श पर बिखेरे टुकड़ों को देखते रहे , फिर अलफांसे की टॉर्च का प्रकाश कक्ष की दीबार पर नृत्य करने लगा । "

फिर, वह एकदम चौकने के से अन्दाज में बोलाटॉर्च और हैं क्या यह अरे---- का प्रकाश दीवार के हिस्से पर केन्द्रित था । उस जगह से दीवार टूट गई थी । उधर ही ईट और मलवा पड़ा था । एक मोखला कक्ष की दीवार क आरे पार हो गया था ।

"यह मोखला वम के विस्फोट से बना है ।"। वह गया निकल बाहर से में इसी है तगता"-कहा ने अलफांसे "

उसका इतना कहना था कि धनुषटंकार ने मोखले से बाहर जम्प लगा दी ।

अपोलो क्या कम था ?

वह भी बाहर निकल गया । वतन ने जैसे ही उधर वढ़ना चाहा, अलफांसे"! वतन ठहरो" ----कहा ने ---

ठिठक कर वतन ने अलफांसे की ओर देखा है है चालाक उतना दुश्मन कि न गए मान - जितना मैं कह रहा था ? वह इस कक्ष तक पहुंचा और फार्मुला निकालकर चलता बना ।"

"नहीं ।"। सकता जा ले नहीं फार्मूला "----वतन पड़ा चीख "

"और क्या मकसद था उसका?"

--"मकसद तो यहीँ था लेकिन फार्मूला मैंने ऐसी जगह रखा है कि वह ले जा नहीं सकता । ठीक के कक्ष वतन हुआ कहता " तरफ की एक से में स्क्रीनों रखी में बीच वढ़ गया ।

उसने उस स्कीन को पीछे से खोला ।

स्क्रीन की मशीनरी पर प्रकाश डाल रहा थास्विच विशेष एक लगा अन्दर के मशीनरी ने वतन । अलफांसे---- दबा दिया ।

परिणामस्वरुप उन छहों स्क्रीनों के बीच रखी घुमने बाली वह कुर्सी एकदम उल्ट हो गई ।

वतन तेजी से उसी तरफ़ बढा ।

"रोशरी इधर दो चचा ने वतन "! कहा ।

टॉर्च की रोशनी में वतन कुर्सी के निचले भाग को गौर से देखने लगा । फिर उसका नन्हा सा बटन, जो काफी बारीकी से देखने पर चमकता था,वतन ने दबा दिया 'घुर्रअम्दरूनी के कुर्सी मानों लगी होने आवाज हल्की ऐसी करती घुर्र.... भाग में कोई छोटी। हो रही चल मशीन सी-

कुर्सी के अन्दर फसा घासलगा। अाने बाहर फूस-

उसके साथ ही बाहर आयाव ने वतन से झट । डिब्बा एक---ह डिब्बा उठाकर देखा । खोला, अन्दर दो छोटी मौजूद फिल्में सी-। थी

उन्हें देखकर वतन ने कहा...द्रेखो चचा, मैं कहता था न कि कोई भी आदमी इस फार्मूले तक नहीं पहुंच सकता । यह सुरक्षित है।"

"'क्या इन्हीं फिल्मों में 'वेवज एम' का फार्मूला है "!

"एक फिल्म में 'वेवज एम' का, दूसरी में 'अणुनाशक' किरणों का ।कहा ने वतन "..."इसे नहीं ले जा सका वह । "'

"ले तो तभी जाता जब पता होता कि फार्मूला यहां है ।कहा ने अलफांसे "..." उसेे पता ही नहीं था ।"

--""मैं कहता था न, किसी को पता नही लगेगा ।"

"मगर अब लग गया है ।अलफ "पृसे का लहजा एकदम बदल गया"। जाऊगा ही ले तो अब"----’

"क्या मतलब है---कि था ही चौंका तरह बूरी अभी वतन "

"ये धमाके टाइमबमों के हो रहे थे वतन बेटे ।। मैं लगा जम्प पर उस ने अलफासे एहु कहते "

वतन अभी कुछ समझ भी ना पाया था कि डिब्बा उसके हाथ से निकल गया ।

धनुषटंकार और अपोलो मोखले से बाहर निकले तो विभिन्न दिशाओं में में दौड़ लिए ।

कक्ष का यह रास्ता एक हॉल में खुला था और हॉल से बाहर निकलने के लिए अनेक रास्ते खुले पड़े थे ।

अपनीतलाश को आदमी संदिग्ध ऐसे किसी उन्होंने में दिशा अपनी- किया जो वह मोखला बनाकर कक्ष के हो निकला बाहर-
। थे अाए बाहर वे से रास्ते जिसके

इसे संयोग ही कहा जाएगा कि अपनी। अाए में हॉल साथ एक बाद घण्टे आधे वे होकर निराश से दिशाओं अपनी-

दोनों की नजरें मिली ।

आंखों ही आखों में वे समझ गए कि दोनों ही नाकाम लोटे हैं ।

एक साथ उस मोखले द्वारा कक्ष में प्रविष्ट हुए । वहां पहुंचते ही बुरी तरह चौक पड़े वे ।।

दृश्य ही सा था । चौंकने की बात ही थी ।

टार्च रोशन एक प्रयोग डेस्क पर रखी थी और उसकी रोशनी में अभीउन्होंने अभी- अलफांसे को गिरते देखा था । वह स्वय नहीं गिरा था बल्कि वतन ने उसकी कनपटी पर घुसा मारा था ।

उनकी आखों के सामने एक चीख के साथ अलफासे फर्श पर गिरा था ।

वे दोनों झटपट वतन और अलफांसे के करीब पहुंचे । देखा...अलफांसे फर्श पर गिरा तो फिर उठा नहीं । वह वेहोश गया था ।

उसके बेहोश जिस्म पर पैर रखे वतन बुरी तरह हांफ रहा था ।

दोनों के ही जिस्मों पर जगह। थे घाव जगह-

दोनों के ही कपड़ों पर खून क दाग ।।

" देखने से ही पता लगता था कि दोनों में तुफानी जंग हुई है ।

इस जंग का नतीजा उनके समाने था । बेहोश अलफांसे और हांफता हुआ वतन । कई स्क्रीनें टूट गई थी । कई डैस्कों का सामान इधर। था हुआ बिखरा उधर-

अपोलो और धनुषटंकार अ्वाक देखते रहे ।।।

-जो कुछ वे देख रहे थे, उस पर उन्हें यकीन नहीं हो रहा था ।

वे चमत्कृत से देर तक उन दोनों को देखते रहे । जब धनुषटकार से नहीं रहा गया तो वतन के सामने अा गया ।।

"'तुम कहां चेले गए थे मोण्टो ?" अपनी सांस पर काबू करने की चेष्टा करते हुए वतन ने पुछा ।।।

मगर...धनुषटंकार का दिमाग इतने नियन्त्रण में कहां था कि वह वतन द्वारा पूछे गए प्रशन पर गौर करके उसका उत्तर देता ।।। ... वतन के प्रश्न का जवाब दिए बिना में धनुषटंकार ने किसी गूंगे की तरह सांकेतिक क्षाषा में प्रश्न क्रियाचक्कर क्या सब ये "-- है ?"

उसका आशय समझकर वतन ने जवाब दियानहीं कोई अन्य फार्मूला"----, चचा ही यहाँ से निकालकर ले जाना चाहते थे । " ही चौंका तो धनुषटंकार, साथ ही बुरी तरह चौंके विना अपोलो भी न रह सका ।

चौंके हुए धनुषटंकार ने इस बार पूछा...क्या मतलब ?"'

"मतलब यह कि चचा चमन में इसलिए नहीं अाए थे कि जब मैंने 'वेवज एम' के बारे में घोषणा कर दी है तो महाशक्तियों के जासूस मुझसे मेरे यंत्र और फार्मुले को छीनना चाहेंगे अौर उन्हें परास्त करने में ये मेरी मदद करेंगे वल्कि ये यहाँ इसलिए अाये थे कि ये मेरे फार्मुले और यंत्र को चुरा सके और मुंहमांगे दामों में किसी भी देश बेच दें ।"

" ओह !” इस बार धनुषटंकार ने डायरी पर लिखाये "---- तो डबल गुरू की पुरानी आदत है और अपने इस बिजनेस में ये इस बात की परवाह नहीं करते कि इन्हें दोस्तों से टकराना पड़ा है या दुश्मनों से । कई वार ये ऐसी हरकत बिकास और स्वामी विजय केसाथ भी करचुकै हैं ।। कहते हैं की वे किसी भी सम्बन्थ से बढकर अपने सिद्धान्त और बिजनेस को मानते हैं ।"

पढ़ने के बाद वतन ने कहा..."यही हरकत इन्होंने मेरे साथ भी की । "

"’लेकिन यह सव कुछ हुआ कैसे ?" धनुषटंकार ने पुनपुछा लिखकर : -"ये तो हमारे साथ थे;-- फिर सर्चलाइटों का टूटना, चार आदमियों का खाई में कूदना, प्रयोगशाला के अन्दर धमाके, इस कक्ष में धमाका था क्या सब यह...? किसने किया ?"

-"ये सारा जाल इनका का ही बिछाया हुआ था ।कि पड़ेगा मानना"-बताया ने वतन " इनकी हर चाल, पूरी साजिश, एक स्वस्थ दिमाग से सोची हुई थी । इनके दिमाग को मान गया मैं । इतनी देर तक हम दुश्मन के साथ रहे और दुश्मन को पहचान न सके ।"

-"लेकिन हमें भी तो बताओ भैया, कि ये सब कुछ इन्होंने किया कैसे ? "

-"सुनो ।-किया शुरू कहना ने वतन "“आज दिन में जव ये हमारे साथ यहाँ अाए थे तो हमारी नजरों से छुपाकर इन्होंने एक टाइम बम दीवार कं सहारे इमरजेंसी लाइट के पास फिट कर दिया । तुम्हें याद होगा अपोलो कि दिन में ये तुम्हारे साथ लैट्रीन गए थे । इन्होंने हाथ उन्हीं तीन जनरेटरों के पास धोए होंगे जो बम"। हुए नष्ट से बिस्फोट-

'अपोलो ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई ।

-------"तुम्हारी स नजरों से छुपाकर इन्होंने एक टाइम बम उस जगह फिट कर दिया ।” वतन ने बतायाइंसके"--- बाद दोनों को याद होगा कि शाम को ये कुछ देरके लिए भवन से गायब हो गए थे है मेरे पूछने पर इन्होंने बताया था कि चमन की सैेर करने गए थे, परन्तु हकीकत यहीं थी कि उस समय में इन्होंने प्रयोगशाला के बाहर वाले मैदान में हमारे चार सैनिकों क्रो मार डाला । मारकर उनकी लाश को छोटील में खाई से मदद की डोरी की रेशम और कीलों छोटी-टका दिया ।

-------उन चारों की मशीनगनें इन्होंने मैंदान के चारों कोनें पर जमीन में फिट कर दी पल हर निशाना उनका कि तरह इस-पर सचंलाइटों वाली तरफ अपनी-अपनी था । गनों के ट्रेगरों के साथ इन्होंने स्प्रिंग के छोटेबांध टुकडे छोटे- दिए । स्प्रिंग के दुकड़ो के दूसरे सिरों में लोहे की एक गेंद जैसी वस्तु थी जो असल में टाइम बम के सिद्धान्त पर तैयार की जाती है । लोहे की उस गेंद के अन्दर एक घडी होती है ।

-----उस घडी में जो टाइम फिट कर दियाचलती से आराम वह तो तक वक्त उस --जाए- रहेगी मगर ठीक तब जबकि इसमें

भरा टाइम समाप्त हो जाएगा बन्द हो जाएगी बन्द होते वक्त वह एक तेज झटके के साथ अपने स्थान से की तरफ उछलेगी । वैसी ही गेंदों के टाइमों में एक एक मिनट का अन्तराल करके इन्होंने गनों के ट्रेगरों में बन्धे स्पिंगों के दूसरे सिरों से फिक्स कर दी । टाइम समाप्त होते ही गेदों में झटके हुए और चारों गनों से एकअपने-अपने निकलकर गोली एक- लक्क्ष पर जा लगी ।

------- गनों को फिक्स करना और उन गनों के मालिक हमारे चार साथियों को मारकर खाई में लटका देने का काम इन्होंने उसी समय में किये थे जिसमें ये गायब रहे । ये सारे काम इन्होंने किए भी इतनी सावधनी से कि कोई उन्हें नोट भी नहीं कर सका ।"

सास लेने के बाद वतन ने पुन"----कहा : स्कीम इन्होंने अच्छी तरह सोच के स्कीम उसी अपनी । थी बनाई समझकर- मुताबिक इन्होंने विभिन्न स्थानों पर फिक्स टाइम बमों के टाइम बंमों के चलने इत्यादि के टाइम सैट किए थे । ठीक वक्त के अन्तराल से चारों गनें चली । वही हुआ जो ये चाहते थे ।

-------- चारों सर्चलाइटें फोड़कर इन्होंने अंधेरा कर दिया । स्वाभाविक था कि फायरों की आवाज को सुनकर मैं रात ही को यहाँ अाता । अपनी योजना के मुताबिक ये हमारे साथ अाए । जिस मकसद से इन्होंने यह अंधेरा किया था, उसका इन्होंने भरपूर लाभ उठाया । अंधेरे का लाभ उठाकर इन्होंने कील सहित लाशों को पानी में डाल दिया और मेरे दिमाग में यह बाल घुसेड़ने की कोशिश करने
लगे कि सैनिकों का लिबास पहने खाई में कुदने वाले वे ही दुश्मन है जिन्होंने सर्चलाइट तोड़ी हैं और जो लेग ' वेवज एम' का फामूला चुराने का मकसद लेकर यहां आऐ है । इसके बाद प्रयोगशाला के अन्दर धमाका-------

------फिर इस कक्ष कुछ इन्होंने । धी चाल शातिराना एक इनकी कुछ सब यह ----- ऐसे दुश्मनों का भ्रमजाल फैलाये जो कहीं थे ही नहीं । हम उस जाल में फंसे रहे, हम ही क्या सचमुच, आदमी चाहे जितना समझदार हो, ऐसे जाल में फंस जाना स्वाभाविक ही है ।

-------इनका मकसद थातक कक्ष इस हमे हुए कराते पीछा का दुश्मनों कल्पनिक- लाना ये पहले ही जानते थे कि इस कक्ष में पहुंचकर इन्हें यह भी साबित करना पड़ेगा कि इस कक्ष में अन्दर दुश्मन जिस रास्ते से भाग गया । अतकहानी : बड़े स्वाभाविक बनाने के लिए इन्होंने पहले ही टाइम बम को इस तरह फिक्स क्रिया था कि दीवार में मोखला वन जाये ताकि उस मोखले को दिखाकर ये यह कह सकें कि दुश्मन इसमें से भाग गया है । "

-------" इस तरह इन्होंने एकं ऐसे काल्पनिक दुश्मन का नाटक रचा जो असल में था ही नहीं ।बाद के लेने सांस ने वतन " कहाफूटना का सर्चलाइट"----, चार का खाई में कूदना, प्रयोगशाला के अन्दर धमाके, कोई यह सोच भी नहीं सकता कि यह सब कुछ स्वय ही हो रहा होगा । हर आदमी उन परिस्थितियों में उसी कहानी पर चलेगा जो यह बनाना चाहते थे । अत हर : पहले ने दुश्मनों कि सोचेगा यहीं आदमी सर्चलाइटें फोडी, खतरनाकमें खाई करके इन्तजाम कोई का बचने से जीवों- कूदे, किसी तरह अन्दर पहुच गए, इत्यादि हमें ये फंसाकर में भ्रमजाल इसी ! ऐसे दुश्मनों का पीछा कराते हुए, जो कभी थे ही नहीं, यहां तक ले जाए । इन्हें मालूम था कि यहा अाने पर हमारे दिमाग में प्रश्न उभरेगा कि बन्द कक्ष में से दुश्मन कंहा गए ? इसका जवाब इस मोखले के रूप में इन्होंने पहले ही तैयार कर लिया था ।

" उसी मोखले में से गुजरकर तुम दोनों उस काल्पनिक दुश्मन की तलाश में चले गए । दुश्मन जब इनके अलावा कोई था ही नहीं तो किसी के मिलने का सबाल ही नहीं उठता था । मैं भी तुम्हारे इस गोखले में झपटने बाला था कि इन्होंने मुझे रोक दिया ।

अब क्यों कि इन्हें यह नहीं मालूम था कि इस कक्ष में फार्मूला रखा कहां है, अत अपने । था लगाना पता का फार्मुले इन्हें : के करने पूरा को मकसद उसी लिये इन्होंने मुझसे कहा कि दुश्मन फार्मूला लेकर इस मोखले के माध्यम से भाग गया है ।

-------स्वाभाविक है कि ऐसी परिस्थितियों में हर आदमी सबसे पहले यह चैक करेगा कि उसकी वह महत्वपूर्ण चीज, जिसे उसने छुपाकर रखा है, अपनी जगह पर मौजूद है भी या नहीं ? मैंने भी चेक कियाप्रति मेरे ही देखते फिल्म ---- इनका लहजा बदल गया । इन्होंने पर जम्प लगा दी और मेरे हाथ से यह डिब्बा छीन लिया जिसमें फिल्म थी, मगर मेरे विचारनुसार, इनकी स्कीम यहाँ अाकर कमजोर हो गई ।"

"'कैसे ??" धनुषटंकार ने इशारे से पूछा ।

----" मुझें आश्चर्य है इतनी चक्कदार और साफ सुथरी योजना बनाने और सफलतापूर्वक उस पर चलने के बाद अपनी मंजिल के चरम बिन्दू पर पहुंचकर इन्होंने इतनी बडी भूल कैसे कर दी कि जिसका परिणाम यह हुआ ?" कहते हुए वतन ने अलफांसे के बेहोश जिस्म की ओर इशारा क्रिया ।

'"आप कहना क्या चाहते हैं ?" धनुषटंकार ने लिखकर पूछा ।

" मैं यह कहना चाहता हूं के जिस स्कीम से ये हम सबको लेकर इस फिल्म तक पहुंचे, अगर वह स्कीम मैंने बनाई होती , यानी इनकी जगह मैं होता तो इनकी तरह फिल्म पर नजर पड़ते ही अपना असली रूप दिखाने की मूर्खता न करता, बल्कि उसी तरह वना रहता जिस तरह बना हुआ था । कहता कि अब इस फिल्म को यहां रखना खतरे से खाली नहीं है । इन्हें अपने साथ रखो ताकि दुश्मनोेें के हाथ न लग सकें । स्वाभाविक यह मुझसे ये अगर कि है बात सी-बात कहते तो मैं फिल्म को कहीं अन्यत्र रखने के स्थान पर अपने पास ही रखना ज्यादा सुरक्षित समझता और मेरे साथ ये रहते ही, प्रयोगशाला से बाहर निकल कर ये धोखे से फिल्म छीनकर भाग जाते तो यह परिस्थिति न बनती जो इस वक्त इनके साथ बनी है, यानी ये बेहोश हैं और एक तरह से इस वक्त मेरी कैद में है"

इन्होंने क्या किया ?"

--'"तुम्हारे यंहा से जाते ही इन्होंने अपना असली रूप दिखा दिया ।ने वतन " वाताया'-"फिल्म देखते ही इन्होंने मुझ पर यह भेद खोल दिया कि यह सब कुछ चक्कर इंन्हीं का फैलाया हुअा है । इनके स्थान पर मैं होता, ऐसी कभी नहीं करता । यह फार्मुला इन्हें मुझसे प्रयोगशाला से बाहर निकलने पर छीनना चाहिए था । आश्चर्य है कि इतनी अच्छी स्कीम बनाने के बाद चचा इतनी सी बात पर धोखा क्यों खा गए हैं"

"मैं जानता हूँ इसका कारणलिखा ने धनुषटंकार "।। .....''इसका असली कारण यह है कि इन्हें यकीन था कि ' हाथापाई में तुम इनके मुकाबले कहीं भी नहीं हो । इन्हें यकीन होगा कि मल्लयुद्ध में यह तुमसे जीत जायेंगे और तुम्हें यहीं बेहोश करके बड़े

आराम के साथ न सिर्फ इस प्रयोगशाला बल्कि चमन से ही निकल जाएंगे । यह तो इन्हें उम्मीद भी नहीं होगी कि उल्टे तुम उन पर हावी ही जाओगे ।"

"यह तो कि माना-'ओवर कॉफिंडेन्स' के कारण ये अपनी योजना के चरम विन्दु पर धोखा खा गये । -कहा ने वतन ""बल्कि यूं कहो कि 'ओवर
कॉफिंडेन्स भी नहीं, इनका' यह यकीन सहीं था कि मल्लयुद्ध में यह मुझ पर विजय प्राप्त कर लेंगें । निइ सन्देह:स कला में मैं अभी इनका बच्चा ही हूं । ये मल्लयुद्ध के बीच ज्यादातर मुझ पर हावी रहे और लडाई के बीच ही बीच में ये मुझे अपनी वे सब कारस्तानियां सुनाते रहे जो मैंने आपको बताई । यह तो मेरा नसीब ही अच्छा समझो कि मेरा दांव लग गया और मैंने एक वार इनकी कनपटी पर करके इन्हें बेहोश कर दिया । मगर मेरे ख्याल से तो मल्लयुद्ध में अगर ये मुझ पर विजय भी प्राप्त कर भी लेते तो भी ये इस प्रेयोगशाला से नहीं निकल सकते थे ।"

" क्या तुम्हें भी याद नहीं कि मैं कक्ष के बाहर खडे डैनी है और दरवाजा खोलने वाले सैनिक को यह हुक्म देकर अाया हूं कि जब तक मैं न आऊ, किसी को भी इस कक्ष और प्रयोगशाला कि से बाहर न निकलने दिया जाए "!

"हां, याद है"। होगी रही में दिमाग इनके तरकीब कोई न - कोइं की निकलने बाहर लेकिन "-लिखा ने धनुषटकार "। ...

"खैर!..." वतन ने कहा..."जो भी रही होकु जो तो फिलहाल लेकिन-छ हुअा, अच्छा ही हुआ । अगर मैं जरा चुक और सा- गया होता इतनी हिफाजत के बाद भी 'वेवज एम' और 'अणुनाशक' किरणों का यह फार्मूला हमारे हाथ से निकल गया होता है"

कुछ देर तक आपस में इसी, तरह की बातें होती रही, फिर ------

-----वतन ने कहा तो फिल्में वे जरा खैर"-दूंढो । हमारी लड़ाई के बीच न जाने वे कहा गिर गई । डेस्क ही साथ के कहने " । ली उठा टॉर्च रोशन उसने से

फिर प्रयोगशाला के फर्श पर फिल्मों को तलाश करने लगे ।

कुछ ही देर बाद वे फिल्में धनुषटंकार को मिल गई । उसने उन्हें वतनको- पकड़ा दिया ।

वतन ने सावधानी के साथ अपनी दोनों फिल्में सफेद पैंट की जेब में रखीं । अलफांसे के, बेहोश जिस्म को अपने कंधे पर लादा और प्रयोगकक्ष से बाहर की की चल दिये ।।।

वतन ने वह सब कुछ डैनी को समझा दिया जो धनुषटंकार और अपोलो को समझाया था ।

डेनी और दूसरे सैनिकों को आश्चर्यचकित छोड़कर वे आगे बढ गए । दरवाजा खोलने वाले सैनिक से रास्ता खुलवाकर बाहर आए और मनजीत तथा प्रेयोगशाला के बाहर के, सभी सैनिकों को हकीकत बताकर अपनी कार में जा बैठे ।

हर सैनिक आश्चर्य चकित था ।

डैनी और मनजीत जैसे अधिकारी खुश भी थे, इसलिए कि यह सावित हो चुका था कि कोई दुश्मन था ही नहीं, तो वे पकड़ते किसे ।।

वतन, धनुषट'कार और अपोलो बापस राष्ट्रपति भवन में अ ा गए ।

वतन ने जब यह कहा कि अलफांसे चचा को होश में लाकर इनसे कुछ बाते की जाएं तो लिखकर धनुषटंकार ने सलाह दी---- में अ ाग लाना में होश तरह इस को गुरु "- हाथ डालने से भी ज्यादा खतरनाक है । इन्हें ताव आ गया तो यकीनन ये सारे चमन में तहलका मचा देंगे ।"

"'तो फिर क्या करें ?”

'यह कि पहले इन्हें अच्छी तरह कसकर बांध दिया जाए ।इच्छा अपनी कि साथ के सावधानी"----दी सलाह ने धनुर्षटकार " से ये अपने जिस्म का एक अंग भी न हिला, सकें । तब इन्हें होश में लाया जाए ।"

" तुम्हारी सलाह पसंद आई मोंण्टो ।किस्म हर ये निस्सदेह" ----कहा ने वतन " के दुश्मन से कहीं ज्यादा खतरनाक हैं । तुम दोनों मिलकर इन्हें बांधो ।। हर जेब की अच्छी तरह तलाशी लो भी हथियार सा-नन्हा कोई-----इनके पास न रह जाए ।"

"और अ ाप ?"

'"इनके होश मैं अ ाने पर फिल्म मेरी जेब में नहीं रहनी चाहिए ने वतन "! कहा जगह सुरक्षित किसी को फिल्मों इन"----- कहने " । हूँ लौटता वापस रखकर पर के साथ ही एकदम धूम गया वतन । लम्बेबाहर से कक्ष वह साथ के कदमों लम्बे- निकल गया ।

धनुषटंकार और अपोलो ने एक नजर एक दूसरे को देखा, फिर अपने काम में व्यस्त हो गए । धनुषटंकार अपने कोट की जेब से रेशम की एक मजबूत डोरी निकाली और दोनों ने मिलकर अलफांसे को एक थम्ब के सहारे बांध दिया । फिर धनुषटंकार उसकी तलाशी लेने लगा । तलाशी में कोई खास चीज नहीं, सिर्फ एक कागज मिला । तह खोलकर धनुषटंकार ने वह कागज पढा । उस कागज में लिखा पहला अक्षर पड़ते ही वह उछल पडा ।

फिर राइटिंग पहचानकर उछला ।

अन्त में उसने लिखने वाले का नाम पढ़ा तो खोपडी भिन्ना गई उसकी ।

लिखा था------

------"बेटे बन्दर !

जिसको तुमने बांध दिया है, वह अलफांसे नहीं, तुम्हारा चचेरा भाई है। वतन- और मैं जो फिल्में सुरक्षित रखने गया वतन नहीं, अलफांसे हूं ।

----समझ सकते हो कि अब मुझे राष्ट्रपति भबन में लौटने की कोई ज़रूरत नहीं है ऐसा इन्तजाम मैंने जिस कि है लिया कर . यह तुम वक्त पत्र पढ़ रहे होगे, उस वक्त तक मैं तुममे े से किसी की भी पकड़ से बहुत दूर निकल चुका होऊंगा ।

---सोच रहे होंगे कि यह सब कैसे होगया ?

मैं नहीं चाहता कि यही बात सोचते हुए तुम ज्यादा देर तक अपना दिमाग, खराब रखो । सब कुछ उसी ढंग से हुआ है जैसा कि वतन के भेष में मैं तुम्हें कक्ष में ही बता चुका हूं ।

उसकि लो कर परिवर्तन इतना उसमें- मल्लयुद्ध में तुम्हारा वतन नहीं, हम जीते थे मगर हम जानते थे कि कुछ ही देर बाद जब तुम और अपोलो वापस कक्ष में लौटोगे तो वतन के खिलाफ हमारी जीत पसन्द नहीं करोगे । अतबनन खुद हमैं वतन :ा पड़ा और वतन को बनानापड़ा- अलफांसे ।

प्यारे अन्दर, तुमने वतन को अलफांसे पर कक्ष में वह आखिरी बार करते हुए अपनी आंखों से देखा था जिसके कारण वह बेहोश हुआ, लेकिन नहीं, यह हकीकत नहीं थी । -----------

-------- हकीकत यह थी कि वतन बेचारे को हमने इतना अवसर ही नहीँ दिया कि वह हमारा मुकाबला कर सके । हमने जो कुछ किया, तुम समझ सकते हो कि उस सबकी हमने योजना बना रखी थी । उस योजना के मुताबिक वतन को इतना मौका

नहीं देना था कि यह हमारा मुकाबला कर सके ।

इससे पहले कि यह, बेचारा कुछ समझ सकता, उसे बेहोश कर दिया । अपनी योजना के मुताबिक हम पर दो फेसमास्क थे- वतन हमने से मदद की उन्हीं । का वतन और अपना को खुद बनाया और खुद बने वतन । आधे घण्टे में इतने काम हुए । जब हमने देखा कि तुम दोनों आ रहे हो तो अलफांसे बने बेहोश वतन को खड़ा करके एक घूसा मारा ।

-इसके बाद वह फर्श पर पड़ा। गया रह-

अब यह भी कहोगे कि घूंसा लगते ही तुमने अलफांसे की चीख सुनी थीनहीं यह हम ! चाहते कि यह चीख की आवाज तुम्हें ज्यादा देर तक परेशान करती रहे । सीधीथी निकाली से मुह अपने नेहम चीख यह कि है बात सी-

वतन को अलफांसे और हमें वतन बनना इसलिए तो जरूरी था ही कि तुम्हें धोखा दे सकें, इसलिए भी जरूरी था कक्ष और प्रयोगशाला से बाहर निकलना था ।

याद है ना ?

वतन ने डैनी, दरवाजे बाले सैनिक और मनजीत को क्या हुक्म दिया था ?

बाकीं तुम समझदार हो । यह तो समझ गये होगे कि इन फिल्मों को प्राप्त करने के लिए अपनी इतनी शक्ति और दिमाग खर्च किया है तो किस मकसद से ? अपना और वतन का फेसमास्क बनवाने में भी तो खर्चा अाया ही होगा ।। अब ये फिल्में मेरे कब्जे में हैं । जानता हूं विश्व के हर देश को इनकी ज़रूरत है । बोलियां लगेगीसबसे बोली जिसकी- बड़ी...,फिल्म उसी की न थोड़ा...न...न...गलत लिख गया मैं ।।।

आपसदारी की भी तो कोई लिहाज होनी चाहिए, वतन से कह देना तुम्हारा गुरु विकास भी तो अाने वाला हैउसे तो- भी समझा देना कि तुम्हें ये फिल्में उस रेट से एक लाख कम में मिल सकती हैं, जो देश इनकी सबसे ज्यादा कीमत लगाएगा ।

माना कि रुस इन्हें एक करोड में खरीदने को तैयार होता है तो तुम्हें निन्यानवे लाख मैं मिल सकती है किसी को भी बेचने से पहले तुम्हें जरूर बताऊंगा कि कितने मैं विक
रही हैं । एक लाख कम में अाप लोग ख़रीदने के लिए तैयार होते हैं तो ठीक वरना मुझे तो एक लाख का फायदा और होगा । शायद आज तक किसी व्यापारी ने आपसदारी की
इतनी शर्म न की हो कि एक लाख का घाटा खाए।

तुम्हारे का गुरू का गुरू

अलफांसे दी ग्रेट ।

पढकर खोपडी भिन्ना गई धनुषटंकार की ।

कमाल तो यह था कि उनके बीच में रहकर ही अलफांसे फिल्म निकालने में कामयाब हो गया । अपोलो ने धनुषटकार के चेहरे पर उड़ती हवाइयां देखी, तो आंखों के संकेत से पूछा..."क्या बात है ? यह पत्र किसका है और इसमें क्या लिखा ?"

धनुषटंकार की समझ में नहीं अाया कि अपोलो को यह कैसे समझाए नहीं अपोलो पड़ना और था नहीं सकता यह बोल .
। जानता

अचानक उसे एक तरकीब सूझी ।

कागज़ की तह करके उसने जेब में डाला । बधे हुए वतन की तरफ बढा करीब पहुंचकर उसने वतन के चेह्रे पर अलफांसे का फेसमास्क नोंच लिया ।

अपोलो ने देखाजैसे ------- गया हो पागल ही देखते-

उसके चेह्रे पर अभी तक वतन का फेसमास्क था और वतन की ही कार लेकर उड़ा चला जा रहा था वह ।

उसके चेह्रे पर उत्तेजना का एक भी लक्षण नहीं था ।

हां...होंठों पर हल्की मुस्कान अवश्य थी ।

कदाचित्। मुस्कान की सफ़लता अपनी-

कार की गति आश्चर्यजनक रूप से उसने तेज का रखी थी ।

सड़क खाली पड़ी थी, दूरसाफ हुई फैली सामने उसके तक दूर--, चिकनी चौड़ी और सड़क । कार की गति से ही अनुमान होता था कि वह जल्दीकिसी अपने जल्दी--से-- निश्चित लक्ष्य पर पहुंच जाना चाहता था । वह मस्त होकर कार ड्राइव करता हुआ होंठ सिक्रोड़कर सीटी बजाने लगा ।।

पन्द्रह मिनट बाद ही वह चमन के ऐसे भाग में आ गया जहाँ से वस्ती काफी दूर थी । दोनों तरफ दूरथे हुए फैले खेत तक दूर-तो बदौलत की हैडलाइटों की कार । कुछ दुर तक प्रकाश था वरना हर तरफ अंधेरा था। अंधेरा धुप्प----

मील के उस पत्थर के पास,जिस पर बारह लिखा था, उसने गाड़ी रोक दी ।

आराम से बाहर अाया ।

वतन की सफेद पतलून की जैब में से टॉर्च निकाली । दाहिनी तरफ चेहरा करके उसने टार्च का प्रकाश चेहरे पर डाला । ठीक उसके सामने काफी दूर पर एक टॉर्च चमकी ।

ठीक उसी तरह से उधर से टॉर्च रोशन करने वाले ने प्रकाश अपने चेहरे पर डाला । अपने सामने वाले चेहरे को टॉर्च के प्रकाश में देखकर वह संतुष्ट हुआ और अपने हाथ में रोशन टॉर्च लिए वह उसी दिशा में बढ गया ।

उधर से भी हाथ में ,रोशन टॉर्च लिए वह व्यक्ति इसकी तरफ बढा ।

एक खेत के ठीक बीच में वे मिले । मिलते ही अलफासे ने नये आदमी के चरणस्पर्श कर लिए ।

नये आदमी ने उसे चरणों से उठाकर गले से लगाया । बोला..."जीते रहो बेटे । "

फिर... वे दोनों साथ बढ गए । अलफासे ने पूछा है कहां हैलीकॉप्टर "---?।।

"'बस, यहां से थोडी ही दूर अंधेरे में खड़ा है ।। कहा ने व्यक्ति दूसरे "

टॉर्च बुझाकर अंधेरे का सीना... चीरते वे आगे बढ़ने लगे ।

कुछ ही देर बाद एक खेत के बीच खड़े हेलीकॉप्टर के करीब पहुचे ।

हेलीकॉप्टर में अन्य कोई नहीं था । अलफांसे को लेने अाने वाला व्यक्ति ड्राइविंग सीट पर बैठा, अलफांसे उसके बराबर हैलीकॉप्टर स्टार्ट करके वह उसे हवा में उठाता चला गया । अपनी निश्चित ऊंचाई पर पहुंचने के बाद हैलीकॉप्टर के अन्दर की लाइट आंन हो गई ।

"अब तो अपने चेहरे ! दो उतार फेसमास्क यह से पर-" हेलीकॉप्टर चलाने बाले ने अलफांसे से कहा ।

" जरूर डैडी ?" अलफांसे के मुंह से निकलाजरुरत कोई इसकी अब में ववास्त"- नहीं है ।"' कहते हुए उसने अपने चेहरे से

फेसमास्क उतार दिया और वतन के उस फेसमास्क के नीचे से जो चेहरा निकला था, वह अलफांसे का बिल्कुल नहीं था ।

वह चेहरा था-----का हैरौ-

हैरी आर्तरट्रांग ।।

अमेरिका सीक्रेट सर्बिस का जासूस ।।

जासूसों के देवता यानी जैकी आर्मस्ट्राग का बेटा ।

औरजैकी नहीं कोई अन्य चालक का हैलीकॉप्टर----- ही था।। पिता का हेरी-

किसी को तुम पर शक तो नहीं हुआ ?", जैकी ने पूछा ।

"नो डैडी...!" मस्ती में हैरी ने कहामुझे तक पल आखिरी तो बेचारा वतन"----- अलफांसे ही समझता रहा था । धनुषन्टंकार और अ‍ापोलो के लिये मैं जब तक अलफांसे बना हुया था, वे मुझे अलफासे ही समझते रहे । हां, अ‍ाखिरी वक्त तक वे मुझे वतन पत्र मेरा जब से जेब की वतन बने अलफांसे । थे रहे समझ .. उन्हें प्राप्त होगा तो वे अपने बाल नोंच लेंगे ।"

"'क्या वह पत्र तुम अपने नाम से लिखकर अ‍ाए हो ?" जैकी ने चौंककर पूछा ।

अ‍ापने मुझे इतना बेवकूफ कैसे समझ लिया, डैडी ?" हेरी हल्की सी मुस्कान के साथ बोला बनकर अलफांसे ही काम सारा"- न मालूम यह को वतन कि पड़ा करना इसलिए हो कि अमेरिका ने पुनः उसके साथ कोई हरकत की है । पत्र मैंने ठीक अलफांसे के ढंग से लिखा है और यह तो अ‍ाप जानते ही हैं कि अलफांसे की राइटिंग की नकल करना भी मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं है उस पत्र क्रो पढ़ने के बाद भी वे यही जानेंगे कि फिल्में अलफांसे ले गया ।"

"आज दिन में तुमने हमसे सम्बन्ध स्थापित किया ।जैकी " बोलासारी तुमने"- बातें नहीं बताई । सिर्फ यह कहा कि मैं हैलीकॉप्टर लेकर यहां पहुंच जाऊं और तुम यहीं वतन के भेष में पहुंचोगे । यह भी नहीँ बताया था कि वतन, अपोलो और धनुषटंकार के बीच फंसे तुमने ऐसा... मौका कैसे निकाला कि मुझसे बात कर सको ?"

"मैँने आपसे चमन की प्रयोगशाला की तैट्रीन में से सम्बन्ध स्थापित किया ।" हेरी ने बतायाइसलि बाते ज्यादा और "---ए नहीं की र्थी क्योंक्रि उस थोडे से मिले वक्त में ही मुझे वहुत"। थे करने काम से-

"जैसे ? "

"मुझे अलफांसे समझकर वतन ने मुझे सारी प्रयोगशाला घुमाई ।ने रीहै " बताया..."क्रोई प्रयोगशाला के अन्दर न पहुंच सके, इसके लिए उसनेक्या- सुरक्षाएं की हैं भी यह--बताया ।पूरी की प्रयोगशाला ने हैरी हुए कहते " स्थिति जैकी को बता दी । यह बताते हुए कि वतन के मुहसे प्रयोगशाला की सारी सुरक्षाएँ सुनने के बाद ही उसने दिमाग में यह स्कीम तैयार कर ली थी कि उसे 'वेवज एम' और 'अणुनाशक किरणों ' का फार्मूला कैसे प्राप्त करना है ।"

हैरी ने यह भी बता दिया कि उसने सारा काम किस तरह किया । अन्त में बोला"-----' वतन के बेहोश होते ही मैंने अलफांसै का फेसमास्क वतन को पहना दिया और वतन का खुद पहन लिया । कपडे इत्यादि भी बदल दिए । धनुषटंकार और अपोलो जब लोटे तो यहीं समझे कि वतन ने अलफासे को बेहोश कर दिया ।"

इस तरह पूरी कहानी सुनने के बाद जैकी का सीना गर्व से फूल गया । उसके होंठों पर ऐसी मुस्कान दौड़ गई मानो उसके जीवन की सबसे बड़ी मुराद पूरी गई हो, बोला, "हैरी, मेरे बच्चे ।। आज मुझे यकीन हो गया है कि जो कुछ तूझे बनना चाहता था, वह वन जाएगा । आज मैं बहुत खुश हूं । वतन की प्रयोगशाला की सुरक्षा के बारे में जो कुछ तुमने सुनाया उसे सुनकर मैं दंग रह गया । मैं सोचने लगा कि इस ज़बरदस्त सुरक्षित स्थान में से भला कोई कैसे कामयाबी के साथ अपनी इच्छित वस्तु निकाल सकता है मगर फिर तुमने मुझे यह बताया कि किस योजना के आधार पर तुमने वतन के उस सुरक्षित किले में छेद का दिया । उसे सुनकर हम दंग रह गए । सच, तुम्हारी जगह अगर हम भी होते शायद ऐसी तरक़ीब नहीं सोच पाते । बेशक तुममें दिमाग है और दिमाग से सोची हुई किसी स्कीम को स्वंय कार्यान्वित करने की ताकत भी ।"

"`जो भी है डैडी ।"। है किया प्राप्त आपसे"----कहा ने हैरी "

"गुड!...' जैकी बोलाहां और "---, इसका मतलब यह हुआ कि अब हमारे वैज्ञानिक किरणे अणुनाशक"` भी वना सकेंगे ।"

"जी हां" हैरी ने कहा"। मैंने है ली का प्राप्त फिल्में की फार्मूले के दोनों "---

"अच्छा तो वे फिल्में तो दिखाओ ।कहा ने जैकी ", "जरा हम भी तो देखें, महान वतन के उन दो आविष्कारों का नमुना । " अपने निकालकर से जेब फिल्में ने हैरी डैडी को थमा दी ।

"जरा हैलीकॉप्टर सम्भालना ।ड्राइविंग जैकी हुए कहते "' सीट से उठ गया ।

कुछ ही देर बाद हैलीकॉप्टर ड्राइव कर रहा था हैरी और उसके बराबर में बैठा जैकी उन फिल्मों को उलट पुलटकर देख रहा था ।

उसकी आंखें इस तरह चमक रही थी मानो उसे दुनिया की सबसे बड़ी दौलत मिल गई हो ।

अपने कोट की जेब है उसने चमड़े का एक पर्स निकाला, दोनों फिल्में उसमें डालकर उसने चेन बन्द कर दी और वापस एक झटके के साथ हैलीकॉप्टर से बाहर अंधेरे वातावरण में फेंक दिया ।।।

ऐसे उछला हैरी, जैस, विच्छू ने डंक मार दिया हो, मुंह से निकला..."ये आपने क्या क्रिया ?"

मगर तब तक तो न सिर्फ जैकी ने रिवॉल्वर निकालकर उसकी कनपटी से सटा दिया, बल्कि गुर्रा भी रहा था तुमने बेशक "--- चोरी से से में प्रयोगशाला की वतन करके बड़ा काम क्रिया था हैरी बेटे, लेकिन बच्चे हो अभी यह भी नहीं समझते कि इतनी कीमती चीजे किसी के हाथ में यू ही नहीं दे देनी चाहिए । फिल्में तो अब वहां जाएंगी जहां पहुचनी चाहिए मगर तुम कोई हरकत नहीं करोगे । जिस गति से चला रहे हो , आराम के साथ उसी रफ्तार से चलाते रहो ।"

जैकी के मुंह से निकली इस आवाज को पहचानते ही हैरी का मस्तिष्क जैसे अन्तरिक्ष में तैरने लगा ।

पागल से हुए अपोलो ने यह समझते ही कि जिसे उन्होंने बांध रखा है, वह वतन है और क वतन-े भेष में फिल्म लेकर निकल जाने वाला अलफांसे है। दीं लगा जम्प बाहर-

धनुषटंकार भी जैसे खूनी हो उठा था। झपटा बाहर से कक्ष भी वह-

गैलरी में तीव्र गति से बकरा भागा चला जा रहा था ।।

इसी तरह दोनों भागते राष्ट्रपति भवन से बाहर अा गए ।

अपोलो तो सड़क पर पागलों की तरह एक तरफ भागता ही चला गया।

राष्ट्रपति भवन के दरवाजे पर खड़े कई सैनियों ने उसे रोकना चाहा लेकिन वह नहीं रूका ।

हां। गया रुक नुषटंकारध सा हड़बड़ाया पास के अधिकारी एक----

"क्या बात है मोण्टो ? तुम दोनों इस तरह घबराए क्यों हो ?" अधिकारी ने जल्दी प्रश्न किया ।

धनुषटंकार का ध्यान उसके प्रश्न की तरफ कहाँ था ?

वह तो तेजी से घसीट मारता हुआ अपनी डायरी पर कुछ लिख रहा था ।

लिखकर उसने अधिकारी की तरफ बड़ा दिया ।

अधिकारी ने पढा और चौंक पड़ा, लिखा था..."जो वतन अमीसे भवन राष्ट्रपति अभी- निकला है, वह वतन नहीं, उसके भेष में अलफांसे था । जल्दी बताओ कि यह वतन की कार को लेकर किधर गया है ?"

हड़बड़ाहट में धनुकांकार का मुंह ताकने के सिवा अधिकारी कुछ भी न कर सका ।

झुंझलाहट में धनुषटंकार ने जल्दी से बताने का इशारा क्रिया ।

"इधरकु बिना । ...छ सोचे। दी उठा उंगली को तरफ एक ने अधिकारी से बौखलाए समझे-

झपटकर धनुषटंकार ने उससे डायरी ली । बडी तेजी से घसीट मारकर उसने डायरी पुन। दी पकड़ा को अधिकारी :

अधिकारी ने पढ़ा, लिखा था----

...जल्दी से किसी जीप का इन्तजाम करो ।"

बेचारा अधिकारीदि उसका-माग तो जैसे एकदम शून्य हो गया था । परिस्थिति ऐसी थी कि यह ठीक से कुछ भी सौच समझ-केशिश की समझने कुछ वह । था रहा पा नहीं करता भी कैसे ? इन्न पलों में उसे तो ऐसों लग रहा था कि जैसे उसके पास दिमाग नाम की कोई चीज ही नहीं है ।

समझता भी कैसे ?

परिस्थिति ही ऐसी थी ।

उसके सामने थोडी ही देर पहले भवन से वतन निकला था । उसने चाहा भी था कि पूछ ले कि महाराज !

इतनी रात गए कहाँ जा रहे हैं ?

वतन से यह प्रश्न करने की हिम्मत नहीं जुटा सका था ।

उसके और अन्य सैनिकों के देखतेसभी । गया चला और बैठा में कार वह देखते-ही- सैनिकों को मन भी पर बात इस मन-ही- अपोलो साथ के वतन वक्त इस कि था आश्चर्य नहीं था ।

अपोलोजो-- वतन के अानमन का प्रतीक है । सारी दुनिया जानती है कि जहाँ वतन पहुचेगा , उससे एक सैकिंड पहले 'अपने गले की धण्टियां बजाता अपोलौ अपने अागमन की सूचना देगा ।

सैनिको की नजरों में यह पहला ही मौका था जब वतन अपोलो के बिना राष्ट्रपति भवन से बाहर निकला था ।

उस अधिकारी ने इसके लिए भी वतन को रोकना चाहा था पर हिम्मत न जुटा सका था ।

और अब बौखलाये से अपोलो और धनुषटंकार बाहर अाए थे ।

धनुषटंकार का कागज पढकर वह समझा, कुछ नहीं समझा लेकिन चीख पड़ा"। लाओ जीप"-

उसके चीखने के दो मिनट बाद ही न जाने किधर से एक जीप दौड़कर आई और ब्रेकों की चरमराहट के साथ सैनिक अधिकारी और धनुषटंकार के करीब रुकी ।

धनुषटंकार ने एक भी पल नहीं गंवाया । उसने जल्दी से ड्राईविंग सीट से ड्राइवर को हटाया ।

न सिर्फ सैनिक अधिकारी बल्कि वहां मौजूद सभी सैनिकों पर बौखलाहट सवार थी । मगर कर कोई कुछ नही सकता था क्योंकि धनुषटंकार से सभी उसी परिचित थे । ड्राइविंग सीट पर बैठते धनुषटंकार ने सबको जीप में बैठने का इशारा क्रिया ।

तब जबकि अधिकारी सहित सात सेनिक जीप में बैठ गए, किसी धनुष से छूटे तीर की तरह जीप सडक पर दोड़ पडी ।

इतनी तेज गति से कि उसमें बैठे सैनिक बौखला गए । फिर किसी गोली क्रीसी- रफ्तार से उनमें से कभी क्रिसी सेनिक ने जीप को चलाते नहीं देखा था । सब चुप ! सन्नाटा जैसा मौत में जीप !

कोई बोले भी तो क्या ? सभी के दिमाग बौखलाए हुएकि यह तो बात पहली । थे से- किसी की समझ में यह नहीं अा रहा था कि यह हो क्या रहा है ? दूसरी बात...जीप की रफ्तार ।।।

.कोई अच्छा चालक भी इस रफ्तार से जीप चलाए तो उसमें बैठने वाले अच्छे अच्छे कांप जाएँ तो यहां-----यहां-और---
सभ ी सैनिकों के दिमाग में यह बात भी थी कि जीप एक बन्दर ड्राइव कर रहा ।

सभी को लग रहा था कि निश्चित रूपसे भयानक एक्सीडेंट होने वाला है ।

आखिर सैनिक अधिकारी ने कह ही दियाचलाओ धीरे जरा जीप"----, मोण्टो ।"

लेकिनथा वाला सुनने किसकी भला वह-, कम होने के स्थान पर जीप की रफ्तार बढी । दुबारा किसी की हिम्मत न हुई कि कोई उससे रफ्तार कम करने लिए कह दे । सभी को लगा था कि उनके कहने पर रफ्तार और बढ जाएगी ।।

कुछ ही देर बाद सढ़क पर पागलों की तरह भागता हुआ अपोलो हैइलाइर्टो की सरहद में अ ा गया ।

अपने ऊपर लाइट पड़ते ही एक बार अपोलो ने पलटकर देखा ।

इतनी देर में ब्रेकों की चीख के साथ जीप उसके बराबर में रूकी ।

-'"अपोलो ।---उधर निकला से मुंह के अधिकारी सैनिक इधर "

हवा में लहराता हुआ अपोलो का जिस्म जीप में अ ा गया ।

जीप एक अटके साथ इस तरह अ ागे वड़ गई जैसे कभी रुकी ही नहीं थी ।

जबरदस्त तीव्र गति से जीप दौडती ही चली जा रही थी ।

चमन की विभिन्न सड़कों पर दौड़ने के अतिरिक्त जीप ने किया ही क्या ?

वह वस दौडती रही, दौड़ती ही रही । जैसे कि सैनिको को सम्भावना थी, कोई एक्सीडेंट नहीं हुआ ।

आधे घण्टे तक जीप सड़क्रो, पर दौड़ती रही । इस बीच

धनुषटंकार ने सभी सैनिकों को समझा दिया था कि हुआ क्या है ।

वास्तविकता का पता लगने पर उनकी स्थिति भी अपोलो और धनुषटंकार जैसी हो गई ।

लगातार एक घण्टे तक सड़कों की खाक छानने के बाद भी जब वतन की कार कहीँ नज़र न अाई तो विवश होकर उन्हें राष्ट्रपति भवन की तरफ लौटना पड़ा ।

सभी सेनिक इस वक्त अपने महाराज के दर्शन करना चाहते थे । यह भी चाहते थे के उन्हें होश में लाकर उनसे पूछें कि ऐसी परिस्थितियों में हमारे लिए क्या हुक्म है ?

किन्तु तब, जबकि वे वहाँ पहुंचे जहाँ वे वतन को बंधा छोड़ गए थे ।

अपोलो और धनुषटंकार के पैरों तले से जैसे धरती खिसक गई । "

" महाराज़ कहां गए ? " बरबस ही एक सैनिक के मुँह से निकला ।

ओंर वास्तव में...वतन अपनी जगह से गायब था । रेशम की यह डोरी जिसकी मदद से धनुषटकार ने उसे वांधा था, खम्बे के करीब ही फर्श पर पडी थी ।

फर्श पर से अलफासे के चेहरे के फेसमास्क गायब था ।

धनुषटंकार ने ध्यान से देखाथी जरूर पुल्झी-उल्झी डोरी-, किन्तु कहीं से भी टूटी नहीं थी ।।

उसका सीधा सा मतलब था कि वतन के वन्धन खोले गए हैं । अगर यह सोचा जाए कि इस बीच वतन होश में आ गया होगा और उसने खुद ही स्वयं को रेशम की इस डोरी की कैेद से मुक्त किया होगा तो यह गलत होगा ।

धनुषटंकार जानता था कि उसने बन्धन इतने सख्ती के साथ बाधे थे कि उनमें बधने वाला स्वयं किसी भी तरह से अपने 'वन्धन नहीं खोल सकता था ।

हां अगर ज्यादा बलशाली हो तो बंधनों को तोड़ जरूर सकता था ।

किन्तु रेशम की डोरी का साबुत होना इस बात का प्रमाण था कि वतन को किसी ने खोला था ।।।

" किसने ?"

यही एक सवाल हर दिमाग़ में चकरा उंठा ।।

पूरे राष्ट्रपति भवन में वतन को इस तरह खोजा गया जैसे सुई को खोजा जा रहा हो, परन्तु वह नहीं मिला ।

राष्ट्रपति भवन के अन्य पहरेदारों से पूछताछ गई तो पता लगा कि न तो किसी ने वतन को ही देखा है और न ही अन्य किसी संदिगध आदमी को ।।।

सुवह तक चमन का बच्चागया हो गायब से रूप आश्चर्यजनक वतन कि गया जान बच्चा- है । सारे चमन में जैसे मातम छा गया । जगहजग-ह, तरह तरह के वार्तालाप होने लगे । रात को गुजने वाली गोलियों की अावाजों और बम बिस्फोटों की चर्चाएं होने लगी ।

चमन की थल सेना के अध्यक्ष मिस्टर नादिर ने चमन कें रेडियों पर चमन के नागरिकों को सम्बोधित करके कहा कि महाराज के गायब होने से घबराने की कोई जरूरत नहीं है ।

वे चमन के दुश्मनों से बदला लेने के लिए खुद ही चले गए हैं । उनके बाद चमन जी रक्षा उनकी फौज बखूबी कर सकती है ।

नादिर द्वारा रेडियों पर राष्ट्र के नाम प्रसारित संदेश का तात्पर्य यह था कि चमन के सामान्य नागरिक आतंकित न हो सकें, धबराएं नहीं यह दूसरी बात थी कि नादिर स्वय घबरा रहा था ।।

स्वयं उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वतन कहां चला गया और उसे कहां ढूंढा जाए ?

वतन की खोज में कईं दिन गुजर गए, लेकिन वह किसी को न मिला ।।

फिर!...सुबह दिन एक...

सारे चमन में जैसे तूफान आ गया ।।

जिसने देखा वही दंग , आंतकित , भयभीत और डरा हुआ ।

सारा चमन जैसे आकाश की तरफ देख रहा था । बूढे, जवान, महिला, पुरुष इत्यादि सभी की निगाहें चमन के ऊपर चकराते उस हेलीकॉप्टर पर थी ।।

सभी के चेहरे पीले पड़े हुए है सारे चमन के साथभी अपोलो अ◌ौर धनुषटंकार साथ- राष्टपति भवन की छत पर खड़े उस को देखरहे थे । उसके बराबर में ही खडा था, थलसेना अध्यक्ष नादिर ।

सबकी निगाह चमन के ऊपर चकराते उस हेलीकॉप्टर से नीचे लटक रहे इन्सानी जिस्म पर ज्यादा थी ।

वह जिस्म हेलीकॉप्टर के साथ बंघा एक लाश की तरह लटक रहा था ।

हैलीकॉप्टर के विपरीत दिशा में उड़ता। वह था रहा हो प्रतीत सा-

नादिर ने तो कहा भी था कि इस हैलीकॉप्टर को किसी गोले से मार गिराया जाए किन्तु न जाने क्या सोचकर धनुषटंकार ने उसे ऐसा करने से रोक दिया था ।

हवा में चकराते हैलीकॉप्टर ने भी चमन के अनेक चक्कर लगाने के अलावा कुछ नहीं किया । हां...वह निर्जीव हैलीकॉप्टर जिस्म सा- । था रहा लहरा जरूर साथ के

काफी देर तक उस हेलीकॉप्टर ने चमन के नागरिकों को आतंकित रखा । अन्त में...वह समुद्र की तरफ मुड़ा ।राष्ट्रपति भबन की छत पर खड़े घनुषटंकार, अपोलो और नादिर इस वक्त हैलीकॉप्टर को स्पष्ट देख रहे थे ।

वे राष्टपति भवन की छत पर थे और भवन का एक हिस्सा सागर की लहरों पर ही खडा था ।

किनारे से थोडी सागर के ऊपर एक सैकिंड के लिए हैलीकॉप्टर हवा में स्थिर हुआ ।

उसी सेकिड में हेलीकॉप्टर के नीचे बधा वह जिस्म सागर में अ◌ा पड़ा । "

बसको जिस्म उस- सागर में डालने के बाद हैलीकॉप्टर सागर के ऊपर से होता हुआ प्रतिपल दूर होता चला गया ।

धनुषटंकार और अपोलो राष्ट्रपति भवन की छत से नीचे की तरफ भागे, नादिर उनके साथ था ।

इस दृष्य को देखने वाले अन्य लोग भी सागर की तरफ जाने की सोच रहे वे, किन्तु सबसे पहले ये तीनों ही उस स्थान् पर पहुचे वह जिस्म सागर की लहरों के थपेड़े खा रहा था ।

धनुषटकार ने अाव देखा न ताव, समुद्र में जम्प लगा दी ।।

उसके पीछे नादिर भी झपटा था ।।

अपोलो किनारे पर ही खड़ा उनकी तरफ देख रहा था ।

तैरते हुए वे दोनों उस जिस्म के पास पहुंचे ।

जिस्म पानी पर मुंह के बल पड़ा लहरों के थपेड़े खा रहा था । यह देखते ही धनुषटंकार और नादिर के रोंगटे खडे हो गए कि उस जिस्म पर सफेद कपड़े थे, किन्तु जगह। हुए जले से जगह- सारा जिस्म जला हुआ! तरह बूरी-

मानो कमकिसी मिनट दो कम-से- भंयकर जलती हुई अाग में पड़ा रहा हो वह ।।।

उन्हें लगा यह वतन है कपड़े सफेद--- लम्बाई इत्यादी तो यही साबित करती थी कि यह वतन है ।

नादिर औंर धनुषटंकार के दिल बुरी तरह धड़क रहे थे । मगर, उन्होंने उस जिस्म को पकड़ा और किनारे पर ले आये ।।

किनारे पर अभी मुंह के बल पड़ा था ।

अजीब सीं चीख के साथ बकरा रो पड़ा । कापंते हाथ और धड़कते दिल से नादिर ने उसे पलट दिया ।।

नजर चेहेरे पर पड़ी ।

उफ़, बुरी तरह जला हुआ चेहरा । काला ऐसा जैसे कोई गत्ता जलकर अपने आकार में रह गया हो । झुलसा हुअ‍ा-, बूरी तरह जला हुआ वीभत्स चेहरा ।।।

नादिर और धनुषटंकार ने बस ध्यान से देखा ।

सारा चेह्‌रा इस कदर जल गया था कि ठीक से पह्‌चान में भी नहीं आ रहा था है एकाएक उसकी निगाह्‌ मस्तक पर पड़ी ।

वहाँ एक बल पढ़ हुआ था ।

मस्तक पर वल प्रमाण था यह कि था प्रमाण वल यह ------ वतन है ।

चमन की मसीहा ही तो था वह ।

वतनतरह बुरी----हुआ झुलसा----

'"जला हुआ वतन ।"

उस समय विकास एक सरदार के मेकअप में था ।

हालांकि ऐसे काम पसन्द नहीं थे लड़के को ।।

वह तो खुला खेले खेलने का शौकीन था ।।

चाहता था कि दुश्मन उसे पहचाने और वह दुश्मन को । डटकर आमना सामना हो और पता लग जाये कि कौन कितने पानी में है ।

.

किन्तु। था किया मजबूर ने विजय उसे लिये के करने काम छुपाकर चेहरा असली अपना----

ऐसी बात नहीं कि जासूसी के दांवविजय । था नहीं जानता वह को पेचों-, प्रीसेज़ जैक्शन, जैकी और अलफांसे जैसे प्रशिक्षण पाने के पश्चात्‌ वह इन चार महान हांस्तयों की विभिन्न शक्तियों का एक पुतला बन गया या किन्तु --

----उसका कहना था कि जासूसी के किसी भी पैंतरे से मंजिल की ओर बढ़ने की गति बहुत धीमी होती है ।।

अपनी गति वह धीमी नहीं रखना चाहता था ।। वह तो चाहता था कि जितने भी धुरन्धर हें मैदान में कूदें और मामला आरपार कर लें।

किन्तु बिजय ने कहा थाअभिमन्यु ही जैसा तुम"---- दुश्मन के चक्रव्यूह में ऐसा फंसा कि फिर निकल ही नहीं सका ।।।

उस चक्रव्यूह से भी अधिक सुदृढ व्यूह इस समय दुश्मन ने चमन में रचा है !!

उस चक्रव्यूह में अभिमन्यु बनाकर हम तुम्हें भेज रहे हैं विकास । सोच कहानी की अभिमन्यु कहीं ! उठाना कदम समझकर----- । जाये हो न पुनरावृति की

तनी तोके सरदार निर्देशानुसार के विजय- मेकअप में था वह ।

उसी मेकअप में चमन के एयरपोर्ट पर उतरा ।

जो शक्लथा रखा उसने नाम और सूरत-, उसी से उसका पासपोर्ट और बीजा इत्यादि बने थे । कस्टम से बाहर आकर लड़के ने अपने चारों और तीक्ष्य दृष्टि से देखा । उसे कोई सन्दिग्ध व्यक्ति नजर न आया ।

साधारण चाल से चलता हुअा वह एक बाथरूम में घूस गया ।

अपनी योजनानुसार अब उसे एक मौलवी का रूप धारण करना था । चटखनी चढ़ाकर बाथरूम का द्वार उसने अन्दर से बन्द किया । अभी अपना इरादा पूर्ण करने हेतु वह सूटकेस खोलने ही वाला था कि...

----"वहआयेगा जरूर क शिकारी किसी "!ुत्ते की भांति इस चीनी आवाज ने विकास के कान खड़े कर दिये के धैर्य हमें"-- को विमान हर वाले आने से भारत साथ, चैक करते रहना चाहिए चीफ ने हमें यही आदेश दिया है ।"

-"दो दिन तो हो गये भारत से आने वाले हर विमान को चैक करते ।"!......वह तो तक अभी"----आवाज दूसरी " "तुम में यही कमी है सूंगपी ।" बातें चीनी भाषा में ही हो रही थींतो यह । हो जाते हो हताश ही जल्दी तुम "- तुम समझ ही सकते हो कि पिछले दिन वतन और विकास बहुत अच्छे दोस्त बन चुके हैं ।। वतन उस वंन्दर का सगा भाई है जिसे विकास बहुत प्यार करता है । वतन का जो स्टेटमेंट विश्व के अ१बारों में छपा है, उसे पढते ही विकास समझ जायेगा कि वह खतरे में है । वह यहां अवश्य आयेगा ।।। बंदर तो अकेला ही आ गया है उसे तो चीफ ने पकड़कर कैद में डाल ही रखा है । अब तो बस विकास की प्रतीक्षा है। "

"यह तो मैं भी मानता हूं कि वह यहां अवश्य आयेगा, किन्तु ......

" -किन्तु क्या ?"

"कहीं ऐसा न हो कि हम उसे यहीं तलाश करते रहे अौर वह वतन तक पहुंच जाये ।"

" हालांकि ऐसा तो हौगा नहीं और अगर ऐसा हो भी गया तो कौन लेगा मार मार तीर सा-?" चीनी भाषा में कहा गया ।"

"चीफ ने राष्ट्रपति भवन में ऐसा जाल बिछा रखा है कि वह बच नहीं सकेगा, वतन से मिलने से पूर्व ही वह उस बन्दर की तरह चीफ की कैद में होगा ।।"

-"मुझे दो डर लगता है ।"

धीरे से हंसा कोई, बोलाखैर । उसके हो डरते से नाम तो तुम"----, चलो"। भागे निकल न बन्दर वह कही-

एक कान विकास बात एक-लगाये सुन रहा था । बात चीत की यह आवाज उसके बराबर वाले दूसरे बाथरूम में से अा रही थी । इन बातों से स्पष्ट था कि चमन में चीनी पूर्ण तया अपना जाल फैला चुके हैं ।।

उनकी बातों से यह भी स्पष्ट था कि धनुषटंकार चमन में आते ही वतन को मिलने के जगह पर इन लोगों के हाथ पड़ गया है और इन्होंने उसे कैद कर लिया है । विकास भूल गया कि वह बाथरूम में किस मकसद से आया था ।

वह तो उन आवाजों को सुनने में व्यस्त था । दरवाजा खुलने की आवाज सुनी उसने ।।

फिर बन्द होने की ध्वनि ।

शीघ्रता से विकास ने अपने बाथरुम का दरवाजा खोलकर एक झिर्री सी बनाई । बाहर झांका निकलकर से बाथरूम वाले बाह्र-। थे रहे जा बाहर चीनी दो

मेकअप परिवर्तन का विचार त्यागकर विकास उनके । लपका पीछे-

उन दोनों। थी तीव्र काफी गति की-

अभी तक विकास उनमें से किसी का चेहरा नहीं देख पाया था ।।।

एयर पोर्ट की इमारते से बाहिर निकलकर उन्होंने एक टेक्सी ली ।

लिख़ने की आवश्यकता नही कि विकास ने भी एक अन्य टेक्सी की सहायता से उनका पीछा किया ।

चमन के बाजार और सड़कों से भलीभांति परिचित था विकास । करीब एक घण्टे पश्चात आगे वाली टेक्सी गोल बाजार की एक इमारत के सामने रुकी ।

अपनी टेक्सी को विकास आगे निकलवा ले गया । टेक्सी में बैठे ही वैठे विकास ने देख लिया था कि टेक्सी बाले का विल अदा करके वे दोनो उसी इमारत में प्रविष्ट हो गये है ।

विकास ने अपनी टेक्सी रुकवाई । विल देकर टेक्सी वाले को बिदा किया और स्वयं वापस उस इमारत की और बढ़ गया ।

इमारत की बगल में ही उसे एकं पतलीआई नजर गली सी-, उसी में प्रविष्ट हो गया विकास ।

दिल तो उसका चाह रहा था कि वह धड़धड़ाता हुआ इमारत में घुस जाये । दोदो- हाथे हों और पता लग जाये कि चक्कर क्या है ? किन्तुके गुरु विजय बार-बार- निर्देश याद अाने पर वह स्वयं को रोकता ।

इतना तो वह समझ ही चुका था कि वास्तव में दुश्मनों नेसबको में चमन- फंसाने के लिये चक्रव्यूह का निर्माण कर रखा है ।।

अत। चाहिये होना प्रबिष्ट में व्यूह इस के समझकर-सोच उसे :

उसने देखा थी बन्द जाकर आगे गली सी-संकरी वह--। गली के अन्दर किसी मकान इत्यादि का दरवाजा भी नहीं था ।।

गन्दगी से भरी पड़ी वह गली ।

दोनों तरह की इमारतों के पतनाले उसी में खुल रहे थे । उसने देखापानी गन्दे- के पाइपं उस इमारत की दीवार के सहारेसहारे- नीचे पहुंच रहे थे जिसमें वे दोंनो चीनी गये थे ।

विकास को समझते देर ना लगी कि इस गलि में कोई आता जाता नहीं ।

फिर क्या था ?

गन्दे पानी के एक पाइप के सहारे वह ऊपर चढ़ने लगा है इस प्रकार के कार्य अब विकास के लिये उसी प्रकार आसान हो गये थे, जैसे किसी रसगुल्ले को खा जाना है उसने ऐसा पाइप चुना था, जो सीधा इमारत की छत तक पहुंचता था है वन्दर की सी फुर्ती के साथ वह पाइप पर चढता चला जा राह था है

--- उस समय वह इमारत की एक बन्द खिडकी के समीप से गुजर रहा था कि--

भड़ाक से खिडकी खुल गयी पाइप विकास के हाथ से छूटतेहै बचा-छूटते- वह एकदम इस प्रकार की अप्रत्याशित घटना थी कि जिसकी विकास ने कल्पना भी नहीं की थी ।

खिडकी पर उसे एक आदमी नजर आया है

परिस्थिति ऐसी थी कि विकास जैसे लडके के जिस्म में भी झुरझुरी सी दौड़ गयी ।

वह तो सम्पूर्ण फुर्ती के साथ पाइप पर चढता चला जा रहा था ।

उसका ध्यान तो सिर्फ अपने लक्ष्य अर्थात् छत की तरफ था । उसे तो यह कल्पना भी नहीं थी कि बीच में ही यह खिडकी इस अप्रत्याशित ढंग से खुल पडेगी ।

खिड़की पर चमकने वाले इस चीनी के हाथ में रिबॉल्वर देखकर तो उसके जिस्म का रोयां। गया हो खड़ा रोंया-

रिर्वाल्लिर का रुख बिकास की अोर ही था और उसकी तरफ देखता वह बहुत ही भयानक ढंग से मुस्करा रहा था । बिचित्र सी- । विकासा या गया फंस में स्थिती

दोनों हाथों से उसने कसकर पाइप को पकड़ रखा था ।

दांतों में दबा था सुटकेस का हैंडिल ।

जमीन ये इतना ऊपर। था सकता नहीं कूद वह कि था चुका अा-

"इसं तरह चारों को भाँति किसी के मकान में दाखिल होना बुरी बात है मिस्टर विकास । में भाषा अपनी से आराम ने चीनी "
।। कहा

मुंह से कोई जबाव देता विकास तो मुंह से बैग निकल जाना था । जिस ढंग वह फंसा या, उस ढंग से फंसने की उम्मीद कम-
। थी हींन की तो उसने कम-से

चुपचाप मुर्खों की तरह उस व्यक्ति को देखते के अतिरिक्त विकास कर भी क्या क्या सकता था?

हांलगा सा -पहचाना जाना कुछ उसे चेहरा का चीनी उस - ।

अभी वह उसी स्थिति में था कि--------

वह बोला" ! जाओ आ में कमरे से रास्ते के खिडकी इस आओ"---

कहने के साथ ही चीनी ने एक हाथ उसककी तरफ बड़ा दिया । विकास उसके साहस पर आश्चर्यचकित था । वह अच्छी तरह जानता था कि चीन में उसके उसका कितना आतंक है ,, बच्चाहै कांपता से नाम उसके बच्चा-, किन्तुउसे व्यक्ति यह किन्तु-- अदम्य साहसी लगा । उसकी बातों से ही लगता था कि उसके दिलं पर विकास का कोई प्रभाव नहीं है ।

विकास ने हाथ बढा दिया ।।

उसने कसकर पकड़ लिया । एक पैर पाइप से हटाकर विकास ने खिड़की पर रखा और फिर वह साथ के झटके तीव्र इतने---
बौखला चीनी वह कि आया अन्दर के खिड़की जाये।।

विकास ने विचित्र ढंग से भयानक फुर्ती के साथ उस पर जम्प लगाई थी । उसे आशा थी कि चीनी बौखला जायेगा,

किन्तु , बौखेलाना उसे ही पड़ा था । चीनी को जैसे मालुम था कि विकास यह हरकत करेगा ।।

विकास से अधिक फुर्ती का प्रदर्शन करता हुआ व ह विकास का हाथ छोड़कर अलग हट चुका था ।।

मुंह के बल विकास कमरे के अन्दर फर्श पर जा गिरा ।

बैग उसके मुंह से निकलकर पहले ही कमरे में गिर चुका था ।।

गिरते ही भयानक फुर्ती के साथ वह उठ कर खड़ा हो गया ।।

घूमा, सामने ही हाथ में रिबाँल्वर लिये खड़ा चीनी मुस्करा रहा था ।

विकास ने उसके चेहरे हो ध्यानपूर्वक देखा । विशेष रूप से उसकी आंखों को है विचित्र ढंग से विकास की आँखें सिकुड़ती चली गयी ।

अगले ही पल उसके मुंह से निकला"। गुरु हूँ गया पहचान तुम्हें"----

" अ पहचाने क्या तो पहचाने अब--?" चीनी के मुंह से अलफांसे"--निकलि आवाज की ---'हमारे जाल में फंसकर यहां तक तो पहुंच गये ।"

आगे बड़कर अलफांसे के चरणों में झुक गया विकास । श्रद्धापूर्वक चरमस्पर्श- किये, बोला गुरु गया इसलिये भी फंस"------ ।। था तुम्हारा जाल ये क्योंकि रही पहचानने की बात, तो उसका जवाब यह है कि आपकी सूरत ही ध्यानपूर्वक देखने का मौका मुझे अब मिला है"

" खैर ।अशफ "ांसे ने कहा... "बैठो । था कौन दूसरा साथ अापके "---पुछा ने विकास हुंए बैठते पर सोफे पड़े में कमरे " । गुरु'"

"आपकां खिदमतगार ।हुआ निकालता आवाज की पिशाचनाथ सै मुंह अपने चीनी दूसरा " कमरे में प्रविष्ट हुआ करें क्षमा"----- महाराज मुझे छकु सब यह । महाराज शेरसिंह की आज्ञा पर करना पड़ा पैर के विकास ने पिशाचनाथ ही साथ के कहने "! छू लिये ।।

तीनों ही आराम से सोफे पर बैठ गये ।

"ये सब चक्कर क्या है गुरु ?" विकास है पूछा है रहे कर क्या में चमन आप"----?"

------"'चक्कर अच्छे देने बना घनचक्कर को खोपडी की आदमी खासे-बाला है विकास प्यारे" ! .' अलफांसे ने बताया----- में चमन हमारे धनुषटकार तुम्हारा" पहुचनें से पूर्व ही वतन के पास पहुंच चुका है और मजेदार बात तो यह है कि एक अलफांसे भी वतन के पास पहुंच चुका है ।"

" क्या मतलब ?" चौका विकास ।

" मतलब एकदम साफ है ।अलफां "से ने बताया से वतन में मेकअप मेरे हैरी "---- मिला है । वतन, धनुषटंकार और अपोलो उसे अलफांसे ही समझते हैं । तुम समझ सकते हो कि यह सब कुछ वह के करने प्राप्त फर्मुला का --एम वेवज-- लिये कररहा है ।"

"ओह ।" विकास का चेहरा गंभीर हो गयाचूका पहुंच हैरी तो "---- है यहां ।"

"उधर वह अपनी बात चाल रहा है और इधर हम अपनी अलफासे ने बताया ।

"कैसी चाल ?"

"वह्र सब कुछ बाद में संमझना ।कि लो समझ यह जरा पहले"--कहा ने अलफांसे " यहां कैसे क्या हो रहा है के अखबार में वतन का स्टेटमेंट पढकर ही मैं और पिशाचनाथ यहां पहुंचे हैं । पहुंचते ही चौके, क्योंकि पता लगा कि पहले ही एक अलफांसे यहां पहुंच चका है । यह पता लगाने की तरकीब सोच ही रहे थे कि वह कौन है कि अचानक हमारे गले में पड़ा ये लॉकेट रुपी ट्रासमीटर स्पार्क करने लगा । ओपिन करके बातें की तो पता लगा कि दूसरी ओर से विजय दी ग्रेट बोल रहे थे ।

उन्होंने पूछा कि, हम कहां से बोल रहे है ? हमने शराफत से बता दिया । दूसरों तरफ से कहा गया कि वतन के पास जो अलफासें पहुचा है वो हैरी है । हमने हमने पूछा कि यह चक्कर क्या है ? वह कहां से बोल रहा है ? जवाब आया।। से चीन-- हम चौकें । चौकने की वजह भी थी । चीन का बच्चा बच्चा विजय, का दुश्मन है और उसी, चीन से विजय बोल रहा था । साथ ही चीन में बैठे बैठे उसे यह भी मालूम था कि चमन में वतन के पास जो अलकांसे पहुँचा है, वह हैरी है । बहुत से- में दिमाग हमारे सवाल चकराने लगे जिनका जबाब हमने विजय से मांगा ।।

उत्तर में विजय से कहा कि 'जब तक सारा चक्कर हमें नहीं बतायेगा, हमारी समझ हैं … कुछ नहीं आयेगा । अत ने विजय : चक्कर पूरा हमें ही पर ट्रांसमीटर समझायां ।।

बताया कि किस जासूस के राष्ट्र विभिन्न प्रकार किस-'वेवज एम' का फामू'ला प्राप्त करने के लिये चमन की ओर चले हैं । यह भी बताया कि सभी राष्ट्रों के जासूसों को नाकाम करने केलिये उसने भारतीय जासूसों का जाल किस प्रकार बिछाया है ।। उसने बताया कि अमेरिका में अशरफ ने सूचना भेजी है कि हैरी ने ट्रांसमीटर द्वारा अपने चीफ को रिपोर्ट भेजी है कि वह अलफांसे के मेकअप में वतन तक पहुंच चुकां है । यही खबर उसने मुझे दी ।। यह भी बताया कि आज किसी समय एक सरदार के भेष में तुम यहाँ पहुंचने बाले हो । बसहमने पर सूचना उसी- तुम्हें एयरपोर्ट पर पकड़ा और किस मजे से तुम्हें यहां तक ले आये ।"

" लेकिन गुरु, जब आपको मालूम है कि वह है तो ---?"

"तो क्या ?"

"क्यों नहीं राष्ट्रपति भवन में पहुंचकर, वतन से मिलकर उसकी असलियत खोल देते'"

"उससे क्या, होगा ?"

"होंना क्या है, 'वैवज एम' का फार्मुला प्राप्त करने के उसके इरादों पर पानी फिर जायेगा ।"' विकास ने कहा इसके "----क आने में चमन अतिरिक्त ा हमारा मकसद भी क्या है ?"

"'मामला अगर सिंर्फ हैरी तक ही सीमित हो विकासं प्यारे, तो तुम्हारा बताया हुआ रास्ता सही था । अलफांसे ने कहा--बागरोफ वल्कि नहीं का हैरी सिर्फ किस्सा यहाँ लेकिन", जेम्स बाण्ड तुगलक अली नुसरत खान, सांगपौक , हवानची और सिंगसी इत्यादि का है ।"

"क्याआपको मालूम है कि ये सब लोग कहां है और क्या कर रहे हैं ?"

" यही तो मालूम करना है ।ये कि है स्पष्ट तो बातें यह"----कहा ने अलफासे " सभी अलग अलग फार्मुला प्राप्त करने के लिये अपनाहै केचू जमा मोर्चा अपना- लेकिन कौन कहां किस ताक में है, यही पता लगाना है ।"'

" लेकिन यह पता कैसे लगेगा ?"

..."चुपचाप यहां बैठे तमाशा देखते रहो स्वयं ही पता ला जायेगा ।ने अलफासे " कंहा...अगऱ हम मैंदान में पहले कूद पड़े तो वे सभी हमारे प्रति सतर्क हो जायेंगे । अपने से पहले मैदान में कूदने को अवसर हमें उन्हें देना ।"

"'मैं समझ नही रहा हुं गुरु, कि आप कहना क्या चाहते हैं:' जै"

-"वह साला जासूस की दुम ठीक कहता है तुम्हारी खोपड़ी में अक्ल की बात नहीं घुस पाती है हमारा अबे"-कहा ने अलफांसे " समय उस हमें कि है यह मतलब सीधासा मैदान में कूदना है जब सब की स्थिति का, ज्ञान हो जाये ।

" हम वह ज्ञान प्राप्त करते ही रह जायेंगें अौर हैरी फार्मुला प्राप्त कर लेगा ।। कहां ने विकास "

हल्के से मुस्कराया अलफांसे । वही मुस्कान् जो अक्सर ऐसे समय उसके होंठों पर उभंरा करती है । ।।

" फार्मुला प्राप्त करना उतना आसान नहीं है बैटे, जितना तुम समझ रहे हों । पहली बात तो वतन ने उसे इतनी लापरवाही से नहीं रखा होगा की कोई उसे आसानी से प्राप्त कर ले और दूसरी बात यह कि सांगगोक, बागारोफ और जेम्स बाण्ड इतनी सरलता से उसे फार्मुले के साथ अमेरिका नहीं पहुंचने देंगें । माना कि हैरी फार्मुला निकालने में सफल हो जाता है । बीच में विभिन्न देश के जासूस उसका मार्ग अबरूध करेंगे बस-- -हमें विदित हो जायेगा कि किसने कहां क्या मोर्चा लगाया है ? यह पता लगते ही हम स्वयं भी मैदान में कूद पड़ेंगे ।"

" क्या अाप स्पष्ट शब्दों में मुझे अपनी योजना नहीं बता सकते गुरु ?"

" बता तो दी है ।कहा ने अलफासे "..."इससे स्पष्ट अौर क्या बताऊं-? तुम एयरपोर्ट से सीधे राष्ट्रपति भवन पहुंचकर हमारी सारी योजना पर पानीफेर न - दो यही सोचकर तो हम तुम्हें सीधे यहाँ ले आये । वैसे तुम्हें एक बात बता दें और वह, यह कि सब कुछ करने के लिये ट्रांसमीटर पर जासूसं प्यारे े ही हमसे कहा था । यह भी कहा था कि तुम्हारे यहां पहुंचते ही हम ट्रांसमीटर पर उससे सम्बन्ध स्थापित करें ।।"

विकास चुप ही रहा न जाने क्या सोच रहा था वह ?

अलफांसे ने अपने गले से लोंकेटस्थापित सम्बन्ध और निकाला ट्रांसमीटर रूपी- किया ।

"'चमगादड़ की मम्मी स्पीकिंग ।। उभरा स्वर का विजय से तरफ दूसरी "

"'मैं चमगांदड़ का बाप बोल रहा हूं ।। कहा ने अलफासे मुस्कराकर से हल्के "

" हांय । बापू के चमगादड़""-है गया कहा से तरफ दूसरी ", कहां हो तुम ? मैं चीन की दीवार पर उल्टी तुम्हारी विरहाग्नि' का स्वाद चख रही हूँ ।। मैंने जो अाम का अचार तुम्हारे पास भेजा था, वह पहुंचा या नहीं ।"

"पहुंच गया है ।"। चखो स्बाद"-कहा ने अलकांसे "

कहते हुए अलफांसे ने ट्रांसमीटर विकास को पकड़ा दिया ।

विकास ने कहा..."पांव लागूं गुरु ।"

" जल्दी से हो जाओं शुरु ।। आवाज की विजय "

" गुरू ये सब चक्कर क्या चल रहा है हैं"

"ये ज्ञान की बातें हैं प्यारे दिलजले । तुम समझने की कोशिश करोगे तो हमारी तरह चमगादड़ बनकर उल्टे लटक जाओगे । " था हार कह विजयं से ओर दूसरी... मुझे तुमसे सिर्फ इतना ही कहना है कि तुमसे अपने लूमड़ भाई कहे जो-, आँख, कान, नाक, मुंह बन्द करके वह करते चले जावो ।"

" क्या मतलब गुरु ?"

"मतलव कल्लो कहारी के मंजे हुए बर्तनों कौ तरह एकदम साफ है प्यारे दिलजले । दिमाग और धैर् यसे काम लोगे तो कामयाब हो जाओगे, वरना प्यारे, अन्तरोंष्ट्रीय जासूसों के चक्रव्यूह में फंसकर अभिमन्यु ही कहलावोगे
"

"आपके ढंग से काम करना मेरे बस का नहीं है गुरु ।"

"तुम क्या करना चाहते हो ?"

" मैं तमाशा घुसकर देखना चाहता हूं । नहीं डरपोक मैं-कहा ने विकास" जो जासूसों के चक्रव्यूह से डरुं ।"

" मुझे बहादुर आदमियों से डर लगता है प्यारे ।दे में हाथ के भाई लूमड़ अपने तुम ट्रांसमीटर कि है अच्छा-आवाज की विजय "
"। दो

" मैं कुछ करने की इजाजत चाहता हूँ गुरु "!

" क्या करने की ?"

"अभी मैं स्वयं भी नहीं जानता कि क्या करना है मुझे ?" विकास का स्वर निरन्तर गम्भीर होता चला जा 'रहा था..."इस अभियान को शुरू से ही आपने मुझे अपनी योजनाओं के चक्कर में बांध रखा है । इस तरह काम करना से मुझे बोरियत आती है । मैं खुलकर कुछ करना चाहता हूँ । अच्छा है कि आप अपनी योजनाओं के अँकुश मुझ पर न लगायें ।। मुझे अपने ढ़ग से काम करने दे । मुझे सिर्फ इतना विदित है किं हैरी गुरु का मेकअप करके वतन के पास चला गया है । मैं हैरी को इस ह्रकत का सबक देना चाहता हूं ।"

"जिस आदमी को यह नहीं पता कि वह करना क्या चाहता है वह करेगा क्या ?"

..."कुछ भी सही गुरु मुझे मेरे ढंग से काम करने की इजाजत दी जाये ।"
विकास ने कहा -'"काम करने से पहले योजना बनाते रहना अापका सिद्धान्त होगा, मेरा नहीं । मेरा सिद्धान्त है, काम करो । जैसे हालात हों, वैसे ही ढ़ग हो ।"

"मेरी एक बात मानोगे प्यारे दिलजले ?"

-"अमी तक आपकी ही तो मानता चला आया हूँ ।"

"एकं और मान तो ।"

"आज्ञा ।"

--"ये ट्रांसमीटर अपने लुमड़ प्यारे के हाथ में दे दो ।हम----कहा ने विजय " साधु बातें से पापी जैसे तुम और है आदमी संत-की समय अमूल्य अपने हम करके गर्दन तलवार से नहीं काट सकते । हमें लूमड़ भाई से ज्ञान की बात करनी है ।"

एक क्षण कुछ सोचा विकास ने फिर चुपचाप ट्रांसमीटर अलफांसे की तरफ बढ़ा दिया ।

अलफांसे ने कहा"। विजयं हूं रहा बोल मैं"--

" रोका किसने है बोलते रहो ।"

मुस्कराया अलफांसे, बोला बोलूं-क्या "--?"

"प्यारे लूमड़ भाई, अपने साले दिलजले का तो है दिमाग खराब है "! विजय ने कहाऐ कोई उसे" ---सी हरकत करने को रोकना तुम्हारा काम है जिससे हमारी योजना पर पानी न फिर जाये, मैं कहता था न । वह जानता नहीं जासूसी असली ---साला मारधाड़ में विश्वास करता है अौर इस समय उसके हाथ खुजला रहें है कहीं ऐसा न हो कि हैरी से ही जाकर लिपट जाये । अगर ऐसा हो गया प्यारे लूमड़ भाई, तो तुम स्वयं समझ सकते हो कि हमारी सारी योजना का कचूमर निकल जायेगा ।"

"उसकी तुम चिंता मत करो जासूस प्यारे ।पास मेरे विकास "- कहा ने अलफांसे " है और इसे मैं देख लूगा तुम बताओं कि नई बात है क्या कुछ ?"

--"हां हैबताया ने विजय ", अलफांसे के साथ विकास भी ध्यानपूर्वक सुन रहा थां अपने से अमेरिका पहले देर ही कुछ"-ने हैरी कि है भेजी खबर ने झानझरोखे ट्रांसमीटर पर अमेरिकन सीक्रेट सर्विस के चीफ को एक रिपोर्ट भेजी है ।"'

"क्या ?"

"यह कि अलफासे के भेष से वह प्रयोगशाला के अंन्दर पहुंच गया है ।ने विजय " कहना प्रारम्भ किया की वतन ने हैरी"---पर स्थान-स्थान अन्दर के प्रयोगशाला अपनी योजनानुसार टाइम बम फिक्स कर दिये प्रयोगशाला से फार्मुला निकालने की न उसने सिर्फ पूरी योजना वना ली है वल्कि उसे कार्यान्वित भी करना प्रारम्भ कर दिया है हैरी ने अपने चीफ को बता दिया है कि अपनी योजना के अनुमान टाइमिंग सैट करके उसने प्रयोगशाला के अंदर कई बम फिट कर दिये हैं वह प्रयोगशाला से बाहर निकलेगा।। वतन, धनुषर्टकार और अपोलो के साथ राष्ट्रपति भवन पहुंचेगा भवन से चमन घूमने के बहाने वह ठीक शाम को छ : बाहर बजे निकलेगा--

इस समय में बह प्रेयोगशाला की चारों सर्चलाइटें फोड़ने का प्रबन्ध कर आयेगा ।ये चारों सर्चलाइटें रात के ठीक बारह बजे फूटगी । उस समय अलफांसे बना हैरी वतन इत्यादि के पास ही सौया होगा इत्यादि ।की हैरी पर ट्रांसमीटर ने विजय से तरफ दूसरी " बता योजना सारी दी अन्त में बोलाइ "----स प्रकार वह फार्मूला लेकर चमन से बाहर जाने वाली सडक पर ठीक वहां पहुंचेगा, जहाँ मील का वह पत्थर लगा होगा, जिस पर बारह लिखा होगा । हैरी ने यह भी बताया है कि उस समय वंतन के मेकअप में होगा ।"

-"हूँ ।। रहा सुनता अलफासे "

" इधर अमेरिकन सीक्रेट सर्विस चीफ ने हैरी से कहा है कि वह हैलीकॉप्टर लेकर जैकी को भेजेगा, इत्यादि ।"

"निश्चय ही बडी सुन्दर योजना बनाई है हैरी ने ।हैरी"---कहा ने अलफांसे " क्या कुछ करने जा रहा है यह तुम जान चुके हो लूमड़ भाई ।ने विजयं " कहरहै करना क्या तुम्हें में बदले"-; यह बात तुम जैसे समझदार आदमी को समझामे की आवश्यकता नहीं है है ।"

" हम सब सम्हाल लेंगे है"

"ओ रखना खींचकर लगाम की दिलजले जरा कहा ने विजय "। के - यह ऐसा घोडा है कि बेलगाम होते ही सरपट दौड़ना शुरू कर देता है । फिर ऐस गिरता है सम्हालने गुरुयों को ही जाना पड़ता है ।। ध्यान रहे वह कोई ऐसाा कदम न उठा पाये जिससे सारा गुड़ गोबर हो जाये । "

इन शब्दों के साथ ही दूसरी तरफ से विजय ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया ।। ट्रांसमीटर आँफ करके लाकेट गले में पहनता हुआ अलफांसे विकास की तरफ देखकर बोला तुमने सुना "---? क्या कहा तुम्हारे अंकल ने ?"

"मैं तो ये सुनना चाहता हूं गुरु, कि आप क्या कहते हैं ।"

"किस विषय में ?"

" क्या मुझे गुरुयोाँ की कैद में रहकर काम करना पडेगा ?"

"साफ" ! हो चाहते कहना क्या "--- स्वर गम्भीर का अलफांसे "। कहो साफ-

""यह कि शुरू से ही इस केस पर खुलकर काम करने का मौका नहीं दिया जा रहा है । भी से अलफासे लहजा का विकासं " था गंभीर अधिक कहीं..."मै चमन के लिये रवाना होने बाला था, जवं मैंने अखबार में वतन का स्टेटमेंट पढा, किन्तु विजय गुरु ने यह कहकर रोक दिया कि सारा काम एक योजनाबद्ध तरीके से होगा । मैं रुक गया ।। उनकी बात मान ली । उनकीं योजना के अनुसार ही सरदार के मेकअप में मैं यहाँ पहुंचा । यहां पहुंचते ही आपने मुझे आनी कैद में ले लिया । फिर वही बन्दिश कि मैं कुछ न करु"। होगा योजनानुसार काम सांरा---

" क्या सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है ?"

"खाक ठीकग "! है रहा चल-ुर्रा उठा बिकास... "हैरी ने वतन की प्रयोगशाला में बम फिट कर दिये यह ठीक चल रहा है ?"

"ठीक न चलता तो यह खबर हम तक न पहुंचती । "

" जो कुछ चल रहा है, उसे आप ही ठीक समझे गुरु ।कहां ने विकास "..."मेरी दृष्टि में तो यह सब कुछ
गलत हो रहा है । योजना के नाम पर मैं आपकी तरह यहाँ चुपचाप बैठकर सव कुछ नहीं देख सकता ।"

" तुम करना क्या चाहते हो ?"

"हैरी की गर्दन तोड़ना चाहता हूं । की कैसे जरूरत की करने फिट वम में प्रयोगशाला की वतन उसने"---गुर्राया विकास "?"

" तुम मैदान में अाये तो सांगपोक, बागरोफ, तुगलक और जेम्सवाण्ड में से कोई तुम्हारी गर्दन तोड़ देगा ।"

" देखा जायेगा गुरु ।गुर्रा बिकास " उठा था छुपा में बिल इस से डर के कुतों उन कि चेता आपका है नहीं बुजदिल इतना"---
" । रहे

-"सवाल बुजदिली का नहीं बेटे, सवाल है बुद्धिमानी का ।ने अलफांसे " कहास्वयं तुम"- समझ सकते हो मैदान में सिर्फ हैरी
उतरा है,.वह भी मेरे मेकअप में । जिस मकसद से हैरी यहाँ पहुंचा है, उसी मकसद से बाण्ड, बागरोफ, नुसरत खान और
सांगपोक इत्यादी अपनेसोचो चोसो जरा । हैं चले से देशों अपने- कि वे सब कहाँ गयै क्या कर रहे ?"

" आपकी तरह छूपे बैठे होंगे किसी विल में। "

"क्यों ? " ।।

" हैरी फार्मुला प्राप्त करे और वे उससे छीन लें ।"'

" मतलब सोंचने का पुरा दिमाग है तुम पर, किन्तु उसे कष्ट नहीं देते हो ।" हल्के से मुस्कराकर अलफांसे ने कहा निश्चय "--

लगाये मोर्चा अपना-अपना ही घात में बैठे है कि जैसे ही वह फार्मुला निकालकर प्रयोशाला से बाहर लाये और अपनेअपने ढंग से वे उस पर झपट पड़े ।। उनके बीच जमकर युद्ध होगा और जो भी उनमें अंतिम विजेता होगा, वह हमारा शिकार बनेगा ।"

" अगर सब यहीं सोचे बैठे रहे तो हैरी सफालतापूर्वक फार्मूला लेकर अमेरिका पंहुंच जायेगा ।"

" वहां उसे रोकने के लिए अशरफ मौजूद है ।"

"आवश्यक तो नहीं कि अशरफ अंकल उसे रोक ही लें ? " विकास ने कहाबैठे क्यों यहां पर उम्मीद इस हम"---- रहें कि प्रयोगशाला से निकलकर अन्त में फार्मूला हमारे ही हाथ लगेगा । जब हम यह कर सकते हैं कि फार्मूले को वतन की प्रयोगशाला से बाहर ही न निकलने दे तो क्यों न ऐसा ही करें ? क्यों यह रिस्क उठाये कि हैरी फार्मुला बाहर लाये ? अन्य जासूस उस पर झपटें ?"

-"मानते हैं कि अगर हम चाहें तो फार्मूले को प्रयोगशाला से बाहर ही न निकलने दें ।कहा ने अलकांसे "... "'लेकिन दिमाग लगाकर जरा यह सोचने की कोशिश करो होगा क्या तो करें ऐसा हम अगर कि..?"

"फामू'ला सुरक्षित रहेगा और क्या 'होगा ?"

" बिल्कुल ठीक ।फार्मूला कि है सच बिल्कुल बात यह"-कहा ने अलफांसे " प्रयोगशाला में बिल्कुल सुरक्षित रहेगा, किन्तु याद रहे, जब तक वह प्रयोगशाला में सुरक्षित रहेगा तब तक किसी भी देश का जासूस चमन से नहीं टलेगा और इस प्रकार चमन न जाने कब तक अन्तर्राष्ट्रीय जासूसों का केन्द्र बना रहेगा, जो न चमन के लिए उचित है, न "है लिए के वतन-

-"तो आप यह चाहते है कि फार्मूला प्रयोगशाला से बाहर आये ।"

-"ठीक समझे ।"

" ठीक है ।'"विकास ने कहा..."फार्मूला प्रयोगशाला से बाहर तो अवश्य आयेगा, किन्तु उस तरह जिस तरह मैं चाहता हूँ ।"

"तुम किस तरह चाहते हो ?"

चुप रह गयो बिकास है उसने कोई जवाब नहीं दिया ।

इस बीच न जाने वह क्या... सोच रहा था । अलकांसे के साथ साथ पिशाचनाथ 'भी विंचित्रसे दृष्टि सी- उसकी तरफ़ देख रहा था ।।।

जब काफी देर की खामोशी के पश्चात भी विकास 'कुछ न बोला, चुप ही रहा तो----

" क्या सोच रहे हो बेटे ?" अलफासे ने उसकी विचार श्रृंखला भंग की ।

एकाएक ही अलफांसे की ओर देखकर चुटकी बजाई बिकास ने, बोला"। गुरु गया आ आइडिया में दिमाग"-

" क्या ?"

" ---सचमुच अलफांसे बना हैरी प्रयोगशाला से फार्मूला गायब करेगा ।

" ये कौन आइडिया नया सा-? "

" सचमुच आपकी और विजय अंकल की स्कीम बहुत अच्छी है गुरु ।रिस्टवाच अपनी " में समय देखते हुए विकास ने कहा ---लेकिन मेरे दिमाग में जो आइडिया आया है अगर यह इस स्कीम में फिट कर दिया जाये तो सच, खतरे की कोई बात ही न रहे ।"

-"कुछ बताओगे भी या ऐसे ही पहेलियां ही बुझाते रहोगे ?"

"सुनिये ।। लगा बताने बात कोई उन्हें धीरे-धीरे विकास उपरान्त के कहने " उसकी बातें सुनने के लिए पिशाचसाथ भी करीब खिसक आया था और कान लगाकर उनकी बातें सुन रहा था । सवं कुछ सुनने के पश्चात उसके मुंह से वरबस ही निकल पडा-"। रहेगा फिट आइडिया यह । महाराज सच"

किंतु, अलफांसे ने कहा..."यह क्या गारन्टी है कि जो तुम कह रहे हो, वह हो ही जायेगा ।"

" क्या अपने शिष्य पर भरोसा नहीं रहा गुरु ?"

" मेरा मतलब हैं कि बातं उल्टी भी तो पड़ सकती है ।"

" यह कार्य मेरे अधीन है गुरु और इस कार्य की आप चिन्ता न करें ने विकास "! कहा..."अगर आप मुझे सिर्फ यह इजाजत दें कि मैं यह सव कर डालूं ।"

हल्के से मुस्कराया अलाफांसे बौलाभी न इजाजत में अगर कि बेटे हूँ जानता"- दूं तो जो तुम करना चाहते हो , बह करने से बाज नहीं आओगे ।। अतदेकर इजाजत : अपना सम्मान बचाये रखना ही उचित है‍ै तुम वही करोगे जो कह रहे हो, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं करोगे ।। "

"'जियो गुरु, हजारों साल तक जियो "! कहते हुए विकास ने अलफांसे के चेहरे।।। दी लगा झडी की चुम्बनों पर-

रात के आठ बज रहे थे है चमन की इमारतें, सड़क, बाजार और दुकानें विद्युत बल्वों एवं रों‍ंडों से चमक रही थी है कि अलफांसे बने हैरी के होंठों इस समय विजयात्मक मुस्कान थी ।

वह प्रयोगशाला के चारों और फैली छावनी से लौट रहा था । किसी प्रकार वह चार सैनिकों को मारकर उनकी गर्नें प्रयोगशाला की चारों सर्चलाइटों के निशाने पर इस प्रकार फिट कर आया था कि वे चारों गनें एकएक-...मिनट के अन्तठीक राल- वारह बजे गर्जनी थीं ।।

वह जानता था कि जो प्रबन्ध वह करने आया है उसके अनुसार बारह बजे चारों सर्चलाइटैं फूट जायेंगी ।

चारों मृत सैनिको के शरीरों को वह मजबूत रेशम की डोरी की सहायता से खाई में लटका आया था ।।

इस समय टेक्सी में वह राष्ट्रपति भवन की और लोट रहा था ।

टैस्सी की गति से कहीं अधिक तीव्रता के साथ उसके मस्तिष्क में विचारों का आवागमन हो रहा था ।

वह एक बार पुनः मस्तिष्क में निर्धारित कर रहा था कि अपनी योजना अनुसार उसे अ‍ागे क्या करना है ।।

एक झटके के साथ टेक्सी रुक जाने से अचानक उसकी विचार श्रृंखला भंग हो गई ।।

उसने चौंककर देखा टैक्सी एक सुनसान इलाके में सड़क के किनारे रुकी थी ।।

हैरी एकदम स्तर्क हो गया जेब के बाहर से ही हाथ रिबाँल्वर पर जमाकर बोला ड्राइवर है बात क्या"---?"

"ड्राइवर नहीं, तुम्हारा शिष्य है गुरु ।" ड्राइवर के मुख से विकास का स्वर निकला --' त तुम--?" हैरी हकला। गया सा–

."क्यों गुरु, मुझे यहाँ देखकर चकरा क्युं गए ।।

सचमुच हैरी का मस्तिष्क बुरी तरह चकरा उठा । झनाहटमें दिमाग उसके थी रही हो सी– !

इस बात की तो उसने कल्पना भी नहीं की थी कि इस तरह अचानक। जाएगा हो से विकास सामना उसका से–

एक बार को तो उसके दिमाग में विचार जमा कि वह रिवॉल्वर निकालकर फौरन विकास पर फायर कर दे, किंतु । गया ठहर-- किया नहीं ऐसा उसने'। ऐसा करते ही यह स्पष्ट हो जाना था फि वह अलफांसे नहीं, कोई अन्य है विकास के उपर्युक्त वाक्यों से उसने जाना था कि विकास उसे अलफांसे ही समझ रहा है ।

यह जानना भी उसके लिए बहुत आवश्यक था कि विकासं यहां क्या कर रहा है ?

अतनहीं ही प्रशन् कोई तो का चकराने "---बोला ही में स्वर के अलफांसे सम्भलकर :, किन्तु"! ......

"किन्तु क्या गुरु ?"

--"तुम यहाँ क्या कंर रहे हो ?"

" जो आप कर रहे है "!

" यानी ?'"

"मैं वतन और उसकी हिफाजत के लिए चमन में आया हुं ।। कहा ने विकास "

" उसके स्टेटमेंट का तो परिणाम है कि आप जैसी हस्ती चमन में घूम रहीं है ।खोलकर देरवाजा का कार विकास हुआ कहता " बाहर आ गया ।

हैरी भी पूर्णतया सतर्क और अपनी सतर्कता का परिचय देता हुआ वह भी दरवाजा खोलकर तुरन्त ही बाहर आ गया था है किन्तुपैर उसके बढकर आगे ने विकास----- छू लिए, बोला रहे कर क्या में चमन आप कि गुरु हूँ चाहता जानना यह "---- है ?"

"जिस लिए तुम आए हो, उसी मकसद से मैं भी चमनस्वर ही के अलफासे "। हूँ आया- में हैरी ने उत्तर दिया, यहाँ तक मेरा ख्याल है, सभी देश अपनेजासूसों अपने- को यह फार्मूला प्राप्त करने के लिए चमन में भेंजेंगे ।"

" और आप उन सबसे पहले फार्मूला प्राप्त करने यहां पहुँच गये । "

" क्या बकते हो ?"

"फार्मूला प्राप्त करने के उपरान्त आप अपनी पुरानी आदतानुसार उसकी कीमत लगा सकें ।कहा ने विकास "... "जो देश आपको उसकी सर्वाधिक कीमत दें, उसे आप वह फार्मूला वेच सकें,, बोलिए ना है मकसद यही का अाने आपके में चमन-?"

""क्या बात कर रहे हो विकास ?" अलफांसे ने कहा यहाँ से कि है यह हकीकत"---- उस फार्मूले की हिफाजत के लिए आया हूँ । यह सोचकर आया हूँ कि किसी भी राष्ट्र के जासूस को यह... फार्मुला प्राप्त नहीं करने दूंगा । क्या तुम समझते थे कि मैं वतन के साथ ऐसी हरकत करूंगा ?"

" -वतन के साथ ही क्या"। है सकते कर हरकत यहीं भी साथ के सीकि आप ---

" यह भी तो सम्भव है कि भारतीय सरकार ने तुम्हें चमन में वतन का यह फार्मूला प्राप्त करने भेजा हो ?"

"'यह आप कह रहे हैं ?"

.मुस्कराया वह, बोला, "'क्यों क्यों यह नहीं हो सकता? अन्य देशों की भांति भारत को भी तो यह फार्मूला प्राप्त करने का

लालच हो सकता है और जहाँ तक मैं समझता हूं भारत के पास कमहै नहीं जासूस बेहतर तुमसे लिए के काम इस कम-से- !"

सुर्ख हो गया विकास का चेहरा सारा जिस्म क्रोध से कांपने लगा ।

विकास गुर्रा उठाऔर जलील भांति की अमेरिका देश मेरा"---- कमीना नहीं है ।"

" क्या मतलब?" हैरी एकदम सतर्क हुआ.. मतलब क्या से अमेरिका "--?"

"यह भ्रम अपने दिमाग से निकाल दो हैरी बेटे, कि विकास तुम्हें अलफांसे समझ रहा है । गुर्राता भाँति की भेड़िये खूनी किसी " "-----विकास "गया चला ही जानता हूं कि तुम हैरी हो और यह भी जानता हूँ कि गुरु का यह मास्क पहनकर तुम क्या कुछ कर चुके हों ।"

एक क्षण के लिये तो झनझना उठा हैरी का दिमाग । उसके जिस्म की समस्त नसों में एक विचित्रजकड़न सी- स्थापित हो गयी । बोलाविकास हो जानते यह अगर"--- बेटे े कि मैं हैरी हूं, तो यह भी अवश्य जानते होगे कि मैं चीनी जासूसों की तरह तुमसे डरता नहीं हूं ।"

उधर हैरी और इधर विकास ।।

दोनों ही एकदूसरे के किसी भी हमले के प्रति सतर्क हो गये े ।

" छः महीने पहले ही तो वतन ने तुम्हें इस देश से मार"। था भगाया मारकर- विकास गुर्राया..."लेर्किन तुम कुत्ते की दुम हो नरही में नलकी भी वर्ष वारह- तो भी सीधे नहीं होगे ै यहांआकर फार्मूला प्राप्त करने की कोशिश करने से पूर्व यह तो सोच लेते कि वतन किसका दोस्त है ?"

उपर्युक्त शब्दों के साथ ही विकास ने जो तीव्र हरकत की थी उसे भाँप कर अगर हैरी फुर्ती का प्रदर्शन न करता
तो निश्चित रूपं से उंसकी एक आँख जाती 'रहती ।

हुआ यूं कि विकास ने अपना आलपिन चला दिया था ।

हैरी। दोस्त का विकास का जमाने किसी--

वह जानता था कि विकास का आलपिन क्या रंग लाता है ।

भयानक फुर्ती के साथ वह स्वयं को बचा गया है किंतुआंख उसकी आलपिन भी फिर-- में तो नहीं लगा अवश्य पर गाल----, गाल पर लगा आलपिन क्या करता ? एक सुईसी चुभकर रह गई हैरी को ।

असली करामात तो आलपिन आंख में लगकर बताता है ।

फटाक से आंख फूट जाती है ।

विकास के आलपिन से अपनी आंख तो बचा गया हैरी किंतु विकास के उस जबरदस्त घुंसे से न बच सका जो फौलाद की ,भांति उसके चेहरे पर पड़ा था ।

एक क्षण केलिये तो उसे ऐसा लगा की उसका जबड़ा हिल उठा है ।

न चाहते हुये भी हवा में उछलकर वह । गिरा पर फर्श से "धडाम"

विकास ने किसी गोरिल्ले की भाँति उसपर जम्प लगाई ।

किन्तु। गया बदल करवटें तीन-दौ पर सड़क रीहेै साथ के चालाकी जैसी लोमड़ी ----

विकास मुंह के बल गिरा । तुरन्त ही खडा हुअा तो। पडी पर सीने उसके किक फलाईंग एक् की हैरी ----

वह पुन लडखड़ाकर सड़क पर आ गिरा और अभी उठने ही वाला था कि हवा में लहराता हैरी का जिस्म उसके ऊपर आ पड़ा ।

विकास ने अपनी टांगो पर रख कर उसे उछालना चाहा, किंतु उसी समय हैरी के सिर की एक तेज टक्कर विकास चेहरे पर पड़ी ।

विकास के मुख से चीख निकल गयी ।।

हवा में सिर घुमाकर हैरी ने अपने के तीव्रता अधिक भी से पहले बार का सिंर- साथ विकास के चेहरे किया तो बार इस---- उसके फिसलकर भांति की मछली चिकनी नीचे से विकास निकल गया ।।

हैरी का सिर बहुत् जोर से सड़क पर टकराया। सामने के आँखों उसकी उठे नाच तारे बिरंगे रंग -------

अभी वह उनसे मुक्त हो भी नहीं पाया था कि विकास के उसकी पसली में इतनी जोर से अपने बूट का वार किया कि हैरी दर्द से तिलमिला उठा ।

झुककर विकास ने हैरी के बाल पकड़े ।

बेरहमी से बालों को एक तीव्र झटका देते हुये उसने हैरी कों ऊपर उठाया । उठाते ही, अपने सिर की एक टक्कर हैरी के चेहरे पर मारी ।

इधर उसेके सिर की टक्कर है◌ेरी के चेहरे पर पड़ी, उधर हैरी के दाहिने पैर का गुटना दोनों टागों के बीच में ।।

" एक साथ दोंनों के कंठ से मार्मिक चीख निकली ।

चीखने के पश्चात भी दोनों में से कोई भी एकन अलग से दूसरे- हुआ ।

एक। गये लिपट तरह बुरी से दूसरे-

किसी जमाने में एकवे। थे दोस्त गहरे के दूसरे- एक। था अन्दाजा पूरा उन्हें का ताकत की दूसरे-

हैरी जानता था कि वह हल्का सा चूका और विकास उस पर हावी हुआ है विकास जानता था कि हैरी किसी भी प्रकार उससे कम नहीं है ।।

मगर वह क्षण मात्र के लिये भी ढीला पड़ा तो हैरी उस पर इस प्रकार हावी ही जयेगा कि फिर कभी सम्भाल में नहीं आयेगा ।

एक। गिरे आ पर सडक ही दोनों हुये गुंधे से दूसरे-

न जाने कैसे दोनों के हाथों की उंगलियां अ◌ापस में फस । गयी-

हथेलियाँ एकमोड़कर हाथ ही दोनों । थीं हुयी सटी से दूसरे-, एक।। थे रहे कर प्रयास का तोडने उगलियाँ की दूसरे-

इतनी ताकत लंगानी पड़ रही थी दोनों को कि दोनों के ही चेहरे सुर्ख पड़ गये थे । लोहे की सलाखों की भांति उंगलियां फंसी थीं । उसी तरह हाथ फंसाये वे खड्डे हो गये ।

एकायक हैरी हाथ फंसाये ही घूम गया । पलक झपकते ही उसने विकास को अपनी पीठ पर लिया और झूक कर सड़क पर दे मारा ।।

यह दूसरी बात है कि सड़क पर चारों खाने चित गिरते ही विकास के कंठ से चीख निकल गयी मगर तुरन्त पलटकर उसने अपनी टांगे हैरी की गर्दन में फंसाई अौर हैरी को भी उसने सड़क पर दे मारा । हैरी के कंठ से भी चीख निकल गई ।

दोनों कलयुगी लड़कों के बीच जबरदस्त मल्लयुद्ध हुआ ।।

हैरी शैतान तो विकास महाशैतान । महाखतरनाक हैरी तो खतरनाक विकास !

करीब पन्द्रह मिनट तक उनके बीच युद्ध चला ।

पन्द्रह निबटे पश्चात् भले ही विकास ने हैरी की बेहोश कर दिया , पर इस कार्य में सफलंता अर्जितकरते-करते- विकास कों दांतों पसीना अा गया ।

हैरी के बेहोश होते ही बहीं सड़क पर लेट गया था विकास लम्बी।। रहा लेता सांस लम्बी-

कोई पांच मिनट बाद वह स्वय को सामान्य' स्थिति में ला पाया ।

वह उठा।

हैरी के बहाश शरीर को उठाकर कार, में डाला और कार तीव्र वेग पर सड़क पर दौडा दी ।

अधिक नहीं, सिर्फ दस मिनट पश्चात् विकास अलफांसे और पिशाचनाथ के पास बैठा था । वे तीनों एक दूसरे के अामने सामने- थे बैठे पैर सोफोंऔर हैरी का बेहोश शरीर कमरे के फर्श पड़ा था ।

अलफांसे कह रहा थापड़ा भारी हैरी कि वेंटे विकास है लगता"--?"

" भारी तो पड़ना ही था गुरु । "' बिकास ने कहाहैं मालूम इसे गुर सभी वे "----, जो मैं जानता हूँ "

" खैर ।कहा ने अलफांसे "..."अब क्या इरादा है ?"

" इरादा ही क्या है ?" विकास ने पिशाचनाथ की और देखते हुये कहाहै करना वही "-----, जों मैं बता चुका हूं । वह तैयार कर लिया ?"

" जी महाराज ।हुये कहते " पिशाचनाथ ने अपने बटुये में हाथ डाला है प्लास्टिक का बना एक ताजा फैसमास्क उसमे से निकालता हुआ बोला..." लिजिये आप देख सकते हैं । इसमें और हैरी के चेहरे में लेशमात्र भी अन्तर न होगा ।"

"अभी तो इसी के चेहरे पर गुरु का मास्क है ।। दिया हटा मास्क से पर चेहरे के हैरी ने विकास हुये कहते "

इसके पश्चात्।अपने थे पहने पर शरीर के हैरी जो कपडे वे स्वयं ने विकास- चेहरे पर पहले, हैरी का फेसमास्क चढ़ाया फिर अलफांसे का और हैरी को अलफांसे और पिशाचनाथ के हवाले करके स्वयं वहाँ से चल दिया है जिस अलफासे ने वतन के पास जाकर यह कहा था कि वह चमन घूमने गया था, वह हैरी था न अलकांसे बल्कि विकास था ।।

अलफांसे बना बिकास ही वतन की प्रयोगशाला तक पहुंचा था ।।

वह भी विकास ही था, जो प्रयोगशाला से फिल्म निकाल लाया ।

वह भी विकास ही था, जो फिल्म सहित हैलीकॉप्टर में जैकी से मिला ।

जैकी जिसे हैरी समझ रहा था असल में वह विकास था ।

असल में वह हैरी नहीं, विकास था , जौ जैकी के मुंह से एक अन्य आवाज सुनकर चौक पड़ा ।।

यह सब कुछ आप
"जला हुआ वतन" । हैं आये पढ़ में "

"हैरी हमारे पास है प्यारे जासूस "! ट्रांसमीटर पर झूका हुआ अलफांसे कह रहा थामें दृष्टि की वतन "---- अलफांसे और जैकी की नजरों में हैरी बनकर विकास सफलता अर्जित करता चला जायेगा । मेरा ख्याल है कि अव तक तो जैकी के साथ हैलीकॉप्टर में बैठ भी चुका होगा ।"

"आखिर तुम उस साले दिलजले को रोक नहीं पाये लूमड़ भाई ?" दूसरी ओर से विजय ने कहा ।

" रोकना चाहता तो रोक लेता, किंतु उसने योजना ही ऐसी बनाई कि जिसमें कहीं भी लोच नहीं था । ने अलफांसे " कहा..."तुम यह चाहते थे अन्तर्राष्ट्रीय जासूसों ही जासूसी का केन्द्र चमन न बन सके । । यहीं तो करण था नि तुम यह चाहते थे कि हैरी प्रयोगशाला से फार्मुला चुरा ले ।
और बाहर निकलने पर उसे हम छीन लें ।। विकास ने उस योजना को और निखार दिया है जितने भी जासूस इस चक्कर में लगे

हुये हैं, वे ये समझते होगें कि हैरी फार्मूला ले गया ।
जबकि फार्मूला विकासं पर है ।अब, अन्तर्राष्ट्रीय जासूसी का केन्द्र अमेरिका बनेगा जबकि फार्मूला अशरफ लेकर अमेरिका से चुपचाप निकल अायेगा ।"

"खैर ।कहा ने विजय "..."जो हो चुका, वह ठीक है लेकिन आगे की योजना क्या है ?"

" तुम अमेरिका में स्थित अशरफ से कहोकि वह विकास से वाशिंगटन के लाजिक होटल में मिले । हेरी को तो अशरफ पहचानता ही है । किसी भी दिन शाम को सात बजे हैरी उस होटल के हाँल में आयेगा । तुम अशरफ कों सामझा सकते हो कि वह हैरी नहीं विकास होगा ।। दोनों फिल्में वह अशरफ की सौप देगा । बस, अशरफ को चुपचाप भारत के लिये रवाना हो जाना है ।"

" लेकिन लगता है लूमड़ भाई कि अमेरिका में अपने झानझरोखे के साथ कोई गड़बड़ हो गई है ।"

"क्यों ------? क्या मतलब ?" अलफासे चौंका ।

" कई बार उससे ट्रांसमीटर पर सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास कर चुके हैं, किन्तु सफलता नहीं मिली ।"

विजय ने कहा मैं खैर "--- विक्रम, नाहर परवेज और अाशा कों अमेरिका पहुंचने के आदेश दे चुका हूं ।। उनका काम अशरफ का पता लगाना होगा । साथ ही लाजिक होटल विकास से उनमें से कोई मिल लेगा ।'"

"हूँ ।ने अलफांसे ", कहा, "अव तुम्हारा क्या इरादा है ?"

"जब तक फार्मूला सुरक्षित भारत नहीं पहुंच जाता , तव तक चीन की दीवार पर ही लटके रहेंगे ।"

"और मैं यहाँ क्या करू ?"

"तुम वहाँ रहकर वतन प्यारे की हिफाजत करो लूमड़ भाई ।।वतन"---कहा ने विजय " चाहे कुछ भी सही समय इस किन्तु " वतन वैज्ञानिक है और जिन जासूसों के हाथ फार्मूला नहीं लगेगा वे वतन को किडनैप करने का प्रयास करेंगे ।"

अभी अलफासे कुछ कहने ही वाला था -----

"चचा से कह दो कि वतन का किडनैप करना छोटे मौटे जासूसों के बस का रोग नहीं है ।आ इस "बाज को सुनते ही अलफांसे और पिशाचनाथ उछल पडे । बुरी तरह चौंककर उन्होंने कमरे के दरवाजे की देखा ।

"वतन । पड़ा निकल हसेमुं के दोनों अलग--अलग "। वतन ------

सचमुच वतन ही कंमरे में प्रविष्ट हुआ या । ऊपर से नीचे तक दुध जैसे बेदाग सफेद कपडे, आँखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा । हाथ में छड़ी लिये वह खटखट- करता उनके समीप आया रहा ।। चेहरे पर हमेशा रहने वाली गम्भीरता विराजमान थी ।

उसे यहां देखकर सकते की सी हालत से रह गये थे अलफांसे और पिशाचनाथ ।।।।।।

अलफांसे ने तो स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की थी की वतन वहां आ पहुंचेगा । इतना अवाकगयां रह देखकर कौ वतन सा- वह कि जुबान तालू से चिपक गई । कुछ कहना चाहा भी कह न सका है ।

"प्रणाम चचा ।"। गया झुक में चरणों के अलफांसे तनव लम्बा कहकर "

अलफांसे इतना ही कह सका यहां तुम"---?"

किन्तु अलफांसे के प्रश्न का कोई भी उत्तर न देकर: वतन ने उसके हाथ में से ट्रांसमीटर ले लिया ।

दूसरी तरफ से ट्रांसमीटर पर विजय की यहीं आवाज गूंज रही थीमियां अबे "--- लूमड़ प्यारे क्या हो गया है यार हमारे ? वतन कहकर वतन --- क्यों कहकर चुप क्यों हो गये ?"

"'प्रणाम चचा ?" वतन ने कहाय मुझे"---हां देखकर लूमड़ चचा हैरान रह गये ।"

"हांय ।"।। गये पहुंच कहाँ यहां टूटकर से कमीज की भवन राष्ट्रपति साले तुम प्यारे बटन----चौका विजयं से तरफ दूसरी "

'" आप भूल गये चचा कि कम सेहै जाता पहुच वहीं वतन में चमन कम-, जहां उसकी आवश्यकता होती है । ने वतन " गम्भीर स्वर में कहाका वतन कि बात यह रही"----- कोई किडनैप न कर ले तो क्या आप जवाब देंगे कि महान क्या --- सिंगही वैज्ञानिक नहीं है ?"

"विल्कुल है बटन प्यारे । "! है आनें सत्रह में रूपये "---- आबाज की विजय "

"क्या कभी किसी ने उन्हें क्रिडनैप किया ?"

'"किसी को मरना है क्या ?"

" तो यह समझिये उनके शिष्य को भी किडनैप करने का प्रयास करेगा तो वह अपनी मौत को ही दावत देगा ।"

"लेकिम मियाँ बटन प्यारे तुम यहाँ पहूंच कैसे गए?"बिजय ने पूछा।

"आपने महान सिंगही के शिष्य को मूर्ख समझकर बहुत बड़ी भूल की है चचा । में अखबार कि हैं समझते आप -कहा ने वतन " देना स्टेटमेंट मेरी मूर्खता थी । हकीकतं है तो यह है कि वह स्टेटमै'ट एक बहुत बड़ी साजिश थी मेरी । उसमें आप भी फंस गये ।"

"क्या मतलब ?"

"मेरी बातों के मतलब उस समय तक समझे मैं नहीं आयेंगे चचा, जव तक कि मैं स्वयं आपको नहीं समझा दूंगा । ने वतन " आपसे ही जल्दी बहुत "-----कहा मिलूंगा मैं । आपसे बातें करुगा ।"

" -लेकिन यह मामला क्या है वटन प्यारे ?"

"मामला सिर्फ यह है चचा कि कुछ दिनों के लिये दुनिया के इन महान जासूसों के बीच घूम रहा हूं मैं ।" अतन्त गम्भीर स्वर में वतन कह रहा थादोस्त----- और दुश्मन को पहचान चूका हूँ मैं । ऐलान कर दो चचाजासूसों महान के दुनिया- में ऐलान

करार दो कि वतन आ रहा है । ढंके की चोट से मदान में आ रह हूँ । किसी में ताकत हो तो पूछ ले मुझसे वेवज एम का फार्मूला ।"

"तुम क्या चाहते हो ?"

यह कि जिस दिन से अखबार में मैंने स्टैटमेंट दिया है, उसी दिन से मेरी और सिर्फ मेरी ही जीत होती चली आई है । वतन " ईकौ"-कहा ने भी इस भ्रममें न पड़े कि वह जीत गया है । आप, विकास, लूमड़ अंकल सभी हारे हैं । क्योंकैसे-? इन सब प्रश्नो के उत्तर मैं बाद दुगा ।"

कहने के साथ ही वतन ने सम्बन्ध बिच्छेद कर दिया ।

पलटकऱ अलफांसे और पिशाचन्नाथ की ओर देखा ।

वतन बोला चचा हैं खड़े क्यों तरह इस "--, बैठ जाइये ।"

इस बीच अलफासे स्वयं को नियन्त्रित कर चुका था । बोला"। गए पहुंच कैसे यहाँ तुम"------

"'क्या आपको भी यह बात अलग से बतानी पडेगी की चमन में जहाँ वतंन की जरूरत होती है, वहीं पहुच जाता है । "

" तोसाथ म्हारेतु आज तो----- अपोलो नहीं है ?"

" आज उससे छुपकर आया हूं यहां प्रयोगशाला कि समझा ने विकास--बताया ने वतन " के प्रयोग मैं लड़ता-लड़ता में कक्ष-गया हो बेहोश था । वह बेचारा तो इस भुलावे में भी रहाँ कि मैं उसे आपको समझ रहा हूँ । मुझे राष्ट्रपति भवन में बंधा छोड़कर वह अपोलो और धनुषटंकार से यह वहाना बनाकर चला गया कि वह फिल्मों को सुरक्षित रखने जा रहा है । उसके जाने के बाद जब धनुषटकांर ने अलफांसे समझकर मेरी तलाशी ली तो जाना कि मैं वतन और वह अलफांसे था, जो वतन बनकर निकल गया । अपोलो और धनुषटंकार जो सचमुच मुझसे असीम प्रेम करते हैं, पागल से होकर कथित अलफांसे की तलाश में गए और अपने बन्धन खोलकर मैं यहाँ आ गया हूं ।।"

" तो तुम्हें यह भी मालूम है कि वह विकास था ?"

" ये पूछिए कि क्या नहीं मालूम मुझे ?" वतन का लहजा गम्भीर ही थामुझे"--,तो यह भी मालूम है कि शाम को घूमकर आने से पूर्व अ ापके मेकअप में हैरी था और तब जबकि हैरी मेरी प्रयोगशाला की चारों सर्चलाइटों का प्रबंध करके लौट रहा था तो टेक्सी ड्राइवर के रूपमें विकास ने उसे पकड़ लिया, उनका टकराव हुआ । हैरी को बेहोश करके विकास उसे यहाँ आपके पास ले आया और यंहां से हैरी और आपका फैसमास्क पहनकर मेरे पास पहुंचा ।"

हैरत से आँखें' फैल गई अलफांसे की । पिशाच की भी बुद्धि चकराकर रह गई ।

"तुम्हें सब कुछ मालूम था तो तुमने वह सव कुछ होने क्यों दिया, जो हुआ ।।। पूछा ने अलफांसे "

"--क्योंकि मैं चाहता था कि वह सब कुछ हो ।"

" क्या कह रहे हो तुम ।"

’"मैं ठीक कह रहा हूँ लूमड़ चचा । जो भी कुछ हुया है, वह मेरी एक योजना थी ।"

"लेकिन क्यों ? यह सबकुछ तुमने क्यों होने दिया ?" अलफांसे ने पूछाक्या मकसद तुम्हारा पीछे के करवाने कुछ सब यह "---
 है?"

-"'सुनिए, मैं बताता हूँ आपको ।" सदा की भांति गंभीर स्वर में कहना शुरू किया वतन ने..."यह सच है किं मैंने पहले वेवज एम और फिर उसके बाद डॉक्टर आवा की आवाज कैच करके 'अणुनाशकों किरणे बनाई । मगर प्रश्न यह हैकि मैंने यह घोषणा विश्वभर के अखबारों में क्यों की। आपने, विकास और विजय चचा ने मेरी इस हरकत को मूर्खतापूर्ण ही कहा । सचमुच, यह मूर्खता ही होतीतब किन्तु - जबकि मुझे यह विदित न होता कि मेरी इस घोषणा को पढ़ते ही मेरे दुश्मन इस फार्मूले को प्राप्त करने है कि के लिए दौड पड़ेगे है मुझे मालूम था यह सब और मैं चाहता था कि मेरे दुश्मन चमन की तरफ दौड पड़े । यह चाहकर ही तो मैंने वह स्टेटमेट दिया था ।"

"लेकिन प्रश्न यह है कि तुमने ऐसी विचित्र बात चाही क्यों ?"

"चचा "! धीरे से कहा वतन ने..."यह पता लगाना मेरे लिए बहुत आवश्यक था कि विश्व की कौनदुश्मन मेरी हस्ती सी- है और कौनसी-, दोस्त है सम्पूर्ण विश्व अनेक राष्ट्रोंका एक समूह है ।" इस समूह में मेरा एक राष्ट्र है जो सिर्फ छ ही पहले मंहीने : है हुआ आजाद 'दुनिया के सभी ' राष्ट्र चमनथे कहते मित्र अपना को-, मेरी तरफ दोस्ती का हाथ बढाते थे, मेरे लिए उनमें से यह पहचानना कठिन था कि कौन मुझसे सच्ची दोस्ती चाहता है और कौन बगल में छुरी दबाए हुए है । यही जानने के लिए मैंने एकं तरीका निकाला' और वह तंरीका थास्टेटमेंट अपना ये अखबारों के विश्वभर- छपवा देना । वस...असली चेहरे मेर सामने आा गए। दुश्मन फार्मू'ला गायब करने के केलिए दौड पडे । दोस्त मेरी मदद करने दौड़ पडे । ओर जिन्होंने कुछ नहीं किया वह न मेरे दोस्त हैं न दुश्मन । उन्हें दोस्त भी बनाया जा सकता है ।"

" बेशक । देने झटका को राजनीति विश्व "----उठा कर प्रशंसा अलफांसे"के लिए तुम्हारा तरीका अच्छा था किन्तु' ....
।"

"किंन्तु वया ?"

" यहां तक तो बात ठीक थी ।" अलफासे ने कहा अब " ---- तुम जान गए होने कि कौन दुश्मन और कौन दोस्त है फिर तुमने प्रयोगशाला से फामूनिकल क्यों ला" जाने दिया ? हैरी को पकड़कर बैठा कयों नहीं लिया?"

जब से वतन यहां आया था, प्रथम बार हल्ले से मुस्काराया वह । वाणी में वहीं गम्भीरता कि नहीं काफी तो ही लेना जान"--- दुश्मन कौन, कौन दोस्त है । उस समय तक दुश्मनों के विषय में जानने से ही क्या लाभ जव के उनसे बदला न लिया जाये ? वेचारे अकेले हैरी से मैं क्या बदला लेता ? बदला किसी व्यक्ति से नहीं, पांच राष्ट्र से लेना है ।। रूस, अमेरिका, चीन, इंगलैण्ड और पकिस्तान । सिंगही गुरु का शिष्य हूँ न चचा, जो करता हूँ, डंके की चोट पर करता हूं । स्वयं ही अपनी प्रयोगशाला से फार्मुला निकलवा दिया मैने , न न न यह ना समझना कि वह फार्मूला नकली है । "

जब से वतन यहां आया था, प्रथम बार हल्ले से मुस्काराया वह । वाणी में वहीं गम्भीरतातो ही लेना जान"--- काफी नहीं कि कौन दुश्मन, कौन दोस्त है । उस समय तक दुश्मनों के विषय में जानने से ही क्या लाभ जव के उनसे बदला न लिया जाये ? वेचारे अकेले हैरी से मैं क्या बदला लेता ? बदला किसी व्यक्ति से नहीं, पांच राष्ट्र से लेना है ।। रूस, अमेरिका, चीन, इंगलैण्ड और पकिस्तान । सिंगही गुरु का शिष्य हूँ न चचा, जो करता हूँ, डंके की चोट पर करता हूं । स्वयं ही अपनी प्रयोगशाला से फार्मुला निकलवा दिया मैने , न न न यह ना समझना कि वह फार्मूला नकली है । "

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"-

"प्रमाणितं करना चाहता हूँ की महान सिंगही का असली शिष्य हूं मैं "!

"हम फिर नहीं समझे ।"

"वे फिल्में अपनी प्रयोगशाला से निकालकर पांच राष्ट्रों को चुनौती दी है मैंने कि जिसमें ताकत है, वह प्राप्त कर ले उन्हें । अपनी फिल्मों के पीछेफिल्में वे भी पास के किसी कि है दावा मेरा हूँ आरहा मैं पीछे- सुरक्षित नहीं छोडूंगा । जिसमें ताकत हो मुझे रोके ले । अन्त में चाहे किसी के पास भी चली जायें मैं उन्हें निकालकर लाऊंगा । हां, भारत को तो वह फार्मूला देना ही चाहता हूं में ।"

"'वडी विचित्रअलफांसे "! है बात सी- ने कहासे प्रयोगशाला अपनी ही स्वयं"-- फिल्में चोरी होने देते ,हो और फिर उन्हें प्राप्त करने के निकल पडते हो है तुम्हारी इस ऊटपटांग हरकत का मतलब ही क्या है ?"

एक बार पुनचमन को दुश्मनों कि है यह मतलब "----बतन मुस्कराया से- हल्ले : की शक्ति का पता लग जाए और वतन को पता लग जाए कि महान शक्ति कहलाने वाले ये राष्ट्र आखिर हैं कितने पानी में है ।"

" अजीब आदमी हो । भला हुई बात कौई भी यह"--कहा ने अलफांसे "?" "

"चचा गं वही की वतन "!भीर वाणीपहल पहले जो हैं होती बातें सी-बहुत------- ऊपर से देखने पर बडी विचित्र सी लगती हैं, किन्तु जब उन बातों को ध्यान से सोचा जाता है तो पता लगता है कि उनकी गहराई में क्या है ? यह समझिए कि यह लडाई मेरे द्वारा पैदा की गई है । "

आज न लड़ता तो के कल किंसीकिंसी-न- ढ्रग से मुझ पर आक्रमण करते । ऐसे महत्त्वपूर्ण लोग भी दुनिया में कम ही होंगे जो अपनी इतनी महत्वपूण चीज को दांव पर लगाकर लडने चला है । मैं स्वयं दुश्मन की शक्ति का अन्दाजा करके उन्हें अपनी शक्ति दिखाना चाहता हूँ ।"

" मैं तुम्हारा मेकसद मकसद समझ गया हूँने अलफांसे. । " कहा..."किन्तु फिर भी बात है बिचित्र"! ही सी-

"मुझे अदृश्चर्य है को आपकी मेरी बात विचित्र लग रही है ।ने वतन "' कहा दुनियाँ की आपराध की है यह सुना मैंने जवकि"- अपराधी ऐसे एकमात्र आप में हैं, जिसका अपराध करने का मकसद आज तक कोई नहीं जान सका

"खैर हो चाहते करना क्या आगे तुम कि हूं सकता जान मैं क्या "---कहा ने अलकांसे "!?"

" जो भी कुछ करना चाहता हूं, उसमें आपकी और विशेष रूप से पिशाचनाथ की थोडी----कहा ने वतन । है आवश्यकता सी- पश्चात् के स्टेटमेंट में अखबारों" मैंने जाना है कि आप लोग मेरे दोस्त और हमददों में से है । सोचा कि आप मेरी थोडी सी-

"। करेंगे अवश्य सहायता

" बोलौ हो चाहते सहायता क्या-?"

मैं जो कुछ करूंगा, उसे सारी दुनिया जानेगी ।कहा ने वतन "..."सभी जानेंगे कि वतन क्या कर रहा है । इतना सब कुछ करने के बावजुद भी मैं अन्तर्राष्ट्रैय अदालत के शिकंजे हैं नहीं फंसनां चाहता । मैं यह चाहता हूँ कि सारी दुनिया यंह तो जाने कि वतन ने क्या किया है, किंतु वह सब कुछ वतन ने ही किया है, यह प्रमाणित करने हैं लिए किसी के पास प्रमाण न हो "!

" हम हर प्रकार से तुम्हारी सहायता करने के लिए तैयार हैं ।"

" मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी ।।। लगा समाझाने कुछ सब उन्हें धीरे धीरे वतन बाद के कहने "

हैरी के मेकअप में हैलीकॉप्टर ड्राईव करता हुआ विकास अपने बराबर में बैठे जैकी के मुंह से निकलने बाली आबाज को सुनकर बुरी तरह चौक पड़ा ।। उसका मस्तिष्क सन्ना उठै ।। स्वयं मानो अन्तरिक्ष में चकरा रहा था । उसकेे मुंह से निकंला"---'बाण्ड अकंलं ।"

"'ठीक पहचाना वेटे ।पहचाना से देर लेकिन"---आवाज की बाण्ड जेम्स " याद रहे हमारी रिवॉल्वर, का रूख तुम्हारी तरफ है । कोई भी हरकत करने से पूर्व यह याद रखना कि मैं गोली मारने में एक क्षण का भी विलम्व न कुंरूंगा ।"

एक क्षण स्थिर से नेत्रों से विकास ने बाण्ड को धूरा ।

बाण्ड कहे जा रहा था------------वह थी की मेहनत जो तुमने लिये के करने प्राप्त फार्मूला कि बेटे हैरी हैं दुख मुझे----"! गई हो बेकार

-"'अंकल ।लह्रजे ही के हरी " में विकास ने कहा किया आपने जो"----, अपने हित में अच्छा नहीं"। किया-

" मेरा नाम बाण्ड है बेटे ।का रिवॉल्वर अपने " दबाव हल्के से उसकी कनपटी रर बड़ाता हुया बोलातुम----- पैदा भी नहीं हुए थे तब से में अपना _हित और अहित समझता हूँ ।तुमने इस जासूसी के क्षेत्र में अभी कदम रखा है । बेशक इस बात के लिये तुम्हारी प्रर्शसां करनी होगी कि 'तुमने वतन की सुदृढ प्रयोगशाला से खुबसुरती के साथ फिल्में गायब की किंतु इसका यह मतलब नहीं कि उतनी ही खूबसूरती से तुम इन्हें अमेरिका ले जाने में भी कामयाब हो जाते ।। ननही चालाकी कौई-न-ं, हैलीकॉप्टर चलाते रहो ।"

इस प्रकार, उन कुछ क्षणों के लिये विवश था, विकास ।

उसने जेम्ज बाण्ड पर यह भेद भी नहीं खोला कि वह हैरी नही विकास है । इस विचार से भी उसकां मस्तिष्क सन्ना रहा था कि 'बाण्ड' ने वे फिल्में जंगल में क्यों फेंक दीं ? अब स्वयं उन फिल्मों को कैसे ढूंढ पायेगा ?"

"हैरी वेटे विदित मुझे "---की भंग श्रृंखला बिचार उसकी ने बाण्ड अचानक "! था कि बही होगा, जो हो रहा है, अत मैं : इस । था अाया करके तैयारी पूरी हेलीकॉप्टर में सिर्फ एक पैराशूट है ।सीट ने बाण्ड में वास्तव हुये कहते " के नीचे से एक पैराशट निकाल लिया ।

विकास चुप था ।

-तुम जिस प्रकार; हैलीकाँप्टर चला रहे हो, उसी प्रकार चलाते रहोगे।"। हूँ रहा कूद मैं"----कंहा ने बाण्ड "

''याद रहेकरने कम भी मात्र लेश ऊंचाई की हैलीकॉप्टर से भूमि तुमने अगर--- की चेष्ठा की तो अंजामहैलीकॉप् ये--टर तुम्हारी चिता बन् जायेगा ।"

चुप ही या विकासं ।

"ये न समझना कि हैलीकॉप्टर को उडाने को धमकी अपने रिवॉल्वर के आधार पर दे रहा हूँ । मेरे"----कहा :पुन ने बाण्ड " तुम्हारा क्षण भी किसी और है गन पास हैलीकॉप्टर मेरी गन की रेंज से बाहर नहीं होगा ।"

एकदम, किसी गूंगे की भाँति चुप था विकास उसका चेहरा सुर्ख हो चुका था उसी । कठोरता में नेत्रों ।। सुर्ख तक कनपटियों- वह वैठा- पर सीट प्रकार हैलीकॉप्टर ड्राईव किये जा रहा था ।।।

' विभिन्न प्रकार की चेतावनियां देता हुया बाण्ड पैराशूट इत्यादि बाँधकर तैयार, हो गया । अन्त में बोला--, "बहुत गुस्से में लग रहे हो हैरी बेटे लेकिन असलियत ये है कि इसमें गुस्से जैसी कोई बात नहीं है । कभी तुम्हारा दांव लगता है, कमी हमारा । अगर तुम बचकर निकलना चाहो तो हैलीकाप्टर वाशिंगटन की ही धरती छुए ।'"

कहकर हैलीकॉप्टर से बाहर अंधकार में कूद गया ।

विकास तो जैसे पहले ही सौचे बैठा था कि उसे कब कहाँ क्या हरकत करनी है । अभी तक वह जैसे सिर्फ समय का प्रतीक्षक था ।

उधर, बाण्ड कूदा ।।।

इधर विकास दूसरी दिशा बाली खिड़की से बाह्र कूद गया ।

हैलीकाप्टर चालक रहित रहित हो गया । कूदते ही विकास कुछ दूर तक भूमि की तरफ प्रबल बेग से गिरा, फिर झटका एक-
। लगा

उसकी गति हवा में तैरतेविकास तैरता में हवा । गई हो जैसी न्सानइ किसी से- बुदबुदा रहा था था जानता भी मैं "--- बाण्ड बेटे कि ऐसा कुछ हो सकता है ।"

सचमुच एक पैराशूट की डोरियों में बंधा विकास हवा में तैर रहा था । उसका पैराशूट न जाने कौन से ऱंग का था कि वातावरण के स्याहीदार अंधेरे में उसका कोई अस्तित्व नजर नहीं आ रहा था ।

उसके ठीक विपरीत बाण्ड का पैरामूट नजर आ रहा था बिकास से थोड़ी ही दूरी पर हवा में तैरता बाण्ड भुमि की तरफ उतर रहा था ।

उधरह रहित चालक-ैलीकॉप्टर हवा में लड़खडाया ।

उसी पल।। उठा दहल वातावरण से गर्जना की गन की बाण्ड--

एक साथ गन की अनेक गोलियां हैलीकॉप्टर के जिस्म से टकराई । कोई गोली शायद टकीं को फाड़कर अंदर भी पहुंच गई थी है उसी के कारणवश सम्पूर्ण हैलीकॉप्टर आग की लपटों में घिर गया ।

विकास ने जलते हुए हैलीकॉप्टर को किसी परकटे पक्षी की भांति हवा में लहराते और अन्त में दूर किसी वृक्ष की चोटी से टकरा कर नष्ट होते देखा ।

न जाने किस विचार के परिणामस्वरूप उसके। आई उभर मुस्कराहट पर होठों-

दुरथ रहा जल हैलीकॉप्टर उलझा में शाखों की बृक्ष-ा ।

उसके साथ ही जल रंहा था वृक्ष का वह भागं जिसने हैलीकाप्टर को सम्हाल रखा था । पहले बाण्ड और उसके पांच मिनट पश्चात ही विकास भूमी पर पहुंच गया । बाण्ड का पैराशूट क्योंकि अंधेरे में स्पष्ट चमक रहा था , इसलिये विकास सरलता से प्रत्येक पत उस पर नजर रख सकता था ' मृ ३' क्रिन्तु बाण्ड को शायद स्वप्न मैं भी उम्मीद नहीं थी कि विकास भी उसके आसपास कहीं है ।

विकासं बाण्ड से करीब पचास गज दूर था । पैराशूट को लपेटकर सुरक्षित रखने की विकास ने कोई कोशिश की ।

विकास स्वयं को अंधेरे में रखता हुआ धीरे धीरे बाण्ड की तरफ बड़ा । अभी वह अपने और वाण्ड के बीच की दूरी ही तय कर सका था कि-----

बाण्ड की दिशा में एक टार्च चमकी ।।

विकास ठिठक गया ।।

ठिठककर गौर से देखने लगा ।

टार्च से बाण्ड हाथ में मौजूद किसी चीज को देख रहा था ।

विकास यह न देख सका कि टार्च की रोशनी में बाण्ड ने क्या देखा है ।

फिर ।। गया बड़ को तरफ एक बाण्ड लिये में हाथ टार्च रोशन ---

जिसने की आवश्यकता, नहीं कि स्वयं को अंधेरे में रखकर विकास उसके पीछे लपका । इतना तो विकास समझ ही चुका था कि जंगल के इस अंधेरे में बाण्ड ने फिल्में यूं ही नहीं फेंक दी ।

खोजने के लिये बाण्ड के पास कोई है क्या साधन यह । होगा अवश्य साधन कोई-न-? जब तक विकास को यह पता न लग जाये, तब तक वह वाण्ड के सामने अाना उपयुत्त नहीं समझता था ।।

बाण्ड के हाथ में क्योंकि रोशन टॉर्च थीं इसलिये विकास को निरन्तर उसका पीछ्र करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हो रही थी ।। बीच बीच में बाण्ड टॉर्च का प्रकाश अपनी हथेली में दबी किसी चीज पर डालकर देख लेता और फिर आगे बढ़ जाता ।

कठिनता से पन्द्रह कदम की दूरी का अन्तराल रखता हुआ विकास उसका पीछा कर रहा था ।

कोई तीस मिनट तक यही सिलसिला जारी रहा।

फिर, एकाएक बाण्ड उस समय ठिठका ।

जब टार्च के प्रकाश में अपनी हथेली दबी चीज को देख रहा था ।
कुछ देर तक बाण्ड गौर से उस चीज को देखता रहा ।

उस समय विकास एक पेड के पीछे उससे सिर्फ इतनी दूर पर था कि बाण्ड की बुदबुदाहट भी उसने सुन ली । बाण्ड बुदबुदाया थाकिसी फिल्में मतलब इसका"---- के हाथ लग गयी है ।"

विकांस ने उसका यह वाक्य सुना और समझ लिया कि मामला क्या है । टार्च के प्रकाश में वह बार देखता कों चीज किस बार- से तेजी विचार के प्रकार कई ।। है विकास के दिमाग में चकरा उठे । यह समझने में उसे की प्रकार की कंठिनाई नही हुई की बाण्ड बार बार दिशा और दूरी बताने वाली विरामघड़ी देखता है ।
यह समझने में भी उसे देर न लगी कि विरामघड़ी का सम्बन्ध उस पर्स से होगा । पर्स में कोई ऐसा ट्रांसमीटर होगा जिसकी दिशा और दूरी बाण्ड के बायें हाथ में दबी वह विरामंधडी बता रही होगी ।

घडी की सुइयों को गतिमान देखकर ही बाण्ड इस नतीजे पर पहुंचा होगा कि पर्स किसी के हाथ लग गया है ।

उधर बाण्ड पहले से अधिक तेजी के साथ एक तरफ को बड़ गया ।।

सावधानीवश बाण्ड ने टार्च बुझा दी थी । परिणामस्वरुप, विकास को अब उसका पीछा करने से मुश्किल हो रही थी ।।

हालांकि विकास काफी सतर्कता से आगे बढ़ रहा था मगर यह बात बाण्ड से अधिक देर न छूप सकी कि कोई उसका पीछा कर रहा है ।

एकाएक गजब की तीव्रता के साथ बाण्ड पलट पड़ा ।। झनाक से टार्च की रोशनी विकास की तरफ लपकी ।

साथ ही बाण्ड की आवाज है कौन "-?"

किन्तु उससे अधिक तेजी के साथ हवा में सन्नाया विकास का आलपिन।

सूं। गई गिर से हाथ उसके टॉर्च में बौखलाहट । गया घूस में कलाई की बाण्ड जेम्स आलपिन साथ के ध्वनि सी हल्की की सूं--

अभी वह उसे पुनअंकल नहीं "----कि था ही झुका से फुर्ती लिये के उठाने :, टार्च उठाने की कोशिश न करना, वर्ना मैं फायर कर दूंगा ।

ठिठक गया बाण्ड, मुंह से निकला"। हैरी"----

आप क्या समझते है अंकल, कि मैं इतनी सरलता से हैलीकॉप्टर में जलकर राख हो जाऊंगा ?"

"तुम विकास हों"। सकते हो नहीं हैरी तुम ।। विकास-

"जानता हूं अंकल , आपको विदित है कि आलापिन को हथियार के रूप में सिर्फ विकास इस्तेमाल करता है ।"

इस बार विकास अपनी वास्तविक स्वर में बोला था"। पहचाना से देर काफी लेकिन अंकल ठीक तो पहचाना "----

" तम भेष में हैरी"----जुबान की बाण्ड गई लड़खड़ा----तुम-----ेंें ?"

"क्यों सकता हो नहीं में रुप के हैरी में क्या तो है सकते हो में रुप के जैकी आप जब---?"

" किन्तु".....

बाण्ड अभी कुछ कहना ही चाहता था कि विकास की आवाज गूजीं विन्तु- किन्तु "-- कुछ नहीं अंकलं-----------------"। दूगां फोड़ भेजा तो की हरकत भी कोई -

जेम्स बाण्ड ने देखा -----

उपर्युक्त शब्दों के साथ ही लम्बा लड़का उसके ठीक सामने खड़ा हो गया था । बाण्ड के समीप ही जमीन पर रोशन टार्च पड़ी हुई थी । उसका प्रकाश ना बाण्ड पर पड़ रहा था ना विकास पर , किन्तु उसके प्रकाश में एकको साये को दूसरे-- भली भातीं देख सकते थे साया का रिवॉल्वर दबी में हाथ के विकास ने बाण्ड ! भी देख लिया था ।

" अंकल । विकास है यार वतन कि गया भूल वह तो था सौंपा काम तुम्हें ने "एम" गंजे तुम्हारे जब "--- कहा ने विकास " का?"

" विकास संभ जुबान में बिषय के चीफ "--- बाण्ड उठा गुर्रा "!ालकर बात करो ।"

" छोड़ो चीफ की बात ।कि थे गये भूल भी तुम क्या अंकल "---- हंसा विकास " विकास की जान दोस्तों के लिये है ? क्या उन कि था सोचा नहीं तुमने--- फिल्मों को प्राप्त करने जाओगे तो तुम्हारा टकराब विकास से भी होगा ?"

" जानता था .... फिर----?"

" फिर भी इस अभियान में कूदने की हिम्मत हो गई तुम्हारी ?"

अन्दर ही अन्दर कांप उठा बाण्ड ।

दुनिया में विकास ही ऐसा लड़का था जिसका सामना करने में बाण्ड स्वयं को नर्वस समझा करता था ।।

ना जाने क्यों विकास के सामने आते ही वह घबराहट सी महसूस करता था , किन्तु उस घबराहट को उसने कभी प्रकट नहीं कीया ।

तभी तो बोला क्यों "----, क्या तुमसे कुछ डरता हूं मैं ?"

" मैं जानता हूं अंकल , जो दिल में है , उसे प्रश्न बनाकर पुछ रहे हो मुझसे ।"

ह्रदय भले ही कांप रहा हो बाण्ड का, किन्तु ऊपर से मुस्कराया , बाण्ड बोला बहुत तुम्हें मे बारे अपने "---- बड़ी गलती होगयी है विकास बेटे छोकरों जैसे तुम को बाण्ड दिन जिस ! से डरना पडा, उस दिन बाण्ड जीवित रहने से वेहतर आत्महत्या करना समझेगा ।'"

" आत्महत्या करोगे कैसे अंकल , मौत तो तुरूहारी विकास के हाथों लिखी है ।"

-"यह तो वक्त वतायेगा बटे कि किसकी मौत किसके हाथ लिखी है ।"। करो बात की काम"---गुर्राया बाण्ड "

" वह विरामधड़ी मेरे हबाले कर दो ।"

" कौन बिरामघड़ी सी-?"

"वंही जिसके आधार पर उस पर्स तक पहुंचना चाहते है जिसमे"......

किन्तु।। वाक्य का विकास सका हो न पूर्ण--

उससे पूर्व ही ऐसी हरकत कर दी बाण्ड ने जिसकी विकास ने आशा नहीं की थीं । अपने कदमों में पड़ी रोशन टार्च कों उसने एक ठोकर मारकर विकास की तरफ उछाल दिया ।।

निशाना इतना सटीक कि सन्नाती हुई टॉर्च विकास के हाथ में दबे रिवॉल्बर से जाकर टकराई ।

उस अप्रत्याशित हमले के प्रति विकास सतर्क न था और यही कारण था कि एक पल केलिये उस से चूक होगई ।

रिबाँल्वर जाके हाथ से छिटकर कहीं अंधेरे में दुर जा गिरा।

अभी वह संभलने ही वाला था की हवा में सन्नाता हुअा जेम्स बाण्ड का शरीर उसके।। गिरा आ ऊपर-

विकास अभी स्वयं की बाण्ड के मुकाबला करने हेतु तैयार भी नहीं कर पाया था कि"। विरामंधडी जो ये "-----

बाण्ड के इस बाक्य के साथ ही एक जबरदस्त घूंसा बिकास की कनपटी पर पडा ।।

घूंसा इतना शक्तिशाली था की फिरकनी की भांति घूमकर विकास धड़ांम से जमीन पर गिरा ।।

भयानक फुर्ती के साथ वह उछल कर खड़ा हो गया । इस कार्य में अगर उसे एक क्षण का भी बिलम्ब हो जाता तो बाण्ड के बूट की ठोकर पूरी शक्ति से उसके चेहरे पर टकराती ।

किन्तु अब। टांग की बाण्ड गयी रह घूमकर में हबा वह अब----

उसी पल विकास के सिर की एक जोऱदार टक्कर उसके चेहरे पर पडी है न चाहते हुए भी बाण्ड के कण्ठ से चीख निकल गई ।

टक्कर सीधी उसकी नांक पर बैठी थी और नाक से खून किसी टूटे हुए बांध की भाति बहने लगा था । बाण्ड पहली चोट के कारण ही अपने दिमाग को नियन्त्रित न कर पाया था कि विकास की लम्बी टांग धूम गई ।

बूट की जौरदार ठोकर बाण्ड के पेट में पडी ।

कराहकर बाण्ड पेट पकड़कर दुहरा हो गया । उसी समय बाण्ड की गुद्दी पऱ विकास का दुहत्तड़ पड़ा ।

मुंह के बल विकास के क़दमो में जा गिरा बाण्ड । इससे पूर्व कि विकास उस पर अपना कोई अगला बार करता, बाण्ड ने उसकी दोनों टांगे पकड़कर एक झटके के सांथ खीच दीं ।

विकास के पैर धरती से हटे और वह बिचित्र से ढंग से चकराकर जमीन पर गिरा ।

गिरा अ ौर गिरने के उपरान्त भयानक फुर्ती के साथ वह उठकर खड़ा भी हो गया , किन्तुइस--- बार जब उसने बाण्ड पर जम्प लगानी चाहीं तो एकाएक ठिठक गया ।।

टार्च की रोशनी में उसे चमक रहा थासाया का बाण्ड खड़ा सामने अपने-, साथ ही उसने बाण्ड के हाथ में चमचमाता हुआ एक चाकू देख लिया था । उस चाकू को देखकर ही ठिठका था, वह गुर्रायाअंकल क्यों"-----, उतर अ ाये बुजदिली पर ?"

-'"रिवॉल्वर मेरी तरफ तानकर खड़े रहना बुजदिली नहीं है ?" कहने के साथ हीं बाण्ड ने विजली की गति से झपटकर विकास पर चाकू का बार किया ।

विकास ने हबा में ही बाण्ड की चाकू वाली कलाई थाम ली और बोला चाकू एक भी मुझे तो अंकल है कलेजा का शेर "---
".......

उसका वाक्य पूरा होने से पूर्व ही बाण्ड का घूटना उसकी टांगों के जोड पर पडा ।।

निश्चय ही दर्द से तिलमिला उठा विकासं, किन्तु उसके चक्कर में वाण्ड की चाकू बाली कलाई कों छोड़ने के स्थान पर इतनी जौर से मरोडा कि बाण्ड के कंठ से चीख निकल गई । मुंह से चीख निकालता हुआ वाण्ड विकास की कमर पर से होता हुआ जमीन-
। गिरा पर

इलना सव कुछ करने के बावजूद भी उसने बाण्ड की चाकू वाली कलाई नहीं छोड़ी । एक टांग उस कलाई के जोड़ पर रखी अ ौर इस तरह कलाई की खींचने लगा मानौ उसे बाण्ड के जिस्म से तोड़कर अलग फेंक देने का इरादा रखता हो । इधर विकास इस प्रयास में था और उधर बाण्ड ने अपनी दोनों टांगे उठाकर विकास की गर्दन में फंसा दी।

बड़ा विचित्र। था फंसा दांव सा-

विकास उसकी कलाई नहीं छोड़ रहा था और बाण्ड उसकी गर्दन । बाण्ड उसे गिराने के लिये झटका देता तो दर्द उसकी कलाई में होता । काफी देर तक दौनो उसी स्थिति में रहे । फिर------------

जैसे एकसाथ दोंनों ने निश्चय किया ।

बाण्ड का मूट विकास के चेहरे से टकराया और विकास का बाण्ड के चेहरे से । एक साथ दोनों के कंठ से चीख निकल गई । छिटककर दोनों एक साथ दूसरे अलग होगये ।

विकास उछल कर खड़ा होगया।

उससे पहले खडा हो गया था जेम्स बाण्ड ।

विकास किसी चिते की तरह उस पर झपटा । बिजली की सी गति से बाण्ड का चाकू बाला हाथ चला ।

एक भयानक चीख विकास के मुंह से निकल गई ।

हुआ यूं था कि बाण्ड का चाकू विकास के दायें कन्धे में एक गहरा घाव करता हुआ निकल गया ।

कन्धे से बुरी तरह खून वहने लगा । बायें हाथ से उस घाव को दबाकर पीछे हटा विकास ।

पहले जैसी फूर्ती के साथ बाण्ड ने उस पर दूसरा वार किया ।

किन्तु अब । था चुका बन भेड़िया विकास अब -----

जेम्स बाण्ड से अधिक फूर्ती का परिचय देकर वह न सिर्फ स्वयं को वचा गया , बल्कि साथ ही उसकी लम्बी टांग भी चल गई । इस बार बूट की ठोकर बाण्ड के उस पंजे पर पड़ी , जिसमें चाकू दबा था ।

हाथ से चाकू निकल कर न जाने कहां गिरा ?

अभी चाकू के चक्कर में ही था बाण्ड कि विकास के एक जबरदस्त घूंसे ने उसके जबड़े पर लगकर उसे आतिशबाजी का कमाल दिखा दिया । पलक झपकते ही लम्बे विकास की ठोकर घुमकर उसके चेहरे पर पड़ी ।

गर्म गर्म खून से बाण्ड का मुंह भर गया ।

दो दांत भी टूट गये उसके ।

खून का कुल्ला किया तो टूटे दांत भी गिर गये ।

इधर वह कुल्ली कर रहा था कि विकास की एक और ठोकर ने उसकी पसलियों को चरमराकर रख दिया ।

चाकू लगते ही न जाने क्या हुआ था विकास को कि बिजली के पुतले की भांति उसके जिस्म का हरेक अंग काम करने लगा ।

इस फूर्ती के साथ उसके हाथ पैर चल रहे थे कि बाण्ड को सम्भलने के लिये एक क्षण भी तो ना दिया जालिम ने ।

वार । चोट पर चोट । वार पर वार----

अन्त यह कि जेम्स बाण्ड बेहोश हो गया ।

सरलता से विकास ने यह भी नहीं माना कि वह बेहोश होगया ।

चैक करने के उपरान्त जब उसे विश्बास होगया कि वह बेहोश होगया है तो बाण्ड के कपड़ो की तलाशी ली उसने ।

जेव से विरामंधड़ी निकाल ली ।

टार्च के प्रकाश में उसने समीप की झाड़ीयों में पड़ी बाण्ड की वह गन भी उठा ली , जिससे उसने हैलीकॉप्टर नष्ट कीया था ।

फिर । विकास मुस्कराया से हल्के देखकर । देखा से ध्यान को सुईयों की विरामंधड़ी ----

बाण्ड के बेहोश जिस्म को कन्धे पर डाला और लम्बे।।।।। गया बढ़ को तरफ एक साथ के कदमों लम्बे-
" तुगलक अली ।"

" हां मेरी भाभी के प्यारे नुसरत"। खान-

."जहां से इस समय हम गुजर रहे हैं यह एक भयानक जंगल है ।"

" वेशक है ।"

"'रात का समय है ।"। है बजे बारंह करीब "---था रहा कह खान नुसरत "

अपने हाथ में बंधी रिस्टवांच देखी तुगलक ने, रेडियम डायल चमक रहा था है बजा डेढ़ पूरा "--- बोला---।"

"चारों तरफ अधेंरा है ।"

" सन्नाटा भी ।"

" ऐसे मौसम में मुझे एक बात याद आ रही है ।"

" उगल' दो ।"

"ऐसा ही मौसम था जब मेरे अब्बा अम्मी की आँखों से वनी चाट खा गये ।नुसरत " अली कहने लगा की अम्मी मेरी "--- पसन्द इतनी को अब्बा चाट वह बनी से आखों आई कि वे उसे बारथा समय का रात था जंगल वियावान । लगे खाने बार-, चारों तरफ सन्नाटा । जानवंर बोल रहे थे ।

ऐसे में मेरी अम्मी और अब्बा के ताशे बज गये । एकमें प्यार के दूसरे- बजरबटटू बने े तो अम्मी कहने लगी-'" मेरे दिल के शरबत, मुझे इश्क की कोई ऐसी निशानी दे कि जो हमेशा मुझे तुम्हारी याद दिलाया करे ।

और अब्बा ने एक ऐसी निशानी दे दी ।

" क्या निशानी दी तुम्हारे अम्बा ने ?" तुगलक ने पुछा ।

"तू ही बता सोच कर"। है सकती ही क्या निशानी बढ़िया सबसे की इश्क "----

तुगलक बताने लगा ।

बहुत नाम के निशानियों सी-ले डाले उसने, किन्तु नुसरत था कि इंकार में ही गर्दन हिलाये जा रहा था ।

स्थिति ऐसी आ गयी कि तुगलक इश्क की निशानियां बताता बताता थक गया ।। अतः तुगलक बोलाअबे"- तो और क्या भिण्डी का मुरब्बा देदिया ?"

"हां ।कहा एकदम ने नुसरत "..."अब पहुंचे तुम असली निशानी पर ।"

चौका तुगलक, बोला हो कहते क्या"--?"

"भिण्डी के मुरब्बे जैसा ही तो हू मैं ।"

" क्या मतलब ?"

"अबे मैं ही तो हूं प्यार की निशानी जो मेरे अब्बा ने मेरी अम्मी को दी ।"

" ओह । हो औलाद की रात उसी तुम तो "--- कहा ने तुगलक "?"

" अबे तू कौन सा सुबह की औलाद है ?" नुसरत ने कहा सारी तेरी मुझे " --- हिस्ट्री मालुम है मुझे । तू दोपहर के समय शहतूत के पेड़ से टपका था ।"

इस प्रकार ऊटपटांग बातें करते चले जा रहे थे नुसरत ओर तुगलक ।

पोशाक से जासूस कम पाकिस्तानी शायर ज्यादा लगते थे ।

चूड़ीदार पजामा, पैरों में जूती । घुटनों तक बन्द गले का कोट । सिरों पर काली टोपी । मुंह में पान थे । बात करते हुए बीचकथू पीक का पान में बीच- देते थे ।।

" भाई नुसरत ।"

" हां बहन तुगलक बानो । कहा लपककर ने नुसरत "!

" थक गये यार ये साला चमन अभी कितनी दूर और है ?"

बस सुबह होते होते हम चमन के ही किसी बाग में एक दूसरे की बेगमों की कमी को पूरी कर रहे होंगे ।

" यार तुझे चमन में इस तरह जंगल के रास्ते से पैदल जाने की क्या सूझी ?"

अचानक दोनों रूक गये । दोनों के कान कुछ सुनने की चेष्टा कर रहे थे ।

आकाश की ओर देखता हुआ तुगलक बोला है लगता "--- आसमान से साला कोई हबाई जहाज गुजर रहा है ।"

" हबाई जहाज नही मूर्ख आबाज हेलीकॉप्टर की है ।। कहा ने नुसरत "

अड़ा नहीं तुगलक , बोला"। है रहा आ नहीं नजर कहीं साला यार लेकिन । है कहता ठीक तू "---

अचानक ....

हबा में लहराकर आकाश से नीचे गिरती हुई कोई चीज फटाक से नुसरत के चेहरे पर आ पड़ी।

" अबे तेरी की"!......

" क्या हुआ था क्या ----?" तुगलक ने पुछा ।

" मुझे लगता है कि हेलीकॉप्टर का पुर्जा टूटकर मेरे चेहरे पर गिरा है , उसे ढूंढों उसे कि है सकता हो --- देखकर हम यह जान सकें कि वह हैलीकॉप्टर कौन से सन् में बना था ?"

दोनों ही उस चीज को तलाश करने लगे , जो ऊपर से गिरी थी ।

" अबे है पड़ा किसका पर्स साला ये "--------निकला से मुंह के लकतुग "!?"

तुगलक ने झुककर पर्स उठा लिया ।।

" इसमें माल होगा ।कहते " हुए तुगलक ने पर्स की चेन खोल दी ।

" अबे इस में तो फिल्में हैं "। रील दो ---

तुगलक ने आईडिया फिट किया किसी अपनी में जंगल इस प्रोडयूसर को है लगता "--- जासूसी फिल्म की शूटिंग करने आया होगा । उस बेचारे ने फिल्में अपने पर्स में रखी होंगी और पर्स यहां गिर गया ।।

" मुझे तो कुछ और ही लगता है । "

" क्या ?"

" किसी जेबकतरे ने किसी बहुत ही अमीर आदमी की जेब काट ली होगी ।खान नुसरत " ने राय प्रकट की पैसे से पर्स "---दिया फैंक यहां पर्स उसने कर निकाल होगा ।"

तुगलक ने राय प्रकट की थी लगी आकर पर चेहरे मेरे जो नहीं चीज वह तो ही पर्स ये कहीं अबे "----?"

" हां । कहा ने तुगलक से भाव वाले उड़ाने खिल्ली ", " कोई चील ईसे अपनी चोंच में दबाकर उड़ी चली जा रही होगी , अन्धेरें में तेरी शक्ल देखी तो फिदा हो गई । अपनी मोहब्बत के इकरानामे पर दसतख्त कराने के उसने चोंच खोली होगी और ये पर्स "......

" तुझे कभी अक्ल नहीं आयेगी साले जामुन की औलाद ।अबे "--- कहा ने नुसरत " क्या ये नहीं हो सकता कि यह पर्स उस हैलीकॉप्टर में बैठे किसी आदमी की जेब से गिरा हो ? इत्तफाक से हमें मिल गया ।"

" तो फिर तेरे विचार से इस फिल्म में क्या होगा ?"

" यह तो इन्हें देखने से ही पता लगेगा।।।।। लगा करने प्रयास का देखने में रोशनी की टार्च को फिल्मों तुगलक कहकर "!

अभी फिल्में निकालकर टार्च की रोशनी से चेक कर ही रहे थे कि ----

--- उसी समय ।। उठा कांप से गर्जने के गन किसी वातावरण ---

वे दोंनो ही सहमकर एक दूसरे से लिपट गये । बस गन की इस गर्जना के बाद वे किसी प्रकार की कोई आवाज न सुन सके ।

पहले वे एक दूसरे से चिपके थर थर कांपते रहे , फिर नुसरत बोला "। तुगलक "---

" हां नुसरत ।"

" साले , लगता है कोई पागल जासूस इस जंगल में आ गया है "। भागो "---

" सचमुच तो होता अक्लमंद अगर जासूस ---, इस तरह संगीत बजा कर हमें सतर्क न करता बल्कि चुपचाप हमें इस तरह दबोच लेता जैसे बिल्ली चूहे को दबोच लेती है । के मारधाड़ बिना तो जासूस महान "---- था रहा जा चला कहे तुगलक " काम करते हैं ।"

" बिल्कुल ।"। चाहिए उठाना फायदा से जासूसी की जासूसों बेवकूफ हमें "---- कहा ने नुसरत "

" भागो ।मे आपस और लगाया नारा ने तुगलक "ं हाथ पकड़ कर दोनों ही भाग लिये ।

पर्स सहित दोंनों फिल्में तुगलक के हाथों में सही सलामत थी ।

वे अंधेरे जंगल में वेतहाशा भागे चले जा रहे थे । इस प्रकार मानों भूतों कोइ टोली उनका पीछा कर रही हो ।

अन्धेरें में कई स्थान पर ठोकर खाकर गिरे भी , किन्तु उठ कर फिर दौड़ने लगते ।

अन्त में जंगल के बीच वनी एक इमारत को देखकर वे रूक गये ।।।।

बुरी तरह फूली हुई सांसें लेकर उन्होंने एकदेखा को दूसरे-, फिर इमारत को और फिर एक।। को दूसरे-

दोनों डी आखें एक है कैसी इमारत यह बीच के जंगल कि थीं रही पूछ से दूसरे--? अपनी फूली हुई सांस पर पहले संयम पाया । नुसरत ने बेला कौन बेवकूफ है, जो इस जंगम में रहता है ।।

" बेवकूफ तुम हो जो तुमने यह सवाल किया ।"

खा जाने वाली नजरों से नुसरत ने तुगलक को घूरा बेले"मतलब। क्या "---

" अबे यही सवाल तो मैं तुमसे करने बाला था ।"

" जरा सोचने दे ।वह मानो लिया बना पोज ऐसा ने तुगलक उपरान्त के कहने " दुनिया का सवोंत्तम विचारक हो । कोई प्रेमी बात सोचने में तल्लीन हो होगया हो जो मानव जाति को नया मार्ग दिया सके । फिर उसने अपनी समाधि तोड़ी बोला ---" सोच लिया ।"

" क्या सोचा ?" नुसरत ने पुछा ।

" निश्चित रूप किसी लकड़वग्घे ने यह इमारत अपनी लकड़वग्घी केलिये बनाई है ।दीम्ग अपने " का मलीदा निकालते हुए तुगलक ने बतीयालकड़वग्घी अपनी उसे"- से उतनी ही मोहब्बत होगी जितनी मेरे अब्बा को अम्मी से "....

"अबे चुप देगची के ।"

"गाली देता है ।"

किन्तु तुगलक पर लेशमात्र भी तो असर न हुआ । वह कहता हीं चला गयातुझे"- नहीं पता ये, पुराने जमाने के राजा महाराजा- । थे करते भी किया शिकार का शेर बारकिल्लत की डालते पड़ाब बार-' से बचने के लिये वो जंगल में इमारत बनवा लिया कंरते थे । ये सब बातें मुझे एक दिन ख्बाब में चमकी थीं । यह ही चमका था कि इमारत को शिकारगाह कहते हैं ।"

"सच ।तो ख्बाब ऐसा"-बोला नुसरत " मुझे मी चमका था ।"

-"ये शिकारगाह ही है ।"

"अबे सुन तो सही, मुझे क्या ख्वाब चमका था ।के अब्बा बजाय की अम्मी कि था चमका मुझे "---गया चला कहता नुसरत " ".......पैदा से पेट

"नुसरत ।उ "सकी बात बीच में ही काटकर तुगलक ने कहा छोड बात की ख्वाब "---- यार, तू ये क्यों भूल रहा है कि हम जासूस हैंमोटे छोटे भी जासूस और- नहीं"। है जासूस महान सबसे के दुनिया-

"इस हकीकत को मैं कभी नहीं भूलता ।"

" तो फिर इस शिकारगाह में छुप जायें । तुगलक ने राय दीभी कितना साला"---- बड़ा जासूस आ जाये किसी को शक नहीं होगा कि हम यहां हैं । तू वीं सोच कभी कोई ये सोच सकता है कि शेर की मांद मे चुहा होगा? "

" कभी नहीं ।"

" तो आ फिर ।"। देंखेंगें घटाना जोड़ का फिल्मों इन अन्दर "---- कहा ने तुगलक "

इस प्रकारहमारे ये---- दोनों महान जासूस शिकारगाह के अंदर चले गये । गया बनाया द्वारा राजा किसी पहुच बहुत सचमुच " । था ही शिकारगाह

घूमते घूमते वे एक कमरे में पहुंचे । कमरे में अंधेरा था, जिसे पहले तो उन्होंने' टार्च की रोशनी से दूर किया, फिर कमरे की एक दीबांर में लगी मशाल जला कर , प्रकाश हो गया ।

कमरा देखने से ही आभास होता था कि कम। है रखा नहीं कदम यहां ने इन्सान किसी से वर्ष एक कम-से-

-"'अब हम जानी पाकिस्तानं के बीर सपूत सुरक्षित है ।"

" तुम कुछ सुरक्षित नहीं हो चमगदड़ के बच्चो !!!!!!!। गूंजी आवाज अन्य एक "!

पलक झपकते ही दोंनों ने रिवॉल्वर निकाल ली थी ।

"कौन है बे ?" नुसरत गुर्राया महान जैसे हम ने औलाद की भिण्डी किस "-- जासूसों को गाली देने की हिम्मत की है ?सामने आ सालेहलम बनाकर मुसल्लम---- कर जायेंगे ।"

"तुम दोनों का सिर मुंडवाकर चुटिया एक साथ बांध दूंगा ।बाहर के कमरे " से आवाज अाई ।

बौखलाकर तुगलक ने अपने शायरों जैसे लम्बे बालों पे हाथ फिराया । नुसरत की परेशानी यह थी कि वे प्रकाश मे कमरे और थे- वह की वात ।इस अंधेरा था बाहर के भलीभांति समझ रहा था कि बाहर बाला उन्हें आसानी से देख रहा होगा औरवे . उसे नही देख पा रहे हैं, तभी तो उसमे तुरन्त कहाउल्लू साला अब्बा मेरा"-- का गोश्त खाता था, तभी तो मुझे अंधेरे में भी दिखता है ।"

अभी वह कह हीं रहा था कि दरवाजे के बाहर किसी कै जूतों की आवाज गूंजने लगी टक्"...टक्"! टक्-

" अा जा बेटा ।"!नलोट बनायेगे"---पड़ा बोल तुगलग तो कहा ने नुसरत "

.स्थिर और' सन्तुलित कदमों से कोई चल रहा था ।

दरवाजे पर एक परछाई उभरीरिवॉल्बर पकड़ की पंजों के दोनों है तगडी लम्बी- पर मजबूत हो गई ।।

कमरे से प्रविष्टि होकर वह परछाई मशाल के प्रकाश मे... आ गई ।

साथ ही उसने कहापट्ठ के उल्लू दूंगा वना जरूर बाल्टी तुम्हें "--ो "!

-"रूसी चचा ?" एक साथ दोनों क मुहं से निकला ।

बोगारोफ ही था वह,बोला --"चचा नहीं बाप कहो ।

दोनों की नजरे मिली । रिवॉल्बर झुक गये । नुसरत ने कहाकों गलती हमारी "---- क्षमा की टोकरी में फेंक दो चचा हमें क्या पता था तुम भी जंगल में तुम कवड्डी खेलने आये हो, वर्ना कसम मियां भुट्टो की "......कभी हम---

" तुम्हारी कवड्डी बहुत देर से देख रहा हूं मैं ।" ---कहा ने बागरोफ "
पाकिस्तान के ढक्कनों वह फिल्म मुझे दे दो जो तुम्हारे हाथ लगी है ।"

" हम तो तुम्हारे ताबेदार हैं चचावागार ही दोनों साथ एक कहकर "---------ोंफ की तरंफ बढे । समीप पहुचे । चरणों में झुक ग्रये । अन्तर्राष्ट्रीय जासूस मण्डली में सर्वाधिक उम्र का जासूस बगारोफ ही था । हर राष्ट्र का जासूस चचा कहता था । उसे सम्मान करता था । पैर छूता था ।

नुसरत तुगलक ने भी परम्परा निभाई ।

एक मुस्कान बामारोफ के होंठों पर उभरी दोनों के सिर पर हाथ फेरकर बोला".........बच्चे के कबूतर रहो जीते"-----

औरं हद करदी उन्होंने ।

बागारोफ का वाक्य बीच में ही रह गया अौर वह धड़ाम से चारों खाने चित गिरा ।

हुआ यूं कि दोंनों' महान जासूसों ने एकसाथ, झटके से बागारोफ़ की दोनों टांगें खीच ली ।

स्वप्न में भी बागरोफ को ऐसी उम्मीद न थी । तभी वह मात खा गया । सिर का पिछला हिस्सा फर्श से इतनी जोर से टक्कराया कि सन्नाकर रह गया बागारोफ ।

दोनों बागरोफ के ऊपर सवार थे, तुगलक कह रहा था है मारी पछाड धोड़ी कैसी .भाई नुसरत देखा"---?।"

" बुढ़ापे में चचा, फिल्म देखना चाहते थे ।। हँसा नुसरत "

" देखी चचा "! नुसरत ने बागारोफ से कहाकितनी"---- बढिया फिल्म दिखाई । इसे कहते हैं दुलती मार ।"

उसकी इस हरकत पर बुरी तरह बौखलागया था बागरोफ बोला"। अण्डों के मच्छर नहीं छोडुंगा तुम्हें"----

" छोड़ने का सवाल तुम्हारे लिये नहीं चचा हमारे लिए है।"----कहा ने नुसरत " जामुन के पेड़ पर से टपका था मैं । जब कोई जामून खाता है तो उसकी जीभ नीली हो जाती है । जब मै किसी का किर्या कर्म करता हूं तो उसका शरीर नीला पड़ जाता है ।"

बागरोफ कसमसाया ।।।

कसमसा कर उनके बंन्धन से मुक्त होने हेतु बागरोफ ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग किया , किन्तु टस से मस न हो सका वह ।

"पिछले जन्म में अंगद का पैर था मैं ।। कहा ने नुसरत "

" मैं था वह धनुष जिसे सीता ही उठा सकती थी । । लगाई तान ने तुगलक "

और सचमुचबाग था लगा ही ऐसा-ारोफ को । पहले कभी ऐसा मौका नहीं आया था कि वह नुसरत । हो भिड़ा है तुगलक-था पाया ही करते बाते मूर्खतापूर्ण उन्हें हमेशा । उस समय बागारोफ सोचा करता था कि न जाने पाकिस्तान ने अपनी सीक्रेट सर्विस में कैसेहै लिया कर भर्ती को रंगरूटों कैसे-, किन्तु अब जबकि वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग करने के उपरान्त भी उनके वह वन्धनें से मुक्त नहीं हो पा रहा था, उसे सोचनां पड़ा कि नुसंरत और तुगलक में कोई विशेष बात अवश्य है जो इन्हें पाकिस्तान ने इस अभियान पर है भेजा है ।

" चचा में बन्धन् जैसे शिकंजे अपने"! जकड़े नुसरत बोला" । हूं सुनाता किस्सा का बेगम अपनी तुम्हें मैं अव"---
" चुप वे जामुन की औलाद हाल का छडी लाल अपनी को चचा मैं पहले"-डांटा को नुसरत ने तुगलक जकड़े को बागारोफ " ! "!......

"अवे मुझे छोड़ो तो सही हरामी के पिल्लो-दहाड़ा बागरोफ "..."सालो मेरा गजरवत ।"

कहते कहते ही बागारोफ ने एक। मारी में आंख कों दोनों उंगली एक-

" मर गया नुसरत ।"

"बचा तुगलक ।"

चीखते हुए दोनों ने बागारीफ को छोड़ दिया ।

उछलकर खडा हो गया बागारोफ । देखा। है खड़े दोनों वे सामने-

बागारोफ ने जिस आंख में उँगली मारी थी, बागारोफ की अोर देखते हुये उसी आंख को बारथे। रहे दबा :वार-

नुसरत कह रहा था... ये तुमने क्या किया चचा, मैं तो तुम्हें अपनी बेगम का किस्सा सुना रहा था ।

--"अव मैं तुम्हारी उडनतस्तरी बना दूंगा भूतनी वालों"! है रखा क्या समझ मुझे तुमने"----दहाड़ा बागारोफ-

"दूध का वीज ।। बोला तुगलक "

नुसरत ने कहा"! अण्डा का कुत्ते"--

' होश काबू में न रख सका वागारोफ । वह झपट पड़ा । परन्तु इस बार लेशमात्र भी लापरवाह नहीं था वह ।

जान चुका था कि नुसरत और तुगलक के शरीरों में अपरिमित शक्ति है । उसका एक जवंरदस्त घुंसा नुसरत के चेहरे पर पड़ा । गजब की फुर्ती के साथ तुगलक की तरफ घूमा
किन्तु तुगलकनहीं--नंहीं "-,.....चचा तरह इस रखे हाथ पर चेहरे हुआ कहता "! पीछे हट रहा था मानो बागरोफ का घुसा नुसरत के नहीं, उसके चेहरे पर लगामुझे चचा"---- मत मारो । मैं बचा हूं तुम्हारा, नादान हूं"। हूँ नासमझ-

पूरी सतर्कता के साथ बागारोक तुगलक की तरफ ब्रढ़ रहा था, किन्तु 'नुसरत की तरफ से आवाज' आई पहले तुझसे "------साले था कहा ही, प्यार के हथगोले कि चचा को मत छेड़ चचा बहुत खतरनाक हैं, लेकिन नहीं माना चल, माफी मांग लें ।"

एक क्षण पंर नुसरत हटकर से तुगलक दृष्टि की बागारोफ लिये के क्षण एक सिर्फ-गयी कि----

कमाल कर दिया तुगलक ने ।

उस एक ही क्षण में बागरोफ के चेहरे पर ऐसा घूंसा पड़ा कि उसकी आंखों के हवा फूट एक । उठे नाच तारे पीले-लाल सामने-

फर्श से धड़ांम वह उछलकर में पर जाकर गिरा ।

जबरदस्त फुर्ती के साथ उठकर खड़ा हो गया था बागारोफ ।

बागारोफ का दिमाग बुरी तरह झन्ना रहा था ।

एक नजर उसने दोंनों को देखा।।

नुसरत हाथ जोड़े खड़ा था । कह रहा थामाफी ने से तरफ की नालायक इस"-------- मांग रहा हूँ है नादान ये चचा !, 'तुम्हारा बच्चा है। इसे माफ कर दो ।।।

इस बार बागरोफ ने उनमें से किसी पर जम्प लगाने की मूर्खता नहीं की।

अपनी एक आंख से वह नुसरत की देख रहा था तो दूसरी तुगलक पर स्थिर थी ।

" अबे नुसरत । को चचा होगया क्या ये "--- था रहा कह तुगलक जमाये दृष्टी पर बागरोफ ", ये तो भैंगें होगये ।"

मैँने पहले ही कह था न तुझसे चंचा से मजाक मत कर । को वात की तुगलक "जबाव अवश्य दे रहा या वह, किन्तु दृष्टि बागारोफ पर ही स्थिर थीदेख अवे"----- ले, चचा की आँखें घूम गयी हैं । यहां जंगल में साला डॉक्टर भी नहीं मिलेगा ।"

" मैं तुम्हाराआंख एक-एक तरह उसी "। इक्कों के हुकम सालो दूंगा बजा डमरू--- से दोनों को देखता हुआ बागारोफ बोला--- कि जायेगा लग पता में देर थोड़ी "- तुममें से किसकी आंख घुमती है, और किसकी नाक । किसके दांत टूटते हैं और किसकी आँत ?"

" नही चचा, ऐसा मत करना ।। उठा गिड़गिड़ा तुगलक "

बागरोफ अच्छी तरह समझ चूका था, बातों से जितने मूर्ख नजर आत्ते हैं, ये असल में उतने ही खतरंनाक है। कहने को तो वह न जाने क्या कह रहा था किन्तु दिल में सोच रहा था कि वह एकसाथ इन दोनों पर काबू कैसे पाये ? उसका दिमाग बडी तेजी से काम कर रहा था । ईतना वह समझ चुका था कि, अगर वे एक बार वह हावी हो गये तो फिर वह बच न सकेगा है अचानक उसकी नजर मशाल पर गई।

वह फुर्ती के साथ मशाल पर झपटा तो---

"अरे...अरे"। पकड़ इन्हें-- तुगलक गये हो पागल चचा ... रे...

किन्तु, इससे' पूर्व कि इनमें से कोई वागारोफ के झपटे बागारोफ ने मशाल सम्भाल ली और विद्युत की तीव्रता के साथ उनकी तरफ घूम गया । उस पर झपटने का प्रयास कर रहे दोनों ही ठिठक गये ।

नुसरत कह रहा था तुगलक था न कहता मै"--, हमारे मजाक को चचा गलंत समंझेंगे वही हुआ । अब तुझे नहीं छोड़ेगे चचा । मर साले मैं तेरी क्या मदद कर सकता हूं ?"

हाथ में मशाल लिये बागारोफ नुसरत की तरफ ही बढ़ रहा था ।

उधर तुगलक कह रहा था नुसरत की क्या गलती है चचा, गलती तो मेरी है । मजाक तो मैंने किया था, सजा मुझे दो ।"

" सच चचा तो मैं चचा दो ही इसे तो है देनी सजा । है नहीं गल्ती कोई मेरी "----- ने नुसरत लिये पकड़ कान "! "......

तेजी से घुमाकर मशाल का एक बार बागरोफ ने नुसरत पर किया ।
गजब की फुर्ती के साथ स्वयं को वचाता हुया नुसरत चीखातुगलक पदृठे के उल्लु ओ अबे"- की दुम, साले मरवा दिया मुझे ।"

और...जैसे रो पड़ा तुगलकचचा नहीं"-, मेरे गुनाहों की सजा नुसरत को न दो । कहता हुआ तुगलक अभी उस पर झपटने ही बाला था कि बागरोफ ने तीव्रता के साथ उसकी तरफ मशाल घुमा दी ।

मशाल सटाक से उसके चेहरे पर लगी ।

" मर साले और कर चचा से मजाक ।। चीखा नुसरत "

सचमुच, तुगलक के चेहरे पर मशाल बहुत जोर टकराई थी । उसके मुंह से चीख निकल गई, किंतु तुरन्त से तरफ की बागरोफ - से वार वाले होने ही उछलकर स्वंयं को बचाता हुआ वह रो पडा बोलाचचा दो कर माफ "--,मैं उसे चिमटे की कसम खाकर कहता हैं, जिससे पकड़कर मेरे अब्बा ने मुझे अम्मी क पेट से निकाला था । अब तुमसे कभी मजाक नहीं करुगाँ ।"

"अब रोता क्या है साले चचा के पैरों में गिरकर माफी मांग।" नुसरत ने उसे डांटा ।

तुगलक ने जैसे ही बागरोफ के कदमों में झुकना चाहा, बागारोफ ने पुन। किया वार का मशाल पर उस :

" नहीं चचा , ऐसा न करो । ने तुगलक "'कहा"। दो तो मौका का मांगने माफी मुझे"-

तुगलक गिड़गिड़ाता रहा ।

' रह कयों ही किया मजाक से चचा उसने कि था रहा कोस को तुगलक नुसरत रहकर-? बीच बीच में वह बागरोफ से तुगलक को क्षमा कर देने का भी अनुरोध करता है मगर
तुगलक और नुसरत की चाल बागारोफ समझ चुका था । वह समझ चुका था कि जिस तरह मुर्खता पूर्ण बाते करने में वे एक दूसरे से काफी आगे हैं, उसी प्रकार बातों में फंसाकर बार करने में भी एक से आगे एक है ।
वे दोनों इसी चक्कर में थे कि जिसका भी मौका लगे, यह बागारोफ को दबोच ले जबकि बागरोफ का प्रयास था कि इतना अवसर उनमें से किसी को भी न मिल सके ।
बे दोनों ऊटपटांग बातों के. । यागारोफ हुआ विजयी--किन्तु रहे में बचाव अपने साथ-

करीब तीस मिनट पश्चात् एक प्रकार से वे दोनों बागारोक की कैद में थे ।कई पलों के लिये तीनों के दिल की धड़कनें मानों बन्द हो गई ।

किसी बुत की भांति वे खड़े रह गये । पर तट सागर --

उन तीनों के सामने वतन पड़ा था । झुलसा हुआ पर मस्तक । वतन हुआ जला --- पड़ा बल इस बात का प्रमाण था कि वह वतन ही है । चमन का मसीहा । धनुषटंकार का भाई । अपोलो का मालिक ।

गीले रेत पर जला हुआ वतन पड़ा था ।

फूटचीखकर चीख अपोलो । नादिर पड़ा रो फूटकर- अपने सींग रेत में पटकने लगा । धनुषटंकार है मुंह से एक डरावनी आवाज निकली रोने की आवाज । वह भी सिर पटक पटककर अपोलो की तरह रोने लगा ।

नादिर किसी बच्चे की तरह कुट। था रहा रो कूटकर-

ना जाने कितनी देर तक वतन के दीवाने पागलो की तरह रोते रहे ।

जब उन्हें होश आया तो देखा। थे खड़े घेरे उन्हें नागरिक हजारों के चमन-

सभी रो रहे थे । सारा चमन रो रहा था। रोता क्यों नहीं, उनका मसीहापड़ा सामने जो देवता उनका- था।। हुआ जला----

अचानक। निकली कराह एक से मुंह के वतन-

नादिर के साथ साथ अपोलो और धनुषटंकार चौके । उन दोनों के मस्तक उन्हीं के खून से सने थे ।

"अभी महाराज जिन्दा हैं ।"। चलो ले में महल इन्हें"-निकली किलकारी एक की खुशी से मुंह के नादिर हुए रोते "

फिर जले हुए वतन को महल में लाया गया । शरीर पर से इस तरह के तिनके उतर रहे थे जैसे जले हुये गत्ते पर से उतरते है । चमन के यौग्यतम जसूसों ने राष्ट्रपति भवन के उस विशेष कक्ष में पड़े पलंग को धेर लिया ।

अभी वे अधिक कुछ नहीं, कर पाये थे कि वतन ने कराहकर नेत्र खोल दिये । फफोलेयुक्त आखों से उसने चारों तरफ देखा । यह समझते ही कि वह राष्ट्रपति भवन में है, बिस्तर पर उठकर बैठ गया ।

डॉक्टरों ने इन्कार किया तो वतन की वाणी गूँज उठी सी कुन्दन जलकर औरर है जला सिर्फ---साथियों है नहीं मरा बतन"-"। है चमका तरह

सुनने बाले रो पड़े । धनुषटंकार और अपोलो उससे लिपट गए ।

फिन्तु।।। उभरी मुस्कान युक्त दर्द एक पर होंठों हुए जले के वतन देखा ने बालों देखने-

वतन बोला, "रोते नहीं पागलो, इस दुनिया ने वतन की दिखा दिया है कि दुनिया कितनी धिनौनी हैं ? कितनी डरावनी और बदसूरत है, मेरी तरह । मैं इस दुनिया को जवाब दूंगादिया हटा अञ्चा-अलग को अपोलो अ◌ौर धनुषटंकार कहकर "। जबाव--उंसने ।

मुलाजिम रोकते ही रह गये अ◌ौर वतन उठकर खड़ा हो गया । डॉक्टर यह कहते ही रह गये कि अभी उसका उठना ठीक नहीं है, लेकिन वह नहीं माना । चमन में किसका साहस था जो वतन की इच्छा का विरोध करता.

यूं जला हुआ वतन बाहर आ गया । ।

चमन का बञ्चा। था खडा बाहर के भवन राष्ट्रपति बञ्चा-

एक दृष्टि वतन ने सागर की भांति उमड़ते विशाल ज़न् समुदाय 'पर डाली । मस्तक पर वल पड़ गया । आंखों से नीर तैर उठा ।।

वातावरण में मौत का सा सन्नाटा था । अभी कुछ कहने ही जा रहा था वतन कि सफेद, बेदाग उसके लिये कपडे जैसे दूध--का फ्रेम सुनहरे । पहुंचा अपोलो पास एक काला चश्मा भी था उसके पास। रोते हुए अपोलो ने वतन का वह सामान उसके आगे कर दिया ।

हल्के से मुस्कराया वतन ।अंपोलो को प्यार किया । तड़प। उसे चूमा खूब-तड़प-

फिर। लगाया चश्मा पर आँखों उसने पहने कपड़े सफेद ही समक्ष के प्रजा अपनी-

सारा चमन वहाँ मौजूद था, लेकिन संन्नटा ऐसा कि सुई भी गिरे तो बम जैसा विस्फोट हो । एक बार पुन अपने ने बंतन : । देखा से अन्दर के चश्मे को दीवानों फिर---चीपहुं-तक कानों के जन्-जन वाणी की वतन-'" प्यारे देशा वासियों ! मैं देख रहा हैं कि आज तुम्हारी आँखों में आसू हैं ।

हर आँख में आंसू देख रहा हूँ । मुझे ये अ ाॅसू पसंद नहीं । जो आंसुओं को न रोक सकता हो, वह उन्हें काले चश्मे से ढक ले । क्योंटुकडों के जिगर मेरे-- की आँखों में आँसू क्यों हैं ? अपने वतन की सूरत देखकर ? यह देखकर कि कल का खूबसूरत वतन आज जलकर दुनिया का सबसे वदसूरत व्यक्ति बन गया है ? इसमें रोने की कोई वात नहीं है प्यारे चमन के निवासियों । रोने की बात तो यह है कि ये दुनियावतन तुम्हारे ने दुनिया उसी । है वदसूरत तरह की वतन तुम्हारे- को अपनी तरह बदसूरत बना दिया है । अभी नहीं बताऊँगा प्यारे देशवासियों कि मुझे बदसूरत किसने बनाया ा है ? यह रहस्य मैं तुम्हें नहीं, एक साथ सारी दुनिया को वतलाऊंगा । तभी आप भी जान लेंगे। मैं अपनी प्रयोगशाला में जा रहा हूँ । कुछ ही देर पश्चात दुनिया के हर टी० वी० सेट पर मेरा चेहरा उभरेगा । सारी दुनिया के साथ आप भी जान तेने कि यह दुनिया कितनी बदसूरत है ।"

एक क्षण सांस लेने हेतु रूका वतन, फिर बोलाकहना ही इतना सिर्फ से लोगा आप"- है की कोई भी घवराये नहीं । वतन अभी जिन्दा है । आज मैं आपका खूबसूरत वतन न सही, जला हुआ वतन तो हूँ । बदसूरत वतन तो है । कम तक समय उस कम-से-तक जब कि वतन किंसी भी सूरत में जीवित हैनहीं से दुनिया को चमन--, दुनिया को चमन से डरना होगा । अगर तुम्हें वतन क् चेहरे से नहीं, दिल से मुहब्बत है तो तुम सबको कसम है अपने वतन की, कोई भी एक भी आँसू आँखों में न आने दे । जो भी यह जानना चाहता हैकि मैं आगे क्या करने जा रहा हूँ, वह कुछ ही देर बाद टी० बी० पर मेरी आबाज सुन ले । जो कुछ मुझे करना है, उसकी घोषणा मुझे सारी दुनिया के सम्मुख करनी ।"

पुन। सन्नाटा पूर्णतया । देखा को यजनसमुदा ने वतन होकर चुप लिए के क्षण एक : कोई पक्षी तक भी तो नहीं चहचहा रहा था ।

सन्नाटे कों बेंधती वतन की वाणी पुनफिलहाल"----टकराई से पर्दों कर्ण के जनसमुदाय : सिर्फ इतना ही कहना है मुझे आपसे कि आप लेशमात्र भी न घबराएँ है तनिक भी चिंतित न हों । आपके वतन में सिर्फ उतना ही परिवर्तन आया है कि वह बदसूरत बन गया । यह बदसूरती अच्छी ही है, जो मुझे देखेगा उसे याद आ जाएगा कि ये दुनिया कितनी है
बदसूरत है । मुझे बिदित है कि आपके हृदय में विभिन्न प्रकार के प्रश्न चकरा रहे हैं । मैं वादा प्रशन सभी आपके कि हूँ करता- कुछ मैं उत्तर का, हो देर बाद टी ० दी ० पर दूंगा । फिलहाल मुझे प्रयोगशाला जाना ।"

वतन का वाक्य पूर्ण होतेगया। पहुंच लेकर कार सफेद की वतन पर द्वार मुख्य धनुषटंकार हौते-

वतन कार में बैठा।

स्वयं ड्रांइविग सीट पर ।

अपीलों और धनुपटकार ने बैठना चाहा तो----

"तुम नहीं मोण्टों । अपोलो, तुम भी नहीं ।वतन " ने ,गंभीरता के साथ कहा..."आज हमें अकेलेे ही प्रयोगशाला । जाना- वी.टी का भवन राष्ट्रपति खोल कर तुम भी तुम भी सुनो हम क्या कहते है ?"

अवाक् से खड़े रहगए दोंनों।

कार एक झटके के साथ आगे बढा दी थी वतन ने । काई की भांति कटकर भीड़ ने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया ।

"हमारा देवता ।। पडा चीख नादिर में भावावेश "

"जिन्दाबाद । उठा कांप गगन से जयघोष के जनसमुदाय "

"वतन जिन्दाबाद । उठी कर नाद दिशायें समस्त से नारों के "!

कार ड्राइव करते वतन के होंठों पर ऐसी मुस्कान उभरी थी मानो इन नारों ने पुनसुन्दर जैसा पूर्व से जलने : बना दिया हो ।

अपोलो और धनुषठंकार अबाक् से खड़े रह गये ।

पन्द्रह मिनट पश्चात टीचेहरा का वतन बदसूरत और भंयकर डरावरना पर बी . उभरा । वह कह रहा था बी .टी आपके"---- लिये इसके ..पडा बिघ्न में प्रोग्राम मैॉं क्षमा चाहता हूँ । कुछ कहने से पूर्व आपको ये बता दूं कि दुनिया के प्रत्येक उस टी बी.. है आँन समय इस जो पर सेट, मेरा ही चेहरा और आवाज है । कुछ लोगों के लिए यह आश्चर्य की बात होंगी कि उनके चलते हुए टी वी . प्रोग्राम बन्द क्यों हो गए और मेरा चेहरा कैसे उभर आया । इस प्रश्न के उत्तर में मैं सिर्फ इतना ही कहना उचित समझताकि हैं साधन ऐसे पास मेरे कि-- मैं जब भी चाहूं । रेडियो अथवा टीसम्पूर्ण एकसाथ से माध्यम के वी ., दुनिया से संबन्ध स्थापित कर सकता हूँ ।

मै चाहता तो रेडियो पर आपको सिर्फ अपनी आवाज भी सुना सकता था ।

किन्तु नहींअप में को लोगों आप साथ-साथ के अंबाज-ना चेहरा भी दिखाना चाहता था ।

संभवत। मुझे हो भी पहचाना आपने :

मेरी सूरत में थौड़ा परिवर्तन आ गया है, अतन पहचान मुझे आप कि है संभव : सके हों । अतः आपको अपना परिचय देदेना चाहता हूँ । मैं महान सिंगही का शिष्य औऱ नंन्हे हूं। वतन राजा का चमन देश से-

सबने मुझे देखा है, किन्तु वह वतन वहुत सुन्दर था ।

मेरी सूरत देख आप यह भी सोच सकते हैं कि वतन के नाम से यह कौन बदसूरत व्यक्ति बोल रहा है, परन्तु किसी प्रकार के भ्रम का शिकार न हों । वास्तव मे मैं दुनिया की सूरत में तो अब आया हूं । अ◌ाप भी शायद इस बात को जानते होंगे कि मेरी तरह ही बदसूरत है दुनिया ।

सच । दुनिया यह है बदसूरत बड़ी -- कि थे कहते ही सच सिंगही महान गुरू मेरे ---

मैं कहता था । था खूबसूरत मैं पहले जैसे तरह उसी है खूबसूरत बड़ी दुनिया ----

मेरा भ्रम टूट ग़या ।

सिंगही गुरू जीत गये ।

मैंने वेवज एम बनाया था ।

हर देश ने यह आदेश देकर अपने जासूसों को चमन के लिए रवाना कर दिया कि चमन से या बेवज एम का फार्मूला गायब कर दो अथवा वतन का अपहरण कर लो ।

मैं जानता हूँ है किया कार्य घृणित्र यह ने महाशक्तियों जिन कि-, सारी दुनिया के साथचेहरा मेरा समय इम भी वे साथ- देख और आवाज सुन रही हैं । सुन रही हैं तो गौर से सुने । वतन का एक एक लफ्ज विशेष रूपसे उन्हीं के लिए है । मैं उनका नाम सारी दुनिया को बता रहा हूँ वे देश हैं रूस, अमेरिका, चीन, इंग्लैड और नादान पाकिस्तान भी । इन् पांच देशों ने अपने। भेजे चमन जासूस-

अन्तर्राष्ट्रीय अदालत और युराष्ट्र अन्य किसी इन्हें मैं कि ल सुन ओ.एन. में घुसकर महत्त्वपूर्ण चीज चूरने का दण्ड दूंगा । सारी दुनिया सुन ले कि वतन इन्हें दण्ड देगा ।

चीनलें सुन कर्णधार के चीन--- जिसके जसूसों ने मेरे चेहरे पर यह परिवर्तन किया है । मुझे जला डाला है । वे सतर्क रहे--- चेहरे मेरे भी चीन उनका कहीं की भांति जलकर राख न हो जाये । मैं उनसे प्रतिशोध लूंगाप्रतिशोध का वतन --- कितना भयानक होगा, सारी दुनिया उसे अपनी आंखों से देख सकेगी । जिस देश ने मेरे विरुद्ध चीन की सहायता की उसका हश्र भी चीन के समान ही होगा ।

उन शब्दों के बाद दुनिया के टी। गायब चेहरा का वतन से स्क्रीनों बी.

वतन की पूरी बात सुनने के पश्चात् अलफांसे ने कहा"। होगा दुख असीम को देशवासियों ही तुम्हारे तो इससे लेकिन"---

एक क्षण के लिए वतन के गुलाबी होंठों पर---गई दौड़ मुस्कान चितपरि-चिर- हल्के से बोला दुख का देशवासीयों मेरे"--- होगा अस्थाई, चचा हूं जानता मैं ! कि जब वे अपने वतन को जला हुआ देंखेंगे तो उन्हें कितना दुख होगाकिन्तु- उन्हें यह अस्थायी दुख देना मेरे लिए आवश्यक है।"

'"लेकिन तुम्हारा उद्देश्य क्या है ?"

" हां चचा, आपका यह प्रश्न अति महत्वपुर्ण है ।इन मैं"-कहा ने वतन " महांशक्तियों को जी भी दण्ड देना चाहता हूँ, खुलकर दूंगा । सारी' दुनिया जानेगी कि वतन क्या कुछ कर रहा है । यूमैं में दृष्टि की अदालत और .ओ.एन. अपराधी होऊंगा । चीन निश्चय ही मुझ पर मुकदमा करेगा । अदालत में वह यह भी प्रमाणित करने ही चेष्टा करेगा कि मैंने क्या कुछ किया है । भले ही सभी देश आजाद हों , किन्तु यूदायरे के कनूनों निश्चित सभी से माध्यम ओं.एन. में बंधे हैं । मैं उस दायरे से बाहर रहना चाहता हूं ।"

" किस प्रकार ?"

एक क्षण तक अलफासे की तरफ देखता रहा वतन, फिर उसकी बात का कोई उत्तर न देकर वह पिशाचनाथ की तरफ देखता हुआ बोलाउत्तर का प्रश्न एक मेरे तुम पहले "--- दो पिशाच ।"

अगर उत्तर बन पड़ा तो अवश्य दूंगा ।में स्वर सम्मानित पिशाच होकर सतर्क " बोला । दिल की वतन पिशाच में दिल ही- :वह । था चुका हो प्रभावित से महानताओं वतन का बहुत सम्मान करता था ।"

"जो योजना मैंने तुम्हे बताई है ।भी तुम साथ-साथ के चचा वह "-कहा ने वतन " सुन चुके हो । यह भी समझ गए हो कि मेरी योजना का मुख्य अंग तुम हो । हकीकत पूछो तो तुम्हें दिमाग में रखकर ही मैंने यह योजना तैयार की है । तुम्हारे ही मुंह से सुनना चाहता हूँ कि क्या वह सव कुछ तुम सफलतापूर्वक कर सकते हो जो कुछ मेरी योजना में करना है ?"

" कर तो सकता हैं, किन्तु "!....

हल्के से मुस्कराया वतन बोला। हूँ समझता अर्थ का किंन्तु तुम्हारी"---- तुम्हारी हिचक का कारण भी जानता हैं, लेकिन इस किन्तु को बीच में से हटाने से पूर्व तुमने यह जानंना चाहता हूं कि क्या तुम अपने चेहरे पर मेरी सूरत का ऐसा मेकअप कर सकते हो कि कभी कोई यह न जान सके कि तुम वतन नहीं, पिशाच हो ?"

"आप स्वयं भी कभी नही जाने सकेंगे ।"

"क्या तुम अपने शरीर को उस हद तक जला हुआ दिखा सकते हो, जितना मैंने बताया है ?"

"राक्षसनाथ के तिलिस्म से प्राप्त मेरे पास ऐसेभी का किसी कि है लेप ऐसे- शरीर जले नहीं अौर देखने बाले यही समझे कि वह जलकर राख होगया है ।" पिशाचनाथ ने थोड़े गर्व से कहा... बड़े बड़े डाक्टर भी उसका शरीर देख कर यह नहीं कह सकते किं वह जला हुआ नहीं है ।"

"चलने फिरने-, बोलने में मेरी नक्ल तो तुम कर ही लोगे ?"

"'इस काम में तो महारथ हासिल है मुझे ।पिशाचनाथ " ने कहा"। हूं सकता कर नकल हू-ब-हू भी की किसी मैं"-

एक क्षण की चुप्पी के पश्चात वतन ने पुनकिन्तु" तुम्हारी मैं अब"---कहा :' का निदान करता हूं ।"" कहने के पश्चात् अलफांसे पर दृष्टि जमाकर वतन बोलाहम । पहुंचाऊंगा में चमन बनाकर वतन हुआ जला मैं को पिशाचनाथ चचा"--- तीनों के अतिरिक्त सभी यही जानेंगे कि वतन जल गया है, वहां पहुंचकर पिशाच को क्या कुछ करना है, वह मैं बता ही चुका हूं । इधर मैं चीन में घुसकर अपना काम कर रहा होऊंगा, उधर मेरे मेकअप में पिशाचन्नाथ जला हुआ वतन बनकर राष्ट्रपति भवन में पड़ा होगा । जले हुए वतन के रूप में पिशाचनाथ सारी दुनिया के टैलीविजनों पर यह घोषना करेगा कि वह महाशक्तियों से बदला लेगा । चमन के नागरिक पिशाचनाथ से प्रार्थना करेंगे कि जब वह ठीक हो जायें तब वह महाशक्तियों से बदला लें । जले हुए वतन के रुप में पिशाच इस प्रार्थना को स्वीकार लेगा । बह आराम करेगा। इधर जो कुछ करना है"। करूंगा मैं--

" इससे क्या होगा ?"

" जव महाशक्तियाँ यह प्रचार करेगीकि- वतन यह सब कुछ कर रहा है तो जला हुआ वतन विश्व के सभी टैलीविजनों पर यह घोषणा करेगा कि बह महाशक्तियों को ख्बाव चमक रहा है । अभी तो वह ठीक भी नहीं हुआ है ।"

"ओह अंतर्राष्ट्रीय और .ओ.एन.यू यह तो "----निकला से मुंह के अलकांसे "! अदालतों से बचाव का रास्ता है ? तुम जो कुछ कहना चाहते हो, वह खूलकर अपने नाम से करोगे और दुसरी तरफ यह भी प्रमाणित करते रहोगे कि वतन तो अभी बिस्तर से नहीं उठा है ।

" बेशक"। मैंने है सोचा यही---

"बिल्कुल ठीक सोचा है तुमने ।"। हूँ करता समर्थन तुम्हारा "--कहा साथ के मुस्कान ने अलफांसे "

" तो फिर पिशाच की किन्तु सुलझा दीजिए चचामैं "--कहा ने वतन "! समझता हूं कि 'किन्तु' का कारण सिर्फ यह है कि जो कुछ मैंने इन्हें करने के लिए कहा है, वह करने का आदेश अभी तक इन्हें आपकी तरफ से नहीं मिला है"

"'मेरा आदेश है ।"

पिशाचनाय का चेहरा चमचमा उठा ।

उसने अलफ़ासे के चंरणस्पर्श कर लिए ।

वतन कह रहा थाचचा तो बस"---, हम जले हुए वतन को एक हैलीकॉप्टर में लटकाकर पहले सारे चमन के ऊपर घुमएंगें, अन्त में सागार में डाल देंगें। होश में आने पर पिशाचनाथ प्रयोगशाला में जायेगा । जिस ढंग से मैंने समझाया है, उसी ढंग से सारे विश्व से सम्बन्ध स्थापित करेगा ।"

-"सारा काम आपकी योजनानुसार ही होगा ।। कहा ने पिशाचनाथ "

औरहै।।। भी हुआ ही वैसा-हैं चुके पढ पाठक---

बागारोफ ने तुगलक की जेब से अभी पर्स निकाला ही था कि बह बुरी तरह बौखला उठा!

" अबे कौन चटनी का है ?" कहता हुआ वह उछल कर खड़ा हो गया ।

उसे ऐसा लगा था कि जैसे अचानक किसी ने उस पर छलांग लगा दी हो । बड़ी फुर्ती के साथ पलटकर देखा, कमरे के फ़र्श पर नुसरत और तुगलक के अतिरिक्त एक अन्य बेहोश शरीर पड़ा था ।

बागारोफ ने उसे ध्यान से देखा । ।पहचान लिया ।।

" मुंह से निकलाकम्पनी चाय की इंग्लैंड साला ये "---- का एजेंट यहाँ कैसे आ पड़ा ।"

ठीक पहचाना चचा, ये जेम्स बाण्ड है ।'" आवाज अाई ।

-"कौन है वे ।"। आ सामने तो है औलाद की हींजड़े असली"-----बागारोफ बीखलाया "

" तुम्हारा बच्चा है चचा ।"। है क्या आप कि है बात दूसरी ये "--गया आ में कमरे विकास हुआ कहता "

`"अबे"। गया आ से कहाँ यहाँ तू के पौदीने"-----बागरोफ पड़ा उछल ही देखते उसे ".......

विकास ने यहां पहुंचने से पहले ही बाण्ड के चेहरे पर से जैकी का फेसमास्क और अपने चेहरे से हैरी का फेसमास्क उतार लिया था ।

बागारोफ के सामने खड़ा लम्बा लड़का कह रहां थाप ये"----र्स हैलीकॉप्टर में से बाण्ड ने फेका था । परिणाम आप देख रहे हैं । पर्स मेरे हवाले कर"। दीजिए-

" वाह चिड़ी के इक्के ।'" सतर्क होकर पै'तरा बदला बागारोंफ ने..."ये खूब रही । इन साले पाकिस्तानी मुर्गों ने तो हमें इस फिल्म के चक्कर में मुर्गएक और दिया बना मुस्लम- तुम हो कि दालबनकर पोते के मुसलचंद में भात- आगये।"

"मैं तुम्हें धनिये की चटनी बना दूगा चचा ।"

" अबे"। के देंकची कहा क्या तुने ये"-निकाली आंखें ने बागारोफ ".....

गंभीर था विकास, बोला"---' ठीक कह रहा हूँ चचा, इन दोंनों फिल्मों कों चमन से मैंने गायब किया है, अतः इन पर मेरा अधिकार है । अच्छा है कि शराफत से ये फिल्में आप मेरे हबाले कर दें।"

" और अगर न करूं तो ?"

-"तोसकती रोक नहीं से करने प्राप्त फिल्में ये मुझे ताकत कोई की दुनिया "----हो कठोर लहजा का विकास "........, मैं आपसे".....

"बोलती पर ढक्कन लगा चिड़िया कें बच्चे । चलता बन जहां से
।जाकर नाड़ा बांधना सीख जाकर ।"

"क्या कहना चाहते हो चचा ?"

" मैं कहना चाहता हूं उल्लू की दुम फाख्ता किं हमारा नाम बागारोफ है । फूचिंग, हुचांग, ग्रीफित या बाण्ड नहीं । ही एक " चला कहे बागारोफ में ससां गया आंखों इन तेरी-,से माइक डरता होगाखाता बाण्ड खौफ का धमकियों तेरी---- होगा ।। तेरे नाम से चीन और अमेरिका कांपता होगा...। मैं रूसी हूं ।। रूसी हूं तुम । नाम मेरा है बागारोफ ! रूसी जन्मजात----------- जेब तो छटंकी जैसी में रहती है मेरी । फिल्म का ख्याल छोड़ कर भारत लौट जा, मां की गोद में बैठकर दूध पी । नाडा बांधना सीख ।"

"विकास को आंखें सुर्ख हो गई । हल्के से गुर्रा उंठा वह है"। चचा हैं रहे कर मजबूर मुझे अाप "-

'"अबे तू अगर मजबूर भी हो जाये बछिया के ताऊ, तो कौन सा मुझे सूली पर लटका देगा ।गया बिगड़ बागारोफ "..."हरेक को फूचिंग नहीं समझते ईंट के छक्के । अपनी, औकात नहीं भूलते की प्राप्त से गुलामों के चिडी इन फिल्में मैंनें ! है और".......

आगे के शब्द कहने का अवसर नहीं दिया विकास ने ।

एकदम किसी गौरिल्ले की तरह लम्बे तड़के ने छलांग लगा दी बागरोंफ पर ।।

किन्तु बागारोफ लड़के की नसन-स से वाकिफ ।। बागरोफ जानता था कि विकास किसी भी क्षण उस पर जम्प लगा सकता है । विकास के किसी भी हमले का सामना करने के लिए बागरोफ प्रत्येक पल तैयार था ।। लोमड़ी जैसी चालाकी साथ बागरोंफ ने खूद को बचाया ।

एक ही पल पूर्व जहाँ बागरोफ खडा था, उस स्थान के ऊपर से हवा में सन्नाता हुया विकास नुसरत के बेहोश शरीर पर जा गिरा ।

"अबे ।"! औलाद की रायते है रहा कर क्या ये"----था रहा कह बागारोफ खड़ा तरफ दूसरी "

फुर्ती से उठकर विकास ने अभी दूसरी जम्प लगाई ही थी कि
रेट....रेट........रेट-.........

जंगल में छाये भयंकर संन्नाटे को किसी गन ने झंझेड़ कर रख दिया ।

एकसाथ विकास और बागारोफ के मुंह से चीखें' निकल गई ।

दो गोलियाँ विकास, की टांगों में तो एक बायें कंधे में लगी थीं ।

दो गोलियों ने बागारोफ के कंधे तोड़ दिए । पर्स उसके हाथ से उछलकर कमरे की हवा में चकरा उठा ।

चीखकर दोनों उठे अ ौर अभी उनमे से कोई संभल भी नहीं पाया था कि---

-"एक भी हिला तो अनगिनत गोलियां उसके सीने में धंस जायेंगी । अन्दर व्यक्ति नौ हुए धड़धड़ाते ही साथ के चेतावनी इस " । आये घुस

सभी के हाथों में गनें थीं ।

दोनों में से कोई संभल भी नहीं पाया था कि बुरी तरह घिर गए ।

किंतु! नै लडके दिया कर कमाल उफ ......किन्तु ....

यह देखते ही कि उन्हें चीनियों ने घेरा है, विकास का जिस्म हवा में कलाबाजियां खा उठा । उन दो चीनियों नौ चीनियों में सबसे लम्बे चीनी पर झपटा वह ।। चीनियों की गनें गर्जनें ही जा रही थी कि-----

" नहीं "। करे न कोई फायर"----चीखा चीनी लम्बा हुआ बचाता को स्वयं "। ......

मुंह के बल एक अन्य चीनी के कदमों में जा गिरा विकास ।

अभी इतना समय भी नहीं मिला था कि कोई दूसरा हमला कर पाता कि उसके कंठ से चीख निकल गई । टांग के ताजे घाव में लम्बे चीनी के नोकीले बूट की ठोकर पड़ी । साथ ही उस चीनी की आवाज "---बेटे विकास है सांगपोक नाम मेरा "---फूचिंग का लड़का हूं मैं ।"

बिकास अभी अपने होशो------कि था पाया कर न भी काबू से ठीक हंवास-

एक बहुत ही नाटे से चीनी ने उसका गिरेबान पकड़ लिया । दांत पीसता हुआ बोलाविकास देख मुझे"---, मेरी आँखों में झांक । तेरीमेरी फरमान का मौत- आँखों में लिखा है। मैं उसी हुचांग का साला हूँ, जिसे तूने मार डाला । मेरा नाम तो सुना होगा? मुझे हवानची कहते हैं ।अपने ने नाटे ही साथ के कहने " सिर की जोरदार टक्कर विकास के चेहरे पर मारी ।

विकास का सारा चेहरा खून से पुत गया ।

एक चीख के साथ अभी वह गिरने ही वाला था कि , किसी ने उसके बाल पकड़ लिए । अपने सिर के बालों पर ही झूल सां-एक कि या पाया न भी संभल अभी । विकास उठा चीनी महिला की आवाज"। हैं कहते सिंगसी मुझे"--

विकास उस महिला का चेहरा न देख सका ।।

न ही महिला ने विकास पर कोई वार किया।

इस प्रकार जैसे कसाई बकरे को पकड लेता है , सिंगसी ने उसके बाल पकड़ रखे थे ।

धटनाक्रम कुछ इस तेजी से घटा था कि विकास कुछ ना कर सका ।

उसका सारा ध्यान उस समय सिर्फ बागरोफ पर ही स्थिर था जब तीन शोलों ने उसे चीखते हुए गिरने पर मजबूर कर दिया ।

वह यही देख सका था कि चीनियों ने
उन्हें घेर लिया है । यह देखनेमें एक क्षण भी गंवाये विना कि वे कितने चीनी हैं, विकास सबसे लम्बे चीनी पर झपट ही जो पड़ा था, लेकिन संभलने के लिए एक पल भी तो न मिला उसे ।

दुश्मनों ने उसकी स्थिति का खूब लाभ उठाया ।

इस समय सिंगसी ने उसके बाल जकड़ ऱखे थे । वह अकेली होती तो एक ही मिनट में वह सिंगसी को समझा देता कि विकास के बाल पकडने को परिणाम क्या होता है,

किन्तू विकास देख रहा था।।। वह था में साये के गनों नौ---

एक चीनी फर्श पर पंड़े जख्मी बागरोफ के सीने पर पैर रखे खड़ा था ।।

विकास के ठीक सामने खड़ा था सांगपोफ । फूचिग की तरह ही लम्बा । अपने पिता की भांति ही उसे चीनी होने के बावजूद लम्बा होने का फख्र प्राप्त था । विकास को ही धूर रहा था वह। लिए खून में आँखेों स्थिर--

आँखों में वही भाव लिए उसके समीप ही खड़ा था। हबानची-- लोटा । तरह की लोटे किसी ठीक ! मटोल--गोल !

" मैनें कसम खाई है विकास बेटे कि अपने पिता की कब्र को तेरे खून से धोऊंगा ।"

अभी सांगपोक का वाक्य पूरा हुआ ही था कि हबानची गुर्रा उठाकत्ल तेरा कत्ल आखिरी का गीजिन्द मेरा"- होगा ।"

खून से लिथड़ चुका था विकास का चेहरा । आखें तो अंगारे वन ही चुकी थी । जैसे शेर गुर्रा उठेतेरी बाप तेरा"-
तरह नामर्द नहीं था सांगगोक । दुश्मनों को नों गनों के साये में लेकर नहीं धमकाता था वह । उसका असली बेटा है तो"..........

"वह समय भी आयेगा ।की विकास " बात पूरी होने से पहले ही सांगपोक गुर्रा उठातेरे को कब्र की पिता अपने"--- खून से धोने से पहले तुझे पूरा मौका दूंगा मैं । मैं नही, हवानची मारेगा तुझे । अपनी जिन्दगी का आखरी कत्ल करेगा ये ।"

"ये लोटा ".....

अभी विकास आगे एक शब्द भी न कह पाया था कि ह सचमुच-वानची का शरीर हर्वा में इसतरह कलावजियां खा उठा जैसे किसी ने घुमाकर लोटे को फेंक दिया हो हवा में लोटे की तरह घूमता हुआ वह विकास के समीप अाया और-------

फटाक से दोनों पैरों का प्रहार उसने विकास की छाती पर किया ।

अपनी छाती की हड्डियां विकास को चरमरातीमहस सी-ूस दी ।

"जो भी हवानची को पहली बार देखता है इसके लौटा शब्द का ही प्रयोग करता है ।"' सांगपोक ने कहा में दुनिया लेकिन"-
है नहीं व्यक्ति ऐसा कोई तक आज, जिसने कभी दूसरी बार इसे लोटा कहा हो । यह शब्द इसे पसंद नहीं विकास । जो भी हवानची के लिए इस शब्द का प्रयोग करता है या तो यह उसे दुनिया में और कुछ बोलने के लिए जिन्द ही नहीं छोड़ता अथवा उसे इस हद तक सबक सिखा देता है कि जिन्दगी में लोटा शब्द उसकी जुबान पर नहीं आता । कई बार तो यह भी देखा गया

है कि इसी बात पर हवानची से पिटा आदमी सचमुच के लोटे को गिलास कहता है ।" पहले तो सांगपोक की इस बात पर धीरे से हंसा कोई,
फिर बोला। है की बात शायराना क्या बाह्"----

विकास सहित सभी ने पलटकर उस तरफ देखा।।।।

तुगलक उठकर खड़ा हो रहा था ।

"तुम हो में होश तुम"---उठा गुर्रा सांगपोक हुआ धूरता उसे "?"

"और हम जोश में हैं ।"

इन शब्दों के साथ नुसरत खान को खड़ा होता देखकर बागरोफ की आँखें आश्चर्य से फैल गई।

खूनी दृष्टि से उन दोनों की घूरता हुया सांगपोक गुर्रायां हों में होश दोनों तुम"---?"

तुगलक बौखला उठा ।

नुसरत कांपने लगा था ।

कांपता हुआ बोलाबा माई था तो बताया आपको अभी"---प कि ये साला जामुन की औलाद होश में था और मैं जोश में ।। आप की आवाज सुनी तो सच, किसी क्वाँरी कन्या"---

" बको मत ।"

हवर्तिबी के गुर्राते ही सकपकाकर नुसरत चुप हो गया। तुगलक बोल उठाइस "---- साले प्यार की निशानी को कई बारं समझाया है माई बाप कि ज्यादा मत बोला कर, लेकिन... "

साँगपोक के चीखते ही तुगलक की जुबान पर ब्रेक लग गए तो तुरन्त ही नुसरत ने तुगलक से कहाबेटा ले"--, और कर मेरी चुगली । तुझसे पहले ही कहा था साले, कि माई बाप से मेरा बहुत पहला याराना है, तेरे सिखाये में नहीं आयेंगे ।"

"अबे चलचक्की के "! तुगलक ने नुसरत से कहा"है है ही मेरी से बाप-माई तो मुलाकात पहली तुझसे "--

"तुम चूप रहो ।। उठा गुर्रा हवानबी "

" चुप क्यों नहीं रहता वे तुगलक की दुम ?" फोरन ही नुसरत तुगलक पर बिगड गया मानता नहीं कहना का बाप माई "---?"

"मैं कहता हूँ, बको मत तुम । "सांगपोक भूनभुना उठा ।।

"'मैं पहले ही कहता था साले नुसरत कि माई बाप को गुस्सा आ जायेगा "
तुगलक अभी आगे भी कुछ कहना चाहता था किं -----

चटाक............

झन्नाटे के साथ हवानचीं का हाथ उसके गाल से टकराया ।

" ले बेटा । म "---- था वाला चूकने कब नुसरत "ैंने पहले ही कहा था कि माई बाप को गुस्सा आ गया तो मार देंगें ।"

नुसरत की बात पूरी होते। वह होगया दुहरा चीखकर । लगी में पेट उसके ठोकर की सांगपोक होते-

"ले बेटा"..... बोल अौर--

तभी तुगलक के मुंह पर हवानची का घूंसा पडा । वड़ा ही अजीबशुरू सिलसिला सा- हो गया है हवानवी तुगलक को मारता तो नुसरत बोल पडता । सांगपोक नुसरत का मारता तो तुगलक । काफी देरत तक यही क्रम चलता रहा। एक स्थिति ऐसी आई कि दोनों ही चुप हो गए ।

नुसरत के लम्बे बाल पकड़कर झंझोड़ता हुआ सांगपोक बोला टिकाने अक्ल आई अब "-----?"

" माई बाप कहूं कुछ तो हो इजाजत की बोलने"-कहा ने नुसरत " ......?"

" मेरी बातों का जबाव दो ।। गुर्राया सांगपोक "

"मैँ तो आपका खादिम हुं माई बाप"। करो हुक्म-'

" होश टिकाने आया या नहीं ?"

" मेरे होश तो पहले ही ठिकाने थे माईसा तो बदमाश "-----कहा ने नुसरत "! बाप-ला ये जामुन की औलाद है । यह भी नहीं देखता कि किसके सामने बोलना है और किसके सामने नहीं । इसे मैं कई बार समझा चुका हैं कि हर आदमी को एक ही लाठी से नहीं हांकना चाहिए । लेकिन ये सुनता ही नहीं है अपने साथ मुझे भी फंसवा देता है । सारी गलती तो इसकी है माई बाप । "

ठीक यही शब्द तुगलक ने हवानची से कहे थे ।

तुगलक ने हबानची को और नुसरत ने सांगपोक को जो जबावं दिया था, वह एफऔर सांगपोक । सुना ने दूसरे-
हवानची ने एक-फिर देखा को दूसरे-
सांगपोक ने नूसरत से और हबानची ने तुगलक से एक ही प्रश्न किया..........."इसका मतलब ये हुआ कि तुम बेहोश नहीं हुए थे ?"

कनखियों से तुगलक और नुसरत ने एकमें सुर ही एक दोनों । देखा को दूसरे- बोले है समझाया बार कई को तुगलक इस "---- से चचा कि...मजाक मत किया करो । चचा हमारे मजाक को समझते नहीं, बुरा मान जाते हैं, लेकिन ये नहीं माना मजाक : ही मजाक में इसने चचा की टांग खींच दी । नतीजा ये कि चचा बुरा मान गए । इसने मुझे भी मरवा दिया, जब हमने देखा कि चचा हमें मार ही डालेंगे तो बेहोशी का नाटक करके अपनी जान बचाई ।और था लिया नाम का तुगलक ने नुसरत " तुगलक ने नुसरत का ।

उत्तर सुनकर सांगपेक और हबानची की दृष्टि मिली ।

सांगपोक ने कहा"। है रहे कर नष्ट समय हमारा ये"---

फिर हबानची और सांगपोक के हाथ एक साथ चले है दोनों के हाथों की बनी कैरेटें पाकिस्तानी जासूसों की नस की कनपटियों- लेकर नाम का दूसरे-एक कि टकराई से वे फर्श पर गिर गये । अच्छी तरह से तसल्ली करने के उपरान्त कि वे बेहोश हो गए है, सांगपोक ने हबानची से कहाकैसे पाकिस्तानी जाने "----, कैसे रंगरूटों की सीकेंट सर्बिस में भर्ती कर लेते है ।"

" बातों से तो ये मूर्ख किन्तु व्यवहार से चलते। मुड़ा तरफ की विकास हबानची हुआ कहता "। हैं आते रनज पुर्जे-

विकास के पीछे बाल पकड़े खडी सिंगसी की तरफ़ देखकर बोला"! सिंगसी है नहीं समय अधिक पास हमारे-----

विकास अभी समझ भी नहीं पाया था हबा ची के शब्दों पर सिंगसी क्या प्रतिक्रिया करने वाली है कि पीछे से सिंगसी ने एक जबरदस्त ठोकर इतनी जोर से विकास की कमर पर मारी कि लड़खड़ाकर विकास अभी मुंह के वल गिरने हीं बाला था कि---------------

फटाक से सांगपोक के जूते की ठोकर उसके जवड़े पर पडी ।

विकास अभी संभल भी नहीं पाया था कि हवानची का घुटना उसके पेट में ।

"अबे अो चीनी चमगादड़ों ।चीख में भावावेश बागारोफ पड़ा पर फर्श " पडाऔर"-----तों की तरह गनों के साये में लेकर मेरे शेर के बच्चे को क्या मारते हो ? मर्द की अौलाद हो तो ये गने हटा लो"। कमाल इसका देखो तब---

" तू चुप रह बूड्ढे ।"। गुर्राया चीनी रखे पैर पर सीने के बागारोफ "

" बुड्ढा बोलता है गंजे की औलाद । "---बोगरोफ उठा दहाड "बुड्ढी होगी तेरी मां । अरे सीने पर गन रख, कर क्या गुर्राता है । ये गन हटा ले, बताऊं कि बुड्ढा कौन है ! ऐसी चीख निकलेगी, तरे मुंह से कि चीन में बठा तेरा हरामजादा बाप बहरा हो जाएगा "!

उत्तर मुंह से देने के स्थान पर उसने गन की नाल बागरोफ के सीने मे गाड़ दी ।

विकास! लडका खतरनाक सर्वाधिक का युग इस-------

सांगपोक, हबानची और सिंगसी के त्रिकोण में फंसा हुआ था । विकास कों संभलने का एक भी मौका दिए बिना वे रह रह कर उस पर बार कर रहे थे । बागारोफ चीखे जा रहा था ।

हबा में चकराकर एक चीनी ने अपने दोनों पैरों का प्रहार विकास की छाती पर किया तो विकास चारों खाने चित फर्श पर जा गिरा । गुर्रायारखना याद----- हबानची तेरी लाश कों चीरचौराहे किसी के पिर्किंग फाड़- पर लटकां दूंगा ।"

तभी सांगपोक का बार सहना पड़ा उसे ।

विकास को पिटता देखकर बागरोंफ वेचारा चीखता रहा, चिल्लाता रहा । यहाँ तक रो पड़ा, रोता हुआ बोला..."ये कैसा हरामजादा लड़का है ? देख रहा है कि गनों के साये में हैं, लेकिन चूप नहीं रहता"। नही झुकता......

इस हद तक उन तीनों ने विकास की धुनाई की कि वह बेहोंश होकर लुढक गया ।

चीन में...क्रिस्टीना ने अभी अभी टेलीविजन बन्द किया था ।।

उसका चेहंरा गंभीर था । रसीले नेत्र बता रहे थे कि वह कुछ सोच रहीं है है स्विच आँफ करके वह पीछे घूमी ।

सोफे पर बैठे विजय को देखा । उसने उस एक पल के लिए विजय के उस चेहरे कों गम्भीर देखा था जिसके विषय में उस ने पिछले चारकर निर्णय यह में दिनों बाच- लिया था कि उस
चेहरे पर गम्भीरता आ ही नहीं सकती ।

" विजय भैया । हो रहे सोच क्या "---बोली क्रिस्टीना "?"

विजय सम्हाला स्वंय को, पुन"। हैं बजे पर चेहरे तुम्हारे तो बारह"----बोला हुआ करता सामान्य की चेहरे अपने :

गम्भीर ही रही क्रिस्टीना, बोलीब की गम्भीरता"---ात ही है विजय भैया ।चीनियों ने वतन को जला डाला है ।"

" अजी जला डाला है तो तुम्हारी सेहत पर क्या क्या फर्क पड़ता है ?"

"'भैया ।" विजय के समीप अा गई क्रिस्टीनाहूं नहीं मिली कभी से वतन "--- ।उनकी कहानी सुनी है । अजीब से दर्द में डूबी है उसकी कहानी । कई बार उसके फोटो देखे हैं । एक बार पहले टी था सुदंर कितना । था पा देखा भी पर . बी . वतन और अबदिया कर राख जलाकर तरह किस ने जालिमों इन-उफ तो देखा-अब........ है उसे ? कैसा भयानक डरावना और बदसूरत हो गया है वतन "!

"लगता है क्रिस्टीना तुम्हार है दर्द कहीं में दिल !े "

"क्या मतलब भैया ।"

"सुना है, दिलों में जब मुहब्बत का अचार पकने लगता है तो आंखों से सड़ा हुआ गन्ने का रस निकलने लगता है ।कहे विजय " गया चला..."मुझे लगता है कि वतन का अचार तुम्हारे दिल में पक रहा है ।"

"भैया है गर्व मुझे"---क्रिस्टीना थी गम्भीर "!कि आपका नाम लेकर आपको भैया कहती हूँ मैं । यह भाग्य है मेरा कि आप जैसे महान जासूस को मैं अपना भाई कह सकती हूं । विजयभैया-, महान हैं आप, जो आपने मुझे यह अधिकार दिया । मैं स्पयं नहीं समझ सकती कि मेरा हृदय आपको इतना है देता क्यों सम्मान-?"

"हमें बनाने की कोशिश मत करो क्रिस्टी "। करो मत चेष्टा की घुमाने को बात की वतन में बातों इन !

हल्के से मुस्काई क्रिस्टीना" । आयेंगे कहां में बातों मेरी आप " ---बोली ---

''बिरुकुल नहीं आयेंगे ।आने जनाब और "---कहा ने विजय में जअन्दा ही अपने " की ही क्या बात है, हम तो जायेंगे भी नहीं । ताड़ने बाले कयामत की नजर रखते हैं ।
बोलो"। न हो रही भर पाना-आलू में बताशों के मुहब्बत की वतन यहाँ तुम "--- "ऐसी तो कोई बात नहीं है ।ने क्रिस्टीना " । चाहा कहा

किन्तु विजय कहां मानने बाला था, बोला... " झूठ काला, सफेद, हरा, नीला पीला झूठ ।"

-"'भैया पुनः गम्बीर हो गई क्रिस्टीनानहीं मिली बतन । है नहीं बात ऐसी"---- हूँ, उसकी कहानी जानी है, उसकी तस्वीर देखी है । उत्कंठा है उसे देखने की । कैसा होगा वह ? कैसा लगता होगा ? कैसा होगा वतन, जिसने आठ वर्ष की उम्र में जिम का कत्ल कर डाला ? पूरे अमेरिका को झुकाकर जो आज चमन का राजा बन बैठा, अभी विजय कुछ कहनां ही चाहता थां कि लॉकेट रूपी ट्रांसमीटर स्पाक्क करने लगा ।

शीध्रता से आन कर , ट्रासंमीटर को मुंह के करीब ले जाकर बोला गिल्ली हूं रही बोल मैं ! सिल्ली की बर्फ प्यारे हेलो "---"।

" मैं डण्डा बोल रहा हूं जासूस प्यारे ।। उभरी आबाज की अलफांसे से तरफ दूसरी "

" गुच्चिक कहां है ?" विजय ने पूछा ।

"अभी अभी उसे तुमने टीबी पर देखा होगा ।'" अलफांसे की आवाज आईना देखा"---- भी हो तो सुन अवश्य लिया होगा कि वतन विश्व भर के टीवीज पर बोला है ।"

" देखा भी है और सुना भी है प्यारे लूमड़ खान ।हैं रहे पूछ-कहा ने विजय " खाकर बनॉरसी पान कि तुम वहां क्या कर रहे हो लगाकर ध्यान ?"

"जिस वतन को तुमने अभी अभी टीबी पर देखा है, वह वतन नहीं जासूस प्यारे, जले हुए वतन के रुप में पिचासनाथ था ।"

" अमां ये तुम क्या कह रहे हो, लूमड़ भाई ?"

" मुझे आश्चर्य है कि बात तुम्हारी समझ मैं क्यों नहीं आई ?" दूसरी तरफ से अलफांसे ने तुक मिलाई कर निश्चय वतन------ में चीन उसे बार इस कि है चुका तबाही मचानी है । " मुझे आश्चर्य है कि बात तुम्हारी समझ मैं क्यों नहीं आई ?" दूसरी तरफ से अलफांसे ने तुक मिलाईहै मचानी तबाही में चीन उसे बार इस कि है चुका कर निश्चय वतन------ । ---------- वह अगर । है राजा का देश स्वतन्त्र एक वतन कि हो सकते समझ तुम ऐसा कुछ करेगा तो आतर्राष्ट्रीय अदालत में मुजरिम साबित हो जाएगा । जो कुछ उसने करने की ठानी है, वह उसी दौरान करेगा, जिसमें जला वतन बना के पिशाचनाथ चमन में ठीक होने के लिए पड़ा है । टीबी पर पर जो शब्द उसने कहे, वे भी उसी योजना के अंग हैं ।"

"अमां मियां लूमड़ खान, यह तो पता लगे कि वह योजना क्या है ?" उत्तर में अलकांसे ने सब कुछ बता दिया ।

सुनने के बाद विजय ने कहा है दुश्मनी क्या से ही चीन को वतन प्यारे लेकिन--?"

" क्योकि उसे पता लग चुका है कि उसका फार्मूला चीनी जासूसों के हाथ लग गया है ।''

चौका विजय, बोला है पता को बटन साले उस वह पता नहीं हमें साली बात जो भाई लूमड़ तो रहे कह क्या----?"

""बिकास मैदान में कूदने से बाज नहीं आया विजय ।"

"क्या मतलब ?"

" मतलब ये कि हैरी को विकास ने गिरफ्तार कर लिया ।वह"-बताया ने अलफांसे " अभी तक मेरी कैद में है।। विकास स्वयं हैरी बनकर वतन की प्रयोगशाला में गया । फार्मुला चुराया । हैरी बनकर जैकी से मिला ।"

" फिर ?"

"उसके बाद की कहानी मुझे अभीअभी- विकास ने ट्रांसमीटर पर बताई है ।"

"क्या कहानी ?"

"सुनो विजय ।लगा बताने अलफांसे ",""मैंने विकास को बहुंत रोका, वहुत समझाया कि फिलहाल वह भी हमारी तरह ही आराम से बैठकर तमाशा देखे लेकिन वह नहीं माना,
इस विषय में विकास के बारे में मुझसे ज्यादा तुम जानते हो, वह जो करने की ठान लेगा, करेगा । किसी के रोकने से रुकेगा नहीं । मैंने भी उसे खूब रोका, लेकिन बोला किकुछ में देखने तमाशा कर घुस -- और ही मजा आता है ।परिणाम यह कि वह घुस गया । सिर्फ यहां तक मुझे पता लगा कि वह फिल्मों सहित हैरी बना जैकी के साथ हैलीकॉप्टर में जा बैठा, बाद में यह भी सूचना मिली कि वह हैलीकॉप्टर गया हो नष्ट टकराकर से पहाडी किसी ", । मैं यहां विकास की कोई भी सूचना पाने के लिए व्यग्र रहा । इस बीच, वतन से बातें हुई । पिशाचनाथ को बतन बना कर उसकी योजना कार्यान्वित की । अभी कुछ देर पहले ट्रांसमीटर पर विकास ने मुझ से सम्बन्ध स्थापित्त किया।"

" क्या ?"

"कहता था कि वह एक जलपोत से बोल"। है रहा-

"जलपोत ?" विजय हल्के से चौका ।

" हां ।हुआ कुछ भी जो साथ उसके"--कहा ने अलफांसे ", उसमें संक्षेपकह उसका । बताया मुझे में-ना है कि
जैकी के रूप में वाण्ड था । पहले बाण्ड से उसका टकराव हुआ ।सब इत्यादि " कुछ बताने के बाद अलफांसे ने कहा...उसने बताया कि इस समय वह एक चीनी जलपोत से बोल रहा है । यह जलपोत उसे, जेम्स बाण्ड, बागारोफ, नुसरत और तुगलक को लिए पिकिंग की तरफ़ बढ रहा है । फिल्में इम समय सांगपोकं इत्यादि के कब्जे में हैं । विकास का कहना है कि उन्हें जलपोत में इस प्रकार कैद किया गया है कि फिलहाल वे कुछ भी करने में समर्थ नहीं है ।"

" देख लिया साले ने घुसकर तमाशा ?"

" जिस समय विकास मुझे था रहा बता कुछ सब यह -, उस समय वतन भी मेरे पास था । " अलफांसे ने बताया "----और सुना कुछ सब भी इसने उसी समय से वतन भी गायब है ।"

" कहां चला गया ?

"कदाचित विकास की तरह घुसकर ... तमाशा देखने "!

--"क्या मतलब ।"

" वतन के यहां से जाने के बाद मुझे वतन का 'एक पत्र मिला है ।" "कैसा पत्र ?"

'"मैं पढकर सुनाता हूँ तुम्हे ।सुनाना पत्र ने अलकांसे उपरांत के कहने " किया, "प्यारे अलकांते चचा है गया हो विदित मुझे ! सिर्फ न कुत्ते चीनी कि मेरी फिल्में लेकर पिकिंग जा रहे हैं, बल्कि मेरे यार को भी कैद कर लिया है । बस जान इतना----अब । है काफी लिए मेरे लेना चीन में वतन जो तबाही मचाएगा, उसे आप ही नहीं... सारा दुनिया।। सुनेगी-

इस हरामजादी कौम को मैं बताऊंगा कि वतन के फार्मूले पर दृष्टि डालने अौर वतन के यार को बन्दी बनाने का परिणाम क्या होता है ? मैं जा रहा हूँ चचा, मेरे बिषय में किसी भी प्रकार की फिक्र न करना है बससमझा को पिचासनाथ--- देना कि मैंने उसे जो कुछ समझाया है, वही करे ।कि है आवश्यक बहुत यह " बीच और है में चमन वनत कि रहे पहचानती दुनिया में बीच-आपका-है रहा करा इलाज भतीजा "। वतन --

"ये साला बटन कहां चला गपा ?" पुरा पंत्र सुनते ही विजयं ने कहा ।

"यह तो मैं स्वयं नहीं जानता विजय ।----केहा ने अलफांसे "' जैसे ही उसे यह पता लगा कि विकास, बागारोफ, बाण्ड, नुसरत और तुगलक चीनी जासूसों के चूंगल में पहुंच चुके हैं और दोनों फिल्में लेकर वे जलपोत के माध्यम से पिकिंग की तरफ बढ़ रहे हैं तो उसके चेहरे पर कुछ ऐसे भाव उभरे जैसे वह इसी धटना का प्रतीक्षक था । उसके बाद से मुझे वतन नहीं, सिर्फ वतनं का यह पत्र मिला है ।"

"इसका मतलव ये हुआ लूमड़ भाई कि दोनों छोकरे तुम्हारा बजरबटटू बना गए ?"

" शायद तुम्हारी बनाने चीन आ रहे हैं ।"

"इसका मतलव ये हुआ लूमड़ भाई कि दोनों छोकरे तुम्हारा बजरबटटू बना गए ?"

" शायद तुम्हारी बनाने चीन आ रहे हैं ।"

" मेरी फिक्र मत करें प्यारे लूमड़ भाई । अपने राम ने तो बजरबटटू बनाना सीखा है बंनना नहीं ।--- गया चला कहे विजय " आ चीन भी तुम तो समझो उचित " जाओ, किन्तु आने से पूर्व जो हिदायत तुम्हें पिशाचनाथ को देनी है, वह न भूलना ।"

" हैरी का क्या करू ?"

अलकांसे द्वारा पूछे गए इस प्रश्न ने एक पल के लिए सा-निरुत्तर को विजय .. कर दिया, फिर बोला, "अजी लगता है लुमड़ मियाँ कि अपनी बुद्धि का कुछ भाग तुम भी डाई अ ान किलो के हिसाब से बेचकर खा गए हो । अमांकरना का साले उय . ही क्या है ? पिशाचनाथ के हवाले कर अ ाना यह जरूर वता देना उसे कि अपने गुरु का वह पट्ठा हरामी कितना है । कहीं ऐसा न हो कि वह किसी तरह कैद निकल भागे ।"

" ठीक है ।क विच्छेद सम्बन्ध कहकर यह ने अलफांसे "र दिया"। हूँ रहा आ चीन मैं "--

"सम्बन्ध विच्छेद होते ही विजय ने क्रिस्टीना की तरफ देखा है उसके चेहरे पर चमक थी कदाचित उसने विजय और अलफांसे के बीच होने वाली संपूर्ण 'वार्ता सुन ली थी ।

विजय ने कहातुम्हारा "----- सारा चेहरा बिल्ली की आंखें बन रहा है क्रिस्टी "!

" क्या मतलब ?"

-"'अपने शिकार को देखकर जिस तरह बिल्ली की आंखें चमकती हैं, उसी तरह इस समय तुम्हारा चेहरा चमक रहा है ।"

हल्के से हंसीं क्रिस्टीना बोलीहै लिया देख शिकार सा-कौन मैंने"-?"

..."बटन ।बोलो"--कहा ने विजय ", क्या कुछ गलत कहा मैंने ?"

"शिकांर बाली तो कोई बात नहीं है विजय भैया ।"

क्रिस्टीनाहां लेकिन" "-- कहा ने ---, यह जानकर खुशी अवश्य हुई कि जिस वतन को हमने कुछ ही देर पहले टीबी पर देखा था, वह वतन नहीं था है वतन पहले जैसा ही खूब' सूरत है, वह चीन आ रहा है ।"

-'"इसी को कहते हैं अड़गीमार इश्क है"' कहने के पश्चात विजय किसी अन्य से सम्बन्ध स्थापित करने का
प्रयास करने लगा । उसे ऐसा अवश्य लगा था कि उसकी बात का क्रिस्टीना ने कोई जवाब दिया है, किन्तु उस जवाब को सुनने का उसने कोई प्रयास न किया ।

विजय निरन्तर किसी से सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास में व्यस्त था । क्रिस्टीना की आवाज उसके कानों में पडीं किससे " --- भैया विजय हो चाहते करता बातें?"

उसकी बात का कोई जवाव देने के स्थान पर विजय ने हाथ उठाकर उसे चुप रह का संकेत किया । उसका पूरा ध्यान ट्रांसमीटर की तरफ था, और धीरे धीरे बह सेट पर कह "। झानझरोखे प्यारे "हैलो हैलो"--- था रहा कह-

"हेलौ "। हूं बोल में"---उभरा स्वर से तरफ दूसरी "!

"कौन ?" विजय ने पुछा झानझरोखे"---?"

"'झानझरोखे नहीं बिजय लेटे, यह हम बोल रहे है ।। आई आवाज से तेरफ दूसरी "

हल्के से चौक पडा विजय, मुंह से निकलाकौन "--... गुरुदेव ?"

"ठीक पहचाना बेटे ।। था रहा वोल जैकी सचमुच से तरफ दुसरी "

" -पांव लागूं गुरु । पड़े टपक से कहाँ आप पर ट्रांसमीटर इस लेकिन" .-कहा एकदम ने विजय हुए संभालते को स्वर "!

'"तुम समझ सकते हो विजयकि तुम्हारा झानझरोख इस समय हमारी ही कैद में है ।'.' जैकी ने कहा कि है अफसोस मुझे"- से यहां अशरफ'ऑपरेशन से एम .वेवज-- सम्बन्धित सारी सूचनायें तुम्हें देता रहा, किन्तु हम उसके बिषय में कुछ न जान सके।। उसने पीछा भी किया, किन्तु मैं न जान सका कि कोई मेरे पीछे है । सच मुझे सख्त अफसोस है , किन्तुअफसोस- अब तुम्हें भी होगा ।"

" अरे हम तो तुम्हारे बच्चे हैं गुरुदेव । लिया पकड़ कैसे तुमने को झानझरोखे अपने---कहा ने विजय "?"

"उसने सोचा था कि वह जैकी बनकर, हैलीकॉप्टर लेकर चमन से हैरी को लेने चला जाएगा ।बताया ने जैकी " -"यह सोचकर वह मेरे घर में घुस आया मुझ पर और साथ एक उसने पर जूलिया --- हमले किए, किन्तु"............

" उसी समय बांण्ड आ गया और उसने झानझरोसे सहित तुम सबका तीयाकर पांचा- दिया । पहले से होने पूर्ण बात की जैकी " जो-दिया कर शुरू कहना ने विजय ही काम अपना झानझरोखे करना चाहता था, वह जेम्स वाण्ड ने किया ।"

जैकी के चौकने का स्वर मालूम कैसे तुम्हें कुछ सब यह"----?"

"'हमारा नाम विजय दी ग्रेट है गुरुदेव कहा ने विजय अकड़ाकर सीना "!..."हमें तो यह भी मालूम है कि इस समय हैरी कहां है ? लेकिन पहले तुम यह बताओ कि अपने झांनझरोखे मियां इस समय कहां हैं ?"

--'"हमारी कैद में ।"

" उसे छोड़ दो "!

" क मतलब क्या--?" निश्चित कही-कैसे" तुमने बात यह"- था चौका जैकी पर आदेश विचित्र इस के विजय से रूप .?"

-"गुरुदेव पुचकार को जैकी मानो ने विजय "!'-"और उसका करोगे क्या ?'"

" आँपरेशन वेवज एम' वाले इस अभियान से तुम्हें हटाने के काम तो अशरफ ही आएगा ।'" जैकी ने कहा सुनो".------ विजय, ध्यान से मेरी बात सुनो । इस अभियान पर तुम्हारे बच्चे को भेजा गया है...हैरी को उसका काम है, . वेवज एम का फार्मुला सुरक्षित अमेरिका पहुँचाना । मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह अपने इस अभियान में उस समय तक सफल नहीं होगा जब तक कि बीच में तुम हो, यह समझो कि तुम्हें आदेश देता हैं मैं! जाओं हट से इसअविन्यान तुम--- अगर तुमने मेरे इस आदेश की अवहेलना की तो याद रहे, तुम्हें जीवित अशरफ को देखने का अवसर कभी नहीं मिलेगा ।"

..."वाहं गुरुदेवतो कहावत वह आपने"----कहा ने विजय "। रही खूब भी यह---- सुनी ही होगी फि चूहे के हाथ कत्तर लग गई तो वह स्वयं को बजाज यानी कपडे का व्यापारी ही समझ बैठा ।"

"'क्या कहना चाहते हो ?"

"यह कि हैरी हैमारीे कैद में है ।करके मेकअप तुम्हारा "--कहा ने विजय " वाण्ड आया था तो हैरी के भेष में उससे विकास मिला । हैरी को विकास ने पहले ही गिरफ्तार कर लिया था ।"

"यह सब बकवास है ।। पड़ा चीख जैकी "

"कभीसही ही बकवास "---यहा ने विजय "! गुरुदेव है होती सच भी बकवास कभी--, लेकिन सच है । हैरी इस समय हमारी कैद में है और आप भी यह याद रखें कि जो कुछ आपकी कैद में पड़े हमारे झानझरोखे के साथ होगा ठीक वही हैरी के साथ ।"

" बकवांस मत करो विजय ।---था पड़ा चीख जैकी वाला बोलने से तरफ दूसरी " "जासूसी तुम्हें मैंने सिखाई है । उसी जासूसी का पैतरा तुम मुझ पर चला रहे हो, । मैं जानता हूँ कि हैरीह नहीं कोई वेरी-ै तुम्हारे पास है यह 'झूठ तुम इस लिये बोल रहे हो, क्योंकि अशरफ को मारने की धमकी जो दी है मैंने । मैं तम्हारी इस चाल में आने वाला नहीं हूँ विजय । "

"अगर इस गलतफहमी में रहें , तो निश्चित रुप से आप वहुत बड़ा धोखा खायेंगे। " विजय ने कहाहैरी कि है सच ये "--हमारे पास है और झानझरोखे के साथ जो भी करो, इस बात को अच्छी तरह साथ के हैरी व्यवहार वही करना समझकर-सोच-हो भी रहा होगा। एक क्षण के लिये सेट पर सन्नाटा छा गया, फिर जैकी की आवाज"--- मुझे तुम्हारी बात पर बिलकुल यकीन नहीं है ।"

" और मैं आपकों यकीन दिलाना भी नहीं चाहता ।"

'"तुम्हारे पास क्या सबूत है ?"

"'क्या ये सबुत कम। है मुझे यह पता है कि तुम्हारे मेकअप में हैरी को लेने जेम्स बाण्ड आया था ।" विजय ने कहागुरुदेव सोचो जरा"----, अमेरिका में घटी धटना की जानकारी मुझे कैसे हो गई ? एक ही माध्यम थाकि ये---विकास ने हैरी को गिरफ्तार कर लिया था । स्वयं विकास हैरी के मेकअप में बाण्ड से मिला । उसने वाण्ड को पहचान लिया । तुम स्वयं समझ सकते हो कि विकास ने बाण्ड का क्रियाबस ।। हौगा किंया से ढंग किस कर्म-, स्वयं बाण्ड ने वताया कि क्या कुछ हुआ था ।"

-"ये झूठ है ।" जैकी चीख पड़ाकि करती नहीं प्रभावित बात यह तुम्हारी" ---- हैरी तुम्हारी कैद में है सम्भव है कि किसी अन्य माध्यम से तुम्हें यह जानकारी हुई हो । तुम्हारी इस खोखली दलील मैं नहीं मान सकता कि हैरी"!--------

"अगर में ये कहूं गुरूदेव कि आप भी झूठ बोल रहे है तो नहीं ही हैं पास आपके अशरफ----?"

"'मैं तुम्हारी तरह खोखली धमकियां नहीं दिया करता ।"' जैकी ने कहाअशरफ"--- मेरी कैद में है, इसका प्रमाण मैं तुम्हें अभी ट्रांसमीटर पर उसकी आवाज सुनाकर भी दे सकता हूं बोलो आवाज की हैरी हो सकते सुनवा तुम वया----?"

" गुरु चाहूँ तो अभी अपने ही मुंह से हैरी की आवाज निकालकर आपको यकीन दिला दू ।।कहा वे विजय "...लेकिन फिलहाल मुझे यह हथकंडा अपनाने की कोई अ ाबश्यकता नहीं है । यह भी जानता हुं कि आपके लिये भी अशरफ की आवाज की नकल करना कोई कठिन काम नहीं है, किन्तु मुझे विश्वास है कि अपना झानझरोखे े आपकी कैद में है और तुम्हें भी विश्वास करना पड़ेगा गुरुदेवकैद हमारी हैरी कि यह---- में है । याद रखना, जैसा व्यवहार उसके साथ होगा, वैसा ही हैरी के साथएकदम ने जयवि पश्चात् के कहते"!.......... सम्बन्ध विच्छेद कर दिया । दूसरी तरफ से जैकी हैलो ही हैलो-करता रह गया है

पनडुब्बी से बाहर समुंद्र के अथाह जल में जो व्यक्ति अभी। थी छड़ी एक में हाथ उसके था कूदा अभी-

सम्पूर्ण जिस्म पर गोताखोरी का लिबास ।

पीठ पर दो आक्सीजन के सिलेण्डर रखे थे और पनडुब्बी से कूदतेउसने ही - जलपोत के उस हिस्से में मौजूद एक रॉड पकड़ ली थी जो पानी में डूबी थी ।

मस्त हाथी की भांति जलपोत्त सागर के कलेजे पर दनदना रहा था ।

छड़ी को सम्बाले वह रॉड के सहारे चलता हुआ सागर की सतह पर अ ा गया ।

इस समय उसका गर्दन से ऊपर का भाग पानी के ऊपर था शेष पानी के अन्दर । धीरे धीरे पानी के अन्दर का भाग भी ऊपर आता जा रहा था ।

रॉड के सहारे चलता हुआ वह जलपोत के पिछले भाग में आ गया है । फिर छपकली की तरह वह जलपोत की ऊंची और चिकनी दीवार पर चिपक गया ।

उसके हाथऐसा । थे दस्ताने के किस्म सी-विचित्र में पंजों चारों के पैरों- प्रतीत होता था मानो उसके दस्तानों में हवा भरी हुई हो ।जलपोत को दीवार से उसने दायाँ हाथ हटाया उस हाथ का दस्ताना इस प्रकार फूलता चला गया जैसे किसी माध्यम से उसमें हवा भरी जा रही हो । उसने हाथ सीधा किया, कुछ ऊपर, जलपोत की दीवार पर उसने हाथ रखा ।

उस हाथ के दस्ताने की हवा निकलती चली गई । ज्योंरही जा निकलती हवा ज्यों- पी त्यों एक उंगलियाँ की हाय उस त्यों-पर दीबार की जलपोत से ढंग से विचित्र जमती जा रही थी ।। जब वह हाथ पूर्णतया दीवार पर जम गया तो उसने बायां हाथ दीवार से हटाया । दायें हाथ की भांति दीवार से हटते ही उस हाथ के दस्ताने में भी हवा भरत्ती चली गयी, फिर दायें हाथ से ऊपर, दीवार पर उसने बायां हाथ जमाया । दस्ताने की हया निकंली और यह हाथ दीवार पर जम गया । फिर दायां हाथ उसने दीवार से हटाया। उसमें हवा भरी दायें से ऊपर चिपकाया ।। इस प्रकार ठीक किसी छपकली की भांति यह जलपोत की ऊंची , सपाट और चिकनी दीबार पर चढ़ता चला गया । जलपोत अपनी स्थायी गति से बढ़ता चला जा रहा था ।

पूरी दीवार पर चढ़ कर। गये लग मिनट तीस उसे में पहुंचने पर डेक :

डेक पर पहुंचकर उसने निरीक्षण किया । किसी इन्सान की मौजूदगी न पाकर वह डेक पर उतर गया । छड़ी सम्बाले वह एक शेड के नीचे पहुंचा है सर्वप्रथम उसने अपनी पीठ को सिंलेण्डरों के भार से मुक्त किया, कैप उतारी । उसके चेहरे पर चौडे फ्रेम वाला काला चश्मा लगा हुआ था ।

गोताखोरी का लिबास उतरा तो जिस्म पर मौजूद सफेद कपडे चमचमा उठे ।

पैरों में क्रैपसोल के सफेद जूते थे , अपना शेष सामान वहीं छोड़कर उसने छड़ी उठाई और डेक से नीचे जाने वाली सीढियों की तरफ बढ़ गया । उसका रंग गोरा था...दृध जैसा । कद लम्बा । विकास की भांति ही लम्बा ।। लम्बेलम्बे- कदमों के साथ वह बढ रहा था ।।

सीढियां उतरकर वह एक गैलरी में पहुंचा ।

सीढ़ियों के नीचे समीप ही खड़े एक चीनी सैनिक ने उसे देख लिया था । देखते ही सैनिक ने फुर्ती के साथ उसकी तरफ गन तान ली और चिल्लाया..."कौन हो तुम ? कहां चले आते हो ? "

किन्तु जबाब में दूध जैसे कपडों बाला उसके ऊपर अा गिरा था ।

सफैद बूट की ठोकर इतनी जोर से उसकी कनपटी पर पडी थी कि अपने कंठ से चीख निकालता हुया वह धड़ाम से जलपोत के फर्श पर गिरा उसके हाथों से निकलकर गन तो हवा में लहराती हुई बहुत दूर जा गिरी थी ।।

वह फुर्ती के साथ खड़ा हुआ।

अब भी नहीं पहचाना मुझे गुलाबी अधरों से निकली वाणी के साथ ही उसके मस्तक पर बल पड़ गयामै "----

" वकांप पोर-पोर का सैनिक "! वतन....व.... उठा ।।

एक जहरीली मुस्कान गुलाबी होंठों पर उभरी । ऐसे, जैसे कोई लड़का म्यान से तलवार निकाले । छडी के अन्दर से खींचकर हहिड्यों का बना मुगदर निकाल लिया वतन ने ।

सैनिक की आंखों में साक्षात मौत नृत्य कर रही थी । भय के कारण चेहरां पीला पड़ा हुआ था । वह पीछे हट रहा था और धीरेउसकी वतन साथ के कदमों लम्बे धीरे- तरफ बढ रहा था ।

सैनिक के पीछे दीवार आ गई । अब वह और अधिक पीछे नहीं हट सकता था ।

वतन का मुगदर वाला हाथ ऊपर उठा मुगदर हवा में लहरा उठा और सन्नाकर वह अभी सैनिक के जिस्म के किसी भाग से टकराने ही वाला था कि सैनिक गिड़गिड़ा उठा मारो मत मुझे नहीं---न---न"-, मैंने कुछ नहीं किया ।वतन गया रुक हाथ " का , मस्तक पर पडा बल, गहरा बहुत गहरा हो उठा। बोला"---' तुम्हारे चेहरे पर आतंक देख रहा हूँ । मौत के भय की परछाइयां कभी यह परछाइयां मैंने अपनी मां और बहन के चेहरों पर देखी थीं किन्तु किन्तु उनउन्हें ने जालियों- छोड़ा नही था ।। मैं तुम्हें छोड सकता हूँ।"

रो पडा सैनिक"। मेरी हैं शर्त कुछ की छोड़ने तुम्हें "--

सैनिक की आंखों में प्रश्न उभर आया । जैसे पूछ रहा हो..." क्या ?"

"बताओ कि विकास इत्यादि इस जलपोत में कहा कैद हैं ?"

सैनिक के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभर अाये ।

"'तुम्हारा नाम तो नहीं जानता मैं ।यह"--कहा ने वतन में स्वर गम्भीर बेहद " भी सुन लो कि तुम्हारी कौम से घृणा है मुझे । नजानते हो, क्यों? इसलिये, क्योंकि तुम समझते हो कि दुनिया में जीवित रहने का अधिकार सिर्फ तुन्हीं का है ।

तुम्हारा वस चले तो सारी दुनिया को अाग लगा दौ तुम । स्वयं जीवित रहने के लिये दूसरों को फाड़कर खा जाओ । मैं अहिंसा को मानने वाला हूँ, हिंसा का क्या परि'गाम होता है, वह मैंने अपनी मां, बहन और पिता को लाशों पर देखा है । सोचता हूं कि मेरे कारण दुनिया का कोई भी इन्सान उस हिंसा का शिकार न हो, किंतु ऐसी बात भी नहीं कि मैं हिंसा का प्रयोग नहीं कर सकता । मैग्लीन और उसके बेटे का अंजाम सारी दुनिया को पता है । मैं महात्मा गांधी की तरह महान नहीं, जो हिंसा का प्रयोग करने की कसम ही उठा लूँ । हां यह अवश्य मानता हूं कि जहाँ अहिंसा से काम हो सके वहां हिंसा प्रयोग नीच व्यक्ति करते हैं । जो सोदेश्य के लिए हिंसा का प्रयोग नहीं करता, मैं उसे भी नीच समझता हूँ । मेरे सिद्धान्त पर गौर करो और फिर सोचो कि तुम्हें क्या करना है, वे लोग कहाँ कैद हैं ? यह बताना है या.....?"

" मैं वता रहा हूँ ।। सैनिक उठा गिड़गिड़ा तरहसे बुरी "

" बोलो ?"

"जलपोत की सबसे निचली मंजिल के कमरा नम्बर दस में । "'सैनिक ने जबाब दिया ।

मुगदर छडी के अन्दर रख लिया वतन ने बोला इस"------बात के लिए धन्यवाद कि तुमचे मुझे पर करने प्रयोग का हिंसा- किया नहीं विवश, लेकिन याद रखना, तुम जहां खड़े हो जिस, पोजीशन में खड़े थे, उसीमेरे । जाओगे हो खडे वही तरह .

विषय में किसी से भी कुछ नहीं कहोगे। यूं समझो कि तुम्हें यह पता ही नहीं है कि वतन यहाँ से गुजरा "है .

" जी हां ।। थी गई सूख जुबान उसकी "

"उम्मीद हैकि तुम मुझे हिंसा अपनाने के लिए विवश नहीं करोगे ।के कहने " साथ ही वतन उसके पास से मुडा है छड़ी टेकता हुअा वह गैलरी में इस प्रकार आगे बढ गया, मानो उसके पीछे कोई हो ही नहीं । लम्बे लम्बे कदमों के साथ वह गैलरी में ठीक इस प्रकार बढा चला जो रहा था, मानो वह चमन के राष्ट्रपति भवन में ही टहल रहा हो ।

जैसे ही वह गेलेरी कें एक मोड पऱ मुड़ा उसने देखा एक सैनिक उसकी तरफ आ रहा था ।

वतन को देखते ही वह बुरी तरह चौककर ठिठका । गजब की तेजी के साथ उसने कन्धे पर से गन उतारी, किन्तु अभी वह उस गन को किसी पर फायर करने की पोजीशन में भी नहीं ला पाया था कि वतन का मुगदर इतनी जोर है उसकी कनपटी पर पड़ा कि वह चीख पडा ।

एक ही वार में उसकी कनपटी की कोई नस फट गई ।।

कोई बाँध टूट गया मानो बह करके धारण रूप जैसा फव्वारे ----उठा । गन तो कभी की उसके हाथ से निकलकर फर्श पर गिर चुकी थी । उसके कंठ से निकलने वाली वह भयानक चीख। थी चीख अन्तिम की जीवन इस उसके--

वतन से डरी हुई रूह, उसके जिस्म पर लात मारकर ईश्वरपुरी जा पहुंची थी और अब इस प्रयास में थी कि यमराज अपने खातेएण्ट उसकी में-्री कर ले जब तक उसके शरीर को जलपोत के फर्श पर पड़ा देखकर वतन के मस्तक पर बल पड़ गया ।

हहिडयों से बने मुगदरं पर उसके खून का अंश आ गया था ।

वतन ने मुगदर छडी में ऱखा और निश्चित भाव से आगे वढ़ गया ।

इस मंजिल की शेष गौलरी में उसे कोई नहीं टकराया । सीढ़ियां लय करता हुआ जब वह नीचे की मंजिल की तरफ़ बढ़ रहा था तो सीढियों के नीचे, खड़ा एक सैनिक सतर्क हो गया, किंतु', अभी वह अपनी सतर्कता का कोई लाभ भी नहीं , उठा पाया था कि हवा में संनाती हुई मुगदऱ ने कनपटी पर चोट करके उसकी रूह को भी शरीर त्यागकर ईश्वरपुरी की तरफ रवाना पर दिया ।।

पुन। गया बढ आगे वतन रखकर में छेड़ी को मुगदर :

उस मंजिल को गैलरी में घूमतां वह एक हलि कमरे में गया ।

हाँल एकदम खाली था और हाँल जिस दरवाजे से अन्दर प्रविष्ट हुआ था, ठीक उसके सामने हाल का एक दूसरा दरवाजा चौपट खुला पड़ा था ।

हाँल मं से गुजरकर उस दरबाजे में से ही निकल जाने का निश्चय किया था वतन ने । अभी वह हाँल के ठीक बीचोबीच ही पहुँचा था कि बिधुत की सी गति से हाँल में खटाखट की आवाजें गुजं उठी ।

वतन ने देखासैन तीन-तीन पर दरवाजे प्रत्येक । थे गये हो उत्पन्न दरवाजे अनगिनत में लहॉ-पूरे--ि‍क उसकी तरफ गन ताने खड़े थे ।

एक पल के लिये वतन ठिठका ।

चेहरे पर किसी भी प्रकार की घबराहट का एक भी चिन्ह न उभरा ।

अगले ही पल। हो न आभास का उपस्थिति की किसी उसे मानो गया बड़ आगे प्रकार इस वह--

" वतन "!

इस आवाज ने विद्युत की सी गति से उसे पलटने पर विवश कर दिया ।

देखा"। है हवानची नाम मेरा"-----वोला लिये मुस्कान क्रूर पर होठों । था खड़ा चीनी नाटा एक-----

वतन की दृष्टि हवानची के बराबर में खडे उस सैनिक पर स्थिर हो गई थी...जिसे वह अहिंसा का प्रयोग करता हुआ जीवित छोड़ आया था ।

हवानची के बराबर में खड़े उस चेहरे पर भी करीब।। थीं मुस्कान जैसी हवानची करीब-

उसे घूरता हुआ वतन गुर्रा उठा.......“तुम जैसे व्यकित ही मेरे अहिंसा के सिद्धांत को ताक पर रखवा देते हैं ।"

"मूर्ख हो तुम, जो इस ज़माने में अहिंसा की पोटली को बांधे फिरते हो । सैनिक गुर्राया ।

उत्तर में तेजी के साथ उनकी तरफ बढा वतन ।

सहमकर सैनिक हवानची के पीछे आ गया ।

बेपैदी के लोटे की तरह घूमकर हवानची वतन की तरफ बढा, बोला"। नाम मेरा है हवानची"-

एक पल के लिये वतन ठिठका, बोला"। मैंने पुछा नहीं नाम तुम्हारा "---

"लेकिन मैंने बता दिया है।"

वतन ने वैसी दृढता के साथ ही उससे आगे बढ़करं कहा है नहीं तोप ऐसी कोई नाम तुम्हारा "-----, जिससे मैं डरूं । सच पूछो तो अपना नाम बताकर तुमने अपने अब तक के जीवन की सबसे बडी भूल की है । उम्मीद मुझे ये है कि यह तुम्हारे जीवन की अंतिम भूल सांवित होगी । इससे बड़ी या छोटी भूल करने के लिए मैं तुम्हें जिन्दा छोडुंगा नहीं । क्या बताया था तुमने अपना नाम एक बार फिर कहना ।

"हवानची ।।। गुर्राया हुए प्रभावित भी तनिक बिना से वतन वह "

--"'हूं ।हवानची वह हो तुम तो "---- अधर के के वतन गये बुझ से रजह जैसे " जिसने अपनी जिदगी का आखिरी खून विकास का करने की कसम खाई है ? हुचांग का साला ? तुम । हत्या करोंगे विकास की ?"

पुन कुछ है शक तुम्हें----बोला हवानची मुस्कराया :?"

" कभी देखा है विकास को ?" पूछा वतन ने ।

" मेरी कैद में है वह ।"

-"इसीलिये उसकी हत्या की बात सोच ली ।"!फिरते बचाते को स्वयं तो होता स्वंतन्त्र"---कहा ने वतन "

--"घवरांओ नहीं ।विकास तोडुंगा नहीं प्रतिज्ञा अपनी "----कहा ने हवानची " की हत्या मेरे द्वारा की गई अंतिम हत्या होगी । अब यह आवश्यक है कि उससे पहले मैं तुम्हें मारू ।

" ख्बाब देखने छोड दो हवानची है हमदर्दी तुमसे मुझे"---- मुस्कराया वतन "! । शायद इसलिये कि तुम विकार से अपने जीजां के खून का बदेला लेना चाहते हो । अपनी बहन की मांग का सिंदुर उजड़ने का बदला लेना चाहते हो , किंन्तु ये सोचो कि बिकास ने तुम्हारे जीजा की हत्या , इसलिये की हैं क्योंकी वह मानवता के मस्तक पर एक कलंक था । धरती मां उसका बोझ नहीं सह सकती थी । "

" वतन ।। उठा दहाड हवानची "

"’चीखो मत, चीखने से कोई समस्या हल नहीं होती है ।साथ के शान्ति ने वतन " कहा । जायेगी नहीं बदल ईसङ्गा "----
चीखने तुम्हारे से नर्कमें पड़ा तुम्हारा जीजा उछल कर स्वर्ग में नहीं जा गिरेगा ।"

मैं कहता जुबान सम्भालकर बात करो "!

'"दूसरे की नही, अपनी जुबान पर ध्याना हबानची दो-, शायद तुम जानते नहीं कि वह क्या"! है रही कह वया-

वतन ने कहा है पता तो तुम्हें"--हिंसा का प्रयोग सिर्फ उसी स्थिति में करता हूं मैं, जब अहिंसा से काम न चले "!

"क्या कहना चाहते हो ?"

"यह कि तुम लोगों के बीच मैं अकेला जरूर हूं , लेकिन वास्तव में अकेला हूँ नहीं हूं "! वतन ने कहा कि रखना याद यह"-
मुझे अगर, इस जलपोत में कुछ हो गया तो इसे जलपोत की पेंदी में एक वडा छेद हो जायेगा । वह छेद कहाँ हुआ है, यह
रहस्य भी तुम्हें उस समय पता लगेगा, जव जलपोत डूबने लगेगा ।"

कुटिलता के साथ मुस्कराया हवानचीं, बोला- "। मैं हूँ नहीं वाला फंसने-में बातों झूठी की किस्म इस---

" सच को झूठ समझना सबसे बड़ी बेवकूफी है ।"'

"अौर सबसे वडी बेवकूकी है समझदाऱ आदमी के सामने झूठ बोलना ,जो उसके सामने चल न सके मैं "- कहा ने हवानवी "!
तुम्हारा कम-से-कम कि सकता कह साथ के दावे आदमी इस जलपोत में कोई ऐसा छद नहीं करेंगे जिसके परिणामस्वरूप यह
जलपोत डूबे । जानते हो, क्यों ? इसलिये कि तुम उन्हें कभी ऐसा आदेश दे ही नहीं सकते है क्योंकि तुम्हे इम कि है मालूम :
जलपोत हम । है भी विकास पर जलपोत में डूवेंगे तो विकास भी बचा नहीं रहेगा "!

वतन के मस्तिष्क की एक झटका सा लगा ।

यह बात सच थी कि उसने झूठ बोला था है इस मकसद से कि इस झांसे में आकर वे किसी भी प्रकार की हिंसात्मक वारदात
करने का साहस न कर सकें, किन्तु...किन्तु हवानची? वतन को लगा सचमुच हवानची एक खतरनाक जासूस है ।

मगर अपने किसी भी भाव को वतन ने चेहरे से स्पष्ट न होने दिया ।

वतन बोलाही अपने कभी-कभी"-- दिमाग का कोई... ख्याल, अपने लिये मौत का कारण बन जाता है मेरा-कहा ने वतन "! सिद्धान्त यह भी है कि अगर सौ नीच व्यक्तियों की मारना हो और एक सच्चा इन्तान भी मारना आवश्यक तो"-----

"छोडो इन बातों को ।तो लगेगा डूबने जलपोत यह"---- दिया रोक का वतनं उसने " मैं स्वयं फैसला कर लूगा कि मुझे क्या करना है फिलहाल तुम मुझे यह बताओ कि इस जलपोत पर क्या करने आये हो ?"

"अपने दोस्त विकास को यहां से निकालने और फिल्में लेने जो इस समय तुम्हारे कब्जे मैं है ।"

--"'मुझे दुख है कि इनमें से तुम्हारा कोई भी ख्वाब पूरां नहीं होगा ।"

"और मुझे दुख है कि तुम्हारा लोटे जैसा शरीर मुझे रोक नहीं सकेगा "!

कहने को वतन ने कह तो दिया, किन्तु प्रतिक्रियास्वरूप उसने जब हबानची का चेहरा देखा, जो किसी शुगरमिल के बायलर की तरह तप रहा था । नेत्र मानो मोटेखून मोटे- के गोले बन गये थे ।

वतन ने उसके चेहरे को एक बिचित्र सी अनुभूती के बीच तनते देखा ।

उसने यह भी देखा कि चारों सैनिक खडे तरफ . ., सतर्क हो गए हैं ।

वतन ने स्थिति को भांपा स्वयं भी सतर्क हुआ और बीला तुम्हें लगता नहीं अच्छा शब्द लोटा क्या"-----?'"

" कोई फायर नहीं करेगा चीखा है रजो इतनी "!...हवानची कि सम्पूर्ण जलपोत कांपता सा महसूस हुया नाम बहुत -------- । देखूंगा ही मैं इसे । इसका है सुना सुना है विकास के बाद दुनिया का सबसे खतरनाक लडका यही है ।"

मुस्कान थी वतन के होंठों पर, बोला..."तुम शायद हिसा का सहारा लेना"!.........

"मिस्टर वतन की शेर जैसे "!मौत पर शेरनी दहाड उठेकि है सुना "------ विकास के बाद, दुनिया के दूसरे खतरनाक

लडके तुम हो है चाहूँ तो मेरे एक ही इशारे पर सैकडों गोलियां तुम्हारे शरीर में धंस जायें है"

"कोशिश करके देख लो । मुस्कराया वतन "!

"कोशिश तो ये है कि मैं तुम्हारा वह खतरनाकपन देखना चाहता हूं गोली कोई पर तुम"--------उठा गुर्रा हवानची "! नहीं चलेगी । मेरे अलावा कोई तुम पर किसी प्रकार का हमला नहीं करेगा मुझसे बचना है तुम्हें यह देखना है कि यह लोटा "!...........

और अपनी बात बीच में ही छोड़कर नाटा हवानची उछल पड़ा । ठीक इस तरह, मानो उसके पैरों में स्प्रिंग लगे हो । ठीक किसी कबूतर की भांति हवा में कलाबाजियाँ खाता हुआ वह वतन के ऊपर पहुंचा और अपनी दोनों टागों का वतन के चेहरे पर इतना तेज प्रहार किया उसने कि वतन के कंठ से चीख निकल गई ।

हवा में उछलकर वतन दूर जा गिरा । आँखों से चश्मा उतरकर गिर गया था !

दूसरे ही पल उठा सिंगही का वह शिष्य तो उसने देखा--------

ठीक उसके सामने बडी! हवानची था रहा उगल आग से आँखों बड़ी-

वतन की नीली झील। था रहा तैर पानी में आंखों गहरी सी-

स्थिर से नेत्रों से उसने हवानची को देखा और बोलामेर मुझे"----े सिद्धांत के दूसरे पहलू पर आने के लिये विवश न करो हवानची "!

किन्तु उसकी बात का जबाव अपनी जुबान से देने के मूड में नहीं था हैवानची ।

सचमुच उसका शरीर किसी बिना पेंदी के लौटे को तरह जमीन पर लुढ़का और कब वह जोक की तरह आकर वतन की टांगों से चिपट गया, यह स्वयं वतन भी न जान सका !

उसे तो इस बात का आभास उस समय हुआ, जब बह धड़ाम से गिरा !

टांगों में अंब भी हवांनची जोक बनकर चिपटा हुआ था। वतन को लगा, उसकी दोनों, टांगों की हड्डियां चरमराकर- टूटने वाली

हैं आभास जाकर अब उसे . .! हुआ कि सचमुच हवानची हर तरह से बहुत खतरनाक आदमी है नाटे जैसे लोटे उसके ! शरीर में न सिर्फ विदुत से भी कहीं अधिक फुर्ती है, बल्कि! है भी ताकत की बला में शरीर उसके----

वतन को लगा कि उसकी टागें फौलादी सरियों के बीच फंस गई हैं से तरकीब किसी ही शीघ्र अगर कि था चुका समझ वह ! उसने अपनी टागों को हबानची की पकड़ से मुक्त न किया तो वह उसकी टागें तोड़ डालेगा ।

वतन का मस्तिष्क चेतन हुआ ।

अपनी पुरी शक्ति समेट कर उसने टांगों की एक तीव्र झटका दिया !

किन्तु झटका खाकर रह गया नाटा हवानची बात तो की होने मुक्त उससे टागें ! ही दूर, बन्धन की सख्ताई में लेशमात्र भी तो परिवर्तन नहीं आया । वतन के कंठ से अब टांग की पीड़ा के कारण चीख निकलने वाली थीं । एकाएक उसे अपने गुरु का सिखाया हुआ एक दांव याद आ गया ।

उसकी आँखों के सामने मुस्कराते हुए सिंगही का चेहरा उभरा । मानो वतन के गुरु ने उसे कोई निर्देश दिया !

अपनी टांगों को एकदम फैला लिया वतन ने । टांगो को उसी स्थिती में रखे वह बैठे गया, अव...वह आसानी के साथ अपनी टांगों से लिपटे हवानची को देख सकता था ।

उस समय टांगों की हड्डियां कड़पड़ा पर गर्दन जैसी मेंढक की नचीहवा कैरेट का हाथ दायें के वतन जव थीं लगी बोलने कड़- ।

एक चीख के साथ हवानची का चेहरा थोडा सा झुका तो वतन का घुटना मुड़कर फटाक से उसकी नाक पर पड़ा । तुरन्त ही दूंसरी बार ,चीखकर हवानची दुसरी तरफ लुढ़क गया । घुटना ठीक नाक पर लगृने के कारण उसकी नाकं से खून बहने लगा था । वतन ने फूर्ती के साथ उठकर खड़ा होना चाहा, किन्तु खड़ा होते_ही लड़खड़ा गया वह ।

उसे लगा कि अगर उसने अपने जिस्म का भार टांगों पर डाला तो कोई न कोई हडडी अवश्य टूट जायेगी । अभी वह स्वयं को संभाल भी नहीं पाया था कि हवानची की दोनों टागें दो भारी मूसलों की तरह उसकी छाती पर पड़ी ।

न चाहते हुए भी वह चीखता हुआ गिरा।

अभी वह गिरा ही था कि उसने अपने, ऊपर लहराते इन्सानी जिस्म का आभास पाया । कुछ और न सूझा वतन को दो तीन करवटें ले गया वह 1 फटाक से हवानची खाली फ्लोर पर गिरा इस !हुआ खडा उछलकर ! बार जो वह गेंद की तरह वतन की तरफ उछल तो---------

लम्बी टांग घूम गई बतन की ।

प्रहार हवानची के चेहरे पर हुआ । गेंद की तरह्र ही उछल कर दूर जा गिरा ।

उठने से पहले ही उसने महसूस किया कि वह किसी के हाथों में है और उन हाथों ने उसे वापस फर्श, पर पटक दिया ।

कमाल कर दिया हवानंची ने।

बेशक उसके कंठ से चीख निकली किंन्तु फर्श से टकराते ही किसी रबर के बबुये की तृरह उछलकर खड़ा हो गया । सामने उससे तिगुना लम्बा लड़का खड़ा था वतन ।

हवानची ने अपनी पेटी वाले स्थान पर हाथ मारा और अगले ही पल उसके हाथ में सर्प की भांति एक कांटेदार पेटी लहरा रहीं थी । उसके अग्रिम भाग में पीतल का एक मोटा गोला था ।

वतन को आभास हो गया कि इस पेटी के एक भी बार का परिणाम क्या हो सकता है ।

अंपनी सम्पूर्ण' इन्द्रियों को सचेत करके वंह्र बोला..."बस खत्म हो गई मर्दानगी ?"

किन्तु। किया वार का पेटी पर वतन ने बेटे उस के बिजली उछलकर------

स्वयं कों बचाने की खूब चेष्टा की वतन ने, किंतु बचा न सका ।

हाँ, इतना अवश्य हुया कि पीतल का गोला उसके सिर पर लगने के स्थान पर कन्धे पर लगा । पेटी की कांटों ने खाल उसकी- । नोंचली

दर्द से, तिलमिलाकर वह गिरा ।

उसका भाग्य था कि यह अपनी छड़ी पर गिरा । पलक झपकते ही उसने छड़ी उठा ली अ ोर एक अनजाने से खतरे का मुकाबला करने के लिए उसेने छडी यूं ही हवा में ऊंपर उठा दी ।। गया रूक पर छड़ी उस वार अगला पेटीका की हवानची-

जब तक हवानची पेटी को घुमाकर तीसरा वार करता, तब तक वतन न सिर्फ खड़ा हो गया था बल्कि हड्डियों का मुगदर -उसने छडी के अन्दर से खींच लिया था । अब अपने हाथ में दबी पेटी को हवानची लहरा रहा था तो वतन मुगदर को अपने जिस्म की ढाल बनाये हुए था ।

उसके दूसरे हाथ में खाली छड़ी थी । फिरबीच के बेटों दोनों उन के बिजली- शुरू हुआं एक भयानक युद्ध । निश्चित रूप से

हवानची भी लड़ने के अच्छे तरीके जानता था और साथ ही उसके जिस्म में आश्चर्यचकित कर देने बाली शक्ति भी थी ।

इधर वतन । शिष्य का सिंगही बादशाह के मुजरिमों !

स्वयं सिंगही का कहना है कि वतन को उसने वह सब सिखाया है, जो स्वयं भी नहीं जानता ।... . .

एक से दूसरे-लड़तेगए हो लहूलुहान लड़ते- । न जाने वतन हबानची की पेटियों के कितने वार अपने शरीर पर झेल चूका था । न जाने हवानची के जिस्म की खवर किंतनी बार वतन के मुगदर ने ली थी !

वतन का सफेद लिबास खूँन के धब्बों से सज गया था । का हवानची कुछ और था खून उसका कुछ उसमें !

जगह। थे गए भी फट कपड़े से जगह-

दोनों ही हिंसक भेड़िये जैसे लग रहे थे ।

अन्त में। किया पर चेहरे के हवानची से ताकत पूरी वार का मुगदर अपने के वतन जबकि तब-

पहले तो रंगआँखों की हबानची उठे नाच तारे बिरंगे- के सामने, फिर अंधेरे की एक गहरी चादर फैलने लगी । उसी समय हडिडयो काटकराया से पसलियों उसकी मुगदर- उसने महसूस किया कि वह बेहोश होता जा रहा है ।

अचेतना के सागर में खोते हुएकि आया यह बार अाखरी मैं मस्तिष्क के हबानची- अगर वह बेहोश हो गया तो वतन विकास इत्यादि को इस जलपोत से निकाल ले जाएगा उसने स्वयं को बेहोश होने से राकने की काफी चेष्ठा की, किन्तु उसने महसूस किया की वह लड़खड़ाकर गिर चुका है । पेटी उसके हाथ से छूट गई है और अब किसी भी तरह वह स्वयं को बेहोश होने से नहीं रोक सकेगा, तो बेहोश होने से पूर्व ही चीख पड़ा "! फॉयर " -----

"फायर उम् यह को वतन से वानचीह और "मीद जैसे पहले ही थी ।

हवानची का आदेश होते ही चारों तरफ से गनें गूंज उठी । सैकडों दहकते शोले वतन की तरफ लपके।

बस, खतरे का मुकाबला करने के लिए वतन अगर तैयार न होता तो न जाने कितनी गोलियां उसके शरीर में धंस चुकी होतीं ।

किन्तु वतन...उफ साबित ने वतन । .कर दिया कि विकास से किसी भी तरह कमं नहीं है बह । उसने एक ऐसी भयानक कला का प्रदर्शन किया, जिसकाबार एक प्रदर्शन- स्वयंसिखाई ने जैकी स्वयं को विकास कला वह । था किया में अमेरिका ने विकास- थी ।

इस कला में सिंगहीं को महारत हासिल थी और इस समय वतन द्वारा उसी कला का प्रदर्शन इस बात का प्रमाण था कि सिंगही का यह कथन बिल्कुल सत्य है कि, उसके पास एक भी कला ऐसी नहीं है जो उसने वतन को न सिखाई हो ।

वह कला थी। करना रक्षा अपनी से गोलियों से मदद की लाठी-

इस कला में लाठियाँ इस प्रकार धुमाई जाती हैं कि लाठी घूमाने वाले के चारों तरफ एक व्यूह का कला । है लेती बना सा- से बिजली हाथ के वाले करने प्रवर्तन भी कहीं अधिकतरफ चारों के शरीर से तेजी इस लाठी । है-घूमते है तेजी . घूमती, है कि एक व्यूगोलियां भी जितनी चाहे से तरफ़ चारों । है जाता बन सा- चलाई जायें, किन्तु गोली उसके शरीर तक नहीं पहुंच पाती । सारी गोलियां लाठी पर ही लगती हैं । प्रदर्शन करने वाला फूतींला और इस कला का माहिर हो।

प्रेरक पाठको, यहाँ मैं लिख देना आवश्यक समझता हूँ कि लाठी चलाने का यह तरीका मेरी कल्पना की देन नहीं है, बल्कि इस किस्म की लाठी चलाने वाले को मैं जानता हूँ और हाँ कोई चाहे तो मैं किसी को भी ' उससे मिलवा सकता ' हूं । लाठी का काम वतन छड़ी से ले रहा था।

एक व्यूह टानाए छड़ी उसके चारों ओर धूम रहीं थी । स्वयं वतन का जिस्म भी किसी फिरकनी की भाति धूम रहा था । छडी नजर नही आ रही थी, किन्तु धांय धायं के बीच गोलियों की छड़ से टकराने की आवाज भी गूंज रही थी ।

इस कला को देखकर चीनी हतप्रभ रह गए ।।

किसी की भी वतन की छड़ी नजर नहीं आ रही थी, किन्तु एक अजीब। रहेथे देख ओर चारों के वतन व्यूह-सा-

साथ ही उनकी गोलियां वतन केटकरा से व्यूह उस ही हलेप से पहुंचने तक जिस्म-ती और छिटककर दूर जा गिरती ।

नाजाने किस धातु की छड़ थी वह टूटी नहीं।

इस चमत्कृत कर देने वाला कला का प्रदर्शन तो कर है रहा था वतन क्रिन्तु स्वयं उसका मस्तिष्क परेशान था ।

गोलियां उस पर चारों तरफ से बरस रहीं थीं! जब तक वह अपने चारों और व्यूह बनाए हुए था तब तक बचा हुआ था परन्तु, व्यू बनाए हुए वतन के मस्तिष्क में प्रश्न था , आखिर कब तक इस छड़ को घुमाता रहेगा ।

कब तक इस व्यूह को बनाए रखेगा ।

एक घंटे! पड़ेगा ही रुकना उसे तो कभी ....चार....तीन--घंटे दो--

कभी तो वह थककर शिथिल होगा ही ? तब होगा क्या तब.....? इनकी गोलियां उसके शरीर को छेद डालेंगी ?

तो तो इस खतरे से स्वयं को मुक्त करने क लिए वह क्या करे ?क्या ?

जिस तरह छडी को घुमाता हुआ वह स्वयं चकरा रहा था, उसी तरह उसके मस्तिष्क में यह प्रश्न चकरा रहा था।

' गोली चलाने वाले सैनिक उसकी यह कला देखकर गोली में चलाना भी भूल गए ।

हैरत से फिरकनी की भांति धूमते वतन और उसके चारों और चकराते उस अवेध व्यूह को देखने लगे थे जिसे गनों की गोलियाँ भी तोड़ न पा रही थीं ।

अपने मस्तिष्क में बस प्रश्न को लिए वहाँ कोई एक घंटे तक छड़ी घुमाता रहा । आखिर, अचानक उसके कानों में एक आवाज पड़ीमिट्टी मेरे शाबाश-------शाबाश-- के शेर । कमाल कर दिया तुने "! वाह "----

इस आवाज को वह पहचान गया ।

परन्तु सुन कर ठिठका नहीं । ब्यूह उसी प्रकार बना हुआ वह बोलामुझे"---- बचाओ। बिजय चचा । अब मुझमें ज्यादा देर तक यह ब्युह बनाए रखने की ताकत नहीं है ।"

"अभी लौ बटन प्यारे हमारे गए हो खड़े रोंगटे देखकर को कला इस तुम्हारी !, अब कमाल देखो हमारे ।"

विजय की इस आवाज के बाद फायरों की गति तेज हो गई !

फिर, कुछ ही देर बाद विजय की गुर्राहट स्वयं वतन ने भी सुनी । वह कह रहा था""---अपने चीनी दो फेक हथियार अपने-हवानची ये तुम्हारा वरना चमगादडों हमारे सामने फर्श पर बेहोश पड़ा हैनिकलेगी टाफी ऐसी एक से रिवॉल्वर हमारे- कि इसका सर तरबूज बन जाएगा । अमी तो इसके होश में आने की उम्मीद है ,किन्तु अगर ऐसा हो गया तो कभी होर्श में नहीं आ सकेगा हैं । वतन को नही पता कि चिनियों पर विजय के शब्दों की क्या प्रतिक्रिया हुई !

वह तो पागलों की तरह बस, अपने चारोंछड़ी तरफ- घुमाए चला जा रहा था । उसका दिमाग बुरी तरह घूम रहा था । हर पल जैसे ऐसा लग रहा था कि वह अब गिराअब--- गिरा, मगर उस समय तक वह स्वयंको संभाले रखना चाहता था जब तक कि विजय की तरफ से उसे रुक जाने, का आदेश न मिले ।

पुन। --गूँजी में कानों उसके चेतावनी गई दी को चीनियों द्वारा विजय :

तीसरी चेतावनी के बाद !

विजय की आवाजबस"---, मेरे मिट्टी के शेर सर्क ये करो बंद अब !स का कमाल और वंह छोडकर छड़ी से हाथ अपने- इतनी । गिरा से धड़ाम खाकर चक्कर और लहराया देर से एक ही दिशा में धुमतेदिमाग उसका घूमते- तरह भिन्ना गया था । सांस धोंकनी की भांति चल रही थी ।

यही कार था कि वह स्वय को संभालं नहीं सका ।

इसके बाद क्या हुया, वह कुछ न जान सका । उसकी आंखो के सामने काजलअधकार सा- छाता चला गया और मस्तिष्क को अवचेतना के गहन सागर में डूबने से वह न रोक सका, किन्तु होश के अन्तिम क्षण में उसे यह तसल्ली थी किं वह सुरक्षित है ।होश आया तो उसे छत दीवारें, फर्श अर्थात् सारा हॉल अब भी घूमताउसका तक अभी । था रहा हो प्रतीत सा- दिमाग हिलोरें ले रहा था । विजय का स्वर उसे ऐसा लग रहा था मानो वह स्वप्न में कहीं बहुत दूर से अारहा हो ।

विजय कह रहा थाप्यारे बटन मत घबराओ"--,हमने संवार दिए हैं काम सारे ।"

आंखें खोल दी वतन ने, देखासमीप । था पड़ा पर मेज लम्बी एक स्वयं वह- ही विजय खड़ा था । सब कुछ तेजी के साथ घूमता प्रतीत हुआ उसे ।

उसने देखा उस हॉल में अनेक टी० वी० स्क्रीनें फिट थी ।

उनमें से सिर्फ एक टी० वी० अॉन था ।।

स्क्रीन पर जलपोत के चालकचला को जलपोत चालक दो था। मौजूद दृश्य का कक्ष- रहे थे ।। उनके चेहरे पर छाये भय को वतन स्पष्ट देख सकता था । अभी वह कुछ बोल भी न पाया था कि विजय ने कहामियां बटन मत घबराना"-----, . साले सभी चीनी चमगादडों को मैंने निहत्थे करके एक कक्ष में बन्द कर दिया है, सिर्फ ये दोनों चालक ही स्वतन्त्र है और इतनी शराफत ये जलपोत को से इसलिए चला रहे हैं ,क्योंकि इन्हें पता है कि हम प्रत्येक पल इन्हें स्क्रीन पर देख रहे है और इनकी किसी भी हरकत से ईश्वरपुरी के लिए इनका टिकट कटा सकते हैं "!

वतन ने अपने दिमाग को नियन्त्रित किया । लम्बी मेज पर उठकर बैठ गया वह । पुन। चकराया तरह बुरी सिर :

"अमां तुम, उठते क्यों हो, बटन प्यारे ? विजयं ने उसे रोकने का प्रयास किया ।। " चचा । पहला बाद के आने में होश " स के कहने "। दो लेने तो धूल की चरणों अपने "--- ने वतन कहा शब्दाथ
ही मेज से उतरकर खड़ा हो गया वह। चरण स्पर्श करने के लिए झुका तो दिमाग ने एक इतना तेज झोंका खाया कि विजय के चरणों में गिर पड़ा ।।

" अमां , ये क्या उठा पटक करते हो ?" एकाएक बौखला गया विजय ।

वतन को चरणों से उठाया, गले से लगा लिया , बोला पौध नई तुम "--- की औलाद बहुत बदमाश हो । सालो ये नहीं सोचते कि क्या होगा , क्या नही ।"

" आपने ठीक समय पर आकर मुझे बचा लिया , चचा ।"

" साले रहे लगा छलांग जहां कि है होता पता "--- स्वर का विजय उठा भर्रा " ! हैं , वहां मौत ही मौत है, लेकिन नहीं लें नहीं काम से दिमाग ---गें , बदले से मतलब , चाहे जो हो । दिमाग तो सालों ने टांड पर टागं दिया है ।"

" चचा । "। आपका हूं बच्चा "---- से विजय गया लिपट वतन "

" अबे , हमारा बच्चा क्यों होता ?" छेड़ा विजय ने , " हमारा होता तो दिमाग से काम करता । साले तुम विकास तुम --- कम सेनहीं । उसी की तरह मुर्ख होएक को दोनों तुम । सकता बन नहीं जासूस सफल कोई से तुममें ! महामुर्ख--- साथ लिखकर दे सकता हूं मैं कि तुममें से कोई सफल जासूस नहीं बन सकता । दोनों बहादूर हो , आवश्यकता से अधिक बहादूर हो और मेरा दावा है कि बहादूर आदमी कभी सफल जासूस नहीं बन सकता ।। जासूस आदमी बहादूरी या शरीरिक शक्ति से नही , बल्कि अपने दिमाग से बनता है और हकीकत ये है कि तुम्हारे पैदा होते ही 'तुम्हारा सारा दिमाग दीमक चाट गई ।"

" क्यों चचा , ऐसा क्या कर दिया मैंनें?"

" तो बेधड़क इस छड़ी के बूते पर इतने सैनिकों की मौजूदगी में हबानची से भिड़ना क्या दिमाग की बात थी ।?"

" उसने मुझे ललकारा था चचा ।"

"जो दुश्मन की ललकार पर तकरार कर बैठे, वह कभी सफ़ल जासूस नहीं बन सकता वटन प्यारेचला ही कहता विजय "! गयासाले बीन यह । हूँ रहा बजा बीन आगे के भैंस मैं कि हूं जानता लेक्रिन"- उस दिलजले के आगे बजाते बजाते हम बूढे हो गए, लेकिन वंह भैस की तरह रेंकता ही रहताहै । एक छुटकारा मिला नहीं कि साले तुम पैदा हो गाए । उस साले नकली चचा की भी खोपडी खराब हो गई थी, जो तुम्हें पैदा कर दिया । तुम भी अपने गुरु का नाम रोशनकरोगे ., क्योंकि दिमाग पैदल हो"! '

"ऐसी बात नही चचा "!

"तो और कैसी वात है बटन ?" उसी की टून में विजय ने प्रश्न किया ।

होश में आने के बाद पहली बार वतन के होंठों पर मुस्कान उभरी, बोलाजिन "--- बच्चों के ऊपर आप जैसों का साया हो चचा, वे मौत से क्यों डरें ? हम जानते हैं कि आप, अलकांसे चचा और महान सिंगही कवच बनकर हमेशा हमारी रक्षा करते हैं, फिर फिर क्यों न हम मौत से लड़े ?"

-'"हम इत्तफाक से न पहुंचते बटन प्यारे, तब पता लगता ।"

"ऐसी उम्मीद न विकास को है चचा ,न मुझे । वतन ने कहाहै विश्वास हमें बल्कि- कि जब भी मौत हम पर झपटेगी, आप तीनों मे से कोई उसे टाल देगा ।। इसी विस्वास पर तो मौत के कुऔ में कूद पड़ते हम । हमैँ यकीन है कि यमराज़ के हाथों में से भी झीन लायेंगे आप हमें ।"

-""साले हमगए हो न हम-, तुम जैसे सत्यवानों की सावित्री हो गए "!

विजय की इस बात पर उन्मुक्त ढंग से हंस पडा वतन हो वर्षा की फूलों पर जलपोत पूरे मानो से आवाज की ठहाके उसके ! । उठी

विजय ने हंसते हुए वततं का चेहरा देखा! लथपथ से खून--- विजय ने देखा...हुंसंतै हुए भी उसकी आंखों में पानी था ।

समीप ही, मेज पर रखा वतन का चश्मा उठाकंर विजय अपने हाथों से वतन को पहनाता हुआ"-बोला--'इसे ,पहन लो बटन प्यारे, तुम्हारी आंखें नहीं देखी जातीं । ये आंखें एक कहानी कहती हैं ---- लम्बी कहानी । बचपन से लेकर तुम्हारे राजा बनने की कहानी "!

मस्तक पर बल पड़ गया वतन के ।

फिर मानो स्वयं को सम्भालकर बोलाचचा छोडो को बात उस "---, ये बताओं कि हवानची कहां है ?"

" वह साला तो अभी तक मेज के उस तरफ बेहोश पडा है ।होंश"----कहा ने विजय " में आ भी गया तो कुछ नहीं कर सकेगा । हमने बांध रखा है उसे, किन्तु आश्चर्य की बात ये है कि सारे जलपोत पर न कहीं सांगपोक है अ ौर न ही सिंगसी ! "

"वे दोनों कहां गये ?"

" यह भी जरुर पता लगायेंगे ।कहां दिलजला अपना कि हैं मालूम तुम्हें क्या कि बताओं यह पहले उससे लेकिन कहा ने विजय " है?"

"सबसे निचली मंजिल के कमरा नम्बर दस मे ।बताया। ने बतन "

" हम जहां बैठे इन साले जलपोतों के चालक को देख रहे हैं ।क ने विजय "हा ----"तुम जाकर अपने दिलजले को ले आओ बहादुरी की तरह भी किसी वहा रहे याद : दिखाने की आवश्यक नहीं है । वहां जेम्स बाण्ड और बागारोफ जैसे महारथी होंगे फिलहाल उनमें से किसी को भी उस केैद से आजाद नहीं करना है । कमरे में से सिर्फ अपने दिलजले को निकालकर यहां लाना है ।"

" तब तो इस गन की आवश्यकता पड़ेगी चचा तो कहते हूये वतन ने गन उठा ली ।

""अवे है जरुरत क्या इसकी"-बिजय लायाबोख "! अबे....?"

" यकीन रखो चचा, इसका दुरुपयोग नहीं करूंगा मैं ।साथ के कहने " ही।। वतन गया निकल बाह्र से हाँल सम्हालकर गन-

सूनी और साफ पड़ी गैलरी में से गुजरता हुआ वतन । बढ़ा तरफ की लक्ष्य अपने- सबसे नीचे की मंजिल में कमरा नम्बर ढ़स के सामने ठिठक गया वह ।

दरवाजा बन्द था !

अन्दर से कुछ लोगों के आपस में बातचीत करने की आवाजें आ रही थीं ।

दरवाजा बाह्र से बन्द धा । उसने धीरे के से सांकल खोली, इतनी धीरे से कि अन्दर किसी को सांकल खुलने का आभास न हो सका ।

फिर वतन ने एक तेज ठोकर दरवाजे में मारी ।

भड़ाक की आवाज के साथ किवाड़ खुलकर झनझना उठे !!

कमरे में उपस्थित बाण्ड , बागारोफ, नुसरत तुगलक औऱ विकास ने चौककर दरवाजे की तरफ देखा ।

उम पर दृष्टि पड़ते ही सबके मुंह से एक साथ निकला "! वतन"----

"कोई भी हिला तो मेरी गन उसे स्थिर कर देगी । बाहर विकास सिर्फ"----कंहा ने वतन करके उत्पन्न कठोरता में स्वर अपने " "! आए

सहित समी अवाकदेख चेहरा का वतन खड़े से- रहे थे !

और सभी पर दृष्टि रखे हुए वतन ने कहा विकास नहीं सुना तुमने"------? तुम बाहर आओ ।"

एकाएक उसके आदेशात्मक स्वर को सुनकर सख्त हो गया विकास का चेहरा, गुरोंया रहे दे आदेश पर बूते के गन इस क्या"---- हो?"

वतन को लगा कि अगर उसने विकास को वास्तविकता नहीं समझाई तो र्वह भड़क उठेगा। यह भी वह समझता था कि उसके भड़काने से कोई भी जासूस कुछ भी लाभ उठा सकता है । बह सोचकर वतन ने विकास से नम्र स्वर में कहा"-----'ये गन तुम्हें आदेश देने के लिए तनी हुई नही है दोस्त, वल्कि इन सबको कक्ष, में रोक रखने के लिए तनी हुई हैं । बिजय चचा ने आदेश दिया है कि इस कमरे से सिर्फ तुम्हें निकालूं । उन्होंने हिदायत दी है कि इस कमरे से कोई और न निकल सके "!

"बिजय गुरु "! प्रसंनता से उछल पड़ा विकासयहां गए पहुंच वे"--' ?" " कहाँ है वह चिडीमार झकझका?" वागारोफ एक दम बिफर पड़ा"! कहा ऐसा ने के चौट्टी उस"-----

"बहको मत डबल चचा विजय क्योंकि इसलिए डबल"--कहा में स्वर गम्भीर ने वतन "! चचा तुम्हें खुद चचा कहते हैं । यह विजय चचा का ही आदेश है कि मैं फिलहाल सिर्फ विकास को ही इस कमरे से निकालूं "!

वतन की बात का तात्पर्य विकास अचछी तरह समझ चुका था लपका वह साथ के तीव्रता !, औऱ वतन के समीप से गुजरकर कक्ष से बाहर आ गया ।

बाहर निकलने के लिए झपटा तो बागारोक भी था, किंन्तु इससे पूर्व कि वह दरवाजे तक पहुंचता, वतन ने एक झटके के साथ बागारोफ के मुंह पर दरवाजा बंद कर दिया !

अन्दर बागारोफ भुनभुनता रहा अौर वतन बाहर से दरवाजे को सांकल लगाकर धूमा !

सामने खड़ा उसी की तरफ देख रहा था विकास !

दो बराबर की लम्बाईयां आमनेमें नेत्रों के विकास तो वतन । थीं खडी सामने- साफथा रहा ही झांक साफ-, लेकिन विकास को चश्मे के पीछे छुपी वतन की आँखों की स्थिति का आभास था । फिर दोनों एकसाथ एक दूसरे-की तरफ लपके के दूसरे-एक-गले से लग गये, बांहो में समा गए । उनके बीच छाई वह खामोशी उस महान प्रेम की सूचक थी, जिसकी अभिव्यक्ति के लिए कोई भी भाषा शब्द निर्माण न कर सकी । ।

-"ये तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है ?" विकास ने पूछा ।।

"तुम्हारी चाल में लंगड़ाहटं देखी है मैंने । उसका है कारण क्या"----किया प्रश्न उल्टा ने वतन "?"

जो कुछ विकास के साथ हुआ था, वह उसने वतन को बताया और जो वतन के साथ हुआ था, वह विकास को। जब 'यह भेद' खोला कि विकास हैरी के भेष में प्रयोगशाला से फार्मूलां चुराने गया था तो वतन का चेहरा खिल उठा, क्योंकि सारा काम वतन की योजना के अनुसार हो रहा था !

जब विकास को यह पता लगी कि हवानची इस समय कब्जे में है

और सांगपोक व सिंगसी गायब हैं, तो चेहरा सुखे पड़ गया उसका किसी-----देखा ने वतने से पीछे के चश्मे अपने ! खून पीने वाले भेंड़िये की तरह हो गया था विकास का चेहरा ।

तव, जबकि वे उस स्क्रीन कक्ष में पहुंचे ।

ऐक विचित्र ही दृश्य देखा उन्होने । न जाने कहाँ से विजय को एक रस्सी मिल गई थी । जिसे उसने कक्ष की छत में पड़े एक कुन्दे में डाल थी उस रस्सी पर ही हंबानची के उसने उल्टा लटका रखा था !!

न सिर्फ लटका रखा था जबिक हवानची होश में थां । विजय उसकी पसलियों में गुदगुदी कर रहा था !!

मजबूर से हवानची को एक विचित्र से अन्दाज में हंसना पड रहा था ।

"आशीर्वाद दो गुरु ! लिए कर स्पर्श चरण उसने श्रद्धापूर्वक । के विजय गया झुक में चरणों विकास हुआ कहता "!

"किसका आशीर्वाद पूरी जब और उठाया ऊपर ने विजय पकडकर कान के विकास झुककर "! तरह से साबधान स्थितियों में खड़ा हुयाबिजय पकडे कान तो विकास----------- के हाथ ऊपर उठ गए थे, बोला, "साले, तूं टाड हो गया है दिलजले, लेकिन अक्ल के पीछे अभी तक लठिया लिए घूम रहा है "!

" कहो तो सहीं गुरु, क्या गलती हो गई मुझसे ?"

"'देख लिया घुसकर तमाशा देखने का पारणाम ?"

विकास के गुलाबी होंठों पर शरारत युक्त मुस्कान दौड गई बोलादेख "--- तोगुरु हूं रहा-, हम तीनों मस्ती मना रहै है । ये चीनी चमगादड़ हमारे सामने उल्टा लटका हुआ है । बोलिए, क्या ये परिणाम हमारे हक का नहीं ?"

"प्यारे दिलजले "-- विजय गया हो गम्भीर एकाएक "!'पहले भी कई बार कह चुका हूं, आज फिर कहने की तमन्ना। है । "

"जरूर कहिए "!

" तुम पैदा हुए थे तो हमने ख्बाब सजाया था कि तुम्हें जासूस बनायेंगे का दुनिया---------सबसे बड़ा जासूस "!

" बन तो गया हूं गुरू "। बच्चा तुम्हारा है चीफ का सर्विस सीक्रेट अन्तर्राष्ट्रीय ---

" होगें भी ये "--- कहा ने विजय "! मानता हूं कि दुनिया भर के मुर्ख जासूसों ने तुम्हें जासूस बड़े सबसे--- की उपाधी दे दी है । ये दुनिया भी मुर्ख है , जो तुम्हें इस सदी का सबसे बड़ा जासूस समझती है ।

----- मुझसे पुछो, मेरे दिल की गहराईयों से पुछो तो जासूसी की ए बी सी डी का भी पता नहीं है तुम्हें !

------ हां सबसे बहादूर , सबसे बड़े पहलबान और समय आने पर दुनिया के सबसे बड़े दरिन्दे होसकते हो तुम के जासूस ! पास दीमाग होता है, इस नाम की कोई चीज तुम्हारे पास नहीं है ।

----- जासूस किसी घटना पर भली भार्ति बिचार करता है , फिर मैदान में आता है , किन्तु तुम समय उस तुम ----- हो जाते फंस जब हो सोचते, खैर छोड़ो इस बात को मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हे भाषण पिलाने का कोई लाभ नहीं होने बाला है । देख रहा हू कि तुम्हारे पैरों में लड़खड़ाहट है, तुम्हारे मैदान में कूदने का परिणाम है ये "!

खूनी दृष्टी से पलटकर उल्टे लटके हबानची की तरफ देखा विकास ने !

हबानची के नाटे शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गई ।

विकास गुर्राया ।। है से वजय की है मर्दानगी की मर्दों इन लंगडाहट ये "---- मुझे चारों तरफ से घेर कर मर्दानगी का परिचय दिया था इन्होंने ।। मैं जान भी ना सका कि मुझे किसने घेरा है कि इनकी गोलियां मेरे शरीर में धंस गई ।"

" इसी को तो जासूसी पैंतरा कहते हैं प्यारे दिलजले इन् !हे पता था कि अगर इन्होंने तुम्हें सम्हलने का का अबसर दिया तो परिणाम क्या होगा ।"

किन्तु विजय की बात पर ध्यान कहां था बिकास का । वह तो उल्टे लटके हबानची पर गुर्राया अपने मुझसे तो तू "-----
हे मिला लिए के करने खून आखिरी का जीबन । जो कुता अपने बाप की कब्र को मेरे खून से धोने के लिए निकला था , वह कहां चला गया ?"

कुछ बोला नही हबानची , चुपचाप लटका रहा ।

" सुना नहीं तुमने ?" ऐसी आबाज कि अगर फौलाद से टकराये तो उसमें भी दरार पड़ जाती मैं हूँ रहा पूछ क्या "----?"

बेचारा हवानवी जवाब वया देता ?

चुप रहा ।

उत्तर में एक तीव्र ठोकर उस के चेहरे पर पड़ी हबानची के कंठ से चीख निकल गई । फिर विकास ने शुरू कर दिया अपनी द्नरिन्दगी का दौर तो हबानची स्वयं !! हलाल होते हुए बकरे की तरह मिमिया ही रहा था, इधर विजय और वतन' को भी आंखें बन्द कर लेनी पड़ी । विजय तो जानता ही था कि ऐसे मौके पर विकास को टोकने 'से कोई लाभ नहीं होता, लेकिन वतन ने टोका तो उसकी तरफ इस तरह पलटकर गुर्रापा विकास कि जैसे उसे फाड़कर खा जाएगा बोलो मत में बीच"-----
वतन, अपने काम में अवरोध उत्पन्न करने वाले को मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता ।"

और विकास की इस गुर्राहट के बाद स्वयं वतन कां साहस नं हुआं कि वह कुछ कहे ।

कहते है कि बिकास अगर जुबान खुलवाने का प्रण कर ले तो पत्थर के टुकडों को भी बोलने पर विवश कर देता है । एक समय ऐसा अग्या कि हवानची को बोलना ही पड़ा"! हैं चुके पहुँच चीन दोनों वे" ----

--'"क्रिस माध्यम से ?" विकास ने पूछा ।

"विमान से ।"

" क्या वे 'वेवज एम व अणनाशक किरणों के फार्मुले फिल्में भी अपने साथ ले गए हैं ?"

-"हा । हवानची ने जवाब दिया ।

"हूं "! हैं गए ले साथ अपने वे सामान का मचाने तबाही में चीन तो"----विकास गुर्राया "!

"एक बार फिर समझो प्यारे दिलजलेने विजय "। जासूसी हैं कहते इसे------ कहा केन्द्रित पर जलपोत इस ध्यान हमारा"-- सुरक्षित वे सहित फिल्मों करके अपने देश पहुंचने में सफल हो गए हैं ।"

--"यही तो मैं चाहता था चचा अगर "----पड़ा बोल वतन पर स्थान के विकास "! इसीफिल्मे पर जलपोत-ं मेरे हाथ लग गई होतीं तो बेहद अफसोस होता मुझे "!

"इस ऊट पटांग बात का क्या मतलब है बटन प्यारे ?" विजय ने, आंखें निकाली ।

" मतलब सिर्फ इतना है चचा कि चीन में जाकर तहलका मचाना चाहता हूँ मैं ।" वतन ने कहा जाती मिल यहीं फिल्में अगर"- बहाना का जाने चीन तोसमाप्त हो जाता, मेरी हसरतें दिल में घुटकर रह जाती "!

. "तुम्हें कोई नहीं समझ सकता ।। विजय उठा झलाझुं "

विकास हवानची से कह रहाथा किसी ओर के द्वारा किए गए शिकार को खाना विकास का सिद्धान्त नहीं है । इस समय मेरी सेवा में तुम्हें गुरु और वतन ने प्रस्तुत किया है । तुमने कसम खाई है कि अपनी जिन्दगी का आखिरी खून तुम, मेरा करोगे ! तुम्हें तक जब अपनी हसरत पूरी करने का एक मौका न दे दू, तब तक मरने भी नहीं दूगा । तुम्हें जिन्दा रखूंगा मैं, मौका दूगा कि तुम मेरी हत्या कर सको । उस प्रयास में स्वयं भी अपने जीजा के पास पहुंच जाओ तो यह तुम्हारा भाग्य होगा "!

न जाने क्या सोचकर दर्द से कराहते हवानची के कान की एक नस दबा दी विजय ने ।

हबानची बेहोश हो गया ।

विजय की तरफ पलटकर विकास ने पूछा..."इससेक्या लाभ हुआ ?" '3"

" इससे वही लाभ हुआ प्यारे दिलजले, जो जुकाम में विक्स बैपोरब लगाने से होता । चला कहता विजय में टुन ही अपनी " यह अब परं रहने में होश"----गया मिमियाने के अलावा कर भी वया सकता था की मुहब्बत अपसी हमें यह भी वैसे ! बाते

न करने देता ।"

"खैर, चचा, अब आदेश दीजिए कि हमें क्या करना है ?" वतन बोला ।

खा जाने वाली नजरों से विजय ने घूरा वतन को बोला तुम्हें है जरूरत की आदेश मेरे"?"

"वयों नहीं गुरु ?" विकास ने शरारत की ।

" तो मेरा आदेश तो ये है प्यारो कि इसी जलपोत पर बैठकर अखण्ड कीर्तन करो ।" विजय ने कहा, " शरीफ भक्तों की तरह बैठकर हमारी झकझकियों का रसास्वादन करो । उनमें छूपे तथ्यों को समझो और जीवन में उनका अनुकरण करो।"

"खैर, चचा, अब आदेश दीजिए कि हमें क्या करना है ?" वतन बोला ।

खा जाने वाली नजरों से विजय ने घूरा वतन को बोला तुम्हें है जरूरत की आदेश मेरे"?"

"वयों नहीं गुरु ?" विकास ने शरारत की ।

" तो मेरा आदेश तो ये है प्यारो कि इसी जलपोत पर बैठकर अखण्ड कीर्तन करो ।" विजय ने कहा, " शरीफ भक्तों की तरह बैठकर हमारी झकझकियों का रसास्वादन करो । उनमें छूपे तथ्यों को समझो और जीवन में उनका अनुकरण करो।"

कुछ देर उन्हें विजय की उस बकवास का सामना करना पड़ा जो एक बार शुरू होकर बंद होनी कठिन हो जाती है ।

विकास तो वैसे भी विजय की बकसास का जवाब बकवास में ही देने का के माहिर था । वह तो विजय के सामने अड़ा रहा, किन्तु वतन बुरी तरह बोर हो गया ।।

जब उस पर रहा न गया तो बोलाकी काम कुछ "----------- बातें भी करो चचा"!

" ये हुई शरीफ वच्चों वाली बात ।कि सोचकर यह " काफी देर मौज मस्ती हो ली है, विजय स्वयं ही लाइन पर आता हुअा बोलाक्या ही बचा तो पास के चचा "-- --- है व्रटत्न प्यारे तुम ही काम की बातें करो ।"

" ये जलपोत किधर जा रहा है ?"

" पीकिंग की तरफ ।"

'"क्या हम इसी जलपोत के माध्यम से चीन में प्रविष्ट होंगें ?" वतन ने पूछा।

" इस जलपोत के चालकों को तो हमारा यही आदेश है की वे सीधा पीकिंग के बन्दरगाह पर ही लंगर डाले । ने बिजय "
त बन्दरगाह हम लेक्रिन""----बतायाक पहूंचने से पूर्व ही जलपोत छोड़ चुके होंगे "!

" हूं "! बाण्ड वागगरोफ नुसरत और तुगलक का क्या होगा ?"

" हां "! बिजय न कहा उ़न्हें हमंने अगर । है योग्य विचार अवश्य प्रश्न यह" उसी कक्ष में बंद छोड़ दिया में अंत तो ---
। बे होगें में कैद की चीनियों उन्हें साथ लें, तब भी खतरा है । साथ रहै, सम्भव है हमारे साथ रह कर वे हमारे ही काम मे अबरोध उत्पन ना करें ।"

" एक राय दूं गुरू ? विकास बोला ।

" जरूर दो है कहा ने विजय "!

" क्युं ना हम अपने साथ साथ चचा बागरोफ को ले लें ।"

" क्यों ? चचा में क्या लाल जड़ें हैं ?"

" क्यों? चचा में ही क्या लाल जडे है ?"

"यह बात अन्तर्राष्ट्रिय गठ्बन्धन के आधार पर की हैं गुरु ।ने विकास " कहाचीन "--, पाकिस्तान और इंगलैण्ड एक है। रूस उनका विरोधी है ,हमारे साथ है । पाकिस्तान और इगलैण्ड की सरकार के अनुराध पर चीनं उंनके जासूसों को तो लौटा देगा, किन्तु चचा के मामले में गड़बड़ी कर
सकता है । सम्भव है चीनी सरकार चचा के साथ कोई अनुचित हरकत भी कर डाले । चचा के साथ अगर कुछ भी अनिष्ट होता

है तो उसके जिम्बेदारं हम होंगे "!

"जिस आधार पर तुमने यह राय दी है प्यारे दिलजले उस दृष्टि से तो बिल्कुल सही है कहा ने विजय "!…......"इसमें कोई शक नहीं कि एक बार अपने पंजे मे फंसे बागारोफ को चीन सरकार मार भी डाल तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी ! किन्तु सोचना यह है कि इस अभियान में चचा का लक्ष्य भी बही है जो बाण्ड इत्यादि का हैफार्मूला-
प्राप्त करना । सम्भव है कि हमांरे साथ रहकर भी चचा वही प्रयास करें?"

" निश्चित रूप से आपकी बात में दम है गुरु "!

"तुम्हारी इस बारे में क्या राय हे बटन मियां पुछा। से वत्तन ने विजय "!

गम्भीर स्वर में वतन ने कहार दिली मेरी सचमुच आप क्या"--ाय जानंना चाहते चचा ?"

" स्पष्ट कंहो दोस्त तुम हो चाहते कहना क्या !?" बिकास बोला !

"चचा कहा में गम्भीर वतन गड़ाए दृष्टि पर विजय "!…"मेरी राय जानना चाहते हो तो सच्चाई ये है कि मैं अमेरिका, रूस और चीन जैसे देशों में कोई फर्क नहीं समझता ।।ये सभी राष्ट्र महाशक्तियाँ कहलाते हैं और करीब करीब इन सभी की नीति एक जैसी है । मैं इसे अच्छा नहीं समझता किं रुस अगर भारत के साथ है तौ हम उसे ठीक कहें ।। नीति उसकी भी वही हेै छोटी मछलियों को ग्रास बनाना !"

" तुम लो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का कचूमर निकालने लगे बटन प्यारे"!
विजय ने कहासबाल यहां" --- ये नहीं हैं कि किस महाशक्ति की नीति क्या है ! प्रश्न ये है कि चचा को साथ लें अथवा बाण्ड और नुसरत तुगलक के साथ उसी कक्ष में बन्द पड़ा रहने दे?"

" सिर्फ इसलिए मुझे बागरोफ चचा से कोई सहानुभूति नहीं हो सकती कि वे रूस के हैं । "वतन ने स्पष्ट कहा लेकिन"------ उन्हें अगर कि है सच्चाई भी यह चीन के हवाले किया गया तो उन्हें सिर्फ रूसी होने की सजी मिलेगी "!

" तुम्हारे कहने का मतलब ये है कि चचा को अपने साथ ही ले लेना चाहिए "!

…"यही समझ लीजिये ।"

" और अगर वे फार्मूला प्राप्त करने के लिए हमारे साथ ही गड़बड़ करे तो ?"

''जब वह वक्त आयेगा तो चचा से हम स्वयं निबट लेंगे ।यह"----कहा ने वतन " बात ज्यादा गलत होगी कि इस डर से उन्हें इन दरिन्दे चीनियों के हवाले कर दिया जाए ।"

"मैं बतन की बात का समर्थन करता हूं ।कहा ने विकास "..."और साथ ही यह राय भी देता हूं कि फिलहाल हम हबानची को भी अपने साथ रखें । चीन में वह एक कवच की तरह हमारी रक्षा करेगा ।"

-"क्या मतलब ?" विकास की उपर्युक्त राय पर विजय चौकाहमें---- गले में घण्टी बाँधने की क्या जरूरत है ?"

" आप समझे नहीं गुरु हम"-कहा ने विकास "!े क्रिस्टीना के यहां ही तो ठहरना है "!

"बेशक।"

" जब तक हम चीन में रहकर फार्मुला ना प्राप्त करें,, तब तक हवानची को अपनी कैद में रख सकते है "!

" लेकिन इससे लाम क्या होगा ?"

"बहुत से लांभ होगे ने विकास "! कहाक सिंगसी सांगपोकऔर कि ये तो फायदा पहला"---े ठिकानों का पता बतायेगा ये । वे ही दोनों फिल्में ले गये है और उन्हीं को मालूम होगा कि फिल्में कहाँ हैं रहेगा-मैं कब्जे हमारे हवानची तक जब भी वैसे !, हम सुरक्षित रहेगे !"

"बात उल्टी भी पड़ सकती है प्यारे दिलजले क्रिस् साथ-साथ हमारे हवानची कहा ने विजय "!टीना है सकता फंसा भी को --- "!

''मामला थोडा गडबड हो गया गुरु ने विकांस "! कहाहवानची हमें यहां अगर"-- के स्थान पर सांगपोक टकराया होता तो एक वडी़ ही खूबसुरत चाल चली जा सकती थी । दिक्कत ये है कि इसके लोटे जैसा शरीर हममें से किसी के पास भी नहीं है !"

"तुम शायद यह कहना चाहते हो कि इसके स्थान पर यहां सांगपोक होता तो उसका मेकअप करके चीनी सीक्रेट सर्विस में धुस जाते ?"

"आपके बच्चे जियें गुरु कहा ने विकास "!... "काफी समझदार हो गये हैं आप ।''

सीना चौड़ा कर लिया विजय ने, बोलाकाज भीमसेनी में दाल की मूंग "---ल मिलाकर खाना अपना खानदानी शोंक है प्यारे--कि ही है पता तुम्हें तो यह और - इनके सेवन से बुद्धि ऐड़ लगे हुए घोडे की तरह सरपट दौड़ती है । किन्तु सबाल ये हैकि हममें से किसी ने भी हवानची के शरीर जैसा हसीन जिस्म नहीं पाया है, अत कोई तो का करने मेकअप इसका :प्रश्न ही नहीं है ।"

''तो आप इस बात से सहमत नहीं है गुरु कि हबानची को अपने साथ रखा जाये "!

''एकदम नहीं ।छूट पूरी तुम्हें की बात इस-----"! हां"------कहा ने विजय " है कि जलयान छोड़ने से पूर्व तुम इससे जो भी जानकारी प्राप्त करना चाहते हो, प्राप्त कर सकते हो । जैसे सांगपोकं और सिंगसी का पता इत्यादि "!

" ठीक है धूम तरफ की हवानची विकास कहकर "! गया । अब वह हवानची को दुबारा होश में लाने का प्रयास कर रहा था ।

वतन कल्पना कर सकता था कि अब अगले कुछ समय में इस कक्ष में क्या कुछ होने जा रहा है !

वह सब कुछ अपनी आंखों से देखकर वतन में चुप रहने की ताकत नहीं थी ।

और न ही विकास का बिरोध करना चाहता था । अतः लम्बे।।।। गया निकल बाहर से कक्ष वह साथ के कदमों लम्बे-

क्रिस्टीना ने वतन कौ देखा तो देखती ही रह गई । न जाने क्यों उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि दो तीन बार जोंरजोर- से धड़ककर उसकी हृदय। है गई हो वंन्द गति-

हालांकि वतन के साथ ही उसके फ्लैट में विजय, विकास और बागारोफ भी प्रविष्ट हुए थे, किन्तु उसकी दृष्टि वतन के चेहरे पर ही स्थिर होकंर रह गई थीं । गोंरा दूध जैसा, सेव की लाली लिये चेहरा ।

आंखों पर काला चश्मा ।

हाथ में छडी़ । जिस्म पर मौजूद सफेद कपडों पर न सिर्फ खून के धब्बेे लगे हुए थे बल्कि जगहजगह- फटे हुए भी थे !

उसे देखकर कोई भी कह सकता था कि भयानक जंग के बाद उसे कपड़े बदलने का मौका नहीं मिला है ।

" वतन की ही देखती रहोगी क्याने आबाज की बिकास को क्रिस्टीना ---- मानो स्वप्न से जगाया , " हम भी खड़े है "!

" ओह गई झेंप करके अहसास का मुर्खता अपनी "! क्रिस्टीना "! आओ-आओ "----- कहने के साथ ही बह दरवाजे से हटी और उन्हें ड्राइंगरूम में पड़े सोफे पर बैठने का संकेत करने लगी "!

बांगारोफ भला ऐसे मौकें पर चुप रेहने वाला कहाँ था हैं लगता"---बोला !, छोकरी इस हरामजादे पर फिदा हो गई हैं "!

सुर्ख हो उठा क्रिस्टीना का चेहरा !

'विजय ने कहाचचा "----, अपने बंटन का नाम सुनते ही मीरा की तरह दीवानी हो गई है क्रिस्टी तो थे यहां हम जब ! हमइसे बटन की मुहब्बत के बताशे फोड़क्रिस्टी को बटन इस कि है ये स्थिति अब । थे करते देखा खाते फोड़कर- अपने ब्लाऊज पर लगा लेना चाहती है !

वतन के अधरों पर एक विचित्र। थी अाई उभर मुस्कान डुबी में दर्द से-

विकस ने कहा सच क्रिस्टीन ! है लायक के क्रिस्टी वतन्---ा खडी न रह सकी वहाँ' ! तेजी के साथ मुडी और दूसरे कमरे में भाग गई !!

"लौ "! बागारोफ ने कहा पहले तो इस हरामजादे के दिल में मुहंब्बत की धण्टी बजा दी छिनाल ने, ओर अब खुद डंका बजाती चली गई "!

" डबलं चचा ने वतन "!'गम्भीर स्वर मैं कहाह फुर्सत इतनी यहाँ"---ी कहां है कि किसी से मुहब्बत कर सकू ।चीन में आया हूं, चीनियों को सबक देने से ही फुर्सत नहीं मिलेगी । तुम समझाना क्रिस्टी को । विजय चचा, तुम भी समझाना । जो कुछ आंप कंह रहे हैं सचमुच अपने लिए क्रिस्टी की आखों में मैंने वह सब कुछ देखा है । विकासस भी तुम उसे !मझाना मेरे यार । कहना कि वतन के दिल को धडकन उसका देश बन चुका है "। चमन--------

वतन के उन शब्दों के बाद एक सन्नाटा सा खिंच गया कमरे में ।

कुछ देर तक तो बागारोफ जैसे व्यक्ति की भी समझ में नहीं आया कि इस सन्नाटे को वहं कैसे तोडे परन्तु अधिक, देर तक वातावरण मे वह बोझिलता कायम न रह सकी जहां विजय और बागारोफ जैसे हो ऊट पटांग बातें करने वाले हों वहाँ भला

संनांटा कितनी देरे टिक सकता है ?

परिणाम ये कि कुछ ही देर बाद वहां ठहाके लगने लगे । उधर क्रिस्टीना को चैन कब था में किचन ! ढूंढा बहाना उसवै ! क फटाफट जाकरॉफी तैयार की और एक ट्रे में रख ड्राइंगरूम में आ गई क्या इच्छा ! उसने थी रखी झुका दृष्टि ! तो थी किंतु उनमें से किसी से भी दृष्टि मिलाने का साहस नहीं था उसमें !!!

कोई कुछनहीं बोला ।

" बतन ने स्वयं ही कहा"! है इच्छा की बदलने कपडे सर्वप्रथम चचा" ----

" तुम्हारे कपड़े बंदलना कोई आसान बात तो है नहीं प्यारे कहा ने बिजय "!... "सफेद कपडों के अतिरिक्त किसी अन्य रंग का कपड़ा तुम पहनते नहीं और मियां चुकन्दर की दुम,, तुम्हारे लिए अब यहां सफेद कपडे आयें कहां से ?"

" मेरे पास है निक से मुंह के क्रिस्टीना एकाएक "!ल पड़ा !

सभी ने चौककर क्रिस्टीना की तरफ देखा ।

लाज से दोहरी हो गई क्रिस्टीना ।

दृष्टि उठा न सकी !

विजय न पूछा गये आ से कहां पर तुम "----?"

इस प्रश्न पर क्रिरुटीना बौखला गई । फिर स्वयं को संभालने का प्रयास करती हुई बोली भैया न था मालूम मुझे"---कि ये आ रहे हैं । यह भी पता था कि सफेद के अलावा किसी रंग का कपडा नहीं पहनते है मैं सो...........सो ! खरीद।.....

बात पूरी न कर सकी क्रिस्टीना । हलक सुख गया उसका !

'"यह्र तो बड़ा अच्छा किया तुमने । वतन सीधा क्रिस्टीना से बोला---;-"कपडे बदलना मेरे लिए इस समय किसी भी कार्य से अधिक आवश्यक है । अगर कपडे मैं नहा... कर बदलूं तो ओर भी अधिक अच्छा रहे ।"

यह अनुभूति करते ही कि यह वाक्य बतन ने सौधा उसी कहा है क्रिस्टीना का दिल जोर! उठा धड़क से जोर-

बीच में टपक पड़ा विजयप्यारे बटन नहीं क्यों-नहीं "क्यों"---, नहाना जरूर, चाहिये । आओ, मैं तुम्हें बाथरूम दिखाता हूं !

सोफे पर से उठकर खडे हो गये विजय की कलाई पकडी विकास ने एक झटका देकर सोफे पर विजय को वापस विठाता हुआ विकास वोलागुरु बैठो अाप"------, क्रिस्टी वतन को बाथरुम बतला देखी "!

"'अजी नहीं ह खड़े ने विजय "!ोने का अभिनय किया "! बतायेंगे हम"---

"'नहीं गुरु खीचा वापस ने विकास "!

-"अजी नहीं ।'" विजय ने पुनने बागारोफ साथ के विकास बार इस तो चाहा उठना : भी विजय को पकड़कर खींचते हुये कहा..."अबे बोलती पर ढक्कन लगा ढक्कनी के ! मुहब्बत की खिचडी पक रही है तो पकने दे । तु क्यों दालभात में मूसलचन्द बनता है ? जा छिनाल की ताईइस ! रास्ता का बाथरूम को वाले भूतनी इस दिखा तू- चिडी के नटवे को हमने पकड़ रखा है "!

विजय की इस एक्टिंग पर वतन और क्रिस्टीना भी बिना मुस्कराये नहीं रह सके ।

-"'आप भी खूब हैं चचा "! कहता हुआ वतन उठ खड़ा हुआ"। बाथरुम बताना----क्रिस्टोना ! हूँ रहा जा नहाने मैं "-

दृष्टि झुकाये कमरे से बाहर की तरफ चल दी क्रिस्टीना ।

उसके पीछे वतन था !

रहरहकर विजय विकास और बागारोफ के बन्धनों से मुक्त होने का प्रयास कर रहा था------- था रहा चीख ही साथ---- छो अबे"डो मुझे रास्ता का बाथरुम को बटन ! मैं दिखाऊँगा !

"कॉफी पी चटनी के वर्ना गंजा कर दूंगा ।! बोला हुआ रोकता उसे बागरोंफ "

दरवाजा पार करके वतन और क्रिस्टीना ओझल हो गये । तो ढीला पड़ गया विजय । बागारोफ की तरफ देखकर नाराजगी जैसे शब्दों में बेलाअ तुमने ये"-च्छा नहीं किया चचा मेरे पेट में दर्द होने लगा है ।''

" अबे चुपचाप कॉफी पी चोट्टी के ।"

कप उठकर कॉफी का एक पूंट भरा विजय ने और फिर विकास से वोला..."तुम्हें तो मैं भुगत लूँगा दिलजले "!

इधर यह मोजउधर और थी रहीं आ मस्ती-...वतन और क्रिस्टीना ?

उसके पीछे-पीछे चल रहा था वतन ! थी रही जा चली धीरे-धीरे क्रिस्टीना झुकाये गर्दन !

अचानक वतन दो लम्बे कंदमों के साथ उसके बराबर में अा गया !

उसके साथ चलता हुआ बोला"! क्रिस्ट्री "--

ठीठककर, दृष्टि झुकाये हुए ही क्रिस्टीना ने कहा..." जी "!

"मेरी तरफ देखो ।समी उसके "प ही खड़े वतन ने गम्भीर स्वर में कहा ।

न जाने कैसी शक्ति थी वतन में कि क्रिस्टीना कों धडकता हुआ दिल उसकी पसलियों में टकराने लगा है ! उठे नेत्र से कम्पित ! ऊपर, वतन के चेहरे की तरफ़ देखा उसने । था रहा कांप शरीर सारा उसका आदेशबश से अनजाने एक !

"तवतन "! हो जानती कैसे मुझे तुम----... ने गंभीर स्वर में पूछा ।

हलक सूख! निकला ना बाहर से अधरों स्वर किन्तु है चाहा वोलना उसने का क्रिस्टीना था गया सा-

"जवांब दो क्रिस्टीना मुझे तुम हो जानती कैसे"-?"

क्रिस्टीना ने साहास समेटा धीमे स्वर में बोली...आपकौ कौन नहीं जानता ?"

"जो मुझे जानता है वह मेरी पूरी कहानी से भी परिचित होता है "!

" अनभिज्ञ मैं भी नहीं "!

" फिर भी मेरी तरफ इस विशेष दृष्टि की त्रुटि क्यों कर रही हो तुम ?" शान्त सागर जैसे गंभीर स्वर में वतन ..." तुम भी तो जानती होंगी कि मैं उन अभागों में हूं जिससे जो प्रेम करेगा वह मृत्यु की गोद में सो जायैगा "! क्रिस्टीना देख रही थी-

वह ---- था आया उभर बल पर मस्तक के वतन हुये बोलते कह रहा थासे मां अपनी मुझे था प्रेम से परिवार अपने "---, बहन और पिता से मगर वे जीवित न रहे उसे करके प्रेम से मां दादी बूढी ! भी मार डाला मैंने अब प्रेम से किसी अव---- किसी ! चाहता नहीं मारना को किसी । चाहता नहीं करना के भी प्रति मेरे ह्रदय मे प्रेम उमड़ने का तात्पर्य हैं, उसके लिये मृत्यु का सृजन करना नहीं हत्यायें अधिक ओर मैं !, कर सकता ।"

"आपकी यह धारणा त्रुटिपूर्ण है क्रिस "!्टीना ने धीरे से कहा"! मात्र भ्रम का ह्रदय आपके" ---

"नहीं क्रिस्टी ये भ्रम नहीं, सत्य है कि है सत्य कठोर"---कहा ने वतन "! जिससे मैं प्रेम करूंगा, वह जीवित नहीं रह सकेगा क्रिस्टी आवाज की वतन "! भर्रा गई तुम्हारे मैं ! सकूगां सह न धाव अधिक और मैं "---प्रेम का उत्तर प्रेम से नहीं दे सकुंगा "!

"उतर की अभिलाषा किसे है ?" क्रिस्टीना ने कहा करे उपांसना उसकी ईश्वर कि है चाहता कब यह उपासक का ईश्वर ---?"

" समझने का प्रयास करो क्रिस्टी "!

"यह प्रयास करने की आवश्यकता आपको है क्रिस्टी ही साथ के कहने "!ना आगे बढ़ गई । बाथरुम की ओर सकेंत करके बोलीटहै बाथरुम वह"---, उसी के अन्दर अपके कपड़े भी उपस्थित हैं "। लीजिएगा कर परिवर्तित नहाकर !

वतन उसे देखता रह गया !

सिर झुकाये वह तेजी से गैलरी में बढ़ी जा रही थी ।

"क्रिस्टी "! पुकारा ने वतन "!

ठिठकी क्रिस्टीना, मुड़ कर वतन की अोर देखा । कम्पित स्वर में बोलीकरें क्षमा"-, आपके उत्तर की अभिलाषी, नहीं मैं "!

"मैं तुम्हें कुछ समझाना चाहता हूं "!

" यही न कि ईश्वर की उपासना त्याग दूं मैं ?" धीरे से क्रिस्टीना ने कहाशासन पर चमन । करें क्षमा परन्तु-------- होगा आपका । चमन के नागरिकों के ह्रदय पर भी राज्य करते हैं आपकोई का आप पर ह्रदय के क्रिस्टी किन्तु-- अधिकार नहीं है !

क्रिस्टी अंपने मनोस्थायित्व को विचारों के प्रकार भी किसी में मस्तिष्क- प्रदान करने हेतु स्वतन्त्र है । यह कहने का आपको कोई अधिकार नहीं कि अपने ह्रदय में ईश्वर की उपासना के विचारों को त्याग दूं । यह मुझ पर अत्याचार होगा और अत्याचार सहना

क्रिस्टी का काम नहीं है आगे और मुडी वह कहकर "! बढ़ गयी !

" सुनों क्रिस्टी, मेरी बात सुनो ।! पुकारा ने वतन "

परन्तु इस बार रुकी नहीं क्रिस्टीना, पूर्ववत आगे वढ़ती चली गई !

अपने स्थान पर खडा वतन उसे उस समय तक देखता रहा जब तक कि गैलरी के मोड़ पर घूमकर ओझल न हो गई । वतन के मस्तक पर पड़ा बल गहरा हो गया । फिर न जाने किन विचारों के वशीभूत उसका चेहरा सुर्ख पड़ गया ।

सुर्ख चेहरा लिये वह लम्बे साथ के कदमो लम्बे-बाथरुम में समा गया !

उधर जब क्रिरुटीना ने ड्राइंगरूम में प्रवेश किया ।

नारा खिचडी की प्रेम गई पक तो "---ने विजय लगाया सा-?"

" आपका तो हर सम्य मजाक सूझा करती है विजय भैया । क्रिस्टीना गई बैठ अर सोफे हुई कहती "!

कॉफी का मग उठाया उसने और होंठो से लगा लिया ।

इधर उसने एक घूंट लिया और उधर विजय ने कहना शुरू किया"------------'मजाक नहीं क्रिस्टी इस गंजे चचा की कसम ।गम्भीरता बंनावटी में स्वर के विजय " थी"...कल्लो हमें बार एक । है भयानक बडा रोग का इस्क ये"------------

"अबे चुप बा डाटा ही में बीच "!गारोफ नेकि जाने क्या साले तू"---...।"

"नहीं चचा, पिछले जन्म में कान्ता से इश्क किया था गुरू ने "!

इस प्रकार तीनों ही ऊलजलूल बातें करते रहे । इधर उनकी कॉफी समाप्त हुई, उधर दूध जैसे सफेद कपडे पहने वतन प्रविष्ट हुआ ।

एकटक वतन के सौन्दर्य को देख रही थी क्रिस्टी ।

वतन उससे नजर बचाने का प्रयत्न कर रहा था !

.'"चचा औरत नबट अपना अ ौर गयी बन मर्द क्रिस्टी है गया हो उल्टा साला तो मामला "---लगाया सा नारा ने विजय !
"!

जलपोत ने बन्दग्गाह पर लंगर डाला तो कई सैनिक अंधिकारियों के साथ सांगपोक और सिंगसी भी जलपोत पर चढ़ गये । इस बात से उनका 'माथा' ठनका था कि डेक पर कोई भी आदमी नहीं चमका था !

एक साधारणपर डेक यात्री तो पहुंचे पर बन्दरगाह जब जलपोत कि के थी बात सी- आजाते हैं, मगर डेक सूना पड़ा था !
कि थी की यहीं उन्होंने तो कल्पना कमचाहिय ही होना तो को हवानची कम-से- े था ।

किन्तु पह अप्रिय घटना क्या हो सकती है, यह बात सांगपोक के। थी बाहर से दायरे के दिमाग-

यह विचार भी उसके दिमाग से चकराया था कि अगर रास्ते में कोई अप्रिय घटना घटी है तो जलपोत के सुरक्षित यहां पहुंचने का क्या मकसद है?

फिर भी सांगपोक ने सैनिकों को सचेत कर दिया ।

सर्थप्रथम वे चालक।। पहुंचे में कक्ष-

दो चालकों को बुत की भांति अपनी सीटों पर बैठे पाया !

"क्या बात है इस तरह क्यों बठे हो तुम ?" -सांगपोक ने पूछा !

अपने साथियों को अपने पास देखकर उनके पीले चेहरों की रंगत बदली । उन्होंने बताया कि, उनकेसभी साथियों को एक कक्ष में बन्द कर दिया गया है ।

विजय ने उन्हें जलपोत चलाते रहने का आदेश देते हुए यह कहा था कि अगर वे एक पल के लिये भी सीट से उठे अथवा अन्य किसी प्रकार की अनुचित हरकत करने की चेष्टा की तो वह टी । है रहा देख उन्हें बैठा में हाल बी.इसी डर से उनमें से कोई हिला तक नहीं समान के बुत भी अब । आये ले यहाँ सीधा को जलपोत ! इसीलिये बैठे थे, क्योंकि, उनकी दृष्टि में उन पर नजर रखी जा रही थी !

उनके उलटे! है घटी घटना क्या पर जलपोत में रास्ते कि गया समझ सांगपोक से बयान सीधे-

सिंगसी और कई अन्य अधिकारियों सहित सांगपोक टी वी हॉल की तरफ वढ़ गया है ! वहां पहुंचने के लिये पहले वे उस हॉल से गुजरे जिसमें वतन ने व्यूह का कमाल दिखाया था !

वहाँ की स्थिति कां निरीक्षण करता हुआ साँगपोक अनुमान लगाने का प्रयास करने लगा कि क्या कुछ हुआ होगा !!

तबजबकि वे टीवी हाँल में पहुंचे !

कई अधिकारियों के कण्ठों से तो चीखें निकल गई । सांगपोक और सिंगसी के माथे ठनक गये !

आंखों में खून उतर आया ।

दृश्य देखने वाले चीनी अधिकारियो के शरीर!! थे रहै कांप-

एक डरावनी सिहरन उनकी आखों में आबैठी थी ।।

दृश्य ही ऐसा था कि बडेस-े। उठे कांप भी इन्सान दिलके बडे-

सारे हॉल में अनेक चीनी सैनिकों के की रेशम । थे हुये लटके उल्टे जिस्म" डोरियों के सिरे हाँल की छत पेर वंदे थे उन्हीं ! उल्टे बंधे में रियोंडी लटक रहे थे चीनी सैनिक !

उनके सिर हॉलके फर्श से ठीक सात फीट की ऊंचाई पर पे । सभी बेहोश सभी के माथों पर से खून की बूंदें फर्श पर टप टप-द्वारा ब्लेड थीं रही गिर करके सभी के माथों से गोश्त
नोचकर लिखा गया था --विकास ---

विकास--विकास--कासवि--विकास--

सांगपोक के दिमाग में हथोड़े की भाति यह नाम बजने लंगा ।

हॉल का सारा फर्श खुन की बूदों से अंटा पडा था लटके सब वे में दृष्टि- एक ! हुए शरीर लाश ! थे रहे हो प्रतीत ही से-की हबानची हालात गम्भीर सर्वाधिक्क थी !

उसके मस्तष्क पर भी विकास लिखा था ।

आभास होता था कि कोई रहस्य उसके मुँह से उगलबाने के लिये उसे भयानक रूप से यातनाएँ दी गई है ।

विकास--विकास--विकास--

सागपोक के आदेश पर हबानची और सभी सैनिकों को उतारा जाने लगा ।।

किन्तु लाशों के उतरने से पहले ही कई पत्रकारों ने वहां पहुंचकर वह भयानक दृश्य अपने कैमरे के अंदर, कैद कर लिया ।।

सांगपोक गम्बीर था बेहद गम्भीर ।

उसकी नसों में दौड़ता खून उबल रहा था !!

सिंगसी को वंही छोडा उसने, दो अधिकारियों कों अपने साथ लिया ।

जलपोत की सबसे निचली मंजिल के कमरा नंम्बर दस तक पहुंच गया वह । कमरे के बन्द दरबाजे पर उसे एक कागज चिपका नजर आया उसने।। पड़ा को कागज उस !

उसमें लिखा था---

बेटे सागंपोक !

इस कमरे के अंदर तुम्हारे पिट्ठु मौजूद है छोड़े लिये के सहायता तुम्हारी ! जा रहा हूं खुशी बेहद कर जानकर बात यह !!! ! हो गये ले फिल्में तुम कि हुई

फिल्में हमें इसी जलपोत पर मिल जाती तो बेहद दुख होता ।। जानता हूँ कि यह जलपोत चीन पहुचेगा और मेरे इन शब्दों को तुम पडोगे भी अवश्य । अच्छी तरह समझ लो कि जिस समय तुम ये शब्द पढ़ रहे होंगे उस समय मैं तुम्हारे ही देश में कहीं हूं । सम्हलकर रहना में देश तुम्हारे !! लेना रोक तो सको रोक !! तुफान मचाने आया हूं । तुम्हें चैलेंज देता हूं चीन--------- अपनी से फिल्में निकालकर ले जाऊगाँ रोक नहीं मुझे सरकार चीन पूरी क्या तो तुम !! सकेगी !!

तुम जैसे दरिन्दे,, अहिंसा के उपासक को हिंसा अपनाने पर विवश करते है !

------- वतन !

----- वतन वतन ----- वतन----- -----
----- -----वतन वतन----- -----
----- वतनवतन ----- वतन----- -----

सांपपोक ने उस कागज को पढा । उसके हो खड़े रोंगटे कर पढ़ !

उसके आदेश परे दरवाजा खोला गया ।

सांगपोक ने उस कागज को पढ़ा ।

पढ़कर रोगंटे खड़े हो गये उसके ।

उसके आदेश पर दरबाजा खोला गया ।

" नुसरत "! आगये आका हमारे "-- था उठा बोला तुगलक ही देखते उसे "!

" आका में पैरों के सांगपोक अभी----अभी वह ! नुसरत बढ़ा आगे हुआ कहता "! झुकने हो बाला था कि साँगपोक ने कठोर स्वर में चेतावनी देकर उन्हें रोक दिया ।

जेम्स बाण्ड चुपचाप सांगपोक की तरफ देख रहा था !

पोक ने कहा-"आश्चर्य की बात है कि बाण्ड जैसा महान जासूस इस चूहेदानी में कैद है "!

जल उठा जैम्मबाण्ड-, बोला..."जिन्होंने हमें यहाँ कैद किया है जब तुम उनके चंगुल में फँसोंगे तो पता लगेगा ।"

हल्की सी मुस्कान दौड गई गांगपोक के होंठों पर, बोलाठीक गया हो जो खैर"---- है, ।किन्तु फिलहाल मैं तुम्हारी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूं "!

"जब तक फार्मूले की फिल्में हमारे बीच है तब तक शायद हमारे नीच दोस्ती नहीं हो सकेगी "!

"फिल्में हमारे पास सुरक्षित है मिस्टर बाण्ड योजना एक में दिमाग के पोक "! आ गई थी और वह उस योजना के आधार पर बातें कर रहा थायहां वतन और विजय"----- से विकास और बागारोफ को निकालकर ले गये और तुम्हें यहीं छोड़ दिया । इसका सीधासा तात्पर्य है कि बे बागारोफ को अपना दोस्त समझते हैं और तुम्हें दुश्मन शायद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के हिसाब से उन्होंने यह निर्णय लिया है "!

"क्या कहना चाहते हो ?"

"अगर उनकी दृष्टि"। है दोस्त हम तो सौचें से .' सांगपोक ने कहा ..."अगर वे सब हमारे विरुध्द एक हो सकते हैं तो हमें

चा्िहये कि एक जुट होकर हम भी उनके खिलाफ खड़े हो जायें । दोस्त बनकर दुश्मनों का मुकाबला करें ।"

एक पल वाण्ड ने कुछ सोचा है शायद यह कि इस समय पोक अपनी दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा है । उसे स्वीकार कर लेना ही हितकर है । सम्भव है कि पोक के साथ चीन में रहकर वह फिल्मों का पता निकाल सके !

एक ही पल में इन सच बातों पर विचार कर गया वह, बोला करोगे बात की समझदारी इतनी तुम कि थी नहीं आशा मुझे----!”

पोक की आंखें' चमक उठी ।

सांगपोक मुस्कराया, बोला तुम्हें है मन्जूर दोस्ती मतलब इसका "---?"

" अगर यह सच्चे दिल से की जा रही है ! मुस्कराया बाण्ड "!

फिर " ! थे साथ उनके भी तुगलक और नुसरत । वे गये बन दोस्त--

उसी शाम सांगपोक चीनी सीक्रेट सर्विस के साऊण्ड प्रूफ कमरे में अपने चीफ के सामने बैठा था । चीफ़ उससे कह रहा था ---बाण्ड जेम्स है सुना "-, नुसरत और तुगलक को तुमने 'हाऊस' में ठहरा दिया है ?"

--""जी हां ।"

"ऐसा क्यों किया तुमने ?" चीफ ने पूछाठहराया को अतिथियों तों वहाँ "---- जाता है । वहां से तो कोई भी आसानी के साथ निकलकर भाग सकता हैं । इन्हें तो किसी सुरक्षित और गोपनीय स्थान पर कैद करके रखना चाहिये था ।"

"इस समय बे हमारे अर्तिथि हैं चीफ "! भागेॉगें नहीं कहीं वे !

" क्या मतलब ?"

" मतलब ये चीफ कि विजय, वतन और विकास चीन में आ चुके हैं । रूसी बागरोफ को भी अपनी सहायता के लिए उन्होंने साथ ले लिया है । यूं तो विजय और विकास से ही हमारा देश परेशान है ------हैं गया बढ और शैतान एक इनमें अब---! । वतन-- उसका कहना है कि चीन में तबाही मचाने आया है वह के करने मुकाबला सबका इन ! लिए बाण्ड, नुसरत तौर तुगलक की सहायता लेने में क्या बुराई है ?"

" मगर वे तुम्हारी मदद करेंगे क्यों ?"

" कियुकि उन्हें उन फिल्मों की अ ावश्यकता है बात ऐसी "-कहा ने सांगपोक- "! नहीं है चीफ कि मैं कुछ समझता नहीं हूं । मुझे सब पता है कि जेम्स बाण्ड ने मेरी दोस्ती क्यों क्यों स्वीकार कर ली है ।"

-"'क्यों ?"

" अगर वह हमारी दोस्ती स्वीकार न करता तो क्या होता ? यही न कि हम उसे कैद कर लेते ? मैं जानता हूं कि इस हकीकत को बाण्ड अच्छी तरह समझता है । उसने सोचा कि कैद में पड़कर क्या होगा ? दोस्ती स्वीकार करके यह मेरे साथ रहेगा तो शायद किसी तिकड़म से उन फिल्मों का पता क्या सके ।"

" निश्चित रुप से बाण्ड जैसे व्यक्ति कें दिमाग में यह विचार आना "है। बात सी स्वाभाविक-------

-"और यही लालच उसे यहां से फरार नहीं होने मैं देगा "!

"क्रिन्तु अगर वह किसी दिन वास्तव में फिल्मों तक पहुंच गया तो ?" चीफ ने संभावना व्यक्त की ।

"जब स्वयं मैं ही नहीं जानता कि फिल्में कहाँ हैं तो उनके पहुंचने का प्रश्न ही कहां उठता है ?" कुटिलता के साथ मुस्कराते हुए पोक ने कहामैंने लाकर सुरक्षित फिल्में"----
आपको दे दी । यह मैं स्वयं नहीं जानता कि आपने ये कहाँ पहुंचाई हैं ?"

" अब तुम्हारी योजना क्या है?"

" मैं उनसे कह आया हूँ कि सात बजे उनसे मिलने आऊंगा,, साढे छहुई वजाती : रिस्टवाच को देखता हुआ सांगपोक बोला - मित्र हमारे वे कि कहूगा उनसे मै राष्ट्र के जासूस हैं करेंगे सहायता हमारी खिलाफ के इत्यादि विजय वे अगर : तो हम उनके राष्ट्र को वेवज एम और अणुनाशक किरणों का फार्मूला अवश्य देंगे ।। इस झांसे में फसाकर मैं उन्हें अपनी मदद के लिए तैयार कर लूंगा । अन्त में उन्हें किस तरह का फार्मूला मिलेगा आप समझ सकते हैं "!

''हमें तुम पर पूरा भरोसा है ।।। कहा ने चीफ "

"न जाने हैरी कहा गायब हो गया ?" पोक ने कहाइसी भी उसे तो होता वह "--- झांसेमें लेकर अपना दोस्त वनाया जा सकता था । वह वतन और विकास की टक्कर का लडका है ।"

" खैरहां--, हवानची का क्या हाल है ?"

" अब तो ठीक है वह है सात वजे वह और सिंगसी भी बाण्ड के पास हाउस में पहुंच रहे है ।"

इस प्रकांर कुछ देर और आवश्यक बातें करने के बाद सांगपोफ खड़ा होगया।

चीफ ने उसे जाने की इजाजत दे दी !

वहाँ से निकलकर वह ठीक सात बजे हाउस पहुँचा !

कमरे में बाण्ड, तुसरत और तुगलक के साथ उसने हबानची और सिंगसी कौ भी अपनी प्रतीक्षा में पाया !

हबानची के सिर पर एक हैट था । काफी हद तक उसने हैट का अग्रिम भाग अपने मस्तिष्क पर झुका रखा था । सम्भवत : लिखा पर माथे उसके कि इसलिए'विकास' नजर न आए ।

उनके सामने मेज पर शाम को पीकिंग से निकलने वाले करीब करीब सारे अखबार पड़े थे !

सभी में जलपोत के टी वी हॉलं का दृश्य छपा था । चीन में विकास के आगमन की खबर को प्रत्येक अखबार ने अपने ढंग से नमक ! था छापा लगाकर मिर्च-

एक अखवार में' तो विशेष रूप से हवानची का फोटों छपा था । उसके माथे पर लिखा था 'विकास' !

"चीन के अन्दर विकास का आधा आतंक तो तुम्हारे देश के ये अखबार फैला देते है ।कहा ने वाण्ड जेम्स "…......."विकास का सिद्धांत है कि वह जहाँ जाता है, पहले वह अपने' नाम का टेरर फैला देता है हॉल बी टी उसने से उदेश्य उसी ! में

सैनिकों को उल्टा लटकाया था उनके माथे पर अपना नाम लिखा था । इन अखबोरों में तो वतन का वह पत्र भी छपा है जो उसने तुम्हारे नाम लिखकर क्रमरे के दरवाजे पर चिपका दिया था "!

"तुम ठीक कहते हों । विकास उतना है नहीं जितना ये अखबार चीनी जनता के सामने उसका हब्बा बना देते है "!

"तुम्हारी सरकार को अखबारों पर सैसर लगाना चाहिए हैदी राय ने बाण्ड "..."आदेश हो कि विकास से सम्बन्धित कोई भी अखबार किसी तरह का समाचार न छापे इन समाचारों से होता ये है कि चीनी जनता विकास के आगहन को ही अपने दश के विनाश का द्योतक समझ लेती ।"

" अखबारों पर सैसंर लगाना हमारा काम तो नहीं जब मे विषय है। काम का सरकार"--कहा ने सांगपोक "! वह ही कुछ नहीं सोचती तो हम क्या करें ?"

"सीकेंट सर्विस के माध्यम से तुम्हें अपनी सरकार से मांग करनी चाहिए "! बाण्ड ने कहा... "तुम्हें दलील देनी चाहिए कि अखबार कुछ इस तंरह विकास का टैरर जनता में फैलाते हैं कि साधारण जनता विकास के विषय में कुछ बताते हुए डरती है और तुम्हें परेशानी होती है, इत्यादि ।"

"इस विषय पर मैं स्वयं सोच रहा था कहा ने पोक "!..."लेकिंन यहां हमारी बातों का विषय है कि हम सव को मिलकर बिकास, वतन और विजय का मुकाबंना करना है । आज दिन में मैंने अपने चीफ से बातें कर ली हैऔर उन्होंने एक ऐसा आश्वासन दिया है जिससे हमारी दोस्ती और मजबूत होगी "!

" कैसा आश्वासन ?"

" "यह कि अगर आप उनके खिलाफ हमारी मदद करें तो हमारा देश आपके देश को वतन के दोनों फार्मूलों की नकल दे देगा ।"

एक क्षण ध्यान से सांगपोक के चेहरे को देखने के बाद बाण्ड ने 'कहा१-..."अगर ये सच है तो हम तुम्हारी मदद के लिए तयार हैं ।"

" गुड अब"---- कहा ने पोक "!, एक बार... सिर्फ यह पता लग जाये कि चीन में वे लौग हैं कहां ?" इस बार हमारा प्रयास ये होगा कि उनमें से किसी की लाश भी चीन से बाहर न जा सके । हम दुनिया से उनका ड़र हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहते हैं "!

"क्या मैं भी आप लोगों का दोस्त बन सकता हूँ ?"

एक नई आवाज ने सबको चौका दिया ।

पलटकर सभी ने दरबाजे की तरफ देखा । दरबाजे पर हैरी मुस्करा रहा था !

" हैरी "! पोक एकंदम खड़ा हो गयागए पहुंच कैसे यहां तुम"----?"

" किसी भी जासूस के लिए कही भी पहुंच जाना शायद बहुत आश्चर्य की बात नही है होता प्रविष्टि में कमरे "! हुआ हैरी बालामैं वाला होने प्रविषट में प्रयोगशाला की तनव संर्वप्रपम"-- ही था , किन्तु विकास ने चमन में ही मुझे कैद कर लिया ! में मेकअप मेरे उसने स्वयं फिल्में गायब की । मुझे अलफांसे की सुरक्षा में कैद कर लिया गया ! किसी प्रकार मैं उसकी कैद से भांग निकला भी यह लगाया। पता सबकुछ ! पता लगाया कि डैडी के मेकअप मे मुझे लेने बाण्ड अकंल अकेले चमन आए थे , फिल्मों के चीन तक पहुचने की सारी कहानी पता लगी । लिहाजा मैं यहां अागया । फिल्मों का पता के चक्कंर में ही तुम्हारा पीछा कर रहा था कि तुम्हारी बातें सुनी । सोचा कि मैं भी दोस्त बनकर उस फार्मुले की नकल अपने देश तक पहुचा दू तो उचित रहेगा । यही सोच" । आगया सामने मैं -

--"तुमने बहुत अच्छा किया है हमारे बीच तुम्हारी ही कमी थी ।ने पोक " कहा..." भारत और रूस, चीन और अमेरिका के हमेशा ही खिलाफ रहे है है । इस अभियान में भी , उन दोनों देशों के जासूस मिलकर काम कर रहे हैं । हमें भी एकजुट होकर उनका मुकाबला करना चाहिए ।"

-"तुम्हारा यह प्रस्ताब पसन्दआया तभी तो मैं सामने आया ।ने हैरी " कहा...वर्ना एक दुश्मन जैसे ढंग से फिल्में प्राप्त करने के लिए मैं तुम्हारा पीछा कर रहा था । अगर तुम, अमेरिका को भी उस फार्मूले की नकल देने, के लिए तैयार हो तो मैं तुम्हारे साथ आ सकता हूं "!

जेम्स बाण्ड, जो हैरी के आगमन पर अभी तक कुछ नहीं बोला था । वह चुपचाप बहुत ध्यान से हैरी का चेहरा देखे जा रहा था ।। इधर सांगपोक हैरी से कह रहा थाकर निश्चय का देने नकल को राष्ट्रों मित्र .अपने ने सरकार हमारी---- लिया है ।"

इससे पूर्व कि हैरी कुछ बोले, जेम्स बाण्ड ने कहा"----- तुमसे कोई भी समझौता करने से पूर्व मैं कुछ बातें करना चाहता हूं हैरी?"

" जरूर कीजिए अंकल "!

"ये तो तुम्हें मालूम है ही कि चीन में इसं समय, विजय, विकास, वतन इत्यादि मौजूद है और वे".......

" कोई भी मेकअप कर लेने के मामले में उस्ताद है ।"

मुस्करते हुए हैरी ने बात पुरी की ---" सही भी है । आपको इस तरह अचानक मुझ पर विश्वास भी नहीं करना चहिए ।। जिस तरह भी अ ाप चाहे अपनी तसल्ली कर सकते हैं ।"

" इस प्रकार बाण्ड ने हर प्रकार से जांच की और पाया कि हैरी ही है तो बोला"। जाओ बैठ"--

फिर उनके बीच इस विषय को लेकर बार्तालाप होने लगाकि विजय, विकास, वतन और बागारोफ से किस प्रकार निपटा जाये ।। पहले तो यंही प्रश्न उठा कि यह कैसे पता लगे कि इतने वड़े चीन में वे हैं कहां ?

किन्तु पता लगाने का कोई उचित तरीका उनके दिमाग में नहीं आया । तब हैरी ने कहा चीन लोग वे "----में हैं और जब तक चुपचाप बैठे हैं, तब तक तो किसी भी प्रकार उनके ठिकाने का पता लग ही नहीं सकता। किंतु हां यह एक स्वाभाविकसी-बात है कि वे यहाँ चूप नहीं बैठेगे ।। बात अगर सिर्फ विजय अंकल की होती तो यह सोचा जा सकता था कि वे दिमाग से काम लेंगे और उसी समय कोई हरकत करेंगे' जब उन्हें पता सग जायेगा कि फिल्में कहां है ,, किंतु न विकास शांति से बैठने वाला है, न वतन । वे अवश्य ही कोई हंगामा करेंगे । बस, उनके मैदान में अ ाते ही हमारा काम आसान हो जायेगा ।'"

’इस प्रकार की बातों के पशचात् बारह बजे यह मीटिंग समाप्त हुई ।

सांगपोक ने हैरी के रहने का प्रबंध भी हाउस में कर दिया ।।

रात के करीब दो बजे के करीब सांगपोक अपने बिस्तर पर लेटा । लेटते ही अपने जिस्म में उसे कुछ खुजली सी महसूस हुई । फिर वह अपने जिस्म की बुरी तरह खुजलाने लगा ।

" हम खुजलां दें पोक बेटे "!' इस एक आबाज ने उसके सारे शरीर को जडवत् सा कर दिया ।

उसने देखा! था हुआ प्रकट विकास से पीछे के पर्दे । उसके गए हो खड़े रोंगटे ही दखते-

बेड पर से उछलकृर वह फर्श पर खड़ा हुअ ा तो बेड के नीचे छूपे किसी व्यक्ति, ने उसकी दोंनों टागें पकड़कर खींच दी । धड़ाम से मुंह के बल बह फर्श पर गिरा ।

अगले ही पल बेड के समीप वतन खडा हुया थाकपडे सफैद-, आखों पर काला चश्मा, हाथ में छड़ी ।

जबरदस्त फुर्ती के साथ पुनखड़ा उठकर : हो क्या था सांगपोक ।

उसने देखा...दो तरफ से घिरा हुआ था वह ।

** दोनों तरफ बराबर की लम्बाइयों वाले लड़के । मानो कामदेवों ने एकाएक यमराज का रूप धारण कर लिया हो । सांगपोक उनके बीच स्वयं को नर्वस सा महसूस कर रहा था ।

उसके जिस्म में खुजली उठी और पागलों की तरह खुजाने लगा ।

वतन और विकास ठहाके लगाकर हंसने लगे ।

सांगपोक के मुंह से खून बहने लगा था । अपने जिस्म को पागलों की तरह वह नोचे चला जा रहा था ।

फिर वतन ने छड़ी में से मुगदर निकाला । झन्नाता हुआ एक बार उसने सागपोक की छाती पर किया, मुंह के बल गिरा तो विकास की ठोकर सहनी पडी़ ।

इस प्रकारको सांगपोक भी ने किसी है उनमें । पड़े पिल ही दोनों पर सागपोक- सम्हालने का मौका नहीं दिया । एक तो वह स्वयं ही खुजली से परेशान था ,ऊपर में उन्होंने उसे दबोच लिया । पोक कुछ भी न कर सका । मारतेओर विकास मारते- बतन ने उसे अधमरा कर दिया ।

अन्त में रोतेकि पूछा और लटकाया उल्टा पर पंखे ने वतन को पोक गिडगिडाते- फिल्मे कहां है ? पोक ने जवाय नहीं दिया तो राक्षस बन गया विकास है ब्लेड निकाल कर उसने
पोक की सारी खाल नोंच डाली । नाखूनों की जडें काट दीं । कान काट लिए । माथे पर अपना नाम लिख दिया ।।

बेहोश होने से पूर्व पोक ने उन्हें बताया कि फिल्में उसने अपने चीफ को दे दी हैं । बस, इससे आगे फिल्मों के विषय में उसे कुछ पता नहीं है । विकास को क्या पता था कि वह बेचारा सच बोल रहा है ? वह तो यही समझा कि पोक असलियत छुपा रहा है अत। लगा करने दारीखातिर अधिक और उसकी :

उस समय विकास को यकीन हो गया कि पोक ने वह बता दिया है, जव पिटता पिटता पोक मृत्यु से कुछ ही दूर रह गया !

फिर उसकी कोठी के मुख्यद्वार के बीच पोक के बेहोश शरीर को वे उलटा लटकाकर चले गये ।

अगली सुबह पूर्ण चीन में आतंक छाया हुआ था ।

अखबारों के कॉलम विकास और वतन के नामों से रंगे पड़े थे!

अपनी कोठी के मुख्यद्वार पर न सिर्फ पोक का जिस्म उल्टा लटका पाया था, बल्कि करीब और सिंगसी में स्थिति उसी करीब-जिस्म के अधिकारियों सैनिक पचास पाये गये थे ।

चीन में इस प्रकार का आतंक जैसा किसी छोटे!! हो गया फैल पर जाने हो प्रविष्ट के शेर में गांव से-

उसी सुबह क्रिस्टीना के ड्राइंगरूम में बैठा विजय कह रहा था... तुम साले मानोगे नहीं, भला रात यह सब करने से फायदा क्या हुया ?"

"अबे चुप रह चटनी के, बच्चों को करने दे जो कर रहे हैं "!

"चचा, तुम भी इन्हें समझाने से तो गए, शै देते हो है! कहा ने विजय "

इससे पूर्व किह बागरोफ कुछ बोले, गम्भीर स्वर में वतन ने कहाक्रिस्टीना"- ने मुझे सब कुछ बता दिया है चचा ! मैं और विकास दोनों हम कि रहे समझते यह- रात को तुम्हें धोखा देकर यहां से निकल गए थे, मगर वास्तविकता ये थी की अाप न सिर्फ जाग रहे थे, वल्कि जहांग हम जहा-ए वहां आप भी हमारे पीछे गये थे और हमसे पहले यहां आकर पुन नाटक का सौने : "। किया

--'"अबे तो और क्या करता ?" विजय भडंक उठा "! है लिया ले ठेका ही का सुरक्षा तुम्हारी सालो तो हमने"-----

इससे पूर्व कि विजय की इस बात का कोई जवाब दे पाता, दरवाजे पर दस्तक हुई । 'सव एकदम चुप हो गए ।

क्रिस्टीना ने पूछा..."कोन है ?"

"लैला का मजनू ।। आई आवाज से बाहर "

'"लूमड़ और उठा से स्थान अपने विजय कहकर "! झपटकर दरवाजा खोल दिया । सामने देखा, तो हैरी खड़ा था । जहां हैरी को देखकर विजय भौचका रह गया, वहाँ क्रिस्टीना, बागारोफ और विकास के रिर्वाल्बर बाहर आ गये ।

इससे पूर्व कि कोई कुछ हरकत कर पाता, दरवाजे पर खडे हैरी के मुंह से अलकांसे का स्वर निकला का हैरी चेहरा " ---- है जरूर, लेकिन हूँ मैं अलफांसे । इस रूप में मैंने अलकांसे की कैद से फरार होने का नाटक रचा है और दुश्मनों का दोस्त बन बैठा हूं ।"

उसे कमरे के अन्दर लेकर दरवाजा पुन। गया लिया कर बन्द :

विजय के पूछने पर सोफ पर बैठकर अलफांसे ने संक्षेप में जो कुछ बताया, वह इस प्रकार था, "जब मुझे पता लगा कि फिल्में चीन पहुंच गई हैं तो मैंने भी यहां आने का निश्चय किया । अपनी असली सूरत में आने के स्थान पर मैंने यहां हैरी की सूरत में आना अधिक उचित समझा । सोचा कि इस अभियान के शुरू में हैरी ने मेरा मेकअप करके काम किया था, सो वह कर्ज उतार दूं । मैं पिशाच से मिला । हैरी को उसके हवाले कर दिया । चमन के राष्ट्रपति भवन के एक तहखाने में इस समय हैरी कैद है । पिशाच को मैं सब कुछ समझा, आया हूँ । उसी ने तिलस्मी चीजों का प्रयोग करके मेरे चेहरे पर यह मेकअप किया है । मैं कल यहां पहुच गया था । मैंने सोचा कि मुझे अपने ढंग से यह पता लगाना चाहिए कि फिल्में कहां हैं ? इसी मकसद से मैं पोक के पीछे लग गया ।, सात बजे पोक हाउस में ठहरे बाण्ड,-नुसरत और तुगलक से मिला है उस समय सिंगसी और हूानची वहीं थे । वहाँ मैंने उनकी बातें सुनीं। उनकी बातें सुनकर मेरे दिमाग में एक योजना पनपी । सोचा कि तुम लोग तो अपने ढंग से फिल्मों का पता लगाने के चक्कर में लगे हो ही, क्यों न मैं उनका साथी बनकर यह प्रयासं करूं?"

"'स्कीम तो तुम्हारी निस्सन्देह तारीफ के काबिल है लूमड़ भाई से ख्याल मेरे लेकिन"----कहा ने विजय " ! बाण्ड इतना बेवकूफ तो नहीं होना चाहिए कि वह तुम पर एकदम यकीन कर ले है क्या उन्होंने तुम्हारी जांच नहीं की ?"

" पिशाचनाथ द्वारा किया गया मेकअप क्या आज तक कीसी की जांच में आया है ?" अलफासे ने मुस्कराते हुए जवाब दिया !

" हूं"। है फिरता लिए ही को दवाओं-तिलिस्म अपनी पिशाचनाथ साला----

इस प्रकार उनके बीच बातें होने लगी ।

एक घंटे बाद अलकांसे वहाँ से चला गया । वे पुनऐसी कोई । गए लग में बातों : तरकीब सुझाई नहीं दे रही थी जिससे यह पता लग सके, कि फिल्में कहाँ हैं ?

और पुरे तीन महीने गुजर गए है ।हुअा नहीं कुछ क्या अन्दर के चीन में महीनों तीन इन-, परन्तु फिल्मों का फिर भी पता न लग सका ।

ये तीन महीने चीन के लिएं कहर के महीने थे ।।

हर रोज सुबह को अनगिनत ऐसी लाशें मिलतीं जिन पर विकास लिखा होता था । चीन की जनता और सरकार त्राहि कर त्राहि-। उठी

चीन में होती इस तबाही की गूंज सिर्फ चीन में ही कैद होकर न रह गई थी वल्कि सारे विश्व में गूँज उठी थी ।

विकांस और वतन की एक ही माँग थी----' चीन चमन के चुराये हुए फार्मूले लौटाये !'

चीन सारे विश्व में प्रचार कर रहा था,, वतन और विकास उसके साथ क्या कर रहे हें किन्तु बीच वीं.टी की विश्व में बीच-और उभरता वतन हुआ जला पर स्क्रीनों चीन द्वारा किए गए प्रचार का खण्डन करता,कहता कि वह चीन से बदला अवश्य लेगा, किंतु अभी तक वह ठीक भी नहीं होपाया। चमन से बाहर भी नहीं निकला है ।

इधर चीन में ये दोनों शैतान इस कदर तबाही मचाये हुए थे कि सारा देश आतंकित पुतला बनकर रह गया था ।

हर सुबह चीन की सडकें लाशों से भरी पाई जाती । कभी एयरपोर्ट पर खडे विमान धुधु-, करके जलने लगते तो कभी अच्छी खासी जाती रेलगाडी एक धमाके के साथ उड़ जाती । हर दुर्घटना के पीछे किसी न किसी रुप में वतन और बिकास की माँग गूंज उठती ।

विनाशविनाश और बिनाश-...चारों तरफ विनाश फैला दिया उन लड़कों ने ।।

और इस समय वे क्रिस्टीना के ड्राईरूम में बैठे खिल खिलाकर हंस रहे थे ।

उनके चेहरों की मासूमियत को देखकर कोई कह नहीं सकता था कि उनसे आज पूरा चीन कांप रहा है । उनके अतिरिक्त ड्राइंगरूम मैं इस समय बागारोफ, विजय, हैरी के रूप में अलफांसे और क्रिस्टोना भी मौजूद थे । विजय कह रहा था... "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि दोनों को इस विनाशलीला से क्या लाभ होगा ?"

''हमारे पास ऐसा कोई तरीका नहीं है गुरु, जिससे हम यह पता लगा सकें कि वे फिल्में कहां हैं ?" बिकास ने कहा ---मह भी बाद के गुजरने महीने तीन आज" पता नहीं लगा सके हैं । कमहमार तरीका यह कम-से-े पास है जिससे , हम चीन सरकार को फिल्में वापस करने पर विवश कर सकते है "!

"इस तरह भला वे फिल्में कैसे दे देंगे "!

...""उन्हें देनी पडेगी ।इतना को जनता की देश इस हम"----कहा ने विकास " आतंकित कर देंगे कि चीनी जनता स्वयं सरकार से यह मांग करेगी कि वह फिल्में हमें दे दे । जनता की मांग सरकार को माननी ही होगी । नहीं मानेगी तौ चीन में गृह युद्ध-"। होगा

''तुम हमेशा विनाशकारी बात सोचा करते हो प्यारे दिलजले ।" विजय ने कहा न तो होतीं मिलती फिल्में तरह इस अगर"- होती गई मिल की कब जाने? मेरा विचार तो ये है कि इस तरीके को छोड़कर फिल्मो का पता लगाने की कोई और तरकीब सोची जाये ।"

विसास ने जिद्द नहीं, की !

पुन। लगी जाने सोची तरकीब :

जब इसी विषय पर बहस होते काफी देर हो गई तो हल्ले से मुस्कराता वतन बोला कोई हमें की लगाने पता का फिल्मों"----"। है नहीं आवश्यकता

बुरी तरह चौक पड़े सब, विजय के मुंह से निकला मतलब क्या"---?"

" समय आने पर 'वेवज एम' की फिल्म खुद ही बता देगी कि वह कहां है ?"

"क्या कहना चाहते हो ?"अलफासे ने प्रश्न किया।

" आज मैं तुम्हे एक रहस्य की बात बताता हूँ ।।। कहा ने वतन हुए मुस्कराते " 'वेवज एम' के फार्मूले को उस फिल्म पर मैंने स्वयं उतारा है मालूम मुझे ! था कि यह उलझनें हमारे सामने आ सकती हैं । उन फिल्मों पर अंकित फार्मूला बिल्कुल सही है ,, जानबूझकर उसमें एक हल्की सी कमी छोड़ दी है । वह कमी यह है कि उसमें ब्रह्मंड की आवाजो को कंट्रोल करने वाले बटन का हवाला फिल्मों में कहीं नहीं है ।''

" इससे क्या होगा ?"

"निश्चित रूप से चीन के वैज्ञानिक किसा गुप्त प्रयोगशाला में उन फार्मूले के आधार पर 'वेवज एम' बना रहे होंगे-कहा ने वतन" तैयार एम वेवज ही जैसे ---- होगा और वे उसे अ ॉन करेंगे तो उसमें से इतनी जोर की व्रह्मंड की आवाजें निकलेगी कि सम्पूर्ण चीन गूंज उठेगा । व्रह्माड का सारा शोर चीख पुकार और आवाज़ गूंज उठेगी और मुझे पता लग जायेगा कि वेवज एम कहां तैयार किया जा रहा है "!

"इतनी महत्त्वपूर्ण बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई बटन प्यारे ?"

"उस आवाज को कंट्रोल करने के लिए वेवज एम में बटन नहीं होगा बात की विजय "! पर कोई ध्यान न देते हुए वतन ने बतायाबह्माड ही होते आँन के एम वेवज"---- की सारी चीखो बता स्वयं मुझे आविष्कार मेरा और आयेगी उतर से चीन पुकार-गादे कि वह कहां है "!

हिमालय के गर्भ में...चीनियों की एक गुप्त प्रयोगशाला । एक कमरे में करीब बीस चीनी वैज्ञानिक । एक लम्बीसी मेज के चारों तरफ वे बीसों बैठे है । अचानक उनमें से एक वैज्ञानिक अपने स्थान से खड़ा होकर कहता है किप्राप्त हमने "--- फिल्म के आधार पर बह्मांड उससे हम आज और है लिया कर तैयार "एम वेवज" की आवाज सुनेंगे। "

" मेंरे विचार से एक वार और फिल्म में अंकित फार्मूले से वेवज ऐम को मिला लें ।"

"वह तो हम करेगे ही ।कहा ने वैज्ञानिक उस ", किंतु खुशी की बात ये है कि हमने वेवज एम तैयार कर लिया है । हमारे देश को इस आविष्कार की कीमत बहुत महंगी चुकानी पड़ रही है । सारे देश में विकास और वतन ने हंगामा खड़ा कर रखा है, परन्तु हमारी सरकार ने इतनी सावधानी बरती कि इतना सबकुछ करने के बावजूद भी वे कुत्ते यहाँ तक नहीं पहुंच सके । यहाँ जहां वतन के फार्मूले पर हमने रातइस "। है लिया कर तैयार वेवजएम करके मेहनत महीने तीन दिन- प्रकार एक लम्बाचौडा भाषण दिया उस वैज्ञानिक ने ।

फिर वे सब यह निश्चय करके उठे कि वेवज एम पर बाह्मांड की आवाजें सुनी जायें ।

यह प्रयोगशाला हिमालय के गर्भ में सख्त सैनिक पहरे के बीच थी।

वे बीसों वैज्ञानिक एकं अन्य कमरे में पहुंचे । एक मेज है पेर 'वेवज एम' रखा था । उस 'वेवज एम' की बॉडी वैसी बहीं थी, जैसे वतन के वेवज एम की थी । उसी मशीन कों उन्होंने एक भिन्न बाँडी में कैद किया था ।

मशीनरी को उन्होंने पुन। मिलाया से फिल्म :

फिर धड़कते दिल से 'वेवज एम' आँन कर दिया गया ।

और तुफान उठ खडा हुआ हो जैसे । इतना शोर कि -------

हिंमालय कांप उठा ।

भयभीत होकर वैज्ञानिक एकफ पर्दे के कानों के वैज्ञानिकों सभी इन ने शोर भयानक और पुकार--चीख । पड़े गिर पर दूसरे-ाड़ डाले ।

कई अणु बम भी मिलकर इतना तेज धमाका न करते, जितना 'वेवज एम' से निकली आवाजों ने किया ।

पूरा हिमालय इस तरह चीख रहा था मानो किसी ने उसके शरीर में आग लगा दी हो ।।

न सिर्फ चीन बल्कि सारी दुनिया एकदम बुरी तरह चौंक उठी ।

हिमालय के गर्भ से निकली वह दहाड़ से सम्पूर्ण धरती गूँज उठी ।

धरती बुरी तरह कांप उठी ।

सारी दुनिया के ज्वालामुखी भी अगर एक साथ फट पड़ते तव भी शायद उतनी भयानक आवाज न होती !

सदियों से शांत खड़ा हिमालंय चीख उठा था । ऐसी आवाज हुई थी जैसै सारी दुनिया के प्राणी एक साथ अपनी पूरी शक्ति से चीख पड़े हों ।। विश्व में आतंक छा गया-------
-------------हिमालय चीख उठा था ।।

चीखकर उसने सारी दुनिया कों भयक्रांत कर दिया था ।

कुछ देर तक चीखकर हिमालय शांत हो गया ।।।।

किन्तु।। था दिया कर आतंकित तरह बुरी को विश्व सम्पूर्ण ने चीख उस की हिमालय----

वतन की मंडली के अतिरिक्त शायद किसी को भी समझ में नहीं आया कि हिमालय इतनी जोर से आखिर चीख क्यों पंड़ा ?

संसार के प्रत्येक देश का प्रत्येक व्यक्ति भयंभीत हो उठा ।।

पूरी दुनियां मे र्तिकड़मे लडाई जानें लगों ।। कुछ लोग यह समझे बेठे कि प्रलयं आने वाली है । हिमालय ने चीखकर प्रलय के आगमन की सूचना दे दी है।।

तव जबकि विश्व में हिमालय की इस चीख पर अनेक अटकले चल रही थी ।

विजय इत्यादि के सामने बैठा वतन कह रहा थाचचा लो "--, मेरे आविष्कार ने मुझ आवाज दी है !'"

"आबाज बडी भयानक रही बटन प्यारे । सारी दुनिया कांप उठी "!

"मेरा अनुमान है कि इसे आवाज कों सारे विश्व ने सुना होगा । कहा ने बिकास "!

"लेकिन बटन प्यारे, हिमालय तो बहुत बड़ा है ।पता कैसे यह "--कहा ने विजय " लगे कि हिमालय के कौन से भाग में वह प्रयोगशाला है जहाँसे तुम्हारा 'वेवजएम-' चीखा है?"

वतन ने जेब में हाथ डाला और दिशावाली बताने दूरी--, एक छोटीविरामघड़ी सी- दिखाता हुआ बोला उस ने घड़ी इस"-- है लिया पकड को केन्द्र, जहाँ से इस आवाजकी उत्पत्ति हुई है हमें घडी यह समय इस !'वेवज एम' की स्थिति ठीक बता रहा है "!

" तो फिर क्यों न आज ही अपना अभियान समाप्त कर लिया जाये "!

जिस दिन हिमालय चीखा था, उस दिन ने अपने गर्भ में एक बहुत ही अन्धकारमय रात छुपा रखी थी ।

एयरपोर्ट की इमारंत पर यहांलड़ से अन्धकार उस लाइटें रोशन वहां-
रही थीं । इमारत में सन्नाटा था । इस समय रात के ग्यारह बज रहे थे और चार बजे से पहले न तो यहाँ कोई फ्लाइट ही होने थी आर न ही कोई विमान यहाँ पहुंचने बाला था, इसलिए रात की डयूटी के कर्मयारी लापरवाही से अपनीअपनी- डयूटियों पर ऊंघ रहे थे ।

हवाईथी पड़ी शांत बिरुकुत पट्टी-, ऐसे समय में दो व्यक्तियों ने एयरपोर्ट की इमामृत में प्रवेश किया । उन दोनों के हाथों' में एक एक सूटकेस था ।

जिस्म पर पतलून के उपर ओवरकोट अ ौर सिर पर एक गोल हैट । ओवरकोट के कालर खड़े थे अ ौर हैट के कोने लगभग झुके हुए थे ।। यह 'कारण था कि उनमे से किसी का चेहरा नहीं चमक रहा था ।।

"चचा ।" उनमें से एक के मुंह से विजय की आवाज निकली हो न गोवर गुड़ सारा कहीं । करना संभलकर जरा काम"----
। जाये'"

" तू हमें पैतरे बता रहा है चटनी के कहा ने बागारोफ "!'--" बेटा, जासूसी के पैतरे इस्तेमाल करते के सिर ये तो ही करते-संभलकर तू ! हैं गए उड़ बाल रहना । ऐसा न हो जाये कि मैं निकल जाऊं और ये चीनी तुम्हारा तबला बजा दें" ।

''तवला तो इनका विकास और वतन ने बजा रखा है "!

" अच्छा, अब बोलती पर ढक्कन लगा, सामने आँफिस आ रहा है ।। गया हो चुपं विजय सचमुच तो कहा ने वागांरोफ "

बिना किसी प्रकार की दस्तक दिए वे धड़धड़ाते हुए आँफिस में प्रविष्ट हो गए ! मेज के पीछे एक अफ़सर बैठा ऊंघ रहा था ।

उनकी आहट पाते ही कुत्ते की तरह जागकर उसने कान खड़े कर लिए !

जब तक वह कूछ समझता, तव तक पलटकर विजय ने दरवाजा अंन्दर से बन्द कर दिया था और उस अधिकारी के सामने खडा ? बागरोफ कह रहासे मुंह तुम्हारे हम"------ गुटरगूं की आवाज सुनना चाहते हैं "!

चौककर वह अपनी सीट से खड़ा होता हुआ बोला"-----'कौन हैं आप लोग "!

"मेरा नाम विकास है ।! है कहा ने बागारोफ "

" वि । लगी नाचने मौत में आंखों । गया पड़ पीला चेहरा । से मुंह उसके निकला शब्द एक-एक टूटकर "! स ....का...

शरीर इस तरह कांपनेलगा-, जैसे अचानक वह जाड़ो के बूखार का मरीजहो गया बन-, बोला...मविगाड़ा क्या आपका मैंने..... है? अ...आप तो बाप हैं मेरेस......साली ये हमारी सरकार उल्लू की पट्ठी है, जो आपकी मांग नहीं मांगती ".....

" इसे ही तो कहते हैं गुटरगूं की आवाज । कहता "हुआ बागरोंफ उस पर झपट पड़ा !

उस बेचारे के तो विकास का नाम सुनते ही हाथको विजय ! थे गए पड़ ढीले पांव- कुछ करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी और बागरोफ ने उसे बेहोश कर दिया ।

" मैं किसी और को देखता हूं चचा । गया निकल बाहर से कमरे और खोता दरवाजा ने विजय कहकर "!

आगे बढकर बागारोफ ने चटकनी पुन। लगा उतारने कपड़े से पर जिस्म के अधिकारी उस और आया वापस ली चढ़ा से अन्दर :

दस मिनट बाद उसके जिस्म पर अधिकारी के कपड़े । दरबाजा खोलकर वह गैलरी में आया, दरबाजा बाहर से भिड़ा दिया , तभी गैलरी के एक अन्य आफिस का दरबाजा खुला एक अफसर की वर्दी में विजय बाहर निकला ।

बागरोफ को देखते ही विजय ने आँख दबा दी । गया बढ़ अ◌ागे साथ उसके बागरोफ-हुआ भुनभुनाता !

"'उस कबूतर मार्का की सूरत ही ऐसी थी कि हमने अनुमान लगा लिया कि अंब वह अपने मुंह से गुटरगूं की आवाज निकाले तो बहुत अच्छी लगेगी ।। यह तो हम जानते' ही थे कि गुटरगूं की वह आबाज न तो तुम्हारा ही नाम लेकर निकलेगी अ◌ोर न ही मेरा। अतकिस ही सुनते नाम------नहीं देखा दिया ले नाम का विकास : तरह कत्थक डांस करने लगा था।"'

बातें करते हुए वे एयरपोर्ट की बालकनी तक पहुंच गए ।

वहाँ से हवाई पदृटी स्पष्ट चमक रही थी ।

बड़े बड़े हैंगरों में कई विमान खडे थे ।

उन्हें देखता हुआ विजय वोला"--, जो इधर से पहले दो विमान खड़े हैं, वे हमारे बाप के । पहला वाला तुम्हारे बाप ने बनवाया है, दूसरा मेरे बाप ने । वाकी सब बेकार हैं ।"

--"ठीक है । ने बागारोफ "कहाबाद समय ही कुछ के उतरने से बालकनी । आओ"---- वे विमान की तरफ बढ़ रहे थे । दोनों का एक।। था पर रिवॉल्वर हाथ एक-

अभी है हैगरों से काफी दूर ही थे कि अंधेरे में से एक सैनिक निकलकर सामने आया !

" आप ?"

अभी बह कूछ कहना ही चाहता था कि धांय'. ......

विजय के रिबॉल्वर से निकली गाली ने उसके माथे में लहू निकलने के लिए सुराख बना दिया । एयरपोर्ट की इमारत अौर उसके आसऔर फायर एक ने सन्नाटे छाये पास- चीख की आवाज पर दम तोड़ दिया ।

" आओ चचा । । भागा तरहा की विमान साथ क तेजी बहुत स्वयं विजय हुआ लगाता सा-नारा "

फायर की आबाज ने एयरपोर्ट की इमारत में हंगामावे अभी । था दिया कर खडा़ सा- अधिक दूर नहीं दौड़ पाये थे कि उन के पीछे दोसांय-सांय और हुए फायर तीन- आवाज करती हुई गोलियां बराबर से निकल गई ।

भागते हुए' बागारोफ का रिवॉल्वर दो बार गर्जा और वे दोनों बल्व शहीद हो गए जिनके प्रकाश के दायरे में वे थै । अब उनके इर्दइस और गया छा अंधेरा गिर्द- अंधेरे मे वे भाग रहे थे ।।

पीछे से उन पर अब अनगिनत तेज फॉयर हो रहे थे किन्तु क्योंकि वे अंधेरे में थे इतलिए पीछे से उन्हें सही निशाने पर कोई नही ले पाया था ।

भागते हुए विजय ने जेब से हैडग्रेनेड निकाला, मुंह से पिन निकाली और अचानक पीछे पलट गया ।

अपनी गनों से फायर करते हुए करीब पांच सैनिक उन की तरफ दौड़ रहे थे !

उन्हीं का निशाना बनाकर विजय ने
बाउंड्री पर ख़ड़े क्रिकेट खिलाडी की भांति बम फेका ।

जिस तरह एक अच्छे खिलाड़ी की थ्रो पर खड़े विकेटकीपर हाथ में जाती है उसी तरह हवा में लहराता हुआ बम सीधा उन पांच सैनिकों के वीच गिरा । एक कर्णभेदी धमाके के साथ उनकी लाशों के चिथड़े हवा मैं लहरा उठे ।

फिर बागारोफ के पीछे भाग लिया बिजय । अब भी चारों तरफ से सैनिकों के भागकर आने की आवाजें आं रही थीं । वे भागते हुए विमानों पर पहुच गए तो विजय ने कहा"----'तुम विमानों को निबटाओ चचा"! हूं देखता इन्हें मैं---

ऐमा ही हुअा भी !

बिजय जैसे पहले, ही यह अन्दाजा कर लिया था कि किसी भी तरफ से सैनिक यहां तक ही पहुंच सकेगा और वह उन्हें चटनी बना देगा !

उधर अपनी जेब से हेंडग्रनेड निकालकर वागारोफ ने मुंह से पिन खींची और शेड के नीचेे खड़े एक विमान पर उछाल दिया ।

एक कर्ण भेंदी धमाका । आग में झुलता हुआ पेट्रोल उछला है विमान की बाडी खील। गई बिखर होकर खील-

फिर मानो साक्षात प्रलय का दृश्य एयरपोर्ट पर उपस्थित हो गया दस्तीबमों ! के धमाके और फायरों की आवाज ने सारे वातावरण की मथकर रख दिया !! चीनी सैनिक कुछ भी न कर सके ।।

अन्त में उन्होंने पहले दो विमान को हवाई पदृटी पर दौड़तें और फिर जमीन छोड़कर आकाश की अ◌ोर उठते देखा । अपने दो विमानों के अतिरिक्त वे एयरपोर्ट पर मौजूद सभी विमान नष्ट कर गये थे ।।

भारी बूटों की आवाज करता हुआ सैनिक कंटीले तारों की दीवारों के समीप से गुजरा तो विकास और वतन ने अपनी सांसे रोक ली । सैनिक उनके समीप आया तो किसी गोरिल्ले की भांति झपटकर विकास ने सैनिक को दबोच लिया । विकास ने एक हाथ से उसकी गन वाली कलाई को पकडा और दूसरा उसके मुंह पर ढक्कन बनकर चिपक गया।

लाचार सैनिक चीख भी नहीं सका और विकास ने उसे झाडीयों में खींच लिया ।

विकास ने क्योंकि उसकी नाक और मुंह बंद कर रखे थे अतबैहोश ही में मिनट दो वह कारण के लेने न सांस : हो गया ।

" ज़ल्दी करो दोस्त विकास ने वतन से कहा...

ठीक दो बजे गुरु और चचा का हमला होगा !

झा़डियों में से होकर वतन ने आगे रेंगते हुए कहा..."मुझे क्रिस्टी का बहुत दुख है विकास वह बेचारी हमारे साथ आने के लिए रोती रह गई । उसे ले ही आते तो अच्छा रहता । वह बहादुर है और बहादुरी दिखाने के इस मौके पर उसने अपनी इच्छाओं को किस तरह दबाया होगा ।"

''मैनें तो कहा भी था तुमसे कि उसे अ◌ाने दो ।। कहा ने विकास हुए रेंगत "

"मैं नहीं चाहता था विकास कि क्रिस्टी मेरे लिए अपनी जान पर खेले वतन ने कहा ।

"आपके चाहने से क्या होता है?" एका एक वे दोनो...अपने समीप से ही क्रिस्टी की आवाज सुनकर चौक पड़े।

वतन तो एकदम बुरी तरह से बौखला गया । मुंह से एक ही शब्द निकला"! क्रिस्टी"-

--"हां ।"। आपके हूँ साथ मैं "---उभरी आवाज से में अंधेरे ."

आवाज की दिशो में अंधेरा था और उस अंधेरे को वतन ने घूरा क्रिस्टी उसे नजर न आई तो बोला क्रिस्टी हो कहाँ "----?"

'"यहां हूं मैंमें जिस्म के वतन साथ के आवाज इस "। करीब बहुत आपके- बिजला एक को हाथ उसके में अंधेरे । गई दौड़ सी- । था दिया भींच ने हाथ कोमल अनजाने मैं ही वतन ने उस कोमल हाथ को जोर से भींच दिया लिया ! बोला"---- त तुम- "! क्रिस्टी जाओ लौट

-"हृदय पर वज्रपात न करो । आवाज की क्रिस्टी डूबी में दर्द "!

" लेकिन मै"!......

"विकास भैया समझाओ न इन्हें ।कहा ने क्रिस्टी "..."'मुझसे बात करके क्या इस महत्त्वपूर्ण समय को खो रहे हैं ।। वो देखो , सामने प्रयोगशाला का मुहानादो । है रही झांक रोशनी की वल्ब किसी से सुरंग----है दरवाजा रूपी--- सैनिक हाथ में गन लिए मुहाने पर खड़े है । है जाना अन्दर निपटकर इनसे ! अन्दर न जाने कितने सैनिकों से निपटना पडे । बहुत काम है...समम बहुत कम । दो बजे हवाई हमला हो जायेगा । उस समय तक हम प्रयोगशाला से बाहर न निकले तो इन सबके साथ ही प्रयोगशाला हमारी भी कब्र बन जाएगी ।"

इससे पूर्व कि वतन कुछ बोले, विकास ने कहावतन"---, अब आ ही गई है तो आने दो क्रिस्टी को । देखा जायेगा है तुम ध्यान को चारों तरफ से हटाकर सिर्फ लक्ष्य पर केन्दित करो । वह देखो...सुरंग के अन्दर से कोई बाहर आ रहा है ।"

सचमुच एक सैनिक अधिकारी बाहर आया । लगा करने बातें कुछ से सैनिकों दोनों खड़े पर दरवाजे !

उसी पल क्रिस्टी ने वतन का हाथ छोड़ दिया । वतन को एेसा लगने लगा, जैसे उनका ह्रदय खाली होता जा रहा है ।

न जाने क्यों उसे क्रिस्टी का इस तरह हाथ छूड़ाना अच्छा न लगा ।

वे प्रयोगशाला के मुहाने के काफी करीब थे । इतने करीब अगर वे अपने स्थान से एक जम्प लगा देते तो मुहाने पर ही होते ।

वतन और विकास अभी कुछ सोच ही रहे थे कि अंधेरे में क्रिस्टी की आवाज गूंजी..."वे तीन हैं, हम भी तीन ! दायां मेरा, बायां बिकास भैया का और अफ़सर को ये संभालेंगे "!

वतन अभी कुछ समझ भी नहीं पाया था कि क्रिस्टी ने कहा "--'वनं टू थ्री "!

और थ्री के साथ ही विकास और क्रिस्टी ने अपनेथा नहीं तैयार क्योंकि वतन । दी लगा जम्प पर शिकार अपने-, इसलिए थोडा चूक गया ।

इन दोनों ने अपने अपने शिकारों कों दबोचा, अधिकारी ने चौककर रिर्वाल्वर निकाला और क्रिस्टी पर फायर कर दिया ।

यह वहीं वक्त था, जब वतन अधिकारी के ऊपर अाकर गिरा ।

गोली क्रिस्टी के पेट में लगी थी किन्तु अपने शिकार को उसने छोड़ा नहीं ।

वतन तो जैसे पागल हो गया था ।

उसका मुगदर संन्नाकर अधिकारी की कनपटी पर पड़ा तो वह चीख के साथ हमेशा के लिए सोगया ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible],
[illegible] !

[illegible]

"[illegible],[illegible] [illegible]'" [illegible] --"[illegible] , [illegible] ! [illegible] !"

[illegible], [illegible] !

[illegible]

[illegible] !

[illegible]---[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] '[illegible]' [illegible] !

[illegible]

[illegible] ! [illegible]-[illegible] [illegible]

[illegible] ! [illegible], [illegible]

[illegible] ! [illegible]…. [illegible] ! [illegible]----- [illegible],

[illegible] "[illegible]-[illegible]"

[illegible]-[illegible]-[illegible]-[illegible]-[illegible] [illegible]

[illegible] ! [illegible] -[illegible] !

[illegible]

"'[illegible] '[illegible]' [illegible]" [illegible]-[illegible]-"[illegible] ?"

[illegible]

[illegible], "[illegible]"

" [illegible]" [illegible] !

[illegible] ! [illegible]

. [illegible]: [illegible]----"[illegible]"

[illegible]- [illegible] !

[illegible]----" [illegible] !"

[illegible] …

"[illegible] ?" [illegible]

[illegible]-[illegible]… [illegible]---[illegible]"

[illegible] !

[illegible] !

" [illegible] ? [illegible] !

" [illegible] ....!" [illegible]…"[illegible]-[illegible]"

"[illegible]----"[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

[illegible] !

[illegible] , [illegible]-
"[illegible] !"

" '[illegible]' [illegible]--" [illegible], [illegible]!"

"[illegible] !

[illegible]

□□□ □ □□□ □□ □□□ □□□-----" □□□□□□□□□ !"

"□□□ □□□□ □□□□□ !"

" □□□ □□□□ □□ !"

"□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ ,, □□ □□□□□□□□□ □□□□□, □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ ! "

"□□□□□□□□□ !" □□□□-□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□---" □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ ?"

"□□.......□□ □□□□....... □□□□□□□□ □□, □□□□ □ □□□□ □□.... □□□□□□□□□□ □□ □□□-- -----" □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□□□□□ !"

" □□ □□□ □ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ !" □□□□□ □□ □□□□ ! □□□ □□ □□□□□ □□-□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□' □□ □□□□□ □□□ !!!

□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □

□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□

□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ -□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ ,□□□-□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ !!

'"□□□□□ □□□□□-□□□□□ "!

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□-□□-□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□-□□ □□ □□□□□□□□□□□ !

□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□-□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□-□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□
□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□

[illegible]

[illegible] !! [illegible]...!"

" '[illegible]…?” [illegible]-[illegible]---"[illegible]?"

"'[illegible] ?" [illegible]-" [illegible] ?"

"[illegible] !" [illegible]----"" [illegible]…[illegible] !"

-"[illegible]"' [illegible]

"[illegible]" '[illegible] !" [illegible]----"'[illegible] ! [illegible]....."

" [illegible]" [illegible] !

" [illegible] !" [illegible]…[illegible] ?"

" [illegible] !" [illegible] "

" [illegible] !" [illegible]-----" [illegible] !"

" [illegible] !" [illegible]---"[illegible]"

[illegible]

[illegible] !

[illegible] !

[illegible]…

[illegible]

[illegible] !!!

------- [illegible]

THE END